भाषा
वार्षिकी
2020

भाषा वार्षिकी 2020

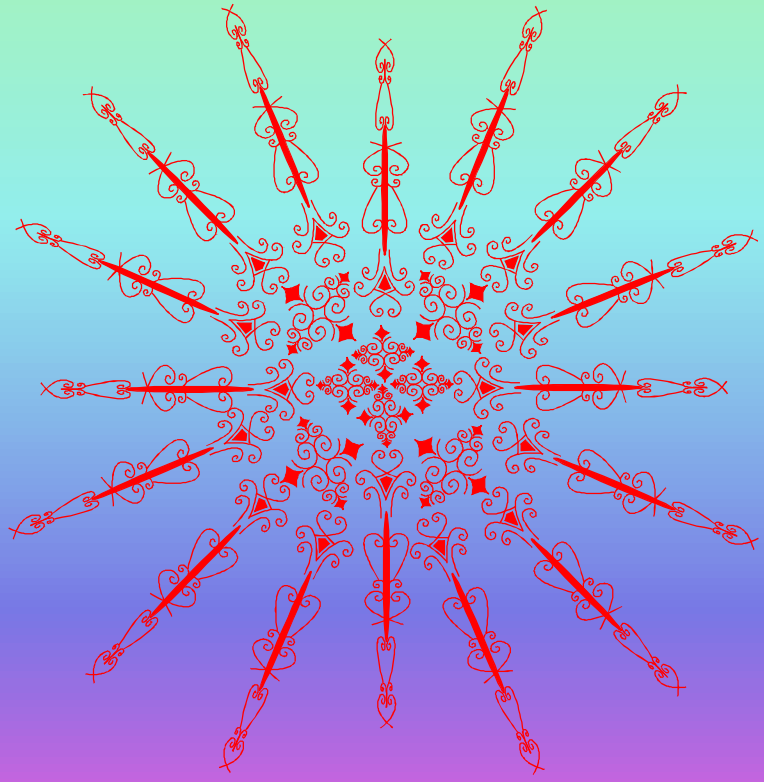

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

भारत सरकार

भाषा
वार्षिकी
2020

भारतीय साहित्य सर्वेक्षण

संपादकीय कार्यालय
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली-110066
वेबसाइट : www.chdpublication.mhrd.gov.in
www.chd.mhrd.gov.in
ईमेल : bhashaunit@gmail.com
दूरभाषः 011–26105211/12

ISSN 0523–1418

अध्यक्ष, परामर्श एवं संपादन मंडल
प्रोफेसर नागेश्वर राव

परामर्श मंडल
प्रो. योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण'
डॉ. पी. ए. राधाकृष्णन
प्रो. ऋषभ देव शर्मा
प्रो. मंजुला राणा
प्रो. दिलीप कुमार मेधी
श्रीमती पद्मा सचदेव
श्री हितेश शंकर

संपादक
डॉ. राकेश कुमार

सह–संपादक
डॉ. किरण झा
डॉ. शालिनी राजवंशी

प्रूफ रीडर
श्रीमती इंदु भंडारी

कार्यालयीन व्यवस्था
सेवा सिंह
संजीव कुमार

बिक्री केंद्र :
नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, सिविल लाइंस,
दिल्ली - 110054
दूरभाष : 011-23817823/ 9689

(डाक खर्च सहित)

वार्षिकी : 2020

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से
आपने लिखा
संपादकीय
लेख

1. असमिया साहित्य	डॉ. अनुशब्द	9
2. उर्दू साहित्य	डॉ. जुबैदा एच. मुल्ला	14
3. कन्नड साहित्य	डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'	18
4. कश्मीरी साहित्य	डॉ. महाराज कृष्ण भरत 'मुसा'	29
5. कोंकणी साहित्य	डॉ. चंद्रलेखा डिसौज़ा	33
6. गुजराती साहित्य	डॉ. वर्षा सोलंकी	43
7. डोगरी साहित्य	ओम गोस्वामी	53
8. तमिल साहित्य	डॉ. बी. संतोषी कुमारी	66
9. नेपाली साहित्य	ज्ञानबहादुर छेत्री	69
10. पंजाबी साहित्य	प्रो. फूलचंद्र मानव	75
11. बांग्ला साहित्य	डॉ. सुव्रत लाहिड़ी	86
12. मलयालम साहित्य	डॉ. बी अशोक	96
13. मैथिली साहित्य	डॉ. वैद्यनाथ झा	103
14. संथाली साहित्य	डॉ. रेखा	113
15. संस्कृत साहित्य	डॉ. अजय कुमार मिश्र	116
16. हिंदी आलोचना	डॉ. आलोक रंजन पांडेय	130
17. हिंदी उपन्यास	डॉ. तरसेम गुजराल	137
18. हिंदी कहानी	प्रो. अवध किशोर प्रसाद	148
19. हिंदी कविता	कृष्ण कुमार 'कनक'	168
20. हिंदी ग़ज़ल	डॉ. रोहिताश्व कुमार अस्थाना	185
21. हिंदी नाटक एवं रंगमंच	डॉ. अनुराग सिंह चौहान	193
22. हिंदी निबंध एवं लेख	डॉ. विदुषी शर्मा	199
23. हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ	डॉ. सुनील कुमार तिवारी	203
24. हिंदी पत्राकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी साहित्य	डॉ. सी. जय शंकर बाबु	207

25. हिंदी बाल साहित्य	प्रो./डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल	221
26. हिंदी भाषाविज्ञान साहित्य	डॉ. गोविंद स्वरूप गुप्त	227
27. हिंदी विज्ञान साहित्य	डॉ. शिवगोपाल मिश्र/ डॉ. बलराम यादव	234

संपर्क सूत्र **246**

सदस्यता फॉर्म

निदेशक की कलम से

भारतवर्ष जिस प्रकार विभिन्न रीति–रिवाजों और विविध संस्कृतियों का देश है उसी प्रकार यहाँ विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं जो संस्कृति की समृद्धि की परिचायक है। सभी भाषाएँ अपने क्षेत्र और परिवेश की सुवास को आत्मसात् करती हुई सांस्कृतिक और सामाजिक ताने–बाने को प्रस्तुत करती हैं। भाषा संस्कृति की संवाहिका है। विविधता भरे देश भारत वर्ष में बोली जाने वाली भाषाओं में से संप्रति 22 भारतीय भाषाओं को संविधान की अष्टम अनुसूची में स्थान प्राप्त है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय से प्रकाशित होने वाली 'वार्षिकी' पत्रिका में इन सभी भाषाओं के आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। इन आलेखों में आलोच्य भाषा में वर्षभर के प्रकाशनों के माध्यम से सर्जनात्मक कार्यों का विशद् वर्णन होता है। इनमें साहित्य की सभी विधाओं का वर्षभर का परिचयात्मक वर्णन होता है। इन आलेखों में संबंधित भाषा के नाटक, कहानी, एकांकी, उपन्यास, रिपोर्ताज, निबंध, पद्य, संकलन सभी का सम्यक विवेचन प्रस्तुत होता है। कोरोना के विकट, विकराल समय में जहाँ अनेक प्रकार की बाधाएँ उपस्थित हुईं साहित्य के प्रकाशन आदि की दृष्टि से वहीं लेखन अबाध गति से चलता रहा। वार्षिकी में सम्मिलित विभिन्न भाषाओं के लेखकों ने निरंतर प्रयासरत और सचेष्ट रहकर वर्षभर की साहित्य सामग्री को संग्रह कर वार्षिकी में सम्मिलित किए जाने हेतु आलेख प्रस्तुत किया। यह कार्य कोरोना की ऐसी परिस्थिति में सुगम तो नहीं रहा पर असाध्य भी नहीं हुआ। लेखकों, साहित्यकारों और भाषा परिवार के निरंतर सहयोग, समर्पण और समन्वय से यह कार्य संपन्न हो पाया। निदेशालय के भाषा परिवार का यह प्रयास रहा कि अपनी–अपनी संस्कृति की छटा बिखेरती हुई भारतवर्ष की संविधान स्वीकृत सभी भाषाओं के वर्षभर के साहित्य की जानकारी समेटे हुए आलेखों को प्रकाशित किया जाए। इसमें संबंधित कुछ भाषाविदों की निजी समस्या और व्यस्तता के कारण कुछ आलेख प्राप्त नहीं हो पाए परंतु अधिकांश भाषाओं के आलेखों को वार्षिकी में प्रकाशित किए जाने का प्रयत्न किया गया है। वार्षिकी में प्रकाशित होने वाले अन्वेषणात्मक एवं विवेचनात्मक आलेख शोधार्थियों एवं साहित्य प्रेमियों के लिए उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करता है।

आशा है विभिन्न विधाओं एवं विभिन्न भाषाओं के आलेखों से सुसज्जित वार्षिकी पत्रिका सुधी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक होगा। इस विशद कार्य हेतु निदेशालय के भाषा परिवार के सदस्य एवं सभी विद्वानों का मैं अंतर्मन से आभारी हूँ जिनकी निष्ठा एवं लगन से यह कार्य पूरा हो पाया।

विभिन्न भाषाओं के आलेखों से सुसज्जित 'वार्षिकी' पत्रिका सुधीजन के समक्ष प्रस्तुत है। आपके सुझावों की सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

नागेश्वर राव

प्रोफेसर नागेश्वर राव

आपने लिखा

वार्षिकी पत्रिका का वर्ष 2019 अंक प्राप्त हुआ आभार। भारतीय भाषाओं के साहित्य की दृष्टि से यह अंक अत्यंत महत्वपूर्ण है इसमें सभी भाषाओं के प्रकाशनों की एक विस्तृत जानकारी दी गई है परंतु मुझे व्यक्तिगत रूप से संस्कृत साहित्य पर लिखा गया डॉ. अजय कुमार मिश्र का आलेख बहुत ही पूर्ण लगा इसमें संस्कृत की अद्यतन प्रकाशन सूची और महत्वपूर्ण कार्यों का मूल्यांकन किया गया है। हिंदी भाषा विज्ञान साहित्य का आलेख भी महत्वपूर्ण है किंतु इसमें बहुत सी सामग्री छूट गई है निदेशालय के ही महत्वपूर्ण प्रकाशनों की चर्चा इसमें रह गई है कुल मिलाकर यह अंक संग्रहणीय है। मैं संपादक महोदय एवं उनके सहयोगियों को इसके लिए बहुत–बहुत साधुवाद एवं बधाई देता हूँ।

डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल

संपादकीय

राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता का आधार राष्ट्रवासियों का अस्मिता बोध होता है जिसका भाषा के साथ बहुत गहरा संबंध होता है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की विडंबना यह है कि राष्ट्रीय एकता को केवल राजनीतिक दृष्टि से देखा गया, सांस्कृतिक नहीं। अनेक भाषाओं का प्रचलन होते हुए भी भारत एक समन्वित भाषा क्षेत्र है। संस्कृत भाषा और समान संस्कृति के व्यापक प्रभाव के कारण सभी भारतीय भाषाओं के बीच परस्पर गहरी समानता है। सांस्कृतिक आदान–प्रदान और व्यवहार के लिए एक ही भाषा सब जानते हों, यह आवश्यक नहीं है। इसके लिए आवश्यकता है अनुवादकों की और विभिन्न भाषाओं में पारस्परिक अनुवादों की। यही अंतर भारतीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान और भारत की समग्र सांस्कृतिक अस्मिता को वहन करने का प्रमुख सेतु और माध्यम है। हिंदी को यह समन्वित भूमिका निभानी है और हिंदी यह दायित्व सदा से निभाती भी आई है। हिंदी और भारतीय भाषाओं को व्यवहार की भाषा बनाना और साथ ही इसे कंप्यूटर की सर्व समर्थ भाषा के रूप में स्थापित करना आने वाले समय की चुनौतियाँ हैं जिन्हें हमें पार करना है।

भारतीय भाषाओं के साहित्य की एक समृद्ध परंपरा रही है। सभी भारतीय भाषाओं में निरंतर रचे जा रहे साहित्य से अन्य भाषा–भाषी भी परिचित हो सकें तथा भारतीय भाषाओं के भाषा और साहित्य में हुए विकास एवं बदलाव का लाभ अन्य भाषा–भाषी भी उठा सकें इसी उद्देश्य से वार्षिकी में सभी भारतीय भाषाओं के लेखकों और साहित्यकारों के योगदान को उल्लिखित किया जाता है। वार्षिकी वस्तुतः हिंदी एवं भारतीय भाषाओं की संपूर्ण पत्रिका है जिसमें संविधान स्वीकृत सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य और हिंदी की विविध विधाओं में वर्षभर के शोधपरक आलेखों की प्रस्तुति होती है। वार्षिकी का नवीनतम अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। जिसमें विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के वर्षभर के साहित्य को संपूर्णता के साथ लेखकों ने पर्याप्त सर्वेक्षण अध्ययन, मनन के पश्चात् प्रस्तुत किया है। इसके लिए निदेशालय परिवार उन समस्त विद्वान लेखकों का आभारी है जो प्रतिवर्ष हमारे साथ रहकर हमारे इस लक्ष्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

वार्षिकी 2020 के इस संस्करण में कुल 27 आलेखों के इस संकलन को आपके समक्ष रखते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यथा संभव प्रयासों के बावजूद हम भारत की प्रत्येक भाषा के सर्वेक्षण आलेखों को संकलित नहीं कर पाए हैं। इसका प्रमुख कारण संबंधित लेखकों से सर्वेक्षण आलेखों का समय से प्राप्त न होना रहा। आशा है हमारी इन कठिनाइयों को पाठक समझेंगे और लेखकगण कार्य की महत्ता को समझते हुए पूर्ववत पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

(डॉ. राकेश कुमार)

भारतीय भाषाओं के संरक्षण में तत्पर केंद्रीय हिंदी निदेशालय हिंदी के सार्वभौम विकास और प्रोन्नति में तो अहर्निश तत्पर ही है साथ ही भारतीय संविधान में अंगीकृत अन्य भाषाओं के पोषण और पल्लवन में कृतसंकल्प है। भाषाओं के साहित्य में नित नए विविध प्रयोग हो रहे हैं। जिनमें समाज की बहुमुखी संस्कृति एकाकार हो भारतीयता को अक्षुण्ण बनाए रखने में सक्षम और सबल है। भाषाओं में हो रहे इन विविध प्रयोगों से निःसंदेह हिंदी भाषा भी संपुष्ट हो रही है। प्रमाण स्वरूप निदेशालय की वार्षिकी पत्रिका का प्रतिवर्ष प्रकाशन विभिन्न भाषाओं में हो रहे नूतन प्रयोग और रचनात्मक शैलियों से साहित्यकारों को विशेष परिचय कराता है। उससे यह भी आभास होता है कि कविता, कहानी, नाटक, फिल्म, कला तथा अन्य शिल्य के रूप में उन भाषाओं की समृद्धि हो रही है और विकासशील भाषाओं के साहित्यकारों का मार्गदर्शन भी होता है। सहृदय सामाजिक जीवन के सत्य अनुभवों का रसास्वादन कर नए संदेश से साहित्य सृजन की ओर अग्रसर होता है।

हिंदी के साथ–साथ अनेक भाषाओं और बोलियों की सार्वभौम महत्ता को व्यापक रूप देने में 'वार्षिकी' का योगदान अभिनंदनीय है। आशा है, भविष्य में इसकी छवि निखरती रहेगी।

डॉ. नोदनाथ मिश्र

1

असमिया साहित्य

डॉ. अनुशब्द

इक्कीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक का अंतिम वर्ष वैसे तो प्राकृतिक आपदाओं, बीमारियों एवं महामारियों का वर्ष रहा है, कोरोना के साथ–साथ अम्फान(पश्चिम बंगाल और ओड़िशा), निसर्ग (महाराष्ट्र, गोवा और गुजरात), निवार(तमिलनाडु), बुवेरी(तमिलनाडु और केरल) जैसे तूफानी चक्रवातों और टिड्डी हमले (गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश) ने अखिलभारतीय स्तर पर तबाही मचा कर रख दी। भारतीय जनमानस की रही–सही कसर भारत के विभिन्न प्रदेशों में आई बाढ़, किसान आंदोलन तथा नागरिकता संशोधन अधिनियम जन्य विद्रोहों और लॉकडाउन ने पूरी कर दी। लॉकडाउन के दौरान घटने वाली घटनाओं ने तो मानवता को ही शर्मसार कर दिया। कुल मिलाकर गत वर्ष हमारे देश का चौतरफा नुकसान हुआ। भारतीय साहित्य और सिनेमा की कई नामचीन हस्तियाँ और विभूतियाँ इस वर्ष काल के गाल में समा गईं। इस नकारात्मक, प्रतिकूल और ह्रदय विदारक समय में भी यदि जिजीविषा बची हुई है या उसे जिंदा बचाए रखा है तो साहित्य और साहित्य–सृजन ने ही। कोरोना ने सृजन के स्वरूप और शिल्प को ही नहीं बल्कि भाव और संवेदना को भी गहरे प्रभावित किया। फिर भी, बदले माहौल और मिज़ाज के साथ ही सही साहित्यिक सृजन की प्रक्रिया अखिल भारतीय स्तर पर गतिशील रही और तमाम साहित्यिक गतिविधियाँ भी अपने बदले कलेवर में चलती रहीं। इस वर्ष लगभग सभी अनुसूचित भाषाओं की अपनी कुछ–न–कुछ साहित्यिक उपलब्धि रही ही है। इसी परिप्रेक्ष्य में हम असमिया भाषा की साहित्यिक उपलब्धियों एवं गतिविधियों को भी देख सकते हैं।

असमिया उत्तर पूर्व की एक बड़ी और समृद्ध भाषा है। इसका साहित्य भंडार अद्भुत और विलक्षण है। अनेक प्रसिद्ध साहित्यकारों और कला सर्जकों मसलन– माधव कंदली, माधवदेव, शंकरदेव, आजानपीर, आनंदराम ढेकियाल फुकन, हेमचंद्र बरुआ, गुनाभिराम बरुआ, लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ, ज्योतिप्रसाद आगरवाला, बानीकांत काकति, भूपेन हजारिका, इंदिरा गोस्वामी आदि से लेकर वर्तमान समय के साहित्य–सर्जकों तक सभी ने अपने रचनात्मक योगदान से असमिया भाषा और साहित्य को लगातार अभिसिंचित किया है।

गौरतलब है कि असमिया उत्तर पूर्व भारत की एकमात्र आर्यभाषा है। चौदहवीं शताब्दी से लेकर आज तक, असमिया भाषा ने अलग–अलग समय पर अपनी लिपि और लिखित साहित्य से स्वयं को समृद्ध किया है। असमिया भाषा और साहित्य को कई स्तरों या युगों में विभाजित किया जा सकता है। डॉ. सत्येंद्र नाथ शर्मा ने 'असमिया साहित्यर समीक्षात्मक इतिबृत्त' में असमिया साहित्य

के इतिहास को तीन भागों में विभाजित किया है– आदियुग(900 ई. से 1300 ई. तक), मध्य युग(1300 ई. से 1826 ई. तक), वर्तमान युग(1826 ई. से अब तक)। उन्होंने मध्ययुग को प्राक्–शंकर युगीन साहित्य(1300 ई. से 1449 ई.), शंकर युगीन साहित्य(1449 ई. से 1700 ई.), शंकरोत्तोर युगीन साहित्य(1700 ई. से 1827 ई.) में और वर्तमान युग को मिशनरी युगीन साहित्य (1826 ई. से 1870 ई.), हेमचंद्र–गुणाभिराम युगीन साहित्य (1870 ई. से 1890 ई.), रोमांटिक युग (1890 ई. से 1943 ई.), सांप्रतिक काल (1940 ई. से अब तक) आदि काल खंडों में विभाजित किया है। 1846 ई. में प्रकाशित 'अरुणोदई' पत्रिका के जन्म से लेकर 'जोनाकी' के समय तक की अवधि को 'अरुणोदय युग' के रूप में चिह्नित किया गया है। मिशनरियों ने विशेष रूप से असमिया वर्णमाला व्यवस्था को शृंखलित करने की माँग की। मिशनरियों ने बोली जाने वाली भाषा के उच्चारण के आधार पर असमिया की एक नई वर्णमाला शैली विकसित की। 'अरुणोदय युग' में असमिया भाषा एक नया रूप धारण कर लेती है। अरुणोदय काल के दौरान, असमिया लेखकों आनंदराम ढेकियाल फूकन, हेमचंद्र बरुआ और गुनाभिराम बरुआ की रचनाओं ने असमिया भाषा को एक विशिष्ट आकार दिया। 'अरुणोदई' पत्रिका के बाद 'जोनाकी' (1889) नाम से असमिया साहित्य की एक नई पत्रिका आई। 'जोनाकी' पत्रिका की अवधि को रोमांटिक युग, बेजबरुवा युग के रूप में भी जाना जाता है। जोनाकी युग में असमिया भाषा ने एक परिष्कृत रूप धारण किया। इसके अलावा, इस अवधि के दौरान, 'असम बिलासिनी', 'असम समाचार', 'असम बंधु', आदि जैसी अच्छी पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हुईं, जिनमें साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे निबंध, उपन्यास, आधुनिक नाटक, जीवनी, यात्रा–साहित्य, व्यंग्य आदि पर ध्यान केंद्रित करके असमिया भाषा को एक नए रूप में स्थापित किया गया। असमिया भाषा की स्थिति अपने शुरूआती समय से ही उतार–चढ़ाव की रही है। हालाँकि, बीसवीं सदी के आठवें–नौवें दशक से असमिया भाषा की प्रकृति में परिवर्तन की प्रवृत्ति ध्यान देने योग्य है। वैश्वीकरण का भी असमिया भाषा और साहित्य पर प्रभूत प्रभाव परिलक्षित होता है। आज कोरोनाकाल में भी असमिया साहित्य के शिल्प और संवेदना का स्वरूप बदला है। संतोष की बात यह है कि तमाम गतिरोधों के बावजूद असमिया भाषा और साहित्य ने वर्ष 2020 में पर्याप्त समृद्धि हासिल की है।

यदि पुरस्कारों एवं उपलब्धियों की बात करें तो साल 2020 के असमिया भाषा के साहित्य अकादमी पुरस्कारों का विवरण कुछ इस प्रकार है– असमिया साहित्यकार डॉ. अपूर्व कुमार सैकिया को 'बेंछता' नामक लघु कथाओं के संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. सैकिया का जन्म 1963 में नगाँव, असम में हुआ। पेशे से चिकित्सक डॉ. सैकिया वर्तमान में गुवाहाटी कर्मचारी बीमा निगम आदर्श चिकित्सा में मुख्य चिकित्सा अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। उनकी लघु कथाओं के अन्य संग्रहों में 'व्यर्थ नायक, 'विषयः प्रेमर संविधान', 'माटी आखरा', 'बजारत एदिन', 'लिंग मुक्त पृथिबीर साधु', 'चतर उरही' आदि शामिल हैं। इस पुरस्कार से पहले डॉ. अपूर्व कुमार सैकिया को असम साहित्य सभा के 'अंबिकागिरी रायचौधरी पुरस्कार' से भी सम्मानित किया जा चुका है। इन्हें साहित्य अकादमी के 'कथा संधि सम्मान' सहित अन्य कई पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं।

द्विजेन कुमार दास को अपने कवितासंग्रह 'मेघ–घोरा' के लिए इस वर्ष का युवा साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। स्वर्गीय हरिनारायण दास एवं स्वर्गीय जामिनी दास के इकलौते पुत्र और तामुलपुर इलाके के अंतर्गत कालाकुची गाँव के निवासी द्विजेन कुमार दास की सफलता ने पूरे इलाके में खुशी की लहर ला दी। इस पुरस्कार की खबर मिलते ही तामुलपुर की विभिन्न संस्थाओं ने उन्हें बधाई दी। द्विजेन कुमार दास कम उम्र से ही साहित्य के अध्ययन में रत हैं। उन्होंने कई कविताएँ एवं कहानियाँ लिखी हैं। उनके लेख असम के विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं। द्विजेन कुमार दास का पहला काव्यसंग्रह

'उषाह थाके माने अ मने तरा' 2008 में प्रकाशित हुआ था। कविताओं का यह संग्रह अपने प्रकाशन के बाद पाठकों के बीच विशेष ख्याति प्राप्त करने में सफल रहा। हाल के दिनों में उन्होंने अध्यापन के समानांतर अपना साहित्यिक अभ्यास भी जारी रखा है।

माधुरिमा घरफलिया को असमिया बाल कहानी संग्रह 'फचंग' के लिए बाल साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाज़ा गया है। इस संग्रह में बच्चों के लिए कहानियाँ संकलित हैं। शिवसागर की रहने वाली माधुरिमा घरफलिया शिवसागर गर्ल्स कॉलेज से ग्रेजुएट हैं। वह वर्तमान में नोएडा, दिल्ली में रहती हैं। लेखक के द्वारा प्रकाशित पहली पुस्तक यही है, जो बाल साहित्य से संबंधित है। माधुरिमा घरफलिया की बाल कहानियाँ 'माया', 'अन्य एक पृथिवी', 'मौचाक' आदि भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

युवा कहानीकार अभिजीत बोरा को वर्ष 2020 के लिए मुनीन बरकतकी पुरस्कार से नवाजा गया। यह पुरस्कार बोरा को उनकी लघु कहानी 'देउका कोबाई जाय' के लिए दिया गया है। पुरस्कार स्वरूप उन्हें पचास हजार रुपए नकद, एक स्मृति चिह्न और प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ है।

इस वर्ष असमिया साहित्य की विविध विधाओं के अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए। इन ग्रंथों ने असमिया साहित्य की प्रगतिशील धारा को विकास की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। 'आकाश चुबलई' नामक ग्रंथ देवकिशोर बरुआ के द्वारा लिखा गया है। 'आकाश चुबलई' पुस्तक में कुछ ऐसे प्रश्नों के बहुत ही सरल उत्तर हैं, जो अनादि काल से लोगों के मन में जिज्ञासा रूप में रहे हैं। यह पुस्तक आम जनता के साथ–साथ छात्रों के लिए जानकारी का एक बड़ा स्रोत है। पुस्तक छह अध्यायों में विभक्त है। इसमें ज्योतिषियों की विभिन्न गतिविधियों पर चर्चा की गई है, रात्रि के आकाश में देखे जाने वाले नक्षत्रों के साथ–साथ आकाश में चमकते तारों का वर्णन किया गया है। हमारे सौरमंडल के जन्म के रहस्य के साथ–साथ सौरमंडल के ग्रहों, उपग्रहों, धूमकेतुओं, क्षुद्रग्रहों आदि के बारे में विवरण दिया गया है और इन ग्रहों को ज्योतिषीय परिप्रेक्ष्य में देखने के कुछ तरीकों का भी वर्णन किया गया है। साथ ही कई खगोलीय परियोजनाओं का वर्णन, आकाश को मापने के कुछ सरलतम तरीकों, कुछ दूरबीनों और कुछ विशेष खगोलीय ज्योतिष का संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है। मृणाल शर्मा एवं डॉ. मालविका भट्टाचार्य की पुस्तक 'अपराध तदंततआरक्षीर भूमिका' 2020 के दिसंबर में आई। यह असमिया में इस तरह के शोध पर पहली पुस्तक है। पुस्तक में विस्तार से चर्चा की गई है कि आपराधिक जाँच कैसे शुरू की जाती है। लेखक इस पुस्तक में अपराध की जाँच के दौरान पुलिस द्वारा पालन किए जाने वाले कानूनी और नियामक पहलुओं पर भी चर्चा करते हैं। इसका आमुख अपराधीकरण में साक्ष्य की भूमिका से संबंधित है। साथ ही इनमें जाँच कैसे की जाती है, शिकायत कैसे दर्ज की जाती है, कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों की जाँच के लिए की जाने वाली व्यवस्थाओं की संक्षिप्त चर्चा, पुलिस द्वारा अदालत में प्रस्तुत किए जाने वाले आवेदनों के महत्वपूर्ण विवरणों आदि पर शोधपूर्ण तरीके से चर्चा की गई है।

प्रणब कुमार शर्मा जी का 'कलंतर सिम्फनी' उपन्यास अगस्त, 2020 में प्रकाशित हुआ है। इस पुस्तक में घोषणा की गई है कि 'कोरोना वायरस मानव निर्मित नहीं है के इसी दुष्प्रचार ने संयुक्त राज्य अमरीका और चीन को युद्ध छेड़ने और पूरी दुनिया को गुमराह करने के लिए प्रेरित किया है। दरअसल, लाखों साल पहले हिमयुग में ग्लोबल वार्मिंग के तहत ग्लेशियरों के पिघलने के कारण इस वायरस को 2020 की दहशत का कारण बना दिया था।

मधुरिमा बरुआ की पुस्तक 'गंगा चिलनी के देउकारे..... कैम्ब्रिज, बर्मिंघम, लंदन आदि' महत्वपूर्ण हैं। ये पुस्तकें मई, 2020 में प्रकाशित हुईं। कैम्ब्रिज, बर्मिंघम, लंदन आदि विचारशील लेखिका मधुरिमा बरुआ का नवीनतम यात्रा वृत्तांत है। यह एक पारंपरिक यात्रा संस्मरण नहीं है। हालाँकि यह लंदन, कैम्ब्रिज और बर्मिंघम यात्रा के अनुभवों पर आधारित है। लेखक ने यात्रा–वृत्तांत को वाक्पटु

कथाओं और उपन्यासों के साथ अच्छी तरह से पढ़ी जाने वाली पुस्तक के रूप में बदल दिया है। डॉ. रमेन हजारिका की 'अख्यात लोकरमालिता' (निबंधों का संग्रह) अक्तूबर, 2020 में प्रकाशित हुई थी। डॉ. रमेन हजारिका सोशल और प्रिंट मीडिया के लोकप्रिय लेखक हैं। उनकी जीवनीपरक रचनाएँ पाठकों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। पाठक को पुस्तक के पृष्ठ–दर–पृष्ठ पर लेखक के विभिन्न अनुभवों की एक जीवंत कहानी मिलेगी।

डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य की 'साहित्य समल' (संकलन) सितंबर, 2020 में प्रकाशित हुआ। नीरोद चौधरी देव का 'नकल बाघ और जुई' उपन्यास संकलन नवंबर, 2020 में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक को असमिया लघु कहानी, उपन्यासों और विभिन्न निबंधों के लेखक नीरोद चौधरी देव द्वारा लिखे गए सबसे लोकप्रिय उपन्यास संकलन के रूप में पुनर्मुद्रित किया गया है। बहुत ही रोमांटिक और यथार्थवादी उपन्यासों का यह संग्रह निश्चित रूप से सुधि पाठकों के लिए महत्वपूर्ण है। नीरोद चौधरी देव का 'देवी' और 'पानी'(उपन्यास संकलन) उपन्यासों का पुनर्मुद्रण नवंबर, 2020 में हुआ। इस पुस्तक को लेखक नीरोद चौधरी देव द्वारा लिखे गए सबसे लोकप्रिय उपन्यासों के संग्रह के रूप में पुनर्मुद्रित किया गया है। नीरोद चौधरी देव ने अपने असमिया लघु कहानी, उपन्यासों और विभिन्न निबंधों के माध्यम से एक समय में अपार लोकप्रियता हासिल की है। 'देवी' एक यथार्थवादी उपन्यास है, जो 1970 के भाषा आंदोलन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। दूसरी ओर, 'पानी', असम में पागलाडिया नदी के तट पर बसे एक गाँव बनपानी की दुखद कहानी की औपन्यासिक प्रस्तुति है। दोनों ही उपन्यास बहुत ही यथार्थवादी मिज़ाज के हैं और पाठकों का ध्यानाकृष्ट करने में सक्षम हैं।

इसी साल खज़ेन डेका की 'सेउजिया सपोनर रंग' उपन्यास प्रकाशित हुआ। वास्तविक अनुभव के आधार पर लिखा गया यह उपन्यास गाँव के सुंदर वातावरण के साथ–साथ नगरीय जीवन के सुंदर प्रतिबिंब को भी दर्शाता है। यह पुस्तक इस बात का उदाहरण है कि जीवन में विभिन्न नकारात्मक स्थितियों जैसे कि गरीबी, पर्यावरण की असमानता, असफल प्रेम आदि से सकारात्मक तरीके से कैसे निपटा जाए। खज़ेन डेका की दूसरी पुस्तक 'जीवन उपन्यासर पम खेदि' मई, 2020 में आई। लेखक के जीवन के अनुभव के विभिन्न पहलुओं के आलोक में लिखा गया एक यथार्थवादी दस्तावेज 'जीवन उपन्यासर पम खेदि' है। अतिशयोक्तिपूर्ण, सरल और सीधा और मुखर, हर वाक्य पाठक की जिज्ञासा को समाज के अंत तक ले जाने के लिए निश्चित है।

इसी वर्ष रंतु सैकिया की संकलित पुस्तक 'गीता सिंधु' भी प्रकाशित हुई, जो असमिया गद्य और व्यासदेव के काव्य का सरलीकरण है। इसमें श्रीमद्भगवद् गीता के सभी शब्द 'गीता सिंधु' हैं। मूल संस्कृत गीता के 600 छंदों को 'गीता सिंधु' में असमिया गद्य और पद्य में इस तरह से प्रकाशित किया गया है, जिसे सभी वर्ग के लोग आसानी से समझ सकें।

इसके अलावा वर्ष 2020 में विजय शंकर बर्मन की 'मोई माटिर नाभित काण थोई खुनिशु' तथा येछे दरजी थांचि की तीन पुस्तकों 'विषकन्यार देखत', 'मिचिं', तथा 'मोई आको जनम लम' का प्रकाशन हुआ। इसी साल डॉ. शैलेन दास की 'असमर जात्रा', टूनज्योति गोगोई की 'इयांदाबू संधिर परा का विरोधी आंदोलनलोई' आदि पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं।

इसी वर्ष असम आंदोलन के परिणामस्वरूप स्थापित तेजपुर केंद्रीय विश्वविद्यालय में असमिया विभाग की स्थापना हुई। हालाँकि, यह कहा जा सकता है कि वर्ष 2011 में स्थापित असमिया अध्ययन केंद्र के रूप में इस विभाग की नींव पहले ही पड़ चुकी थी। विभाग ने इस वर्ष मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक की असमिया पांडुलिपियों, पुस्तकों और महत्वपूर्ण दस्तावेजों का डिजिटल संग्रह किया है। असमिया साहित्य की प्राचीन, ऐतिहासिक और दुर्लभ कृतियों जैसे माधव कंदली, शंकरदेव, माधवदेव, राम, सरस्वती आदि की पांडुलिपियों और कृतियों की मानक प्रतियों का

संकलन और संरक्षण विभाग की प्राथमिकताओं में शामिल है। विभाग ने वर्ष 2020 में असमिया भाषा में स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम सहित कई महत्वपूर्ण पाठयक्रमों की शुरूआत की है।

इस वर्ष असम साहित्य सभा का 75वाँ पूर्ण और द्विवार्षिक अधिवेशन सत्र 30 जनवरी, 2020 से आधिकारिक रूप से शुरू हुआ जो 4 फरवरी तक असम के शुवालकुचि में चला। प्रारंभिक सत्र में टाई आहोम साहित्य सभा के सभापति दयानंद बूढ़ागोहाईं ने बीज वक्तव्य रखा।

कुलमिलाकर वर्ष 2020 तमाम तरह की व्याधियों, प्राकृतिक आपदाओं और अप्रिय घटनाओं के बावजूद साहित्य–सृजन और साहित्यिक उपलब्धियों की दृष्टि से पर्याप्त संतोषजनक रहा। घोर हताशा, निराशा और निष्क्रियता के बीच भी असमिया भाषा और साहित्य अपनी बहुआयामी गतिविधियों के साथ पाठकों के बीच सक्रियता और रचनात्मकता का संदेश प्रेषित करता रहा, उनमें सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता रहा। इस साल की समस्त साहित्यिक उपलब्धियों और गतिविधियों के संदर्भ में निराला के शब्दों में यह कहा जा सकता है कि– "दीप जलता रहा, हवा चलती रही/काल खलता रहा, कला फलती रही"।

– सी 93, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय कैंपस, तेजपुर, नपाम, असम–784028

❑❑❑

2

उर्दू साहित्य

डॉ. जुबेदा एच. मुल्ला

हमारे भूतपूर्व जनप्रिय स्वर्गीय राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपनी पुस्तक 'भारत 2020' में यह चेतावनी दी है कि सन् 2020 में भयंकर प्राकृतिक परिवर्तनों का विश्व से सामना होगा। विश्व के इतिहास में सन् 2020 अविस्मरणीय वर्ष सिद्ध हुआ है। सन् 2019 में चीन एवं अन्य पाश्चात्य देशों में काँटेदार कीटाणु द्वारा 'कोरोना' नामक संक्रामक रोग का आगमन हुआ, जिसने सारी दुनिया को हिला कर रख दिया। सन् 2020 के प्रारंभ में ही यह रोग रेंगते हुए आ गया और भयंकर आँधी के समान संपूर्ण देश में फैल गया। 'कोरोना' ने वर्षभर प्रगति के द्वार बंद कर दिए। आज के इस वैज्ञानिक युग में मनुष्य दुनिया को अपनी मुट्ठी में समझ कर दर्प एवं स्वार्थ के सागर में गोते लगा रहा था, अचानक विधाता ने अपनी शक्ति का मात्र एक अंश 'कोरोना' के माध्यम से ऐसा दिखाया कि मनुष्य की बुद्धि ठिकाने आ गई। अब वह परमाणु शक्ति से शत्रु का सर्वनाश नहीं, अपितु 'कोरोना' कीटाणु से अपने आपको बचाने के दिन–रात प्रयास कर रहा है। कोरोना कीटाणु शक्ति ने परमाणु शक्ति को मात दे दिया है। आज संपूर्ण विश्व 'कोरोना–टीका' के शोध में निमग्न है। एक हद तक उसे सफलता भी प्राप्त हुई है, फिर भी अब भी मनुष्य को सामाजिक दूरियाँ बनाए रखना है। मुख पर मुखौटा लगा कर जीवन व्यवहार करना है। यह एक अद्भुत परिस्थिति है, जिसका सामना विश्व के प्रत्येक मनुष्य को करना है। 'कोरोना' से डरना नहीं, बल्कि कोरोना से लड़ना है। इस लड़ाई से जीत के रूप में विश्व कल्याण करना है।

विश्व के इतिहास में सन् 2020 'कोविड–19' के नाम से विख्यात है। इस वर्ष में विधाता ने विश्व के प्रत्येक देश की प्रगति को 'ताला' लगा दिया। अर्थात् विश्वभर में 'लॉकडॉउन' ने प्रत्येक मनुष्य को घरों में बंद कर दिया। यहाँ तक कि खुली हवा में मनुष्य का साँस लेना भी बंद हो गया। आज सन् 2021 में भी 'कोरोना–टीका' का आविष्कार होने के बावजूद मुँह पर मास्क लगाना, दो गज़ की दूरी बनाए रखना और हाथों का बार–बार दो मिनट तक धोना अत्यंत आवश्यक है। आज भी विश्व में 'कोरोना' के काँटेदार कीटाणु पुरी तरह से समाप्त नहीं हुए हैं। सन् 2020 में 'कोरोना' कीटाणुओं ने संपूर्ण विश्व पर धावा बोल दिया था। अरबों–खरबों कोरोना कीटाणुओं के कारण मानव–जीवन थम सा गया था।

विश्व के प्रत्येक देश की सरकार ने अन्य देशों के साथ अपना सारा वैमनस्य भुला कर 'कोरोना' रोग को मात देने के उद्देश्य से लोगों के समूह–संगठन पर कड़ी रोक लगा दी। विश्वभर में 'लॉकडॉउन' सफल रहा। लोगों का घरों से

बाहर निकलना बंद हो गया। सड़कों पर सवारियों की चहल–पहल थम गई। आकाश पर हवाई उड़ाने नहीं रहीं। पटरियों पर रेलों की गड़गड़ाहट नहीं रही। यहाँ तक कि भक्त–जनों की तीर्थ यात्राओं पर भी रोक लगा दी गई। लोगों का परस्पर मिलना–जुलना बंद हो गया। सेंकड़ों शादियाँ स्थगित हो गईं। बच्चों के नामकरण समारोह, जन्म दिन कुछ भी नहीं मनाए गए। यहाँ तक कि सगे–संबांधियों की मृत्यु पर भी लोगों के जमघट पर प्रतिबंध लगाया गया। मेले, सभारंभ, राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय क्रीड़ा प्रतिस्पर्धा आदि भी बंद हो गए। 'कोराना' रोग इतनी तीव्र गति से विश्वभर में फैल गया कि लोग मृत्यु के भय के कारण विश्व के महाबंद के आह्वान को मन से स्वीकार किया और सरकार के आदेशों का पालन किया।

समाज और साहित्य में गहरा तादात्म्य होता है। शुरू से हम यह सुनते और मानते आ रहे हैं कि 'साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज और साहित्य में चोली–दामन का साथ होता है। सन् 2020 में मनुष्य का सामाजिक जीवन थम सा गया था और प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक गतिविधियाँ विश्राम करने लगी थीं। इन परिस्थितियों में भी साहित्यकारों की लेखनियाँ बराबर चल रही थीं। सन् 2020 को कोराना काल कहा जाए तो कोई ग़लत न होगा। यह काल साहित्यकारों के लिए एक भयंकर असाधारण घटना काल था।

लेखक की जब तक साँस चलती है, तब तक उसकी लेखनी भी चलती रहती है। सन् 2020 में देश की प्रत्येक भाषा के लेखक का एक मात्र विषय 'करोना' या कोविड–19 था। इस अवधी में उर्दू लेखकों ने भी साहित्य की प्रत्येक विधा में 'कोरोना' पर ख़ूब लिखा है, परंतु उनके साहित्य का प्रकाशन ना के बराबर है। जब विश्व भर में सन् 2020 में मिल, फैक्ट्रियाँ, कारखानें, दुकानें, बड़े–बाज़ार, मॉल आदि सब कुछ 'लॉकडाउन' के कारण बंद थे। इन हालातों में सामाजिक दूरियाँ बनाए रखने के उददेश्य से प्रिंटिग प्रेस, छापाखाने आदि भी बंद थे। फिर भी इस वर्ष 'कोरोना' को ही प्रधान विषय के रूप में स्वीकार करके लघु लेख आदि लिख कर 'मोबाइल' 'यू–ट्यूब' द्वारा प्रसारित किया है। मीठी, कर्ण–मधुर, लचीली, उदारवादी उर्दू भाषा में जो भी लिखा जाता है, वह मन को हर लेता है। इस भाषा की महक ने संपूर्ण विश्व में हमारे भारत को महकाया है।

सन् 2020, 'कोरोना काल' में समाचार–पत्रों का प्रकाशन भी बंद हो गया था। लोगों ने घर बैठे दूरदर्शन द्वारा 'जी–सलाम, विन' (win) आदि चैनलों के माध्यम से उर्दू में सुबह–दोपहर, शाम में ख़बरों को सुन कर विश्वभर की दशा–दिशा का ज्ञान प्राप्त किया। हमारा भारत बहुभाषी देश है, जहाँ देश के प्रत्येक राज्य की अपनी एक विशेष प्रादेशिक सरकारी भाषा है। भारत की प्रत्येक प्रादेशिक भाषा बड़ी समृद्ध है और उसका साहित्य भी बड़ा प्रभावपूर्ण एवं समाज के लिए अत्यंत लाभदायक है। 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय– नई दिल्ली' प्रतिवर्ष भारत की प्रत्येक भाषा के साहित्य का सर्वेक्षण करके 'भाषा' 'वार्षिकी' द्वारा प्रत्येक भाषा पर सर्वेक्षण आलेख प्रस्तुत करके हमारे बहुभाषी देश के गौरव को उजागर करने का सराहनीय कार्य करता है। हमारी 'भारत सरकार' भी प्रत्येक भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वित्तीय सहायता भी प्रदान करती है।

भारत में 'राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद' नई दिल्ली एक ऐसी संस्था है, जहाँ प्रतिवर्ष उर्दू' साहित्य की प्रत्येक विधा पर सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। सन् 2020 में 'लॉकडाउन' में छूट मिलने के उपरांत सितंबर माह से इस संस्था से कई उर्दू साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है, जिनका विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है–

माह सितंबर से दिसंबर 2020 तक सैय्यद इसार अहमद द्वारा लिखी गईं 'मसनवी मौलाना रूम' की जीवनी पर उनके कार्यों को दर्शाने वाली छह पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। उर्दू साहित्य में इस जीवनी का इस वर्ष महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मौलाना रूप इस्लामी इतिहास में श्रेष्ठ स्थान रखते हैं। इस वर्ष गुलाम सरवर की विख्यात साहित्यिक पुस्तक 'जमिउल हिकायत व लवामियुर रवायत' प्रकाशित हुई है। जो कुछ कल बीता है, आज वह इतिहास कहलाता है। समाज, राष्ट्र और

विश्व में घटने वाली प्रत्येक घटना का इतिहास विश्व की प्रत्येक भाषा में रचा जाता है। उर्दू इतिहास विश्व में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस वर्ष अक्तूबर में उर्दू के विख्यात इतिहासकार ताराचंद की ऐतिहासिक पुस्तक 'तारीख़–ए–तहरीक–आज़ादी–ए–हिंद' भाग दो का प्रकाशन हुआ है। इसी वर्ष एक और मुहम्मद सज्जाद की ऐतिहासिक पुस्तक 'नौ आबादियात और लाहिदगी पसंदी की मज़ाहिरात मुज़्ज़फ़र पुर के मुसलमान 1857 के बाद' प्रकाशित हुई है, जो इतिहास की एक विलक्षण पुस्तक है। इस वर्ष डॉ. मिसबाह अहमद सिद्दीकी की उर्दू साहित्यिक पुस्तक 'तज़किरा–ए–शोरा–ए–रामपुर' प्रकाश में आई है। एक और साहित्यिक पुस्तक प्रो. मोहसिन उस्मान नदवी द्वारा लिखी गई 'मशहीर–अदबियात मशरीख़ी' सन् 2020 में प्रकाशित हुई है, जो पाठकों में चर्चित है।

उर्दू भारत की एक ऐसी विख्यात भाषा है, जिसकी मिठास सुनने वालों का मन मोह लेती है और उसका उच्चारण हर एक को प्रभावित करता है। सिंतबर 2020 में उर्दू भाषा के उच्चारण के संबंध में शकील हसन शमसी की पुस्तक 'तलफ़्फ़ुज़' प्रकाशित हुई है, जो एक विशेष पुस्तक है। इस वर्ष डॉ. सैय्यद अलीम अशरफ़ जायसी की उर्दू भाषा पर पुस्तक 'उर्दू ज़बान व अदब पर अरबी के असरात' का प्रकाशन हुआ है। हिंदी भाषा हमारे देश की सुरीली धड़कन है तो हिंदी की जुड़वाँ बहन उर्दू हमारे देश की मिठास है। उर्दू भाषा का इतिहास, साहित्य एवं काव्य हमारे देश की अज़मत (श्रेष्ठता) का बखान करने में सर्वश्रेष्ठ है। उर्दू एक व्याकरणबद्ध महत्वपूर्ण मानक भाषा है। इसके व्याकरण पर अस्मत जाविद की नई पुस्तक 'नई उर्दू क़वाइद' इस वर्ष प्रकाशित हुई है।

जुलाई सन् 2020 में उर्दू साहित्य पर रशीद अंजूम की पुस्तक 'कौसर चाँद पूरी' का प्रकाशन हुआ है, जो पाठकों में चर्चित है। इस वर्ष शरफ़ुन निहार की साहित्यिक पुस्तक 'ख़वाजा हैदर अली आतिश' पाठकों के लिए उपलब्ध है। अब्दुल कलाम ख़ासीमी द्वारा लिखी गई उर्दू समीक्षात्मक पुस्तक 'मशरीख़ी उर्दू तनख़ीद की रिवायत' इस वर्ष दिल्ली से प्रकाशित हुई है। शेख़ अख़ील अहमद द्वारा लिखी गई साहित्यिक पुस्तक 'तहफ़िमात–व–तरजीयात' का प्रकाशन भी इसी वर्ष हुआ है, जो अपनी विशेष और अनोखी शैली में लिखी गई है।

आज के बच्चे हमारे भविष्य के नागरिक व नेता हैं। कोई भी सुलझा हुआ साहित्यकार बच्चों की कभी उपेक्षा नहीं करता। सितंबर सन् 2020 में बच्चों के लिए रजब अली बेग सरवर द्वारा लिखी गई पुस्तक 'फ़सानाए अजाइब' प्रकाश में आई है, जिसमें बच्चों की जिज्ञासा को तृप्त करने वाले सृष्टि से संबंधित कई विषय हैं। उर्दू साहित्य में बाल साहित्य जितना आकर्षित है, जीवनियाँ भी उतनी ही प्रभावपूर्ण लिखी गई हैं। इस वर्ष जुलाई में गोपाल मित्तल की जीवनी 'प्रेम गोपाल मित्तल' के नाम से प्रकाशित हुई है। इस वर्ष 'दरस–ए–बलाग़त' नामक उर्दू भाषा पर एक उत्तम पुस्तक का प्रकाशन हुआ है, जो 'एन.पी.यू.' की देन है। इस वर्ष शमशुल उलमा मौलाना मुहम्मद हुसैन आज़ाद की विख्यात पुस्तक 'दरबार–ए–अकबरी' का भी प्रकाशन हुआ है, जो उर्दू इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

उर्दू विश्व की एक विख्यात भारतीय भाषा है, जो विश्वभर में बोली–समझी और लिखी जाती है। यह भारत की एक समृद्ध भाषा है, जो देश के स्वतंत्रता आंदोलनों के समय से सतत प्रगति की ओर अग्रसर है। प्रतिवर्ष उर्दू साहित्य में निखार आता रहा है और प्रतिवर्ष इसकी प्रत्येक विधा में प्रगति होती रही है। 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' की वित्तीय सहायता से प्रतिवर्ष प्रकाशित साहित्य सर्वेक्षण अंक 'वार्षिकी' इस बात की साक्षी है कि 'उर्दू साहित्य' प्रतिवर्ष नए–नए साहित्यिक आयाम के साथ अपने देश की कीर्ति को विश्वभर में फैलाने में सफल है।

भारत में उर्दू भाषा की प्रगति में 'किताब मेले' की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह खेद का विषय है कि सन् 2020 में कोविड–19 के कारण कहीं भी किसी किताब–मेले का आयोजन नहीं किया गया। मनुष्य सामाजिक–प्राणी है और लेखक साहित्यिक प्राणी होता है। उस पर दोहरी ज़िम्मेदारी होती है कि उसका लिखना और कहना समाज के

हित में हो। समाज मानव प्रगति की प्रथम पहचान है। जब मानव समाज अस्तित्व में आया तो भाषा अभिव्यक्ति का दृढ़ साधन बनी। हम बड़े भाग्यशाली हैं कि हमारे देश में एक साथ कई भाषाएँ विकसित हुईं। 'वार्षिकी' पत्रिका में प्रतिवर्ष हमारे देश की सभी प्रमुख भाषाओं का सर्वेक्षण आलेख प्रकाशित होता है, जिससे पता चलता है कि साहित्य में सतत परिवर्तन होते रहते हैं। 'परिवर्तन प्रकृति का नियम' है। 'कोविड–19' भी समाज में परिवर्तन का सन् 2020 में एक प्रधान कारण रहा है। सन् 2020 का उर्दू साहित्य आगामी सालों में अवश्य प्रकाश में आएगा।

– 'बैतुलहाशमी', मकान नं.–152, ताजनगर, हुबली, धारवाड़, कर्नाटक–580031

❑❑❑

3

कन्नड साहित्य

डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'

भूमिका : 2020 में प्रकाशित कन्नड कृतियाँ– साहित्यिक और अनुवादित भी वैविध्यपूर्ण होकर कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं। ये कृतियाँ मनोरंजक और भावना प्रधान ही नहीं, पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक भी हैं। अंतर्जाल और वेब–पुस्तकें और वेब–पत्रिका के संदर्भ में भी पाठकों की संख्या पहले से बढ़ रही है। 2020 के साहित्य को देखने से लगता है कि ये नई पीढ़ी के लेखक पाठकों को आकर्षित करते हैं। नए सपने रचने का सामर्थ्य और नई आवाज़ बुलंद होते देखते हैं। युवा कवियों में चाँद पाषा, बी.आर. श्रुति और शिल्प बेण्णेगेरे की रचनाएँ प्रातिनिधिक हैं।

2020 में कन्नड साहित्यकार विशिष्ट प्रशस्ति पुरस्कारों से नवाजे गए। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि कन्नड के लोकप्रिय साहित्यकार केंद्र साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार जी प्रतिष्ठित सम्मान पद्मभूषण से विभूषित हुए। 2020 का केंद्र साहित्य अकादमी पुस्कार कर्नाटक के पूर्व मूख्यमंत्री कवि और उपन्यासकार वीरप्पा मोयलीजी को उनकी कृति 'श्री बाहुबलि अहिंसा दिग्वजयं' के लिए दिया गया। केंद्र साहित्य अकादमी का ही बाल साहित्य पुरस्कार कर्नाटक के श्री एच. एस. प्याकोड जी को उनकी रचना 'नानु अंबेडकर' के लिए दिया गया। साथ ही कवि दोड्डरंगेगौड़ा जी और जोगती मंजम्मा पद्मश्री सम्मान से विभूषित हुए।

2020 की 'नृपतुंग प्रशस्ति' जी.एस. अमूर जी को प्राप्त हुई है।

कविता

2020 में प्रकाशित काव्य कृतियों में उल्लेखनीय हैं– सिद्धलिंग पट्टणशेट्टी का कविता संकलन 'चिंतामणि', बी. आर. लक्ष्मणराव का काव्य 'नवोन्मेष', कथाकार दिवाकर जी का कविता संकलन 'सोत कण्णुगळन्नु मिटकिसुव मध्याह्न' (थकी आँखें मिचकाने का दोपहर) और एच. एस. वेंकटेशमूर्ति जी का महाकाव्य 'बुद्धचरण' तथा कृष्णमूर्ति हनूर द्वारा रचित 'सरस सौगंधिक परिमल' (कुमार–व्यास काव्य संग्रह)।

गद्य–कविता संकलन 'गायगोंडिवे तुटि निन्नवे पद हाडि' (घायल हुए हैं ओंठ तुम्हारा ही गीत गाकर) श्री टी. एस. गोखर की रचना है। मूलतः कहानीकार टी. एस. गोखर के इस संकलन में उनके काव्य–रूप में नए मार्ग की तलाश का प्रयास है। रचना क्रम के बारे में रचनाकार बताते हैं कि काव्य की लय, कलात्मकता, उसका सौंदर्य और गद्य के अनुपम संयोग से इन रचनाओं में भाव तीव्रता है। उसकी एक मिसाल–

तुम तो हवा में डोलनेवाली धान की बाली की तरह
वहीं पर शोभित होकर खड़ी थी।

आखिर तुम्हारा पता मिल गया
कड़ी धूप में पेड़ की छाया मिलने की तरह।

बाल कविता के क्षेत्र में बड़ा नाम है जंबुनाथ कंचणि। उनकी सचित्र बाल–कविताएँ'अवनेल्लिरुवनु हेळम्मा' (वह कहाँ है बताओ माई) शीर्षक से प्रकाशित है। इनकी कविता में ताज़ापन है। बच्चों के अबोध मन को विकसित करने की शक्ति है।

कृष्णमूर्ति हनूर की कृति 'सरस सौगंधिक परिमल' में कुमार व्यास को नए परिमल में परिचय कराने का प्रयास है। कवि कुमारव्यास को समझने में यह कृति सहायक है।

युवा कवियों में चाँद पाषा रचित 'चित्र चिगुरुव होत्तु' (चित्र अंकुरने का समय), बी. आर. श्रुति की 'जीरो बैलेंस' और शिल्प बेण्णेगेरे की 'कोल्लुववने देवरादनल्ल' (हत्यारा ही देव बन गया न!) युवा प्रतिनिधि कृतियाँ हैं। इनमें सामाजिक रोग के लिए दवा ढूँढने का प्रयत्न है। काव्य का तत्व पकड़कर कवि अपनी छाती में काव्य बीज बोने जा रहा हो ऐसा लगता है।

'सुम्मने बिद्दिरुव बिक्कुगळु' (चुपचाप पड़ी हिचकियाँ) मौल्य स्वामी का कविता संकलन है। दुःख, विषाद, क्रोध स्थायी भाव में होकर मौल्या जी की कविताएँ दर्द में डुबोकर निकालने के समान हैं। ये कविताएँ सहृदयों को सताती हैं। 'चिंतामणि' कविता संकलन में सिद्धलिंग पट्टणशेट्टी जी ज़िंदगी के प्रति विस्मय तथा प्रीति उद्दीप्त करनेवाली कविताओं को देते हैं। यहाँ पूर्णिमा के सौंदर्य का आस्वादन पढ़कर ही किया जा सकता है।

'कालधर्म' कविता में सूखी लता को देखे उसाँस लेते संदर्भ को देखिए–

मेरे देश का मेरा प्रतिबिंब है मेरा गाँव
भीड़भाड़ का घोंसला यह गाँव
नए जमाने की पुरानी सूखी लता है।

बुद्ध आडंबर से प्राप्त नहीं होता। उस भाव की अभिव्यक्ति देखिए–

बुद्ध प्राप्त होता है
केवल अपने बुद्ध शुद्धों को
चाह पका फल हो तो
इच्छा के बीच फूटने देगा
समृद्धि मिट्टी ही तो
स्वयं ही प्राप्त होता है।

'नील आकाश' ना. मोगसाले जी की अब तक की कविताओं का समग्र संकलन है। उनका काव्य 'व्यक्त से अव्यक्त की ओर' सरलता से संकीर्णता की ओर और वाच्य से ध्वनि पूर्णता की ओर बह निकला है।

काव्य का नया विन्यास देखिए–

विहग के पंख बन उड़ी जो कविता
उतरी गेंद की तरह नीचे
दोनों हाथ उठाकर पकड़ने निकला तो
हाथ लगने पर भी न लगने के समान गिरी जमीन पर।

कवि का मानवीय आधार पर दैवत्व का शोध उनके काव्य की विशेषता है। उनकी काव्य प्रतिभा की एक झलक देखिए–

टूटे को समेटने का
पागलपन मेरा
समेट को तोड़कर
देखना आपकी इच्छा

बी. आर लक्ष्मणराव का नौवाँ कविता संकलन हैं 'मनोन्मेष'। पाँच दशकों से काव्य सुमन खिलाने पर भी उनकी काव्य कृति थकी नहीं। नयापन या नव उन्मेष उनके काव्य का गुण या लक्षण है। प्रीति कवि के लिए भूमि, आकाश के रूप में है। उसी प्रीति को लेकर पूर्णाहुति में कहते हैं–

तुम्हारा सारा प्रेम संदेश स्वाहा
खासगी सेल्फी भी स्वाहा

'जेनु मलेय हेण्णु' (जेनु मलेय वधू) एच. आर. सुजाता जी का कविता संकलन है। यह तमिल 'संगम' काव्य प्रभाव से रचित कृति है। इस कृति की 'कडल मीनू उप्पार हुडुगनू' (समुद्र की मछली और उप्पार लड़का)

गरमी आएगी ही मछली की टोकरी से मत्स्यगंध!
ढोने वाले के पीछे ही नमक पसीने का बोरे ढोनेवाले
सागर तट वाली, मछली की आँखोंवाली
नमक तन की लड़की को भाता वह उप्पार लड़के का स्नेह।

इसमें मलेनाडु (पश्चीम तटीय प्रदेश) जीवन का शब्दचित्र, जीवन के लय के साथ गहरा अंतः संबंध रखता है। यहाँ की कविताओं को पढ़ते हुए धरती की जड़ को देख बतियाकर आई कवयित्री के प्रति अभिमान बढ़ता है।

'अमृतधारे' विजयलक्ष्मी सत्यमूर्ति जी का कविता संकलन है। इसमें इनकी 70 लहरियों का संकलन है। ये रचनाएँ भाषा, भाव और वस्तु की दृष्टि से ह्रदय और समता से युक्त हैं। कल के आकर्षण के साथ आज का भाव और वस्तु जगत भी मिला हुआ हो और कल के सपने भी संजोए हुए हो, इस दृष्टि से कवयित्री का प्रयत्न भरोसेमंद है।

भाव लहरी का एक उदाहरण–

प्रेम की रीति प्रेम की रुचि
चुंबन कला युक्त आलिंगन
के सुंदर मधुर सपनों का राजा
तुम हो ऐसा कहना है क्या सखा!

उल्लेखनीय कविता संकलनों में एच. के. सत्यभाम पंजुनाथ का 'अंतःसख', श्रीमती रानी गोविंदराजु द्वारा संपादित 80 कविताओं का संकलन 'गर्भ संजात तपोमाते' (माँ पर लिखी कविताओं का संकलन), एम. जी. कृष्णमूर्ति का 'प्रेम विरागिय नडुगत्तल कविते' (प्रेमविरागी की बीच अंधेरे की कविता) कविता संकलन है, और राजेंद्र प्रसाद नरगुंद का 'बेण्णे मुरुकु' हाय्कु संकलन भी शामिल हैं।

नाटक

2020 में प्रकाशित नाटकों में के. वी. अक्षर द्वारा रचित 'परमपद सोपानपट' उल्लेखनीय है। 'विरुद्ध' श्री अ. रा. निवास रचित नाटक है। इसमें प्रभुत्व के विरुद्ध दृढ़ आवाज है। प्रतिभा और प्रभुत्व के बीच हमेशा संघर्ष रहता ही है। कन्नड साहित्य के संदर्भ में तो पंप के समय से ऐसे प्रतिरोध को पहचाना गया है। आज भी प्रमुख के विरुद्ध आवाज़ उठाने की शक्ति नहीं है। ऐसे संदर्भ में यह नाटक बहुत प्रासंगिक है। नाटक का आरंभ ही ठोस ध्वनि में बोलनेवाले की आवश्यकता है– कथन से होता है। प्रभुत्व के विरुद्ध जो भी बोले वह 'देशद्रोह' है। नाटक में प्रतिमाओं और रूपकों का प्रयोग समर्थ रीति से किया गया है। पुराण के हिरण्यकशिपु पात्र के द्वारा आज प्रजातंत्र को जो खतरा है उसे समझाने का प्रयत्न है। हिरण्यकशिपु घोषित करता है कि "मैं विष्णुमुक्त लोक करूगाँ।" आज के संदर्भ की यह याद दिलाता है।

पत्रकार मधु बिल्लिनकोटे जी द्वारा रचित नाटक है 'कामगेति भूपाल'। यह चित्रदुर्ग (कर्नाटक) के वीर मदकरि नायक पर रचा गया है। इसमें 23 अंक हैं। मंचीय है और नाटक पठनीय भी है। इसी वस्तु को लेकर कन्नड के ख्यात उपन्यासकार ता. रा. सु. ने 'दुर्गास्तमान' उपन्यास लिखा था। 'दुर्गास्तमान' उपन्यास हिंदी में भी उपलब्ध है।

'चेकाव टु शांपेन' डॉ. हेमा पट्टणशेट्टी का नाटक है। इसका मंचन भी हुआ है। चेकाव रूस का ख्यात नाटककार, कहानीकार और चिंतक था। उनका पूरा नाम आंटन पाव्लोविच चेकाव है। इसकी जीवन दृष्टि को रंगरूप देने का प्रयत्न यहाँ हुआ है। चेकाव का दृढ़ विश्वास था कि श्रम और संस्कृति के एक होने पर ही सुदृढ़ देश का निर्माण संभव है। चेकाव शांपेन को जीवन का संभ्रम (आनंदोत्साह) समझता था, यह भाव नाटक में चित्रित है। आधुनिक जीवन की संकीर्णता और स्वस्थ नागरिक समाज के सपने– आसक्ति को कलात्मक ढंग से रचने की चेकाव की जीवन– विविधता इस नाटक में सफल रूप में रंगरूप में उतरी है।

कहानी

2020 में प्रकाशित कहानियों में उल्लेखनीय तथा पठनीय संकलन हैं– अब्दुल रशीद जी का कथा संकलन 'होत्तु गोत्तिल्लद कथेगळु' (काल और लक्ष्य रहित कहानियाँ), वैदेही जी का 'सल्मा मत्तु सुरभि' (सलमा और सुरभि) कथा संकलन, चेतनहळली का 'जीवनरेशिमे', कथा संकलन, नरेंद्र पै का 'कनसुगळु खासगी' (सपने खास है)। केशव मळगी कृत, जोगी की '108 : नाल्कु दशकद कथेगळु' (108 : चार दशक की कहानियाँ)।

गुरुप्रसाद कंटलकेरे के कथा संकलन 'केंडद बेळुदिंगळु' (अंगारों की चाँदनी) में वर्तमान का

परिणामकारी चित्र उभरा है। 'यहाँ सब ठीक है, समृद्ध है' वाली राजकीय प्रेरित चाँदनी की परिकल्पना के संदर्भ में, वह रम्य प्रकाश देश बहु संख्यकों को किस प्रकार अंगार के रूप में जला रहा है उसका कहानीकार ने प्रभावी चित्रण किया है। यहाँ की कहानियाँ सामाजिक मालिन्य में हमारी भागीदारी कितनी है, उस पर पाठकों को स्वविमर्श के लिए मजबूर करती हैं। इसी वर्ष प्रकाशित (2020 में) प्रसिद्ध महिला कहानीकार तेजश्री का कथा संकलन 'बेळळी मैं हुळ' (छाँदी तन कीट) में लेखिका का कथा–शिल्प आकर्षक है। स्त्रियों के मनोलोक पर बातें करती हुई, उस लोक के संकट के बारे में हमारा ध्यान खींचती है। छाया भट्ट जी का कथा संकलन 'बयलरसि होरटवळु' (मुक्तता को चाहकर जो निकली) की कथाएँ मंदश्रुति के अलाप जैसी आकर्षक हैं। छोटी–छोटी बातों के द्वारा जीवन के सौंदर्य को चित्रित करने के लिए, तड़पनेवाली छाया जी की कथाएँ सरलता में ही महत्व को साधने का प्रयास करती हैं।

अमरेश गिणिवार का 'हिंडे कुळळ' भी ध्यान खींचनेवाला कथा संकलन है। इसमें रायचूर प्रदेश की आम–जनता का दु:खदर्द और ग्राम भारत के दीन–दलितों की जिंदगी की कराहें भी हैं। भाषा के प्रयोग में सतर्कता है।

'अस्पष्ट तल्लणगळु' (अस्पष्ट व्याकुलता) टी.एस. श्रवण कुमारी जी की कहानियों का संग्रह है। बैंक से सेवा निवृत्त होने के बाद लिखना आरंभ किया। श्रीमती कुमारी जी ने और अद्यतन प्रकाशित इस संकलन में उपर्युक्त शीर्षक कहानी 'अवळु और मगळु' (वह और बेटी), 'कामिनियू चिकन् बिर्यानियू' (कामिनी भी और चिकन बिरयानी भी) 'जीवन्मुखी' कहानियाँ पाठकों का ध्यान आकर्षित करती हैं। पारिवारिक जीवन के संकट, दर्द और उनका मौन न सहने की ध्वनि स्पष्ट सुनाई पड़ती है। 'कन्नडियू सुळळु हेळुत्तदे' (दर्पण भी झूठ बोलता है) श्री सत्यबोध का कहानी संकलन है। इस संकलन की 23 कहानियाँ सीधी और सरल भाषा में होकर पाठकों को नया अनुभव देती हैं। 'दर्पण भी झूठ बोलता है' कहानी में केवल कथा नायक ही नहीं सभी के भ्रम टूटने का अनुभव होता है। प्रामाणिकता, आत्म विश्वास, दृढ़ संकल्प, बुद्धिबल, न्याय–नीति, धर्म–अधर्म आदि विषयों से यहाँ की कहानियाँ जीवन प्रीति को बढ़ाती हैं। बच्चों की प्रिय दादी की कहानियों की याद दिलाती है यहाँ की कहानियाँ।

'फू मत्तु इतर कथेगळु' (फू और अन्य कहानियाँ) संकलन में सात कहानियाँ हैं। हर कहानी में ताज़ा रूपक है और विशिष्ट कथन–तंत्र से बुनी गई है। कथा विन्यास कौतुहलपूर्ण कुतूहलकारी भाषा प्रयोग तथा देसी कहावतों के प्रयोग से कहानी अधिक आत्मीय प्रतीत होती है। ग्रामीण जीवन इन कहानियों की कथावस्तु हैं। इनमें ग्रामीण महिलाओं के जीवन का संघर्ष दर्शाया गया है।

चेमनहळली रमेश बाबू का 'जीवरेशिमे' 12 छोटी कहानियों का संकलन है। इस संकलन में गाँव की जिंदगी के साथ नगर के जीवन का हृदय–स्पंदन भी है। कहानियों में सहजता है। इन कथाओं के बीच एक रेशम का कीड़ा है, नीड़ निर्माण करता एक सपना है। कहानियों में पात्रों में सहजता और प्रयोगशीलता संकलन की कहानियों को महत्वपूर्ण बनाती है।

'वर्जितो मोहितो' पत्रकार सतीश चप्परिके का कथा संकलन है। यह उनका दूसरा कथा संकलन है। इसमें सात कहानियाँ हैं। लेखक ने ही कहा है कि इनमें छह कहानियाँ आषाढ़ की वर्षा की बूँदों के बीच पैदा हुई हैं। परंतु एक की छाया दूसरे पर नहीं पड़ी है। एक से एक अनन्य है। समकालीन जिंदगी के संघर्षों को विश्लेषित करने का गुण इन कहानियों में है।

'बेलाडि हरिश्चंद्र' गोपाल कृष्ण पै जी का छोटी कहानियों का संकलन है। पै जी ने शताधिक कहानियों की रचना की है और कहानियों का अनुवाद भी किया है। उन्हें उपन्यास के लिए केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त है। संग्रह की 'बेलाडि हरिश्चंद्र' नामक कहानी का 'हरिकथा प्रसंग' शीर्षक से सिनेमा भी बना है। इस संकलन में 13 कहानियाँ हैं। सभी कहानियों में मनुष्य संबंध

और व्यवहार का चित्रण है। उससे विस्मय पैदा होता है। बेलाडि हरिश्चंद्र यक्षगान में स्त्री पात्र का अभिनय करनेवाला पुरुष है। वह सलिंगकामी भी है। लेकिन सलिंग रति के लिए समाज मौका नहीं देता है। उसका जीवन त्रासदिक हो जाता है। इस संकलन की 'अप्पुगे' (आलिंगन) आदि अन्य कहानियाँ भी पठनीय हैं।

उपन्यास

2020 के साहित्ययान में दिखे कुछ उल्लेखनीय उपन्यास हैं– कृष्णमूर्ति हनूर का उपन्यास 'कालयात्रा', वसुधेंद्र कृत 'तेजो तुंगभद्रा', राघवेंद्र पाटील का 'गैर समझूति', प्रकाश नायक का 'अंतु', अमरेश नुगुडोणि का 'दंदुग' (क्लेष), और एम. एस. श्रीराम का 'बेटेयल्ल आटवेल्ल' (शिकार नहीं, खेल ही सब)।

कर्की कृष्णमूर्ति जी का पहला उपन्यास है 'चुक्कि बेळकिन जाडु' (तारा प्रकाश का पदचिह्न)। यह आनेवाले कल पर रोशनी डालता है। यह उपन्यास विश्व के परिप्रेक्ष्य में बात करते हुए अतीत की वास्तविकता को भी चित्रित करता है। मलेशिया यात्रा के बाद एक भारतीय की आँखों से मलेशिया का वर्तमान खुलता है।

'बूबराज साम्राज्य' बी. जनार्धन भट का कर्नाटक के तटीय प्रदेश के प्राचीन इतिहास में घटा संघर्ष पर लिखा उपन्यास है। आज के संदर्भ में अच्छाई–बुराई को लेकर चलने वाली लड़ाई को बतानेवाला विशिष्ट कथानक है इस उपन्यास में। इसी को कहा गया है इतिहास के दर्पण में वर्तमान का 'बिंब'। प्रभुत्व के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाले इतिहास में ही नहीं वर्तमान में भी है। अपने पवित्र आम वृक्ष के फल को खाने पर कोश जाति की लड़की को राजा मृत्युदंड देता है। कोश लोग उस वृक्ष को ही काट देते हैं। परंतु आंतरिक कथा यह है कि राजा ने उस सुंदर लड़की को चाहा था। राजनीतिक कारणों से उसको पा न सका था। वह लड़की दूसरे की न हो जाए इसलिए उसको मरवाने के लिए यह बहाना था। इतिहास और वर्तमान दोनों ओर लड़कियों की हत्या नैतिक अधःपतन का द्योतक है।

'जूजु' (जुआ) के. एस. वेंकटसुब्बय्या जी का उपन्यास है। इसमें मनुष्य के पासा, पासा फेंकनेवाला भी, घोड़ा और घुडसवार भी बन जाने की जिंदगी रूपी जुए के कई स्वरूप दिखाई पड़ते हैं। इसमें इतने पात्र हैं कि उनका नाम याद रखना कठिन है उनमें वंचक हैं, अबोध हैं, परिस्थिति के अनुकूल परम पद की सीढ़ी शीघ्र ही चढ़कर चालाकी से, अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की बलि देनेवाले क्रूर भी हैं। सब कुछ सहकर अपनी पीठ पर छूरी चलाने वाले को भी क्षमा करनेवाले उदार हैं। इस कृति के केंद्र में सिनेमा क्षेत्र है और वहाँ जो सिनेमा निर्माण का जुआ खेला जाता है उसके साथ भी अनेक साम्य दीखते हैं। 'जुआ' में परदे के पीछे के जगत के चेहरों को दाखिल करने के कारण से भी इस उपन्यास का महत्व है।

'अज्ञात' विवेकानंद कामत जी का उपन्यास है। वह 'सुधा' पत्रिका में धारावाहिक प्रकाशित था। वैराग्य भाव छाकर, अध्यात्म की ओर भी वह झुकता है। आखिर हमने क्या पाया? देश–कालातीत होकर ये प्रश्न सब को सताते हैं। इन्हीं प्रश्नों को आगे करके 'अज्ञात' में कायकनाथ भी जीवन में शोध करते जाते हैं। इस उपन्यास में प्रयोग किए गए भिन्न तंत्र, निरूपण शैली पाठकों को आकर्षित करते है।

'लिविंग टुगेदर' (साथ रहना) ईरण्णा बडिगेर जी का नया उपन्यास है। वैश्वीकरण के आज के जीवन ने जो नया रूप पाया है, और प्राचीनकाल से प्रतिपादित संस्कृति–संस्कार मूल्य का जब आमना सामना होता है उस संदर्भ का है यह उपन्यास 'लिविंग टुगेदर'।

हनगल जैसे छोटे शहर में जड़ जमाकर और फैलकर अमरीका में डालियाँ बढ़ाकर खड़ी हैं यहाँ की कथावस्तु। टूटे दांपत्य को पुनः जोड़ने का उत्साह है। इस उपन्यास को उस दृष्टि से भी देखा जा सकता है कि आपस में विश्वास खोकर, अलग हो रहे पति–पत्नी को काउंसिलिंग करने के आवश्यक बिंदु साहित्य इस उपन्यास में हैं। इस कृति का संदेश यह है कि 'लिविंग टुगेदर' पारिवारिक व्यवस्था के लिए कोई पर्याय नहीं है।

स्त्री को आजादी चाहिए परंतु उसके व्यवहार में स्वेच्छाचारिता नहीं आनी चाहिए।

दाळि (धावा) कुमार बेंद्रे का लिखा हुआ है। यहाँ वास्तविक घटना के आस–पास कल्पित कथा का निर्माण किया गया है। विचारवादी की हत्या और उसकी जाँच की श्रृंखला ही कथावस्तु है। इसमें प्रेम की गर्म मिलावट है। इस उपन्यास में विचारों का संघर्ष होने पर भी इनसे कोसों दूर जिसकी रोज़ की जिंदगी ही दूभर हो ऐसी अबोध महिला की हत्या के साथ कथा का भी अंत दिखाया गया है। भाषा की सरलता ही इस उपन्यास की विशिष्टता है।

'संस' उपन्यास मलेयूरु गुरुस्वामी की रचना है। 20वीं शती के प्रारंभ में रहे और चालीसवें वर्ष में ही दिवंगत हुए प्रसिद्ध नाटककार के वैयक्तिक जीवन का चित्रण इसमें है। 350 पृष्ठों के इस उपन्यास में उनके व्यक्तिगत जीवन और साहित्यिक जीवन का समग्र चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

'दंदुग' अमरेश नुगदोणि रचित उपन्यास है। यह लोकप्रिय कहानीकार अमरेश जी का पहला उपन्यास है। विशेष बात यह है कि यह कोराना वायरस के संदर्भ के कष्टों का कथन है। दो युवा और युवती को केंद्र में रखकर 'दंदुग' (क्लेष) उपन्यास की कहानी का विकास होता है। विविध वर्ग के लोग इसमें आते हैं। यह सिर्फ कौतूहल के प्रयोग के रूप में पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है।

'गैर समजूति' श्री राघवेंद्र पाटील का उपन्यास है। यह कथा विस्तार और कृति के परिमाण की दृष्टि से भी बड़ा है। चार सौ से अधिक पृष्ठों की इस कृति में तीन पीढ़ियों की कथा है। कई पात्र, कई निरूपण तंत्र और कई भाव तीव्र स्तरों से युक्त होकर पाठक को कथन रूपी कानन में घूमने का अनुभव देता है। उपन्यास की भाषा प्रवाहमयी है।

'तलेमारुगळ अंतर' (पीढ़ियों का अंतर) प्रसिद्ध भूविज्ञानी एम. वेंकटस्वामी जी का आठवाँ उपन्यास है। यह उपन्यास सुधा मासिक पत्रिका में धारावाहिक प्रकाशित हुआ था। उपन्यास का केंद्र कृष्ण की मौत से आरंभ होकर उसकी समाधि में अंत होता है। कृष्ण की आत्मा ही यहाँ कथा सुनाती है। व्यक्ति कई दशकों जीवित रहकर, अनुभव पाकर मरने पर उसकी आत्मा उसके जीवन के पीछे के पन्नों पर 'सर्वेक्षण' करने की शैली में कथा आगे बढ़ाती है। यह कथन तांत्रिकता ही इसकी विशेषता है। सामाजिक दिवालियापन और पीढ़ियों के अंतर की चर्चा कथा प्रवाह के साथ छाया के रूप में पीछा करती है।

'कालयात्रे' कृष्णमूर्ति हनूर का उपन्यास है। इसमें नगर प्रदेश में गाँव से आए लोग जो तकलीफ भोग रहे हैं उसका अनावरण किया गया है कि कैसे जो गाँव से नगर में आए हैं वे जीने के लिए आधुनिकता की मार से आहत हुए हैं। उनकी पीड़ा–दर्द का उपन्यासकार ने कलात्मक ढंग से चित्रण किया है। इस उपन्यास में मुख्यतः चार आधार पर कथन का निर्वहण किया गया है। मनुष्य और उसे दिखते बाह्य जगत का संबंध, मनुष्य और मनुष्य के बीच संबंध, मनुष्य और लोक की अदृश्य शक्ति के बीच का संबंध और मनुष्य के अंतरंग जगत का अनावरण– यह कथन शैली ही कृति की विशिष्टता है।

'रायकोंड' करणं पवन प्रसाद का उपन्यास है। यह उनके पूर्व के उपन्यासों से भिन्न है। कर्नाटक और आंध्र के सीमा प्रदेश के नगर के एक ब्राह्मण परिवार की जिंदगी ही कथा वस्तु है। उस परिवार के अनुकूल भाषा तेलुगु मिश्रित कन्नड में संवाद का प्रयोग किया गया है। राज्य की सीमा प्रदेश की जन संस्कृति का बिंब यहाँ प्रस्तुत है। पूरा उपन्यास 'डार्क ह्यूमर' की तरह खुलता जाता है।

'जल युद्ध' जाणगेरे वेंकटरामय्या जी का उपन्यास है। यह उनकी 32वीं कृति है। वर्तमान में जो जल की समस्या है, राज्य के कृषकों की स्थिति है उन्हें गूँधने में अपनी कुशल कारीगरी लेखक ने दिखाई है। कथा–प्रवाह में नीरसता नहीं, सहज गति है। यह 440 पृष्ठों का बृहत उपन्यास है। यह कोराना के 'लॉकडाउन' संदर्भ में लेखक का प्रज्ञापूर्वक लिखा गया उपन्यास है।

इसमें लॉकडाउन की भयंकर स्थिति से जान बचाकर जीवन भोगने का चित्रण भी है।

'वंश' श्रीमती भाग्यलक्ष्मी मग्गे का उपन्यास है। स्त्री पर जो भी संकट आए उसे कैसे निभाती है उसका सुंदर निरूपण इसमें हुआ है।

'अंबरद अरगिणि' (आसमान का तोता) डॉ. एस. जी. मालतिशेट्टी जी का उपन्यास है। इसमें कथा नायिका आवंतिका की जीवन गाथा है। जीवन में निरंतर संघर्षों के बीच जीवन बिताते हुए धैर्य से आगे बढ़ने वाली आवंतिका सचमुच पिंजरे का तोता नहीं पिंजरे से मुक्त आसमान का तोता बनती है।

'बयलेंबो बयलु' (शून्य नामक शून्य) श्री एच. टी. पोते जी का बहुत विशिष्ट 'बायोपिक' उपन्यास है। इसका कथानक पोते जी के परिवार का लगने पर भी, सामुदायिक कथन के रूप में पाठक का ध्यान आकर्षित करता है। तीन पीढ़ियों के दलित के जीवनानुभव के मानसिक संघर्ष को तार–तार खोलनेवाला यह उपन्यास एक ही साँस में नहीं पढ़ा जा सकता है। पात्रों का संकट, मूक अमानवीय अनुभव आदि पाठकों को कंपा देते हैं और चिंतित करते हैं, मन को सताते हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति में बदलाव को मानवीय आधार पर चित्रित किया गया है। पोते जी द्वारा अपनी संवेदनाओं को अक्षरशः उतारने का विधान अनन्य है। अभिव्यक्ति की सहजता और बिजापुर (विजयपुर) की जवारी भाषा पाठकों को खुशी देती है।

'कस्तूरबा Vs गांधी' श्री बरगूर रामचंद्रप्पा का उपन्यास है। आत्म–निरीक्षण के अभाव में प्रजासत्तात्मक मूल्य अर्थहीन हो जाता है। गांधी और बा में आत्म–निरीक्षण था। परंतु वह केवल उन दोनों का ही नहीं था। बदले में कुल प्रजातंत्र का आत्म–निरीक्षण था। गांधी और बा सांसारिक और सामाजिक समस्या या उलझन को कैसे निभाते थे इसको बताने का प्रयत्न इस उपन्यास में हुआ है।

जीवनी

'मास्ति वेंकटेश अय्यंगार बदुकु–बरह' (मास्ति वेंकटेश अय्यंगार जीवन और रचना संसार) कन्नड के ख्यात आलोचक श्री एस. आर. विजयशंकर की कृति है जिसे साहित्य अकादमी दिल्ली ने प्रकाशित किया है। मास्ति जी की समग्र रचनाएँ कुल 20 हज़ार पन्नों में हैं। यह कृति सात अध्यायों में है। पहले में जीवन और साहित्य, दूसरे में छोटी कहानियाँ, तीसरे में उपन्यास, चौथे में नाटक, पाँचवे में काव्य, कथन–काव्य, महाकाव्य, छठे में विमर्श, संकीर्ण और पत्रकारिता और सातवाँ है समाप्ति। इस कृति में मास्ति जी के जीवन परिचय के साथ, उनकी कृतियों का परिचय तथा आलोचना भी है।

'परमानंद माधवम्' सुनील किरवायी की रचना है। यह श्री सदाशिव गोविंद कात्रे जी की प्रेरक जीवनी है। इसका कन्नड अनुवाद डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी' जी ने किया है। यह नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित है। इसमें स्वयं कुष्ठ रोगी कात्रे जी की यातनाएँ, कुष्ठ रोग से मुक्त होने पर कुष्ठ रोगियों की सेवा में परमानंद माधवम् संस्था की स्थापना, उनके सेवा कार्य आदि का जीता जागता चित्रण हुआ है। डॉ. प्रभाशंकर 'प्रेमी' ने इसका सरल और समर्थ अनुवाद किया है।

'नम्म अरसु' (हमारे अरस) यह कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री देवराज अरसु पर लिखा व्यक्ति चित्रण है। यह बसवराजु मेगलकेरि की रचना है।

मोनोग्राफ

'कन्नडद विस्मय वी. कृ. गोकाक' कृति के लेखक गोकाक जी के पुत्र श्री अनिल गोकाक जी हैं। इसमें लेखक ने पिता के जीवन का समग्र चित्र संक्षेप में तथा उनकी कृतियों का व्यवस्थित परिचय देकर साहित्यासक्तों के लिए बड़ा उपकार किया है। गोकाक जी के निधन के 28 वर्ष बाद यह कृति प्रकाशित हो रही है। यह उनके पुत्र का सचमुच अभिनंदनीय और अनुकरणीय कार्य है। गोकाक जी की 75 से अधिक कृतियाँ प्रकाशित हैं। इन पर शोध परक अध्ययन होने की आवश्यकता है।

आत्मकथा

'नेनपिन हक्किय हारलु बिट्टु' (यादों के पंछी को उड़ने देकर) कन्नड के प्रसिद्ध कवि मूडनाडु चिन्नस्वामी जो दलित समुदाय से निकले

हैं, उनकी स्मृतियाँ आत्मकथा के रूप में पल्लवित हुई हैं। मूडनाडु जी की इस आत्मकथा में भी एक दलित लोक है। लेखक अपने जीवन का निरूपण करते समय भावसंयम भी रखते हैं। संदर्भानुसार इसमें कविता और रेखाचित्र भी उभरे हैं। ये सब जलते अंगारे हो सकते थे। परंतु लेखक ने उस पर रम्य आवरण पहना दिया है। कृति में लेखक का सांस्कृतिक लोक से संबंध, बौद्ध धर्म का संबंध तथा विदेश यात्रा विवरण भी दर्शित है। इस कृति में चित्रित आत्मकथा में कवि ही दिखता है।

गद्य

'श्वेत भवनद कथन' (श्वेत भवन का कथन) यह सुधींद्र बुद्य का लिखा 'श्वेत भवन का वर्ण रंजित कथन है। इसमें अमरीका में अध्यक्षीय चुनाव का संदर्भ है। विश्व के बड़े भाई का 'श्वेत भवन' प्रवेश क्या साधारण प्रक्रिया है? इसका कथन ही 'श्वेत भवन कथन' है। अमरीका के अध्यक्षीय चुनाव से संबंधित ऐसी कृति अब तक नहीं निकली है। इसमें दो भाग है। पहले में चुनाव संबंधी कथन और दूसरे में विचार मंथन। अध्यक्षीय जीवन के साथ अध्यक्ष पद से निर्गमन के बाद का उनका जीवन–विवरण खुशी देता है।

निबंध

'हेण्णु हेज्जे' (स्त्री कदम) डॉ. एच. एस. अनुपमा जी के निबंधों का संकलन है। डॉ. अनुपमा जी स्त्रीवाद की सक्रिय आंदोलन करनेवाली लेखिका हैं। वृत्ति से वैद्य होने पर भी उन्होंने अब तक 48 पुस्तकों की रचना की है। प्रस्तुत कृति 'स्त्री–कदम : महिला आदर्श–मार्ग' में लेखिका ने समानता, स्वातंत्र्यों की दृष्टि से आदर्श नमूना और स्फूर्तिप्रदायक कई महिला साधिकाओं का परिचय कराया है। युद्धविरोधी संगठनों का परिचय भी यहाँ है।

इरोम शर्मिळा, सोमालिया मूल की अमरीकन रूपदर्शी वारिसडेरि, शिरीन् दळवि आदि आंदोलनकारी महिलाओं का चित्रण यहाँ प्रस्तुत है। यहाँ के निबंध स्त्रीवाद के संक्षिप्त चित्र देने में सफल हुए हैं।

'अक्कूरमठर समग्र साहित्य (भाग–3)' संकीर्ण लेखों का संग्रह है। इसमें पचास वर्षों के अक्कूर के निबंधों का संग्रह है। इन लेखनों में विमर्श, अध्ययन और सूचनापरक सामग्री है और इसके द्वारा लेखक ने कन्नड सारस्वत लोक को समृद्ध किया है। पहले भाग में वचन साहित्य पर, दूसरे भाग में वीरशैव धर्म और संस्कृति पर और तीसरे भाग में विभिन्न विषय के लेखनों का संकलन हुआ है।

'महाभारत बेळेद बगे' (महाभारत के विकास की रीति) विमर्शात्मक कृति है। भारतीय जन मानस में महाभारत का विशिष्ट स्थान है। शताधिक पीढ़ियों से भारतीय प्रज्ञा परंपरा में प्रवाहित महाभारत कृति ने अनेक रूप लिए हैं। श्री एस. आर. रामस्वामी जी ने महाभारत के मूल स्वरूप चिंतन परंपरा को निरूपित करने का रोमांचक कार्य इस कृति द्वारा किया है। महाभारत के मूल के अंतिम पाठ में– गणपति का व्यास द्वारा सुनाई कथा को लिखना, अर्जुन को ऊर्वशी का नपुंसक बनने का शाप, द्रुपद का जन्म वृत्तांत, पराशर– मत्स्यगंधा विवाह, द्रौपदी का अक्षय–पात्र आदि लोकप्रिय कथानक का न होना पाठकों को अचंभे में डालता है।

'कंडष्टु कडेदष्टु' (जितना देखा गया, जितना मथा गया) के. पी. सुरेश का निबंध संकलन है। लेखक के ग्रामीण जीवन का अनुभव और कृषिमूल की आर्थिकता, ऋण में डूब जाने की स्थिति आदि का खुला चित्रण इसमें हुआ है।

'स्वर विन्यास' सच्चिदानंद हेगड़े की कृति है। जिसमें स्वर का विन्यास या स्वर और विन्यास दोनों दृष्टि के निबंध हैं। संगीत और विन्यास दोनों का क्रॉसिंग प्वाइंट होकर उनके साहित्य को पठनीय बनाता है

'हळतिगे होळपु मत्तु इतर साहित्य– प्रबंधगळु' (पुराने के लिए कांति और अन्यनिबंध) श्री बाल सुब्रह्मण्य कंजर्पणे का निबंध संकलन है। इसमें कन्नड साहित्य के नवोदय और नव्य काल की कृतियों तथा साहित्यकारों के पुनः पाठ के लिए कांति देने का कार्य हुआ है। बेंद्रे से जयंत काय्किणी और डी. पी. प्रहलाद तक के साहित्यकारों पर निबंध हैं। इसमें नई पीढ़ी के साहित्यकारों पर निबंध नहीं हैं।

डायरी

'ताष्कें ट डैरि' श्री एस. उमेश की लिखी पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी की संशयात्मक मौत से संबंधित कृति है। लेखक ने अपने ढंग से घटना संबंधी रहस्यों को देखने का प्रयत्न किया है। यह घटना उस समय की है (1965 की है) जब शास्त्री जी पाकिस्तान से शांति–वार्ता के लिए ताशकंद गए थे। वहाँ उनकी मृत्यु हो जाती है। उस मौत के रहस्य खोलने का प्रयास चलता ही रहा है। सूचना–सामग्री इकट्ठा करने में लेखक ने काफी प्रयास किया है।

संस्मरण

'बहुमुखी– एस. मालती नेनपिन पुस्तक' (बहुमुखी– एस. मालती का संस्मरण)। यह संस्मरण श्री जयप्रकाश माविनकुलि द्वारा संपादित ग्रंथ है। मालतीजी रंगभूमि कलाकर थीं। आप कन्नड, कोंकणी, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं पर प्रभुत्व रखती थीं। आप कवयित्री, लेखिका, समालोचक भी थीं। उनके संस्मरण लेखों का गुच्छ है 'बहुमुखी'। ना. डिसोजा, विवेक रै जैसे साहित्यकार और के. शरीफ़ा, एन. गायत्री जैसों की यादों से उनके व्यक्तित्व का पता चलता है। दूसरे भाग में उनके भाषण, साक्षात्कार आदि हैं। कृति के अंत में मालती जी के जीवन तथा साधना का परिचय दिया गया है।

सांस्कृतिक

'भारतीय संस्कृति मत्तु परंपरे' (भारतीय संस्कृति और परंपरा) श्री के. एस. नागपति हेगड़े जी. की भारतीय संस्कृति और परंपरा की परिचयात्मक कृति है। भारत देश में नागरिकता के विकासवाद के मार्ग को खोलकर रखते हुए देश में आज की परिस्थिति संदर्भ की भी चर्चा करते हैं। इसमें कुल 14 अध्याय हैं। वेद, उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, रामायण–महाभारत कालों का परिचय भी इसमें कराया गया है। भगवद्गीता की भी चर्चा हुई है। भारतीय कला, वास्तुशिल्प, चित्रकला, संगीत, योग परंपरा के विषय में सुदीर्घ विवरण दिया गया है। यह कृति आज की पीढ़ी के लिए भारतीय संस्कृति और परंपरा का परिचय कराने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

अनुवाद

देश–विदेश की विभिन्न विषयों की कृतियों का कन्नड में अनुवाद हुआ है। 'हल्लाबोल' (सफदर हाश्मी की मौत और जिंदगी) मूल सुधन्व देशपांडे का लिखा हुआ है उसका अनुवाद एम. जी. वेंकटेश जी ने किया है।

सड़क बीच नाटक प्रदर्शन करते कलाकार की हत्या ही कथा वस्तु है। 'हल्लाबोल' नाटक प्रदर्शन के समय धावा बोलकर असाधारण रंग प्रतिभा संपन्न सफदर हाश्मी की हत्या हो गई। इसके प्रत्यक्ष साक्षी थे हाश्मी के मित्र सुधन्व देशपांडे। उन्होंने हाश्मी जी की जिंदगी के पन्नों को खोलकर रखा है। सुधन्व जी हाश्मी जी के नाट्य मंच (जनम्) के संचालक रहे हैं। 'हल्ला बोल' में सफदर की जीवनगाथा, रंगमंच के कार्य–कलाप, उस समय का राजनीतिक वातावरण, श्रमिकों का आंदोलन सभी एककाल में हैं। 'समुदाय' के साथ सुदीर्घ संबंध रखनेवाले एम. जी. वेंकटेश जी ने कृति का समर्थ अनुवाद किया है।

सावरकर हिंदुत्वद जनकन निजकते' (हिंदुत्व के जनक की सत्यकथा) वैभव पुरंदरे का लिखा हुआ है। इसे कन्नड में अनुवाद करनेवाले हैं श्री बी. एस. जयप्रकाश नारायण। क्रांतिकारी व्यक्तित्व के सावरकर जी ने अपने जीवन का अधिकतम भाग कारावास में ही बिताया। अंतः लोगों के बीच ज्यादा न आ सकने से उनके व्यक्तित्व का पूर्ण चित्रण बाह्य जगत को हुआ ही नहीं। पत्रकार वैभव पुरंदरे जी ने 'सावरकर दि ट्रू स्टोरी आफ दि फादर आफ हिंदुत्व' शीर्षक से आठ भागों में सावरकर जी के मराठी भाषा में रचित लेखन आदि का अध्ययन कर ग्रंथ लिखा है। सावरकर जी की रचनाएँ मराठी में होने से राष्ट्र जनमानस तक पहुँच न पाई। पुरंदरेजी ने उन्हें और स्पष्ट रूप से समझने के लिए इस कृति द्वारा सहायता की है। बी. एस. जयप्रकाश नारायण जी का कन्नड अनुवाद पाठकों तक सावरकर के व्यक्तित्व को पहुँचाने में सार्थक प्रयत्न है।

'फालोयिंग फिश' समंत सुब्रमणियन् की अंग्रेजी कृति है। इसका अनुवाद सहना हेगड़े जी ने किया

है। यह यात्रा वृत्तांत है। इस कृति में भारत भूखंड में मत्स्योद्यम तथा मत्स्य भोजन के क्रम व उसकी संस्कृति और परिवेश पर प्रकाश डाला है समंत सुब्रमणियन् जी ने। लेखक का यह पर्यटन बंगाल की खाड़ी से मीन–पथ पर निकलकर हिंदमहासागर, अरब तट तक आकर रुकता है। भारत के सागर–तटीय प्रदेश की मत्स्य संस्कृति का शोध करते बढ़ता है प्रवास कथन। भारत के सागर–तटीय प्रदेश की मत्स्य संस्कृति का शोध करते बढ़ता है प्रवास कथन। भारतीय संस्कृति में जगह–जगह पर वैविध्य होने पर भी भारतीय सागर–तटीय प्रदेश की मछुआरों की जीवन शैली एक– जैसी है। लेखक ने मत्स्य चिकित्सा पर भी प्रकाश डाला है। कृति का अनुवाद सहना हेगडेजी ने मूल कृति जैसा ही लालित्यपूर्ण ढंग से कन्नड में किया है।

'दैविक हूविन सुगंध' (दैवी पुष्प की खुशबू– भक्तिलीला का विश्वरूप) श्री केशव मळगि का अनुवाद है। यह कृति मध्ययुगीय भारत के 24 भक्त कवियों की कविताओं और सूफी कवियों की 20 कविताओं से युक्त है। शैव, वैष्णव, बौद्ध सिक्ख, सूफी कवियों की रचनाओं को एक साथ कन्नड पाठकों को देने का काम अनुपम है। यहाँ प्रेमतत्व प्रधान है, जिसने सबको उस अनंत के साथ जोड़ा है। भारतीय दर्शन और सूफी दर्शन दोनों प्रेमतत्व प्रधान है। अर्थात् प्रेम स्वरूपी हैं। हिंसा स्वरूपी नहीं। यहाँ दैव केंद्रित मनुष्य नहीं मनुष्य केंद्रित दैव है। कबीर ने इन्हें एक ही माटी के घड़े कहा है। मळगि जी का अनुवाद गद्यरूपात्मक है। मुक्तछंद की ओर बल दिया गया है।

'जननायक' अचिबे द्वारा रचित मूल अफ्रीकन इंग्लिश भाषा के उपन्यास 'ए मैन आफ दि पीपल' का कन्नड अनुवाद है। कन्नड अनुवादक हैं विक्रम चदुरंग। चिनुव अचिबे विश्व साहित्य के संदर्भ में असाधारण व्यक्तित्व और प्रतिभा के धनी हैं। कन्नड में उनके उपन्यास और कहानियाँ अनूदित हैं। अफ्रीका में कॉलोनियल शासन ने आधुनिक वर्ग का निर्माण किया। वे ही पोस्ट–कॉलोनियल काल में शासक बने। उन्हें 'चीफ' कहते थे। वे कर वसूली का काम करते स्वयं भी धनी बन गए। वे ही मंत्री भी बने, भ्रष्ट और अधः पतन के कारण भी बने। ऐसी हालत में उपन्यास की घटनाएँ खुलती जाती हैं। नंग और ओडिली प्रमुख पात्र हैं। भ्रष्ट नंग ही लोगों को प्रिय होता है। मिलिटरी शासन में भ्रष्टों को सज़ा मिलती है। उपन्यास में पूरा समूह भ्रष्टता में हैं। जननायक इस भ्रष्ट समुदाय के साथ नहीं होता है। उपन्यास का उद्देश्य अफ्रीका का महत्व और गौरव जो खो गया है, उसे उन्हीं को दिखाना है। विक्रम चदुरंगजी ने जो स्वयं अंग्रेजी अध्यापक है, मूल को क्षति न पहुँचे ऐसा ध्यान रखते हुए सरस अनुवाद किया है।

'स्कार्लट प्लेग' जाक लंडन की त्रासदिक चित्रण की कृति है। इसका कन्नड अनुवाद श्री चन्नप्प कट्टी ने किया है। जाक लंडन 19वीं शती में लोकप्रिय पत्रकार, कवि और कहानीकार थे। वे समाजवादी आंदोलन में भी कार्य करते थे। एक महारोग से ग्रस्त कैलिफोर्निया के संपूर्ण नाश की काल्पनिक कथा नायक ग्रन्यार के द्वारा सुनाई गई है। दुराशा से बारबार प्रकृति प्रकोप से ग्रस्त होती ही रहती है। इसके प्रकाशन के 108 वर्ष बाद यह कृति कन्नड पाठकों को, वह भी कोरोना के समय में रचित होकर मिल रही है। मूल के समान ही यह कृति आसानी से पढ़ी जा रही है। यह कृति कन्नड पाठकों को पढ़ने की खुशी और जीवन दर्शन भी दे रही है।

'मानस पुत्र येसु' खलील जिब्रान की कृति है। खलील जिब्रान की पुस्तक 'Jesus the son of man' का कन्नड अनुवाद टी. एन. वासुदेव मूर्ति जी ने किया है। ईसा के प्रकाश की दो धाराएँ हैं। एक है ईसा देव पुत्र, हमारी पीड़ा–दर्द के लिए उसको प्रेम करना, विश्वास करना ही एक समाधान है, वाली भक्ति रूप की धारा। दूसरा है ईसा के जीवन से प्रभावित उसके मूल्यों को अभिव्यक्ति देनेवाली साहित्यिक धारा। मानस पुत्र येसु कृति इन दोनों धाराओं के बीच सेतु निर्माण करती है। कृति में आराधना भाव भी है और परीक्षक दृष्टि भी है। इसमें 79 अध्याय हैं। ईसा के व्यक्तित्व के विविध आयाम खुलते हैं। यह अनूदित कृति ईसा

रूप चैतन्य के प्रकाश को अंजलिबद्ध करने का प्रयत्न करती है।

'एल्लरिगागि स्त्रीवाद :

आप्ततेय राजकारण' (सब के लिए स्त्रीवाद : आप्तता का राजकारण) यह अमरीकी लेखिका बेल हुक्स की रचना 'फेमिनिंस ईस फार एवरिबडी : फेशनेट पालिटिक्स' कृति का कन्नड अनुवाद है। अनुवादिका कन्नड लेखिका और स्त्रीवादी– चिंतक एच. एस. श्रीमती जी हैं। इसमें स्त्रीवाद के लिए हुई 'बहुत्व के व्याख्यान' का चित्रण है। इस कृति का स्त्रीवाद को तात्विक स्वरूप में ग्रहण करने का क्रम नई पीढ़ी के लिए एक उदहारण है।

– प्रभुप्रिया, 39, III लेन, III ब्लॉक, III स्टेज, बसेश्वर नगर, बेंगलूरू–560079

❑❑❑

4

कश्मीरी साहित्य

डॉ. महाराज कृष्ण भरत 'मुसा'

वर्ष 2020 में देश ही नहीं संपूर्ण विश्व एक अदृश्य संक्रमण की चपेट में आ गया। जीवन की गति थम गई। प्रकृति मनुष्य से दूर रहकर प्रदूषण रहित वातावरण में साँस लेने लगी। कलरव करते पक्षियों के झुंड और कलकल करती बहती नदी के स्वरों का वातावरण पर वर्चस्व स्थापित हो गया। मानव जीवन ठौर–ठिकानों पर चार दीवारों के भीतर कैद हो गया। अस्पतालों में मानवीय त्रासदी का भीषण दौर देखने को मिला, जहाँ मौत सस्ती और जीवन की उम्मीद को बचाए रखना दुष्कर हो गया। फिर भी देश के मन ने हार नहीं मानी; वह कोरोना जैसे जीवन भक्षक संक्रमण के प्रति लड़ता रहा और यह जंग अभी जारी है। इन विपरीत परिस्थितियों में भी कहीं न कहीं साहित्यकार का मन कुछ लिखने को छटपटा रहा था और उसने सृजन को जारी रखा पर प्रकाशन के स्तर पर इस साहित्य की पुस्तक अधिक छप नहीं पाई; कोरोना के दुष्प्रभाव से कश्मीरी साहित्य भी अछूता न रहा।

कश्मीरी साहित्य के जाने–माने लेखक एवं कवियों से चर्चा के दौरान जो बातें उभर कर आईं, उनका निष्कर्ष यही था कि कश्मीरी साहित्य की सभी विधाओं में यद्यपि लेखन नहीं हो रहा पर कविता, कहानी में साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा जा रहा है, उपन्यास के क्षेत्र में उतनी प्रगति तो नहीं हो पाई पर इस बार नाटक भी लिखे गए हैं। कश्मीरी साहित्य में गज़लों, नज़्मों को अपने शब्द शिल्प से तराशने वाली रचनाकार सुनीता रैणा पंडित का कहना है कि कोरोनाकाल के कारण इस बार साहित्य सोशल मीडिया पर ही अधिक परोसा गया और प्रकाशन में कम ही देखने को मिला। उनका यह भी कहना था कि रचनाकार साहित्य साधना में अनवरत आगे बढ़ रहा है।

वहीं कश्मीरी भाषा साहित्य के कथाकार और समालोचक अवतार हुगामी का कहना है कि इस वर्ष कश्मीरी साहित्य सोशल मीडिया पर ही पीडीएफ तथा अन्य रूपों में पढ़ने को मिला है, ऐसी बात नहीं है कि लिखने की गति थमी है पर जीवन के पहिए के रुक जाने के कारण पुस्तकों के प्रकाशन में कमी अवश्य आई है। हम यह भी नहीं कह सकते हैं कि कथा साहित्य, कविता, नाटक, एकांकी तथा अन्य विधाओं में सबसे अधिक किस विधा में लिखा गया, क्योंकि कोरोना काल में हमारे पास सोशल मीडिया से हटकर प्रत्यक्ष में अधिक साधन उपलब्ध नहीं हैं।

हम यह कह सकते हैं वर्ष 2020 में साहित्य चर्चा अधिक ऑनलाइन ही रही और सोशल मीडिया के अनेक पटलों के माध्यम से जहाँ साहित्य संगठनों ने वर्चुअल मोड के द्वारा साहित्य का रसास्वादन किया वहीं इसी नए तंत्र के द्वारा

पुस्तकों के प्रकाशन की भी जानकारी मिलती रही। प्रकाशन रूप में जो साहित्य उपलब्ध हुआ उसकी चर्चा संक्षेप में यहाँ की जा रही है।

अफसाना संग्रह

1. 'चेतुवन' कहानी संग्रह

हास्य व्यग्ंय लेखन के लिए विख्यात अवतार हुगामी का नया कहानी संग्रह 'चेतुवन' (चेताना) इस वर्ष प्रकाश में आया, जिसमें 25 अफसाने संकलित किए गए हैं। 118 पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य 450 रुपए है, और सोनी पब्लिकेशन जम्मू द्वारा प्रकाशित है। कश्मीरी साहित्य में कहानियों को अफसाना कहा जाता है। कथाकार हुगामी की कहानियों का मूल कथ्य भ्रष्टाचार, सामाजिक विसंगतियाँ, राजनीतिक संवेदनहीनता, घर–परिवार में वृद्धों की भावनाओं पर केंद्रित है। लेखक अपनी बात विशिष्ट शैली के द्वारा व्यक्त करते हैं। इनके अफसाने सपाटबयानी नहीं है वरन् अप्रस्तुत विधान से अपनी बात कहकर विषय को गहन चिंतन की बारीकियों से विश्लेषित करते हैं।

अफसाने के शीर्षक पर भी एक कहानी रची गई है। इसमें लेखक ने भ्रष्टाचार के संबंध में समाज को चेताया है। 'माल्युन' (मइका) का ऐसा अफसाना है जिसमें घर लौटने की कसक है, हर वर्ष कश्मीर जाने की ललक उत्पन्न होती है। इसमें एक दंपत्ति अपनी जन्मभूमि से दूर अमरीका में शरण लिए हुए हैं, क्योंकि उन्हें अपने समुदाय के साथ विपरीत परिस्थितियों में कश्मीर से भागना पड़ा। अब जबकि घर उनसे दूर है अब वह प्रत्येक वर्ष 2–3 महीने कश्मीर में बिताने के लिए जाते हैं। अफसाने के अंत में इस कहानी की पराकाष्ठा सामने आती है कि जब एक वर्ष पत्नी इस बार कश्मीर न जाकर हिमाचल जाना चाहती है पर उसका पति उसकी इस बात को नकार कर कहता है कि अपने गंतव्य को कभी नहीं बदलना चाहिए और उसी ओर जाना चाहिए।

एक अन्य अफसाने 'जिंद्' (जिंदा) में लेखक ने इस बात पर बल दिया है कि क्या जीवित रहने के लिए 'जीवन के प्रमाण पत्र' की ही नितांत आवश्यकता है, जिंदा रहने के लिए तो और भी वस्तुओं की अवश्यकता होती है। 'वसियतनामा' अफसाने में एक वृद्ध द्वारा स्वप्निल संसार में न्यायाधीश के समक्ष 'वसियतनामा' बनाने की चेष्टा करना और फिर वृद्ध का ऐसा न करने के विचार पर पुनः सोचने की घटना इस अफसाने को रोचक बना देता है। या फिर 'जुगाड' नामक अफसाने के द्वारा प्रशासन की खामियों को उजागर करना भी लेखक की चिंतन दृष्टि को दर्शाता है।

लेखक हुगामी हास्य व्यंग्य की चोट से अपनी बात सुस्पष्ट एवं समासमुक्त शैली में व्यक्त करते हैं लेकिन जब अपनी जन्मभूमि के परिप्रेक्ष्य में अफसाने लिखते हैं तो कहीं न कहीं हास्य के पुट में कमी आ जाती है, जिसका एक मात्र कारण घर की यादों का तीव्र होना है।

2. 'यू टर्न' कहानी संग्रह

कश्मीर साहित्य के सुपरिचित रचनाकार एवं अनुवादक डॉ. गौरी शंकर रैणा का कथा संग्रह है 'यू टर्न' जिसमें लेखक ने सीधी भाषा में कहानी के भाव को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। डॉ. रैणा कश्मीरी भाषा के अतिरिक्त हिंदी में भी लिखते हैं। इनका संबंध थियेटर के साथ भी रहा है। इन्होंने नाटक भी लिखे हैं, जो कई भाषाओं में अनूदित भी हुए हैं। डॉ. रैणा ने कश्मीरी साहित्य का अनुवाद हिंदी में भी किया है, उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण ही उन्हें क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर भी पुरस्कृत किया गया है।

रचनाकार ने दूरदर्शन पर प्रसारित होनेवाले कई नाटकों की रचना भी की है। 'यू टर्न' अफसाना संग्रह ताज प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में सामाजिक विसंगतियों, पहाड़ी क्षेत्रों, तथा आध्यात्मिक वातावरण पर भी अफसाने लिखे हैं।

3. 'यादाश्त' (स्मरण शक्ति)

कश्मीरी कथा साहित्य में शीघ्रता के साथ अपना नाम प्रतिष्ठित करनेवाले कथाकार मक्खन लाल पंडिता का नया अफसाना संग्रह का नाम है यादाश्त (स्मरण शक्ति) जिसका मूल्य 350 रुपए हैं। इस संग्रह की भूमिका में रचनाकार लिखते हैं कि वृद्धावस्था में बालपन और जवानी के दिन प्रायः स्मरण हो आते हैं। अतीत की स्मृतियों को हम खंगालने लगते हैं। उन दिनों जो सुना, देखा

या व्यवहार में होता है, उनका प्रभाव गहरे अंतर्मन में उतरता है और अंतिम समय तक साथ रहता है। अच्छा हो या बुरा, यह सोच का एक विचार बनता है।

'यादाश्त' अफसाना संग्रह रचनाकार का सातवाँ कहानी संग्रह है। 'यादाश्त' इस संग्रह की एक कथा है जिसकी प्रमुख पात्र एक महिला होती है, जिसे अपने अतीत की स्मृतियाँ भीतर तक उद्‌वेलित करती हैं, जिसे अपने बचपन की याद आती है। पुस्तक में इसके अतिरिक्त कुछ छोटे–बड़े अफसाने भी हैं, जो लेखक की विशिष्ट शैली से हमें अवगत कराते हैं।

कविता संग्रह

1. "वारिया चांग छि ज़ालिन"

कश्मीरी और हिंदी में अनवरत सृजनारत कवि एवं लेखक सतीश विमल आकाशवाणी के जम्मू तथा श्रीनगर केंद्र से संबद्‌ध रहे हैं और वर्तमान में इनकी कर्मस्थली कश्मीर ही है और यह इनका सौभाग्य भी है कि निर्वासन के इस दौर में जब कश्मीर का एक समुदाय विपरीत परिस्थितियों के कारण अपने पैतृकघरों से बाहर है वहीं कर्मक्षेत्र श्रीनगर होने के कारण इन्हें अपनी जन्मभूमि से जोड़े रखता है। इनका साहित्य विस्थापन और अपने घर में रहकर दो अनुभूतियों को जन्म देता है।

'वारिया चांग छि ज़ालिन' (अनेक दीये हैं प्रदीप्त करने) कवि सतीश विमल का कश्मीरी भाषा में रचित कविता संग्रह है, जिसमें निराशा से आशा की जगमगाती लौ है, संत्रास की गलियों को कवि अपनी कविताओं से मुक्त करना चाहते हैं। अभी तक उनके तीन कविता संग्रह (हिंदी में दो, तथा कश्मीरी में एक) अनुवाद पर पाँच पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। कवि विमल कविता, कहानी, आलोचना तथा पत्रकारिता के विषय में रुचि रखते हैं।

निबंध संग्रह

1. 'ज़च़ आगुर' (किरणों का स्रोत) राजेंद्र आगोश का निबंध संग्रह है, जिसका मूल्य 400 रुपए है। कश्मीरी साहित्य में निबंध लेखन विधा पर लिखकर आगोश ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। लीक से हटकर निबंधों की रचना करना एक स्वस्थ परंपरा है, प्रायः कश्मीरी भाषा में विचार प्रधान लेखों का अभाव है और नज्मों, गज़लों, लीलाओं के रूप में कविता का प्राधान्य है। कवि एवं निबंधकार आगोश ने इस संकलन में विशेषकर कश्मीर के संतों, महान लेखकों पर निबंध लिखे हैं।

नाटक

विनोद कुमार पंडिता जो मूल रूप से इंजीनियर विनोद कुमार के नाम से लिखते हैं ने कश्मीरी भाषा साहित्य को एक मंचीय नाटक दिया है जिसका नाम है 'पोतुआलव' (वापस बुलाती आवाजें) रंगमंच के जाने माने कलाकार जयकृष्ण बेज़ान ने इस नाटक की भूमिका लिखी है। नाटक के नामकरण से ही यह ज्ञात होता है कि इसमें पीछे छूट चुकी जन्मभूमि की गंध, स्मृतियाँ अंकित हैं।

'वाख'

वाख कश्मीरी भाषा साहित्य की एक ऐसी पत्रिका है जो नस्तालीख में प्रकाशित न होकर देवनागरी लिपि में उपलब्ध है। यह ऐसी एकमात्र पत्रिका है जिसने वर्तमान समय की माँग को देखकर कश्मीरी भाषा को देवनागरी लिपि में लिपिबद्‌ध किया है। वैसे भी कश्मीरी भाषा की वर्तमान नस्तालीख लिपि सर्वग्राह्य नहीं है, एक सीमित वर्ग तक अब यह लिपि रह गई है। कश्मीरी भाषा न बोलनेवाले तो अधिक हो सकते हैं पर इस भाषा में साहित्य रचनेवाले साहित्यकारों की संख्या कम ही हो सकती है। जबसे देवनागरी एक वैकल्पिक लिपि के रूप में सामने आई है, कश्मीरी भाषा के लिखने व पढ़नेवालों की संख्या में वृद्‌धि हुई है।

वाख वर्ष में दो बार प्रकाशित होनेवाली पत्रिका है। इसमें कश्मीर भाषा साहित्य पर आलेख छपते हैं, कविता, कहानी तथा पुस्तक समीक्षाएँ भी प्रकाशित होती हैं। बाल साहित्य को भी प्राथमिकता दी गई है। जिन रचनाकारों की कथाकहानियाँ प्रकाशित हुई हैं उनमें उल्लेखनीय है जी एम माहिर, डॉ. महफूजा जान, रूपकृष्णभट और वहीं प्रेमनाथ शार्द, जगन्नाथ सगार, ओमकार नाथ शबनम, टी एस धरकुंदन की कविताएँ भी प्रकाशित हुई हैं। इसके संपादक रूपकृष्ण भट हैं तथा सलाहाकार मंडल

में हलीम, डॉ. रतन लाल शांत, अरविंद शार्द तथा सुनीता रैणा हैं।

वाख में प्रकाशित महाजकृष्ण काव की एक नज्म के अंश–

येलिति परान छुस बु नज्म
अंगरीज़्यस या हिंदीयस भंज
म्ये छि प्रिछान यि सवाल
चु क्याजि छुख नु लेखान
पनुनि ज़बॉन्य मंज।

अर्थात्

जब भी मैं पढ़ता हूँ नज्म
अंग्रेजी या हिंदी में
पूछे जाते हैं मुझसे प्रश्न
तुम क्यों नहीं लिखते हो
अपनी ज़बान मैं।

अपनी मातृभाषा में लिखने की तड़प को कवि ने दर्शाया है, क्योंकि भाषा बोलने और लिखने में धरती आकाश का अंतर होता है।

इंजीनियर विनोद के शब्दों में–

लोकचारुक्य निशानुकति टवन्य छांडव
असु हा गिन्दु हा दव दव कर हा
छांडान छांडान लोबुम न केंह

अर्थात्

बचपन का निशान अब कहाँ खोजो
हँसते, खेलते, दौड़ते भागते
खोजते–खोजते कुछ नहीं पाया

कवि के मन में अपनी जन्मभूमि की स्मृतियाँ उद्वेलित कर रही हैं, अब वह बचपन के पदचिह्न खोजने में विफल हैं।

कॉशुर समाचार

कश्मीरी समिति दिल्ली की मासिक पत्रिका 'कॉशुर समाचार' का एक अनुभाग कश्मीरी भाषा को समर्पित है। इसमें भी देवनागरी लिपि को प्राथमिकता दी गई है। कुमार अशोक सराफ घायल की एक कविता के कुछ अंश उद्धृत कर रहा हूँ–

माय मोहब्बत कौशिरयोत रछरॅवितव
बेयि बन्धुत आलुमस व्येछ्नेवितव

अर्थात्

प्यार मोहब्बत, कश्मीरयत्व संवारिए
भाई बंधुत्व संसार में व्याख्यायित करो'

इस नज़्म में कवि घायल सभी धर्म, पंथ जाति के लोगों को सांप्रदायिक सौहार्द की माला पिरोने का कर्तव्य निभाने को कहते हैं।

कश्मीर साहित्य 2020 में यद्यपि कुछ प्रकाशन का अभाव रहा या फिर कोरोनाकाल की विकट परिस्थितियों में हम लेखक तक न पहुँच सके हों आशा करते हैं कि आनेवाला वर्ष कश्मीरी भाषा साहित्य को और समृद्ध करेगा।

– शारदा कॉलोनी, विद्याधर निवास, पटोली ब्राह्मणा, मूठ्ठी, जम्मू–181205

❑❑❑

5

कोंकणी साहित्य

डॉ. चंद्रलेखा डिसौज़ा

कोंकणी काव्य 'भितरलो कवी' अर्थात् आंतरिक रूप से भी कवि, कवि वल्लि क्वाड्रस के इस काव्य संग्रह में, शैलेंद्र मेहता ने प्रस्तावना लिखी है। उनका मानना है कि प्रस्तुत काव्य संग्रह में, "कवि आधुनिकतावाद और उत्तर आधुनिकतावाद की सरहदों को पार करके वैश्वीकरण का दर्शन करवाते नज़र आते हैं।" कन्नड और देवनागरी दोनों लिपियों में इस काव्य संग्रह को रचा गया है। यहाँ हमें एक बात का ध्यान रखना होगा कि कोंकणी भाषा आज भी रोमन, कन्नड, मलयालम, नवायती (पर्शियो अरेबीक) और देवनागरी लिपि में लिखी जा रही है। जिसे देवनागरी लिपि आती है, उन्हें कन्नड लिपि की कोंकणी से परेशानी है। यही बात कन्नड लिपिवालों के लिए भी है। इस समस्या का समाधान दोनों लिपियों को देकर निकाला गया है। कवि वल्लि क्वाड्रस सही मानो में अपनी कविताओं में आशय और आकार दोनों में विस्तृतिकरण कर पाएँ हैं। विषय की विविधता और कवि का चिंतन कोंकणी कविता के लिए उज्ज्वल भविष्य का आशावाद स्पष्ट करता है। कोंकणी साहित्य को डिजिटलाइस रूप में साकार करने में कवि वल्लि क्वाड्रस, इनका आशावादी प्रकाशन बहुत कुछ कार्य कर रहा है। मेंगलोर के कोंकणी कवि मेल्वीन रोड्रीगीस जो कविता ट्रस्ट के कर्ताहर्ता भी हैं ये दोनों कोंकणी साहित्य को विकसित करने में कार्यरत हैं। 'भितरलो कवी' पुस्तक में 'कोंकणी गावांत' अर्थात् कोंकणी गाँव में का एक संवेदन देखें–

भावार्थः *तुम कहोगे मुजे अंधा या पागल/*
सोचता हूँ क्या हूँ मैं बहरा/
ये अपना सोचते हैं/वे अपना/मैं ही हूँ एक
अभागा/
कोंकणा, लगा पीछे जिसके शनि/क्योंकि मुज कोंकणी
पागल को/कोंकणी गाँव में ही/नहीं दिखी कहीं कोंकणी

शैलेंद्र जी के विचार से ये संवेदन ऐसे हैं जो साक्षीभाव से कैमेरे की तरह ही कवि उन्हें कैद करते नज़र आते हैं। इसमें कोंकणी भाषा की लिपि समस्या झलकती है....।

इस साल 2020 में नवोदित कवयित्री श्रद्धा गरड कोंकणी साहित्य में पदार्पण कर रही हैं। उनका स्वागत करते हुए उनकी जिजीविषा को सलाम। प्रकृति ने उनसे उनकी सेहत छीन ली। डॉक्टरों ने उन्हें शत–प्रतिशत अपंग घोषित कर दिया। फिर भी उनके माता–पिता और भाई ने हार नहीं मानी। श्रद्धा ने भी जैसे ठान लिया था कि किसी भी तरह बस कविता लिखनी ही है। हाथ तो साथ नहीं दे रहा था पर मोबाइल ने

काफी मदद की और श्रद्धा ने अथाह परिश्रम किया। एक उँगली से आहिस्ता–आहिस्ता मोबाइल पर टाइप करते–करते श्रद्धा ने सौ कविताएँ लिख डाली। 7 फरवरी, 2020 के दिन 19वें युवा साहित्य सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में श्रद्धा की तथा परिवार की मेहनत रंग लाई और 'काव्य परमळ' अर्थात् 'काव्य खुश्बू' का लोकार्पण हुआ। जिसका समाचार कोंकणी पत्रिका 'बिब' में एक लेख के साथ छपा। विविधता भरे इस काव्य संग्रह में श्रद्धा की मेहनत रंग लाई है। श्रद्धा बिंब पत्रिका (जुलाई 2020) में लिखती हैं कि–

भावार्थ– एंबुलेंस में मेरे साथ, मेरी मम्मी और मेरी ट्युशन टीचर अश्विनी दीदी थीं। मुझे स्ट्रेचर पर सुलाकर लाया गया था।

एक साल के बाद श्रद्धा ने खुला आकाश देखा था तो जाहिर था कि वही स्वर कविता से भी उभरेगा। गोवा कोंकणी अकादमी से अनुदानीत इस काव्य संग्रह में श्रद्धा की काव्यात्मक भावनाएँ अपना वैश्विक आकाश रचती हैं, अपनी जिंदगी के अनुभव जो उसे और मजबूत बनाते गए.... उन्हीं को काव्य खुश्बू में बिखेरा है।

'आवय जाल्या जाण्टी' अर्थात् माँ बूढ़ी हो गई हैं। इस काव्य संग्रह को कवि रमेश घाडी ने रचा है। यह उनका पहला काव्य संग्रह है। इसमें कुल 90 कविताएँ हैं। मनुष्य का ढोंगीपन, वयस्य नागरिकों को मिलता बर्ताव, मिट्टी को लेकर मनुष्य की व्यथा, स्थलांतर, किसान की यात्रा और स्थिति–परिस्थिति पर तथा पर्यावरण प्रेम आदि विषयों पर कविताएँ रची गई हैं। डॉ. भूषण भावे ने इस काव्य संग्रह के लिए प्रस्तावना लिखी है। डॉ. सुबोध केरकार के संग्रहालय (म्यूजियम ऑफ गोवा) में इस काव्य संग्रह का लोकार्पण किया गया।

कवि गोविंद मोपकार का पहला काव्य संग्रह 'मनस्वर' इस साल प्रकाशित हुआ है। कोरोना के इस दौर में भी सृजनशीलता थमती नहीं। यह मनुष्य की जिजीविषा की निशानी है। प्रस्तुत काव्य संग्रह का प्रकाशन ऑनलाइन किया गया। तकनीकी के इस दौर में 'गूगल मीट' द्वारा इसका लोकार्पण किया गया। पुस्तक की प्रस्तावना लिखनेवाले डॉ. राजय पवार का कहना है कि प्रतीक और बिंब के इस काव्य विश्व का जब और अध्ययन होगा तब इसमें से नए अर्थों की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। 9 अगस्त, 2020 को यह कार्यक्रम हुआ। विविध विषयों को लेकर कवि अपने आशय को व्यक्त करते नज़र आते हैं। इस पुस्तक में कुल मिलाकर 95 कविताएँ हैं।

अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन आशावादी प्रकाशन ने गूगल मीट के द्वारा किया। उसमें आर.एस. भास्कर का काव्य संग्रह 'चैत्रकविता' का लोकार्पण हुआ। कवि भास्कर का यह सातवाँ काव्य संग्रह है। प्रस्तुत पुस्तक में गर्मी के कारण चैत की राह देख रहे हैं। अर्थात् जो दुखदायी है उसे छोड़कर सुख के लिए आशावादी स्वर में अपने विचार व्यक्त करते हैं। इस पुस्तक की प्रस्तावना, कोंकणी भाषा के कवि माधव बोरकार ने लिखी है। उनके विचार से कवि समाज में बदलाव लाना चाहते हैं। कोंकणी काव्य में पहला प्रवाह क्रांति कविता का है। दूसरा प्रवाह प्रेम कविता का है। इस कार्यक्रम की अध्यक्ष डॉ. जयंती नायक थीं और उन्होंने ही 'चैत्रकविता' का लोकार्पण भी किया। इस कार्यक्रम में मुंबई, कोच्चि, कर्णाटक और गोवा तथा अमरीका, बहरीन, युएइ से भी कवियों ने हिस्सा लिया। ऑनलाइन कार्यक्रम में सबसे बड़ी यही उपलब्धि होती है कि एक–दूसरे को देख सकते हैं। देश–विदेश कहीं से भी इसमें हिस्सा लेना आसान होता है।

13 दिसंबर, 2020 के भांगरभूंय कोंकणी अखबार में सखाराम शेणवी बोरकार ने एक नए काव्य संग्रह के बारे में जानकारी दी है जिसका लोकार्पण चौदह दिसंबर को हुआ। काव्य संग्रह का नाम है– 'इंद्रधोणू उदेवं' अर्थात् इंद्रधनुष हो साकार। प्रस्तुत काव्य संग्रह में कुल 51 कविताएँ हैं। जीवन की तरफ सकारात्मक दृष्टिकोण रखनेवाली ये कविताएँ प्रेरणादायी जीवनमंत्र देती हैं। परिस्थितियाँ जो भी हो उनका सामना करते हुए अपनी राह बनाने का संदेश देती हैं। सखाराम शेणवी बोरकार जिस कविता का उल्लेख करते हैं उसका भावार्थ–

हो बारिश बिन मौसम की
ले जाए गरमी, मेरे तुम्हारे शरीर से

धूप भी ऐसे आए
इंद्रधनुष पसरे आकाश में

कवि उदय नरसिंह म्हांबरो अपने काव्य संग्रह में साहित्यिक रूप के साथ–साथ अपना व्यापारी रूप भी प्रतिबिंबित करते हैं। वे नारियल के व्यापारी हैं तो उनके काव्य संग्रह में नारियल का पेड़, नारियल आदि प्रतीकों का होना स्वाभाविक है। नारियल के पेड़ का एक गुण है कि अगर कोई भी उसके पेड़ के आसपास थोड़ी सी भी रुकावट पैदा करें तो वह अपनी दिशा बदलता है पर सूर्य के सम्मुख ही रहता है। कवि का मानना है कि मनुष्य को भी नारियल के पेड़ की तरह बनने की कोशिश करनी चाहिए। इस कवि के अब तक दो काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं– 1. 'हय सायबा' अर्थात् हाँजी–हाँजी करना 2. 'मनशाच्या सोदांत' अर्थात् मनुष्य की खोज में। तीसरा काव्य संग्रह 14 दिसंबर, 2020 को बिंब प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होगा।

कोंकणी काव्य जगत में कवि एच.मनोज का काव्य संग्रह 'मनोभाव' एम.एंड.एम. पब्लिकेशंस द्वारा प्रकाशित हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में कोंकणी के ज्येष्ठ कवि, अनुवादक और स्वातंत्र्य सैनिक नागेश करमली जी ने अपने विचार रखते हुए कहा की कवि मनोज जब कविता करते हैं तब वे सिर्फ हवा में बातें नहीं करते बल्कि अपने पैर जमीन पर टिकाकर चलते हैं। कल्पना, भाव, वास्तविकता इन सबको साथ लेकर चलते हैं।

प्रस्तुत काव्य संग्रह में कुल 56 कविताएँ हैं। कवि का यह पहला ही काव्य संग्रह है तो भविष्य के लिए आशावादी रह सकते हैं। 'हारसो' अर्थात् आईना, इस आईने से जो संवेदन झलकता है उसे देखें–

भावार्थ – आईने में जो दिखाई देता है वह उस वस्तु की सच्चाई होती है। यही सच्चाई का गुण सबको मिले ऐसी ही प्रार्थना कवि करते हैं।

कोंकणी कहानी

इस साल कोंकणी कहानी में 2020 में कथाकार दामोदर मावज़ो 'तिश्ठावणी' अर्थात् उत्सुक होना या इंतजार करना कहानी संग्रह आया है। कोंकणी कथा विश्व में दामोदर मावज़ो एक जाना माना नाम है। इस साल इनके इस कहानी संग्रह में कहानीकार कहते हैं कि इनकी ये कहानियाँ पिछले छह सालों से प्रकाशन का उजाला देखना चाहती थीं इसलिए कहानी संग्रह का ये नाम रखा गया है। प्रस्तुत पुस्तक में कुल मिलाकर दस कहानियाँ हैं। सबसे पहली कहानी का नाम ही 'तिश्ठावणी' है। इंतजार करना, उत्सुक होना के संदर्भों में ये कहानियाँ अपना आकार पाती हैं। प्रसिद्ध साहित्यकार अरुण खोपर ने इसमें प्रस्तावना लिखी है। कहानियों के दूसरे शीर्षक इस प्रकार हैं–

'म्हाका कित्याक पडला' (मुझे क्या पड़ी है), 'बर्गर', 'बर्फ पिघलते हुए', 'जेंटलमेन चोर', 'सुंदरता का उपासक', 'अगला बालकृष्ण', 'टूटी हुई मोटर और नायट कॉल' इस कहानी संग्रह में कहानीकार सामान्य मनुष्यों को महत्व देकर उनकी महत्ता स्थापित करने का प्रयत्न करते नजर आते हैं।

आशावादी प्रकाशन द्वारा 20 दिसंबर, 2020 को, गूगलमीट द्वारा तीन पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

1. 'नवी दीशा' – नई दिशा – (लघुकहानी संग्रह) लेखिका मोनिका द' सा माथायस– डब्लीन– 'Dublin'। पुस्तक का लोकार्पण जोसफ माथायस ने यू ए ई से किया।

2. 'फांत्या पाराचें सपन' अर्थात् प्रातः काल का सपना। इसे रचनेवाले हैं वॉल्टर नंदलिके। पुस्तक का लोकार्पण कोंकणी साहित्यकार दामोदर मावजो ने किया।

3. 'कोंबो आनी झूज' अर्थात् मुर्गा और युद्ध में लघुकहानियाँ हैं। लेखक स्टीवन पिंटो कुंतलपाडी हैं और बहरीन से इस पुस्तक का लोकार्पण हिलरी टेलिस द्वारा किया गया।

कोंकणी रंगमंच

हर साल की तरह इस साल भी कोंकणी नाट्य स्पर्धा का आयोजन हुआ। 2020 की यह 44वीं नाट्य स्पर्धा है। इस साल इसमें 26 नाटकों का प्रस्तुतिकरण हुआ। इनमें से सात नाटक अनूदित हैं जबकि पिछले साल यह संख्या दस थी। कोंकणी साहित्यिक दिलीप बोरकारजी का मानना है कि कोंकणी नाट्य स्पर्धा का जो मूल उद्देश्य था कि स्पर्धा के कारण कोंकणी भाषा में नाट्य लेखक

और प्रगति करें, नए–नए प्रयोग किए जाएँ, नाट्य–संहिता लेखन से नए–नए लेखक तैयार हों.... ये सब छूटता नज़र आ रहा है क्योंकि अनूदित नाटकों की संख्या बढ़ रही है पर नाट्यलेखन करनेवाले कोंकणी नाटककार तैयार होते नज़र नहीं आते। दिलीप बोरकार जी अनूदित नाटकों के खिलाफ नहीं है पर सिर्फ अंग्रेजी भाषा से ही अनुवाद हो रहा है उसके खिलाफ वे आवाज़ उठा रहे हैं। उन्हें लगता है कि अनुवाद करना ही है तो गोवा में मराठी नाटक लिखें जा रहे हैं उनका कोंकणी अनुवाद होना चाहिए। उसी तरह कोंकणी नाटकों का मराठी में अनुवाद किया जा सकता है। आशा है कोंकणी नाट्यकार इन बातों को ध्यान में रखेंगे।

अब इस साल जो स्पर्धा हुई उसमें कोंकणी नाटकों के बारे में क्या स्थिति है उसका जायज़ा लेने की कोशिश करते हैं।

दिपराज सातोर्डेकार 28 फरवरी, 2020 के 'भांगरभूंय' (पृ.3) अखबार में लिखते हैं–

"आज नाट्य स्पर्धा का तीसरा दिन है पर प्रेक्षक गृह में ज्यादा प्रेक्षक नज़र नहीं आते। पता नहीं प्रेक्षकों को क्या हो गया है?" कोंकणी नाटककार पुंडलीक नायक द्वारा लिखित कोंकणी नाटक 'राखण'– अर्थात् रक्षा– का प्रस्तुतिकरण हुआ। मूलतः यह नाटक सन् 1979–80 के आसपास का समय चित्रित करता है। अलग–अलग साहित्यिक मूल्यांकन इस कृति में जमींदार के अत्याचारों को मूक रूप में सहते पात्र दिखाए गए हैं। विषय, स्थानक, दृश्य, पात्र चित्रण सब अपने दायरे में प्रभावपूर्ण है पर नाटक का हर पात्र एक ही तरह की भाषा कैसे बोलता है? अर्थात् भाषा की अलग–अलग शैली पात्र अनुरूप होनी चाहिए थी।

अनूदित नाटकों में 'बावली घर' मूल कृति– हेन्रीक इब्सन, डॉल हाऊस, कोंकणी अनुवाद सतीश नार्वेकार ने किया है। आज सन् 2020 में उपरोक्त नाटक के सब संदर्भ कालबाह्य हो चुके हैं। शायद इसीलिए नाट्य– संहिता प्रभावपूर्ण नहीं दिखी। उसी प्लॉट पर अनुसर्जन किया जाता तो शायद कुछ बात बनती। कोंकणी के नाटक अनुवादकों को यह बात समझ लेनी चाहिए कि नाट्य संहिता अपने समय का आईना होती है। आज के समय में उसकी प्रासंगिकता को ध्यान में रखना भी आवश्यक होता है।

'तियात्र' के क्षेत्र में इस साल बहुत कुछ छूटता नज़र आया है। वैसे तो कोंकणी रंगमंच ही सूना–सूना है। कोविड–19 की वजह से थियेटर क्षेत्र पूरे विश्व में सन्नाटे से गुजरता नज़र आता है। सुरक्षा कारणों से जब थियेटर ही बंद थे तो फिर रंगमंच पर नई प्रस्तुतियाँ कहाँ से होतीं? विश्व स्वास्थ्य संस्था भी ऐलान करती है कि खतरा अभी भी मँडरा ही रहा है। यू.के. में तो कोरोना विषाणु में नए प्रकार का म्युटेशन अर्थात् उत्परिवर्तन होने के सबूत मिले हैं जिससे नाताल का कोई भी उत्सव सिर्फ घर में ही मनाना पडेगा! फिर से लॉकडाउन कर दिया है। ऐसे माहौल में मनुष्य डर–डरकर जी रहा है। खैर, कोंकणी रंगमंच अगले साल ही कुछ नया सोच पाएगा।

कोंकणी उपन्यास

गत साल कोंकणी साहित्य के उपन्यास जगत में सन्नाटा था। इस साल वामनबाब टाकेकार जी ने 'दर्या धन' नाम से कोंकणी में उपन्यास लिखा है। प्रस्तुत पुस्तक में मछली पकड़ने के पारंपरिक रूप जो पूरी तरह से यंत्र और तकनीकी उपकरणों पर आधारित बन गया है को दर्शाया गया है। ऐसे समय में यह व्यवसाय सिर्फ धनवालों का ही बनकर रह गया है। लेखक का मानना है कि गोवा में, गोवा के समाज और सांस्कृतिक जीवन में मछली अनिवार्य है। फिर भी कोंकणी भाषा में मछली, उससे बनती अलग–अलग रेसिपी के बारे में, पाकशास्त्रीय कला के बारे में उतनी जानकारी उपलब्ध न होने का दुख लेखक ने व्यक्त किया है। प्रस्तुत पुस्तक के लोकार्पण समारोह में डॉ. भूषण भावे ने अपने विचार व्यक्त किए। उनके विचार से मछली गोवा की संस्कृति का हिस्सा है फिर भी इसके बारे में पूर्ण रूप से जानकारी देनेवाली एक भी पुस्तक गोवा में उपलब्ध नहीं है। हमारे पारंपरिक व्यवसाय भी हमारी संस्कृति का ही हिस्सा होते हैं। उनका जतन और विकास करना हमारी जिम्मेदारी बनती है। हमारे साहित्य में भी उनका निरूपण होना चाहिए। अपनी परंपरा को

छोड़कर आज यह व्यवसाय एक नए दौर में ही प्रवेश कर चुका है जिसका उल्लेख उपन्यास में किया गया है। मछुआरों की आज की समस्या, सामाजिक स्थिति, दौलतमंदों का दबाव, उनकी आर्थिक स्थिति आदि के बारे में, उपन्यासकार ने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

कोंकणी कथा साहित्य में दामोदर मावजो का नाम बहुत ही प्रसिद्ध है। इस साल इनका लिखा हुआ एक उपन्यास प्रकाशित हुआ है, जिसका शीषक है, 'जीव दिवं काय च्या मारूं'– जान दूँ या चाय पिऊँ?

प्रस्तुत उपन्यास की कहानी मुख्य पात्र विपिन के द्वारा प्रथम पुरुष में बताई गई है। फातिमा नाम की लड़की उसे प्यार करती है पर वह चित्रा को प्यार करता है। चित्रा और फातिमा सहेलियाँ हैं। समय के साथ विपिन के पिता की मृत्यु हो जाती है और माँ को डायेबिटीस हो जाता है जिसके कारण उसका एक पैर काटना पड़ता है। उसी में उसकी भी मृत्यु हो जाती है। फातिमा शादी करके मुंबई चली जाती है। चित्रा की माँ का भी देहांत हो जाता है। उपन्यास का अंत होते–होते पता चलता है कि चित्रा लेस्बीयन है। विपिन अपनी माँ के निधन के बाद मुंबई जाता है। फातिमा से मिलता है। एक रात के लिए दोनों साथ में रहते हैं। दूसरे दिन विपिन को समाचार मिलता है कि फातिमा ने आत्महत्या कर ली है। यह सब देखकर विपिन भी आत्महत्या करने के बारे में सोचता है। वह रेलवे प्लेटफॉर्म पर बैठा है तब उसे चाय पीने की इच्छा होती है उसी समय उसके मन में सवाल उठता है कि चाय पिऊँ या जान दे दूँ?

इस उपन्यास के बारे में कोंकणी की 'जाग' पत्रिका (दिसंबर 2020) में ग्वादालूप डायस ने समीक्षा करते हुए लिखा है कि 'शिजूंक नाशिल्ली कादंबरी' अर्थात् अधपका उपन्यास है। उपन्यास के शीर्षक से लेकर, उस समय क्रिश्चियन समाज के बारे में किए गए गलत कथन, उपन्यास में उल्लेखित पुस्तकों की भरमार वह भी एक ऐसे पात्र के द्वारा जो कि छह साल की उम्र तक स्कूल में गया ही नहीं है वह सिर्फ दो महीने में बड़ी–बड़ी पुस्तकें पढ़ लेता है यह सब बिल्कुल अविश्वसनीय लगता है। भाषा और शैली के बारे में भी समीक्षक ने बहुत ही सटीक और सही शब्दों में अपना अध्ययन बयाँ किया है। ग्वादालूप डायस का निरीक्षण, उनके निष्कर्ष काबिले तारीफ हैं। खैर इस अधपके, अधकच्चे उपन्यास से कोंकणी साहित्य में कोई इज़ाफ़ा हुआ ही नहीं बल्कि सिर्फ निराशा ही मिली।

27 दिसंबर, 2020 को कोंकणी के एक और ज्येष्ठ साहित्यकार उदय भेंब्रे द्वारा लिखित एक उपन्यास का प्रकाशन हुआ। जिसका शीर्षक है 'व्हडलें घर' अर्थात् बड़ा घर। सोलहवीं शताब्दी के दुखदाई इतिहास पर आधारित ऐतिहासिक और सामाजिक परिवेश चिंतन पर इसे रचा गया है जिसे संजना पब्लिकेशंस ने प्रकाशित किया है। लेखक का कहना है कि पात्र और घटनाएँ काल्पनिक होते हुए भी इतिहास के साथ छेड़छाड़ किए बिना अपनी बात कहने की कोशिश की है। इसी तरह की पृष्ठभूमि पर कोंकणी की कन्नड लिपि में 'सायबा भोगोस'– परमेश्वर दया करो– नाम से वि.जे.पी साल्दान ने (खडाप) सन् 1980 में पाँच भागों में उपन्यास लिखा। उनमें से पहला भाग देवनागरी लिपि की कोंकणी में प्रकाशित किया गया। लिप्यंतरण की जिम्मेवारी कविता ट्रस्ट के अध्यक्ष, कोंकणी के कवि मेल्विन रोड्रीगीस और उनकी पत्नी एवरेल रोड्रीगीस ने निभाई। सन् 2020 में कोंकणी देवनागरी लिपि में उसी विषय पर उपन्यास लिखा गया है।

कोंकणी लोककला

'लोकबंध'–डॉ. जयंती नायक, की पुस्तक का लोकार्पण अगस्त की 20 तारीख को, कोंकणी राज्यभाषा दिवस के उपलक्ष्य में हुआ। जयंती नायक कोंकणी लोकसाहित्य की अनुसंधानकर्ता के रूप में एक जाना माना नाम हैं। आज तक उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में कुल मिलाकर अठारह लेख हैं। इनमें लोक आस्था, कोंकणी रामायण की कथा में आए हुए बदलाव, लोक कहानियाँ, लोकबंध में चलते हुए परिवर्तन आदि हैं।

गोवा का इतिहास साक्षी है कि यहाँ पर पुर्तुगालियों के शासनकाल में धर्मांतरण भी हुआ था। इसकी पीड़ा को भी एक लोकगीत में बुना गया है जहाँ पर अपने जीवन और बदली संस्कृति को बुना गया है। लोक मानस और समाज अध्ययन का बहुत बड़ा हिस्सा लोकबंध में ही बुना जाता है। डॉ. जयंती नायक ने बहुत ही सुंदरता से इन धागों को मिलाया है। इस साल इस विभाग में एक ही पुस्तक है।

कोंकणी आत्मकथा

आत्मकथा के क्षेत्र में इस साल लेखक रामदास चाफाडकार की कृति 'गोमंत मुक्तिध्यास'– गोमंत प्रदेश में मुक्ति की लालसा– लेखक स्वातंत्र्य की लालसा के आत्मकथनात्मक अनुभव व्यक्त करते हैं। मोहन रानाडे के मार्गदर्शन में, लेखक ही नहीं बल्कि शंभु पालकार, शारदा सावयार, पद्माकर सावयकार, लक्ष्मीकांत चाफाडकार आदि भी शामिल थे। स्वतंत्रता आंदोलन के इन सैनिकों को गोवा मुक्ति के लिए जेल में भी जाना पड़ा। लेखक ने, पुर्तुगाली शासक गोवावासियों के साथ कैसा व्यवहार करते थे, का बयान आत्मकथनात्मक अनुभवों से व्यक्त किया है। गोवा राज्य में सावय–वेरें–जगहों के नाम हैं– वहाँ से भी स्वतंत्रता का कार्य बड़े पैमाने पर चला था।

कोंकणी अनुवाद

लिप्यंतरण

'अयोध्या' मूलतः मलयालम लिपि में लिखा गया उपन्यास है जिसे स्व.आनंदी मुंबै ने लिखा था जिसका लिप्यंतरण कोच्चि के डॉ. पी.आर. हरिंद्र शर्मा ने किया है।

दूसरी पुस्तक है 'मॅडम हेस्टर ग्रीन' मूलतः इंग्लिश भाषा में रचा गया उपन्यास जिसे नॅथानील हॉथॉर्न ने लिखा। इसका कोंकणी अनुवाद करनेवाले स्व. नरेंद्र काशिनाथ कामत हैं।

कोंकणी भाषा में वरिष्ठ लेखिका, समीक्षक, अनुवादक प्रा. अकल्पिता रावत देसाय ने 'कालिदास प्रतिमा' पुस्तक को मूल संस्कृत के कवि कालिदास के कुछ चुने हुए काव्य– वाङ्मय को कोंकणी भाषा में अनुवाद किया है। इस लेखिका ने आज तक कोंकणी साहित्य में शाहूमहाराज के जीवन पर और शिवाजी महाराज के जीवन पर रचित लेखन किया है। रूपरेखा बिना का परब्रह्म जैसे विषय पर भी लेखन किया है।

प्रस्तुत पुस्तक में अकल्पिता जी ने भारतीय संस्कृत कवि कुलगुरु कालिदास के अभिजात्य संस्कृत साहित्य से चुने हुए काव्य वाङ्मय का कोंकणी भाषा में अनुवाद किया है।

25 फरवरी, 2020 को साहित्य अकादमी ने सन् 2019 की कोंकणी अनुवाद पुरस्कार प्रदान किया है। डॉ. जयंती नायक को कृष्णा सोबती के हिदी उपन्यास 'जिंदगीनामा एक जिंदा रूप है' के अनुवाद के लिए यह सम्मान मिला है। कोंकणी शीर्षक रखा गया है– 'जिंदगीनामा–एक जीवो रूख।' 450 पृष्ठों का यह उपन्यास कोंकणी साहित्य में लानेवाली डॉ. जयंती नायक को बधाई। उनकी मेहनत सफल हुई और कोंकणी अनुवाद साहित्य समृद्ध हुआ है। मूलतः यह उपन्यास पंजाबी संस्कृति का चित्रण करता है। जिसमें उर्दू और पंजाबी भाषा के शब्द भी पाए जाते हैं। लोकगीतों को भी यहाँ पर स्थान दिया गया है। डॉ. जयंती जी ने आह्वान के रूप में इस कार्य को स्वीकारा था। अपनी जिम्मेवारी को उन्होंने सफलतापूर्वक निभाया।

सुनेत्रा जोग ने सन् 2020 में प्रसिद्ध लेखिका सुधा मूर्ति की दो अंग्रेजी पुस्तकों को कोंकणी में अनूदित करके कोंकणी अनुवाद साहित्य को समृद्ध किया है। उनके नाम हियर देयर एंड एव्हरी वहेअर– 'हांगा, थंय आनी वचत थंय' अर्थात् यहाँ, वहाँ और जहाँ जाए वहाँ और दूसरी पुस्तक थ्री थावजंड स्टिचीस– तीन हज़ार टाँकें हैं। सुधाजी के लेखन साहित्य में काल्पनिक कथा, बच्चों की पुस्तकें, यात्रा वर्णन आदि विविध प्रकार हैं। प्रस्तुत पुस्तकों द्वारा कोंकणी का अनुवाद साहित्य और विकसित होगा। सुनेत्रा जी अंग्रेजी से कोंकणी और अंग्रेजी से मराठी भाषा में भी अनुवाद करती हैं। मराठी भाषा में इन्होंने प्रिया छाब्रिया लिखित, 'जनरेशन 14 और शिव खेरा रचित 'यू कॅन अचिव्ह' का अनुवाद किया है।

कोंकणी में अनुवाद के साथ लिप्यंतरण कार्य भी बहुत जरूरी है क्योंकि अलग–अलग लिपियों

में आज भी लिखा जा रहा है। प्रस्तुत पुस्तक 'जिणेची वाट' अर्थात् जीने की राह मूलतः रोमन लिपि में जॉन एम.आल्फोंसो ने लिखी है जिसका लिप्यंतरण विन्सी क्वाद्रूस ने किया है।

वैचारिक लेख

कोंकणी साहित्य में दत्ता दामोदर नायक यह नाम बहुत ही जाना माना है। यात्रा वृत्तांत लिखने में वे माहिर हैं। एक उपन्यास 'सावित्री' भी उन्होंने 2017 में लिखा है। उनके निबंधों में प्रकृति वर्णन और समाज–संस्कृति साथ–साथ में बिंबित होते रहते हैं। इस साल इन्होंने 'श्मशानांतलीं भाशणां' अर्थात् श्मशान के भाषण। विनोदी लेखन के साथ–साथ प्रश्नार्थ चिह्नों से सोचने पर मजबूर करनेवाला लेखन किया है। मूलतः तो ये लेखक व्यापार करनेवाले हैं। उद्योगों में दिलचस्पी रखनेवाले हैं। इसलिए श्मशान के भाषणों का लोकार्पण करनवाले उद्योगपति अवधूत तिंबलो को लगता है कि इस पुस्तक में विनोद के स्तर का बहुत निर्माण किया जा सकता है। उसके बारे में उन्होंने अच्छा सूचन किया है कि किसी एक बात में जब हम संगति अर्थात् (सिमेट्री) खोजते हैं तो विवेक बुद्धि का उपयोग करना पड़ता है अर्थात् बाँया दिमाग इस्तेमाल करके विवेक उसे खोज निकालता है। पर जब किसी चीज में विसंगति खोजें तो विनोद निर्माण होता है। इस समय पर बहिर्गोल वा अंतर्गोल काँच वस्तु को बड़ा या छोटा करता है तब विनोद का निर्माण होता है। प्रस्तुत पुस्तक में विनोद के साथ वैचारिक चिंतन भी है। जैसे श्री श्री श्री मदनशंकर महाराज के लेख में स्पिरीच्युअल कन्ज्युमरिझम के बारे में सोचा गया है तो ऑफिशियल पॉलिसी में व्यावसायिक क्षेत्र में या नोकरशाही में लचीलापन न होने से धज्जियाँ उड़ती हैं उसे उजागर किया गया है।

एक बात स्पष्ट रूप से माननी पड़ेगी कि लेखक बहुत ही तटस्थता से अपनी पुस्तकों के बारे में सोचते हैं। वैसे यह काम बहुत कठिन है पर लेखक की परिपक्वता ही ये तटस्थता दे पाई है।

इस कोरोना की महामारी के लॉकडाउन काल में जिन्होंने अपनी जान पर खेलकर भी लोगों की, मदद की, उन पर वैचारिक लेखन 'हिरकणी' पुस्तक में लेखिका भारती बांदोडकर ने किया है। 'हिरकणी' अर्थात् हीरे की कनी। यह विचारों की लेखमाला है। इस कोविड–19 की महामारी ने हमें जो सबक सिखाएँ हैं उसका प्रतिबिंब समाज और साहित्य दोनों में आना स्वाभाविक ही है।

'कशे आशिल्ले गांधीजी' अर्थात् कैसे थे गांधीजी– लेखक गुरूनाथ केलएकार इस पुस्तक के माध्यम से गांधीजी के विचारों को आज भी प्रासंगिक दिखाते हैं। तभी तो हमें आज भी 'आत्मनिर्भर' और 'स्वच्छ भारत' अभियान चलाने की ज़रूरत लगती है। लेखक ने गांधीजी के विचारों को प्रश्नोत्तर रूप में बड़ी सरल शब्दावली में रखा है।

'जोगूल'–2 अर्थात् बिजली। लेखिका सोनिया शहा (निबंध संग्रह) अपने–अपने क्षेत्रों में योगदान देनेवाली महिलाओं के बारे में जानकारी देते हुए लेखिका उनका योगदान भी स्पष्ट करती जाती हैं। लेखिका ने बहुत ही काव्यात्मक ढंग से उनका परिचय देते हुए अपने विचारों को व्यक्त किया है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका ने 38 महिलाओं के बारे में उनके क्षेत्र के बारे में जानकारी देने का काम सफलतापूर्वक किया है।

वैचारिक लेखन में एक युवा रचनाकार हैं जिसका नाम है संपदा कुंककार। इनकी ग्यारह पुस्तकें आ चुकी हैं। मिस्टेरियस पावर, पावर युवर लाईफ, सेलेब्रेट लाईट, मनोपासना, मनमंथन, मन की शक्ति, प्रसन्नोत्सव, रवींद्र केलेकार के साहित्य का तत्वज्ञान, आदि।

सन् 2019 में इन्हें 'युवा सृजन पुरस्कार' (कला और संस्कृति विभाग) प्रदान किया गया।

कोंकणी–मराठी पत्रिकाओं में 600 से ऊपर लेख प्रकाशित हो चुके हैं। भगवद्गीता के अध्याय, व्हिडिओ रूप में लोगों के सामने लाने का काम वे कर रही हैं।

कोंकणी सिनेमा

आजकल साहित्य की परिभाषा इतनी विस्तृत हो गई है कि मास कम्युनिकेशन, कंप्यूटर, टी वी, आदि माध्यमों को नज़रअंदाज करना सही नहीं लगता। पाठ्य पुस्तक अब कंप्यूटर स्क्रीन या

लैपटॉप पर भी टेस्ट दिखाकर पढ़ाना आसान हो गया है। फिल्म एप्रिसिएशन के लिए फिल्म क्लब है। टेक्स्ट बुक विद्यार्थी के या शिक्षक के हाथ में न होते हुए भी उस संहिता को स्क्रीन पर दिखाकर पढ़ाया जा सकता है। इसीलिए किसी भी भाषा के साहित्य में इनका योगदान शत प्रतिशत होता ही है। सिनेमा और संगीत का नाता भी उतना ही गहरा है।

पत्रकार फ्रेडरिक नोरोन्हा (नवहिंद टाइम्स जनवरी 05,2020) अपने लेख 'इन प्रेज ऑफ ए फ्रेनेमी', 'कोंकणी म्यूजिक बुक' का उल्लेख करते हैं।

इनके ये 'फ्रेनमी' का नाम है फ्रांसिस रोड्रीगस, इनकी पत्नी है क्लेरा रोड्रीगस। ये दोनों मिलकर कोंकणी संगीत में अपना इतिहास रच रहे हैं। इनकी पहली कोंकणी संगीत पुस्तकों के नाम हैं–

1. 'दी ग्रेटेस्ट कोंकणी सोंग हिट्स वॉल्यूम–I।'
2. वॉल्यूम (Vol. II)
3. वॉल्यूम (Vol. III)

इनकी विशेषता यह है कि इन गीतों को उनकी संगीत भाषा में अर्थात् नोटेशन लिरिक्स एंड ट्रांसलेशन Notations, lyrics and translation. में रचा गया है।

संगीत के चिह्नों की ये भाषा अंतरराष्ट्रीय है जिसकी वजह से कोंकणी संगीत, गीत ज्यादा ग्लोबल हो पाएगा। शब्द और उच्चार भी सही रहेंगे। कोंकणी साहित्य में इन संगीत प्रेमियों को तथा अपनी भाषा के प्रति इनके लगाव को साहित्य के इस ग्लोबल उपक्रम के लिए इन्हें बधाई।

रेमों फर्नांडीस एक ऐसे ही कलाकार गायक, कवि, संगीतकार, गीतकार हैं जो अपने संगीत, गीत एल्बमों के निर्माता हैं। विश्व में अपनी पहचान बनानेवाले एक ऐसे गोवावासी जो अपनी पहचान खुद हैं। गोवा के ये ग्लोबल कलाकार सन् 2020 में मदर टेरेसां पर 28 गानों का ऑपेरा तैयार कर चुके हैं और इसे प्रस्तुत करने के लिए लंदन के निर्माताओं से चर्चा कर रहे हैं।

कोंकणी सिनेमा की प्रगति हो ही रही है। सिनेमा के लिए कहानी लिखनेवाला, निर्देशक, निर्माता, कॉस्ट्यूम, गानेवाले कलाकार, गीतकार, संगीतकार, एडीटर, साउंड, लाईटस, कहानी साकार करनेवाले, फायनांसर, वितरक, पार्श्व संगीत, कैमरा, एक्शन, स्पोट बॉय, और भी बहुत कुछ होता है तभी एक अच्छा सिनेमा बन सकता है।

इन कलाकारों को उनके काम की पहचान, और प्रोत्साहन मिलना ही चाहिए। 'वर्ल्ड कोंकणी म्यूजीक एवॉर्ड' में इस साल गोवा की कोकिला लोर्ना को 'जीवन गौरव' पुरस्कार दिया गया। कोंकणी गायिकाओं में एक मशहूर नाम लोर्ना का है। स्टेज शो हो या इनके गानों का एल्बम गोवा ने हमेशा लोर्ना को सराहा। ख्रिस पेरी को मरणोत्तर संगीत पुरस्कार दिया गया।

एरिक ओझारिओ कोंकणी कार्यक्रमों के लिए गिनीस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम कमानेवाले, कोंकणी रंगमंच के लिए नए कलाकारों को प्रोत्साहन देनेवाले हैं, भारत के राष्ट्रपति के हाथों सम्मान पानेवाले इस कलाकार ने कोंकणी गीत, संगीत को नई ऊँचाई दी है। कोंकणी के लिए इतना बड़ा योगदान देनेवाले एरिक ओझारिओ, ख्रिस पेरी, आल्फ्रेड रोझ आदि की बदौलत कोंकणी ग्लोबल बन पाई।

कोरोना के इस दौर के सन् 2020 में कोंकणी सिनेमा में लघुपट 'रॅसिस्ट' यू–ट्यूब पर, पंद्रह अगस्त को प्रदर्शित हुआ। इस लघुपट में, अपने हक की लड़ाई लड़ने के लिए खुद स्त्री को कमर कसने का संदेश दिया गया है। हर्षला पाटिल बोरकार ने इसका निर्माण किया है। कुणाल बोरकार ने दिग्दर्शन संभाला है। साईश म्हामल ने संगीत दिया है। कुंहर्ष क्रिएशन का यह लघुपट www.youtube.com/kunharshCreations चैनल पर इसे रिलीज किया गया। मूलतः इस लघुपट में स्त्री को अपनी शक्ति को खुद पहचानकर, अपने समाज में जो लिंग भेद चल रहा है उसके सामने आवाज उठाने की बात को रखा गया है। इसमें स्त्री पर हो रहे अत्याचार के लिए आवाज उठाने का प्रयास दिखाई देता है।

कोंकणी बालसाहित्य

सन् 2020 में कुमूद नायक चार पुस्तकों को ला रही हैं–

1. भुरगीं म्हजीं गुणाजी (कहानी)
   अर्थात् बच्चे मेरे गुणवान
2. शाणो कोण (कहानी)
   अर्थात् बुद्धिमान कौन
3. एकवटाचें बळगें (नवलिका)
   अर्थात्– एकता का बल
4. पाडेली रे पाडेली (एकांकी)
   अर्थात् नारियल तोड़नेवाला

केंद्रीय साहित्य अकादमी का बाल साहित्य पुरस्कार पानेवाली इस लेखिका ने 2020 में बाल साहित्य में चार और पुस्तकों का इजाफा किया है। पुस्तकों के शीर्षक से ही कहानी का अंदाजा हो ही जाता है। पहली कृति में गुणवान बच्चों के लिए संदेश देती यह लेखिका दूसरी पुस्तक में बुद्धिमानी पर प्रकाश डालते हुए सयानेपन का संदेश देती नज़र आती हैं। तीसरी पुस्तक में एकता के बल पर संदेश देकर उसकी महत्ता को उजागर करने का प्रयास किया गया है। चौथी पुस्तक में नारियल के पेड़ पर चढ़कर नारियल तोड़नेवाले 'पाडेली' के जीवन की झाँकी को प्रस्तुत करने का यत्न किया गया है।

विजया शेल्डेकार– 'इनु पुशु'

विजया शेल्डेकार– सरस्वतीच्या अंगणात

'रानतळी फांतरांची जाळी' अर्थात् बन तालाब पत्थरों की जाली– लेखक दुर्गेश चंद्रकांत माजिक की लिखी प्रस्तुत पुस्तक में बाल मानस को ध्यान में रखकर बातों को सँजोया गया है।

गोवा में कोंकणी भाषा मंडल द्वारा 2 नवंबर, 2020 से 7 नवंबर, 2020 तक बाल साहित्य परिषद का आयोजन किया गया। 2 नवंबर को शाम के छह बजे ऑनलाइन कार्यक्रम में इसका उद्घाटन किया गया। लेखक और बाल साहित्यिकार विनोद कुमार शुक्ल ने बीजभाषण किया। विषय इस प्रकार थे–

– ऑडियो –वीडियो बाल साहित्य
– बाल नाट्य का महत्व
– अनुवादित बाल साहित्य
–बाल साहित्य में चित्रों का योगदान
– बाल साहित्य का प्रस्तुतिकरण

23 अक्तूबर के कोंकणी अखबार में ही बाल साहित्य पर दिनेश मणेरकार ने लेख भी लिखा है जिसमें वे लिखते हैं कि–

बाल साहित्य को नई दिशा की जरूरत है। कोंकणी भाषा का बाल साहित्य अभी भी उपेक्षित ही है। किसी भी भाषा के लिए बाल साहित्य बच्चे की बुनियाद होती है। उसी तरह उसकी समीक्षा भी उतनी ही जरूरी होती है।

यह बात तो सही है कि किसी भी साहित्य के लिए समीक्षा–आलोचना महत्वपूर्ण होती है। कोंकणी का बाल साहित्य ही नहीं बल्कि पूरा कोंकणी साहित्य अभी भी समीक्षा आलोचना से कोसों दूर है।

कोंकणी साहित्य डिजीटल फॉर्म में

आशावादी प्रकाशन, मुंबई से वल्लि क्वाडरस कोंकणी साहित्य को डिजीटल ऑडियो फॉर्म में तैयार कर रहे हैं। अब तक उन्होंने 'कथा दायज' नाम से अपनी ही 22 कोंकणी कहानियों को ऑडियो फॉर्म में तैयार किया है। दूसरा है 'सूर्यो उदेता' भाग–1 इसमें इन्होंने संपादन कार्य किया है और इसमें अलग–अलग रचनाकारों की 27 कहानियाँ है। तीसरा 'मायानगरी' अब आकार ले चुका है। चौथा है सूर्यो उदेता– भाग–2। 27 सितंबर, 2020 ग्लोबल डिजीटल कोंकणी मीट हुई, जिसमें युएई, ओमान, कुवैत, बहरीन, युके, अमरीका से कोंकणी प्रेमियों ने हिस्सा लिया। तीन डिजीटल पुस्तकों का लोकार्पण हुआ।

1. Canara Catholic Kazorani Vovoi अर्थात् कर्णाटक कॅथोलिक शादी के गीत

2. Poinnari Digital Literary Journal in three scripts Kanna, Romi, Devnagri.

3. Lockdown Digital audio book. (Poetry)

आशावादी प्रकाशन और पयणारी डॉट कॉम कोंकणी के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म तैयार कर रही है जिससे पाँच लिपियों में पसरा कोंकणी समाज (मुख्य रूप से तीन) एक मंच पर कोंकणी बोले और इस तरह ही कोंकणी का सही विकास होगा।

दिसंबर के महीने में आशावादी प्रकाशन ने ऑनलाइन तीन पुस्तकों का लोकार्पण किया।

– नई दिशा–लेखिका मोनिका द'सा माथायस, डबलीन

– प्रातः काल का सपना. लेखक वॉल्टर नंदालिके

– मुर्गा और युद्ध– स्टीवन पिंटो कुटालपाडी

आशावादी प्रकाशन को इस साल बीस साल पूरे हो रहे हैं, इस प्रकाशन की यात्रा का आरंभ सन् 2000 में कुवैत में हुआ था। सत्ताईस दिसंबर को ऑनलाइन कार्यक्रम में इस प्रकाशन संस्था के योगदान को सराहा गया। कुल मिलाकर इस प्रकाशन ने 49 पुस्तकें कोंकणी की कन्नड और देवनागरी लिपि में, प्रकाशित की हैं।

– लघु कहानियाँ– 17,
– कविता, अनुवाद और संकलन–23,
– कविता विश्लेषण–05
– लेख–संपादकीय–03,
– उपन्यास–01

इसके अलावा ई–बुक्स, ऑडियो बुक्स, विशेष पत्रिकाएँ भी हैं। कोंकणी भाषा के लिए यह वर्चुअल मंच अपने विचार व्यक्त करने का एक खुला आकाश है। कोंकणी बोलनेवाले देश–विदेश के सब लोग यहाँ हिस्सा ले सकते हैं। इस कार्यक्रम में यु.एस.ए., यु.के., डब्लीन, कुवैत, महाराष्ट्र, गोवा, मेंगलोर, बेंगलुरू से कोंकणी प्रेमीयों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय साहित्यिक पुरस्कार भी प्रदान किए गए। 2020 साल के लिए कवि को चुना गया। डीजिटल कोंकणी कहानी के लिए भी पुरस्कार दिए गए।

सन् 2018 से 'अंतरराष्ट्रीय कोंकणी आयकॉन' पुरस्कार भी शूरू किया गया। गत साल यह पुरस्कार डॉ. ऑस्टीन डि, सौजा को दिया गया था। विदेशों में रहकर कोंकणी में योगदान देनेवालों के लिए यह पुरस्कार है। सन् 2020 में यह पुरस्कार साउथ केनरा एसोसिएशन लंदन की संस्था को दिया गया।

डिजीटल कोंकणी के साथ–साथ इस फॉर्म में मैंने पत्रकारिता, समूह माध्यम, जनसंचार आदि को भी स्थान दिया है तो कार्यक्रमों में सूत्रसंचालन करने में सहायक हो ऐसी एक किताब इस साल प्रकाशित हुई है जिसका शीर्षक है 'सुत्रनिवेदनाचीं सुत्रां' अर्थात् सूत्रसंचालन के सूत्र जिसकी लेखिका डॉ रूप च्यारी हैं। इस किताब का लोकार्पण केंद्रीय आयुष मंत्री श्रीपाद नायक द्वारा किया गया। सही मानो में प्रस्तुत पुस्तक में सूत्र संचालन के सूत्रों का मार्गदर्शन दिया गया है। इस कला में समयोचित सूचकता बहुत ही महत्पूर्ण होती है तो सूत्र संचालन करते समय इसका ध्यान रखना आवश्यक हो जाता है। यही एक मास्टर कुँजी है। हर समय, हर पल, हर लम्हा, सूत्र संचालन करते समय इसका ध्यान रखने से कार्यक्रम बेहतर बनता है। कोंकणी साहित्य में इस पुस्तक का स्वागत है। कोंकणी भाषा को जनसंचार, समूह माध्यम, विज्ञान, ई–पत्रकारिता आदि विषयों के पुस्तकों की बहुत ज़रूरत है। एक बात तो साफ है कोंकणी की साहित्यिक गतिविधियाँ बहुत धीमी गति से चली हैं। डर और महामारी के माहौल में साहित्य और कला का रूप पूर्ण रूप से निखरना मुमकिन नहीं है।

– 4, शशिसदन, प्रथम तल, मंडवेल, वास्को–द–गामा, गोवा–403802

❑❑❑

6

गुजराती साहित्य

डॉ. वर्षा सोलंकी

2020 में कोरोना महामारी के संक्रमण ने पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया। कोविड–19 के चलते लॉकडाउन का आदेश सरकार द्वारा दिया गया साथ ही लोगों ने इस समय स्वयं अनुशासित होकर खुद को घर में रखना ही मुनासिब समझा। इस समय का सब लोगों ने लाभ उठाया और पूर्णरूप से फ्री होने पर अपने आपको अपनी रुचि के अनुसार विविध गतिविधियों से जोड़े रखा। इस स्थिति का लेखकों ने भी पर्याप्त मात्रा में सदुपयोग किया और उत्साह से अपनी–अपनी विधाओं में लिखा। नतीजतन गुजराती भाषा में 2020 में विविध क्षेत्रों में साहित्य का सृजन हुआ। कोविड–19 की वजह से कर्फ्यू होने के बावजूद भी टेकनोलॉजी के सहारे सब काम आसानी से होते रहे और 2020 के अंत तक लेखकों ने अपनी किताबें पाठकों के सामने प्रस्तुत की। आज इन्हीं लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तकों के विषय में हम अपने पाठकों को अवगत कराएँगे।

नवनीत सेवक द्वारा लिखे गए उपन्यास 'अतृप्ता', 'खंडेर', 'जानिसार', और 'एक सत्य' 2020 में आए। श्री नवनीत सेवक विविध विधाओं के लेखक हैं। सेवक जी ने 130 उपन्यास और लगभग इतनी ही बाल साहित्य से संबंधित पुस्तकें लिखकर पाठकों को अपने करीब रखा है। सामाजिक, ऐतिहासिक, रहस्यात्मक, साहसिक, प्रेत, हास्य, डाकुओं की पृष्ठभूमि पर समुद्री कथाएँ और पौराणिक कथाएँ लिखकर आज भी वह गुजराती साहित्य में अपना नाम अग्रिम क्रम में रखे हुए हैं।

मोहन परमार ने 'कालपास' उपन्यास लिख कर गुजराती साहित्य को अपनी एक विशिष्ट रचना दी है। दलित साहित्य में अपनी कलम से समाज की विषमता को मोहन परमार ने बार–बार उकेरा है। वे कहते हैं कि लघु कथाएँ लिखना असल में बहुत कठिन है। गुजराती भाषा में वर्तमान समय में लघु कथाओं का स्वरूप अपनी कलात्मक भव्यता के साथ–साथ पर्याप्त रूप से समृद्ध भी है। विशिष्ट कथाएँ देने वाले मोहन परमार का गुजराती साहित्य में विशेष योगदान है। आधुनिकोत्तर गुजराती कथा साहित्य में जिन्होंने अपनी विशिष्ट प्रविष्टि दर्ज की है उसमें 'नकलंक', 'कुंभी', 'पोंठ', और 'आंचलो' शामिल हैं। और आश्चर्य की बात तो यह है कि यह सभी कहानी संग्रह मोहन परमार के हैं। वे केवल गुजराती कहानीकार ही नहीं हैं वरन् भारतीय कहानीकार हैं।

विवेच्य काल में मनीषा गाला का 'वारसदार' उपन्यास भी आया है। इस उपन्यास में लेखिका ने विरासत में मिले संबंधों को परखने और नई पीढ़ी को मिलने वाले पैतृक अधिकारों के बारे में बात की है।

केशुभाई देसाई ने 'कोरोना–कांड' नामक उपन्यास लिखा है। कोरोना की वजह से आम जनता को किन–किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा एवं कोरोना के इस समय ने मानव को कैसा अपाहिज जैसा बना दिया तथा टेकनोलॉजी के इस युग में भी मनुष्य कुदरत के आगे एक तुच्छ जीव है यह सबने अब सही में जाना। यही बात केशुभाई अपने उपन्यास में लेकर आए हैं।

'डेथ–फीवर' उपन्यास बालेंदुशेखर जानी द्वारा लिखा गया है। इस उपन्यास में उन्होंने मन के भावों को अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस दौरान 'वाया रावलपिंडी' उपन्यास गिरिमा धारेखान द्वारा लिखा गया है। 'कृतध्न' उपन्यास डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' द्वारा लिखा गया है। जिसका गुजराती में अनुवाद प्रो. अश्विन आणदाणी ने किया है।

कहानी संग्रह में 2020 में डॉ. चंद्रकांत मेहता ने तीन कहानी संग्रह 'मारूँ वार्ता विश्व', 'मारी वार्ता सृष्टि' तथा 'स्वप्न लोक' लिखे हैं। डॉ. चंद्रकांत मेहता ने अपने कहानी संग्रह में युवा पीढ़ी की संकुचित, स्वकेंद्रित दृष्टि तथा भौतिक सुखों को ही सर्वोपरि मानने की वृत्ति की निंदा की है। डॉ. चंद्रकांत मेहता विद्वान अध्यापक, वक्ता, लेखक और पत्रकार हैं। वह गुजरात यूनिवर्सिटी के उपकुलपति भी रह चुके हैं। गुजराती में 124, हिंदी में 27, अंग्रेजी तथा प्राकृत भाषा में उनकी 4 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। मेहता जी अपने मैत्रीभाव के स्वभाव से लोगों के बीच विशिष्ट स्थान बनाए हुए हैं। उनका हाथ उष्मा भरी दोस्ती के लिए सदैव आगे रहता है। गुजराती भाषा में उनकी पुस्तकों ने लोगों के जीवन में प्रेरणा प्रदान करने का काम किया है। जीवन को देखने का उनका अलग ही नजरिया है।

'मुकाम' हर्षद त्रिवेदी का कहानी संग्रह है। गुजराती साहित्य में उनका प्रवेश कवि के रूप में हुआ। उनकी कविताओं में उनके जीवन की पीड़ा और दर्द की अभिव्यक्ति हमें बार–बार उन्हें पढ़ने को प्रेरित करती है। उन्होंने गुजरात साहित्य अकादमी और गुजराती साहित्य परिषद की अनन्य सेवा की है। वो 'शब्दसृष्टि' पात्रिका के संपादक भी रहे। उन्होंने अचानक अपनी लेखन की विधा को बदलते हुए 'जालीयुं' नामक कहानी संग्रह की रचना की है। उन्होंने रेखाचित्र और उपन्यास भी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किए हैं। उनकी सभी कहानियाँ एक दूसरे से सर्वथा भिन्न होती हैं और यही उनकी विशिष्टता है जिसको पाठक पढ़ना पसंद करते हैं।

दीवान ठाकोर द्वारा लिखित पुस्तक 'अने... ....' उनका पाँचवाँ कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में कुल 18 कहानियाँ हैं। इन कहानियों में लेखक ने जीवन के प्रति अपनी विषमताएँ, चिंताएँ, विषाद, दुख और क्रोध को प्रतीकात्मक तौर पर लिया है। साथ ही विश्व चेतना जो सजीव और निर्जीव दोनों में समान रूप से मौजूद है को अपनी कहानियों से जोड़ा है। प्रकृति के रचे पौधे, पत्ते, पुष्प और फल मनुष्य को विश्वचेतना से जोड़ते हैं। लोगों की चेतना से जुड़ना अपने आप में एक रसमयी घटना है। उनकी कहानियों में यथार्थ का चित्रण देखने को मिलता है। उनकी कहानियों में ग्राम्य जीवन एवं शहरी जीवन के रिवाजों को लोगों तक पहुँचाने के लिए उसी परिवेश में खुद को ढालने की कोशिश ही विशिष्ट लेखन कला है। सभी कहानियों में पात्रों का विशिष्ट चयन भी किया गया है जो उनकी विशेष सोच को दर्शाता है। दीवान ठाकोर ने अपनी अलग शैली के कारण ही गुजराती साहित्य में अपना अलग स्थान बनाया है।

प्रवीण सिंह चावड़ावों 'वार्तालोक' कहानी संग्रह के संपादक है मणिलाल पटेल। देश और दुनिया के श्रेष्ठ कहानीकारों का प्रभाव उनकी अपनी अलग ही विशिष्ट शैली में लिखी गई कहानियों में दिखाई पड़ता है। कोई छोटी सी घटना या कोई ऐसा प्रसंग या अपने आस–पास बनते बिगड़ते हालात और समाज के अनुभवों की जीवंतता तथा उन्हीं क्षणों को कहानी का आधार बना कर, लेखक कहानी के पात्रों की संवेदना, मानसिकता एवं संघर्ष को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करके, कहानी को बढ़ाते हैं। लेखक कला की हद में रह कर,

जीवन के लिए तथा जीवन में संघर्ष करते लोगों की संवेदनाओं के विषय में 'कुछ' कहना चाहता है। ये जो 'कुछ' कहने की छटपटाहट है असल में यही जीवन का सार है और यही जीवन का माधुर्य है। जीवन के खालीपन को भरने के लिए कहानी को पढ़ना जरूरी है जो सदैव अपनी बाहें फैलाए पाठकों का स्वागत करती है। मणिलाल पटेल ने इन कहानियों का संपादन करके गुजराती साहित्य को विशिष्ट कहानी संग्रह दिया है।

'अचरज' मोहन परमार द्वारा लिखा गया कहानी संग्रह है। दलितों की दबी आवाज को अपनी कलम से उजागर करने वाले मोहन परमार का नाम गुजराती साहित्य में ऊँचे दर्जे पर है। 'अचरज' कहानी संग्रह में वे अपनी कहानी के माध्यम से समाज के दबे कुचले लोगों, समाज की विषमता, आए दिन घटती घटनाओं को कहानी के माध्यम से लोगों तक लेकर आए हैं। मोहन परमार की कहानियों को पढ़ने के लिए पाठक सदैव उत्साहित रहते हैं।

दक्षा पटेल हरा लिखित कहानी संग्रह 'ए–स्केलेटर' और 'ड्रायविंग लाइसेंस' अनुवादित संपादन है। दक्षा पटेल ने इसके अलावा भी अन्य कहानियों एवं उपन्यासों का अनुवाद करके गुजराती साहित्य और गुजराती पाठकों का अन्य भाषाओं में लिखित साहित्य से परिचय करवाया है।

'अंधारानों रंग' कहानी संग्रह वंदना शांतुइंदु ने लिखा है। 'शरत' कहानी संग्रह मिलय दोशी ने लिखा है। इन दोनों लेखिकाओं ने गुजराती साहित्य में अपना असीम योगदान दिया है।

चरित्र लेख में पोपटलाल मंडली ने समाज के विशिष्ट व्यक्तियों को, अपनी कलम के माध्यम से पाठकों के सामने लाने का काम किया है। वे पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, डॉ. शांतिस्वरूप भटनागर, गुरुगोविंद सिंह, सम्राट अशोक, महारानी अहिल्या बाई, महा वैद्य झंडु भट्ट, वनस्पतिशास्त्री जयकृष्ण इंद्रजी, महान वैज्ञानिक हरगोविंद खुराना, महान आयुर्विज्ञानी चरक और सुश्रुत, डॉ. हेडगेवार जैसे सभी महानतम विद्वानों को पाठकों तक ले आए हैं।

पुपल जयकर ने 'जे. कृष्ण मूर्ति' के जीवन को पाठकों के सामने ला कर पाठकों को जे. कृष्ण मूर्ति के जीवन से अवगत कराया है।

इसी जीवन चरित्र विधा में इला आरब मेहता 'प्रथम विद्रोही शंबुकाटाज' को लेकर आए हैं और उनके जीवन के संघर्ष से पाठकों को अवगत कराया है।

'शौहार्दशील सारस्वत' में दर्शन धोलकिया ने समाज के विशिष्ट लोगों को गुजराती पाठकों तक ला कर उनके संघर्षमय जीवन से पाठकों को रूबरू करवाया है।

कविता के क्षेत्र में भी 2020 में विशिष्ट कार्य हुआ है जिसमें 'अध च' नाम से प्रवीण दरजी का काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। प्रवीण दरजी न केवल कविता बल्कि कहानी, निबंध, विवेचना, अनुवाद एवं संपादन का कार्य भी करते हैं। उन्होंने गुजराती भाषा में 100 से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं। प्रवीण जी को राज्य एवं राज्य के बाहर भी अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है। विविध साहित्यिक संस्थाओं ने पारितोषिक, गुजरात राज्य गौरव पुरस्कार और रणजितराम सुवर्जचंद्वक से नवाजा है। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने दो बार उनके रिसर्च के लिए फेलोशिप दी है। साठवें (60) गणतंत्र दिवस और उनहत्तरवें स्वतंत्रता दिवस पर गुजरात राज्य के तत्कालीन माननीय मुख्यमंत्री तथा महामहिम राज्यपाल ने उन्हें विशेष साहित्यिक प्रतिभा के लिए सम्मानित किया था। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली ने उनको एमिरिटस प्रोफेसर के रूप में सम्मानित किया है। उनकी रचनाएँ गुजरात में तथा राज्य के बाहर भी स्कूल एवं कालेजों में पढ़ाई जाती रही हैं। साहित्य में इनके विशेष योगदान के लिए भारत सरकार ने 2011 में उन्हें पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित किया था।

डॉ. सुनील यादव द्वारा लिखित 'माइलो ना माइल मारी अंदर' में लेखक ने गुजरात के जानेमाने कवि उमाशंकर जोशी के काव्य का विस्तृत विवेचन किया। उमाशंकर की कविताओं में अभिव्यक्त कवि के विचारों एवं कवि के मनोभावों को दर्शाने का प्रयास किया है। डॉ. सुनील जी कहते हैं कि कवि

द्वारा शब्दों का चयन ही कविता की उपलब्धि है। उमाशंकर का कहना था कि छोटी सी आँख में रोशनी होती है तभी हम दुनिया का उजाला देख पाते हैं। इन्हीं बातों को लेखक ने अपने लेख में कहना चाहा है।

प्रवीण गढवी 'चारणी–लोक काव्य सौंदर्य' नाम से गुजरात में बसी चारणी जाति के लोक काव्य को पाठकों के सामने लेकर आए हैं। आजादी के पहले जब राजा–रजवाड़े हुआ करते थे तब चारण जाति के लोक गायक दरबारों की शान हुआ करते थे। पर आजादी के बाद भी इन लोक काव्यों को चारण जाति ने बचा कर रखा है। राजा–रजवाड़ों का तो विलिनीकरण हो गया पर गुजरात के सौराष्ट्र के गाँवों में बसे निरक्षर चारणों ने, बारोट, मोतीसर, रावण, मीर, तुरी, दलितों तक सीमित ना रह कर और केवल किसी जाति या कौम तक सीमित ना रह कर, जिनके कंठ में माँ सरस्वती विराजती है, गायन शैली को अपना लिया है। चारणी साहित्य का लोक काव्य के रूप में सौंदर्य आज तक बरकरार है।

देवजी थानकी द्वारा लिखित 'कोई फरीयाद नई' कविता संग्रह भी इस वर्ष लिखा गया है। उन्होंने कविता को अपनी अलग ही भाषा शैली में लिखकर पाठकों को मंत्रमुग्ध किया है।

डॉ. रूपल मांकड का कविता संग्रह 'क' कविता थी' केजवजी' है। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत डॉ. रूपल ने शिक्षण के साथ–साथ साहित्य का सृजन भी किया है। शिक्षा का विकास हो और शिक्षा और साहित्य का समाज में अपना विशिष्ट स्थान हो यही कहने की कोशिश रूपल जी ने की है। काव्य के जरिए शिक्षा का स्तर बढ़ाया जाए इसी सोच के साथ डॉ. रूपल ने यह कविता संग्रह प्रस्तुत किया है।

प्रवीण गढवी ने 2020 में एक और काव्य संग्रह दिया है जिसका नाम है 'कोमरेड गांधी' जिसमें प्रवीण गढवी ने गांधी जी के जीवन संघर्ष को बताया है तथा देश की आजादी के मतवालों का जोश, उनकी वीरता, उनके क्रांतिकारी विचारों को दर्शाया है।

रमण सोनी जी हास्य व्यंग्य लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने 'फार्बस–विरह' (दलपतराम कृत) की रचना की है। उन्होंने अपनी विशिष्ट शैली में अपनी कला को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

किसी बात को अपनी विशिष्ट शैली में विस्तार पूर्वक कहने की जरूरत पर निबंध का सहारा लिया जाता है। इसी विधा में डॉ. चंद्रकांत मेहता ने 'प्रसन्नतानो पासपोर्ट' लिखा है। उनका कहना है कि जीवन की सिद्धि की तीन बातों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर उन्होंने इस निबंध का आलेखन किया है। उनके पास विचारों का वैभव है, चिंतन है और समग्र को प्रकट करने वाली प्रवाहमयी शैली है। इसीलिए यह निबंध संग्रह जीवन में सच्चे मित्र तथा सच्चे मार्गदर्शक की तरह हमें जीवन की ओर प्रेरित करता है। मेहता जी सदैव शिक्षा और समाज से जुड़े रहे हैं तभी वे वर्तमान समय की परेशानियों को परख लेते हैं। इसी के चलते मेहता जी ने जीवन प्रेरक निबंधों का सृजन किया है।

अन्य एक निबंध संग्रह में डॉ. चंद्रकांत मेहता ने 'व्यक्तित्व विकासनो विज्ञा' लिखा है। इनके निबंध जीवन जीने की नई उम्मीद जगाते हैं, जीवन में आने वाले संघर्षों को झेलना सिखाते हैं, इससे भी आगे बढ़कर इनके निबंध लोगों के तनाव को दूर करके जीने की ओर प्ररित करते हैं।

प्रवीण दरजी द्वारा लिखित 'लेहरातो मोल' एक ऐसा निबंध संग्रह है जिसे गुजराती और भारतीय भाषाओं में सराहा गया है। 132 से ज्यादा पुस्तकों का लेखन करने वाले प्रवीण दरजी का स्थान गुजराती साहित्य में प्रमुख है।

राकेश पटेल द्वारा लिखित 'रण वन अने दरियो' है। ये तीनों जगहें रण, वन और दरिया राकेश पटेल का कार्य क्षेत्र रही हैं। वह सर्वप्रथम कच्छ में शिक्षक के तौर पर गए। वहाँ वे काफी समय रहे। रण के कण–कण में उन्हें कविता का भाव दिखता है। तभी उनके निबंध भी काव्यात्मक हैं। उनके मुताबिक जिस तरह बिना श्वास के जीना मुश्किल है वैसे ही उनके लिए रण के बिना जीना मुश्किल है। राकेश जी की अपनी सृजन

क्षमता है। ऐसी ही मस्ती उन्हें वन, जंगल, दरिया, और समंदर में भी दिखती है। इसी उत्साह को मन में भरकर वे निबंध का सृजन करते हैं जो उनके पाठकों को बहुत भाता है।

मावजी महेश्वरी द्वारा लिखित 'मौन पडधा' निबंध में लेखक ने भूकंप के विषय में निबंध लिखा है। वे कहते हैं कि भूकंप में मेरा बच जाना एक चमत्कार ही है। कच्छ में आए भूकंप की बात करते हुए मावजी महेश्वरी कहते हैं कि उस दिन वे विद्यार्थियों के साथ प्रभातफेरी में ही थे। भूकंप की स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उन्होंने अपने लोगों को मरते देखा, खून से लथपथ शव देखे, आखिरी साँस लेते जन देखे। इसी विडंबना में उन्होंने अपनी कलम को उठाया और उनकी कलम अविराम चलती रही जो हमें निबंध के रूप में मिली। उनकी संवेदनाओं का प्रतिबिंब हमें उनके निबंध में मिलता है।

गुजराती साहित्य में 2020 में ग़ज़ल की विधा में भी लिखा गया है।

दिनेश डोंगरे 'नादान' द्वारा लिखित 'ड्डवाशनी पलोमा' प्रमुख ग़ज़ल संग्रह है। व्यवसाय से वकील और अपनी मातृभाषा मराठी होने के बावजूद गुजराती ग़ज़ल में 'नादान' ने इतना कार्य किया है कि गुजराती साहित्य में ग़ज़ल का इतिहास इनके नाम के बिना अधूरा रहेगा। 'नादान' ने जीवन के गहन विषयों से लेकर चिंतन तक लगभग सभी बातों को अपनी कलम से ग़ज़ल के रूप में अभिव्यक्त किया है। अनेक संपादकों ने अपनी संपादित पुस्तकों में उनकी कृति को उद्धृत किया है। 'नादान' के पाँच ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हुए हैं, 'प्रतिष्ठा', 'तड़प', 'थीजी गयेली क्षण' और 'अर्थ', थोड़ी वार तो कागे ने यह सब है। उनकी 'थीजी गयेली क्षण' कृति पुरस्कृत कृति है। वह हिंदी ग़ज़ल भी लिख चुके हैं। 'ड्डवाशनी पलोमा' ग़ज़ल संग्रह गुजराती साहित्य में मोर पंख की तरह है जिसको पाठकों ने सराहा है।

भरत त्रिवेदी ने 'ने हवें ग़ज़लोत्सव' ग़ज़ल संग्रह लिखा है। भरत त्रिवेदी जी ग़ज़ल के अलावा गीत, मुक्तक भी लिखते हैं। उनके अनुसार ग़ज़ल के साथ उनकी संवेदना का संबंध है, खून का संबंध है तभी ग़ज़ल के छंद, मतला, मिसरा, मकता, रदीफ़ और काफ़िया इनके लिए भय नहीं हैं। उनके अनुसार अगर उनका वश चले तो वे ग़ज़ल में से यह सब निकाल देते। परंतु वे यह भी जानते हैं कि इनके बिना ग़ज़ल का सृजन मुमकिन ही नहीं है। भरत त्रिवेदी एक ऐसे कवि और ग़ज़लकार हैं जिनकी कलम के जरिए हम प्रेम, संवेदना प्रकृति, विश्व, मन और हृदय तक पहुँच सकते हैं और उनकी कलम की विशिष्टता यही है कि पाठक पढ़ने के साथ ही लेखक के मनोभावों को स्पर्श करता है।

ग़ज़ल संग्रह में इस साल 2020 में देवजी थानकी द्वारा लिखित 'मधुवन' तथा रश्मि शाह द्वारा लिखित 'बारीमाथी' ग़ज़ल संग्रह गुजराती साहित्य को मिले हैं। देवजी थानकी और रश्मि शाह गुजराती साहित्य में बार–बार अपने लेखन से अपने पाठकों के बीच आते रहते हैं। उनकी कृतियों को गुजराती साहित्य रसिकों ने बड़े उत्साह से सराहा है।

संध्या भट्ट ने 'समय तो थमो' सोनेट लिखा है। संध्या भट्ट का यह सोनेट विचार और ऊर्जा का संयोजन है। इस सोनेट के जरिए उन्होंने विश्व के साथ–साथ खुद को देखने की चेष्टा की है। इस सोनेट में कठिन वाक्य रचना का चयन न करके उन्होंने सरल शब्दों को लिया है जिससे पाठक शुरू से अंत तक रचना के साथ जुड़े रहते हैं। गुजराती साहित्य में सोनेट कम लिखा जाता है फिर भी संध्या जी ने अपनी लेखनी को उस दिशा से अलग चलाया जिस विधा में सभी लोग लिखना पसंद करते हैं।

प्रवास व्यक्ति को जीने की प्रेरणा देता है। प्रतिदिन एक ही तरह की जीवनचर्या से व्यक्ति ऊब जाता है पर प्रवास करते ही वह अपने नियमित कार्यों को उत्साह के साथ करने लगता है। इसलिए लोगों को प्रवास करना चाहिए और अपने जीवन को तरोताजा रखना चाहिए। निव्या पटेल ने 'पासपोर्ट नी पांखे' में ऐसे गुजराती सर्जकों को जोड़ा है जो विदेश की धरती पर

जाकर आए हैं। निव्या पटेल के अनुसार गुजराती साहित्यकारों ने विदेश प्रवास तो बहुत किए हैं पर उसके विषय में ज्यादा लिखा नहीं है। इसीलिए इस क्षेत्र में निव्या पटेल ने पर्यटन के महत्व को पाठकों तक लाने का प्रयास किया है। कहा जाता है कि गुजराती समाज ने व्यापार वाणिज्य के लिए विदेश प्रवास किए हैं। आज भी ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, कनाडा, न्यूजीलैंड, अफ्रीका में बहुत ज्यादा मात्रा में गुजराती बसते हैं। गुजराती स्वभाव से ही प्रवास प्रेमी रहे हैं। फिर भी इस क्षेत्र में कम ही लिखा गया है। काका साहेब कालेलकर ने अफ्रीका और जापान प्रवास के संबंध में लिखा। भरीयतराग नीलकंठ ने भी प्रवास वर्णन लिखा है। आज के समय में प्रीति सेन गुप्ता ने इस विषय में बहुत लिखा है।

बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास तो सतत चलती रहने वाली प्रवृत्ति है। बालक अपनी उम्र के हिसाब से सीखता ही रहता है। पर बच्चों का विशेष रूप से बौद्धिक विकास करने की जब बात आती है तो बाल साहित्य से बढ़कर कोई भी चीज हमें नहीं दिखती। बच्चों के व्यक्तिगत विकास के लिए बाल साहित्य का समृद्ध होना आवश्यक है। आज अनेक संस्थाएँ भी अपनी योजनाओं के माध्यम से कार्यरत हैं जिसमें बच्चों को विभिन्न सुविधाएँ प्रदान कर उनसे विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ कराई जाती हैं जिससे कि बच्चों का वैचारिक, बौद्धिक विकास होता है। बाल मनोविज्ञान में बच्चों की उम्र एवं उनकी रुचि के अनुरूप साहित्य का निर्माण किया जाता है। चाहे वह लेख हो, कहानी हो, किस्से हों, लोक कथा हो, कविताएँ, बालगीत हों, नाटक हो, उपन्यास हो, ग़ज़ल हो, वेशभूषा हो, अभिनय हो, इन सबके जरिए बच्चों का व्यक्तित्व विकास किया जाता है।

इस दिशा में 2020 में नरेंद्र पंडया द्वारा लिखित 'उधा लटकथा नगरमा' गुजराती साहित्य में आया है। आजीवन शिक्षक रहे नरेंद्र जी 2003 में सेवा निवृत्ति के बाद गुजरात राज्य शाखा पाठ्य पुस्तक मंडल में अंग्रेजी पाठ्य पुस्तक की रचना करने में पच्चीस साल के लिए को–ओर्डिनेटर (संयोजक) के तौर पर रहे हैं। उन्होंने गुजराती और उर्दू में बाल साहित्य की रचना की है। उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकों को गुजरात साहित्य अकादमी, गुजरात साहित्य परिषद्, अहमदाबाद तथा उर्दू साहित्य अकादमी गांधीनगर से पुरस्कार मिले हैं।

भूपेंद्र व्यास 'रंज' ने 'मडयुं मने रमकडानु गाणुं' नाम से बाल साहित्य की रचना की है। भूपेंद्र जी ने अपना समग्र जीवन शिक्षक रहकर बच्चों के विकास के लिए लगा दिया। बच्चों के विकास के लिए उन्होंने बहुत सा बाल साहित्य लिखा है। भूपेंद्र जी को प्राथमिक गणित शिक्षा के प्रयोग निबंध के लिए एन सी ई आर टी, नई दिल्ली की तरफ से राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। राज्यस्तर की शिक्षा पाठ स्पर्धा में द्वितीय पुरस्कार उनके नाम है। उनको लघु वार्ता के लिए तथा उपन्यास के लिए भी पुरस्कृत किया गया है। इसके अलावा बाल काव्य संग्रह के लिए भी अनेक पुरस्कार मिले हैं। नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत आर्थिक एवं शैक्षणिक तथा सामाजिक तौर पर पिछड़े लोगों के बीच जाकर उन्होंने प्रेरणात्मक भाषणों से तथा जन संपर्क बना कर लोगों के जीवन को सही रास्ते पर लाने का काम भी किया है और लोगों को नशा मुक्त कराने के कार्यक्रम भी किए हैं। लोगो को नशा मुक्त कराने के लिए भूपेंद्र जी ने दो दिन का व्रत भी लिया था।

डॉ. अरूणिका मनोज दरू ने 'शब्द वमत्कृति' नामक बाल साहित्य लिखा है। इसमें शब्दों की ऐसी रचना की है जिससे बच्चे आसानी से समझें। चित्रों के माध्यम से बच्चे अक्षर और शब्द आसानी से समझें और सीखें ऐसे चित्रों को बनाया है।

1 से 100 के अंको को नवीन प्रयोग से बताने का प्रयास किया गया है जिससे बच्चे 1 से 100 की गिनती स्वयं पढ़ लिख सकें। इसके अलावा पुथा अंताली ने 'भगवानुँ गंजन' नरेंद्र कुमार शाह ने 'वाराखडीनां बालकाणो', डॉ. धर्मेंद्र पटेल ने 'मोरनी बगीचो' तथा 'मरी चरकलडी' बाल साहित्य लिखा है। साथ ही देवजी थानकी ने 'बाजबजने माजी लइए' तथा 'फागज फोरे' जैसी पुस्तकें बच्चों के लिए लिखी हैं।

बाल काव्य में नरेंद्र कुमार शाह ने 'बालकोनो मलख' लिखा हैं।

2020 का वर्ष सबके लिए बहुत ही कठिन रहा है। कोरोना में सीधी बात यह थी कि जिनके शरीर की इम्युनिटी ज्यादा थी वे लोग इस बीमारी से बचे। इससे एक संदेश तो लोगों के बीच गया कि लोगों को चाहिए कि वे जंक फूड को छोड़ कर सादा एवं पौष्टिक खाना खाएँ। प्रकृति ने हमें ऐसी बहुत सी औषधियाँ दी हैं जिनको हम अपने दैनिक भोजन में उपयोग करें तो हम अपने शरीर को रोगों का घर बनने से बचा सकते हैं। इस दिशा में वनस्पतियों के फोटो के साथ इसकी जानकारी तथा उसके आम उपयोग के बारे में वैद्य हार्दिक कुमार ने 'आपणों वगडो' पुस्तक लिखी है। वैद्य हार्दिक कुमार व्यवसाय से आयुर्वेदिक मेडिकल ऑफिसर हैं और वे गुजरात सरकार के आयुष विभाग के अंतर्गत श्रीमती मणीबेन सरकारी आयुर्वेद हॉस्पिटल, अहमदाबाद में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। यह पहचान उनकी व्यावसायिक पहचान है। उनकी दूसरी पहचान यह है कि वे वनस्पति (पेड़–पौधों) के अच्छे जानकार हैं। विविध मौसम में वनस्पति कैसे अपना रंग और आकार बदलती है यह सबको जानना चाहिए तथा उसके उपयोग क्या हैं यह समझना चाहिए। डॉ. हार्दिक जी ने सभी वनस्पति की तस्वीरें लेकर उसका संग्रह भी किया है। उन्हें पेड़–पौधों को उगाने और उन्हें सँवारने का शौक है। वनस्पति के अलावा उनकी रुचि चित्रकारी में भी है। इससे पहले वे 'परंपराओमां आयुर्वेद' नामक आयुर्वेदशास्त्र की पुस्तक भी गुजराती साहित्य को दे चुके हैं।

रश्मि शाह ने 'कैंसर सामे रक्षक' नाम से कैंसर की बीमारी से कैसे बचा जाता है इस विषय पर पुस्तक लिखी है। आज लोगों का लाइफ स्टाइल ऐसा है कि ना ठीक से सोना, ना ठीक से खाना, जॉब पर घंटो बैठे रहना, छोटी–छोटी बातों से चिंता में घिर जाना ऐसे में बीमारी हो जाना आम बात है। इन्हीं सब बातों से कैंसर होने की संभावना बढ़ जाती है। कैंसर की जानलेवा बीमारी से कैसे बचा जा सकता है इस विषय में रश्मि शाह ने हमें अपनी पुस्तक में बताया है।

2020 कोरोना की महामारी का सभी ने सामना किया। इस बात को विनायक यादव 'कोरोनावही' में लेकर आए हैं। अहमदाबाद के सेंट जैवियर्स कॉलेज के उपाचार्य विनायक जी गुजराती साहित्य और पत्रकारिता के अध्यापक हैं। शिक्षा, साहित्य एवं मीडिया पर दो सौ से ज्यादा लेख लिखने वाले विनायक जी ने मानवता के उत्थान के संबंध में अनेक व्याख्यान दिए हैं। गुजराती साहित्य में विनायक जी ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं तथा बहुत सी पुस्तकों का अनुवाद भी किया है।

नाटक साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें दृश्य और श्रव्य दो महत्वपूर्ण अंग हैं। तीसरा महत्वपूर्ण अंग वे कलाकार हैं जो रंगमंच पर उन्हें जीवंत करते हैं जिसको देखकर दर्शक साधारणीकरण तक पहुँचते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि इन तीनों अंगों में से एक भी पक्ष कमजोर हो तो उसे सफल नाटक नहीं कहा जा सकता है।

नाटक लिखने वाला, नाटक सुनने वाला और नाटक को प्रदर्शित करने वाला एवं रंगमंच पर नाटक को देखने वाला वर्ग इन सबको मिला कर ही नाटक सफलता की ऊँचाई तय करता है।

गुजराती भाषा में इस साल 2020 में सतीश व्याप्त द्वारा लिखित 'मन मगन हुआ' नाटक गुजराती साहित्य को मिला है। प्रस्तुत नाटक पूर्णरूप से काल्पनिक है। वास्तविकता या यथार्थ से उसका कोई संबंध नहीं है। शिक्षा से जुड़े इस नाटक में शिक्षा की समस्याओं से जुड़ी कोई बात नहीं कही गई है। इस नाटक में मानवीय चरित्र का सजीव चित्रण किया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे कई लोग हैं जो शिक्षा की गरिमा को बढ़ाने में ही अपना योगदान देते हैं। उनका जीवन संघर्ष यही रहता है कि शिक्षा के क्षेत्र में कुछ ठोस कदम उठाए जाएँ जिससे समाज में शिक्षा का स्तर बढ़े और आम आदमी तक शिक्षा की पहुँच हो।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विषय में जितना कहा जाए कम है। अनुमान हैं कि भारतीय भाषाओं में आज तक गांधी जी के विषय में सर्वाधिक पुस्तकें लिखी गई हैं। इसका सीधा सा अर्थ है कि लोग आज भी गांधी जी को पढ़ना ज्यादा पसंद करते हैं।

प्रतीक गढ़वी ने 'गांधी : पुनराबलोक' लिखी है। प्रवीण गढ़वी गुजराती भाषा के विशिष्ट साहित्यकार हैं। उन्होंने गुजराती भाषा में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। दलित साहित्य उनके लेखन का विषय रहा है। मूलतः वे इतिहासकार हैं। अलग–अलग समय में उन्होंने गांधी जी के विषय में लिखा है। ऐसे ही 33 लेख उन्होंने इस पुस्तक में लिखे हैं। गांधी जी को वह अपनी दृष्टि से देखते, परखते और समझते हैं। गुजरात तो गांधी के अनुयायियों से भरा पड़ा है। गांधी के मार्ग पर चलने वाले कई निष्ठावान सेवकों में से प्रवीण गढ़वी एक हैं। प्रवीण गढ़वी पहले से ही गांधी को पढ़ते रहे हैं तथा उन्हीं की दृष्टि से समाज को देखते हैं।

गांधी जी के विषय में ही 2020 में एक अन्य पुस्तक लिखी है अनुज अंबालाल ने जिसका शीर्षक है '23 Grams of salt'. इस पुस्तक में अनुज ने गांधी द्वारा किए गए सत्याग्रह दांडी मार्च के विषय में लिखा है कि कैसे गांधी जी ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ सत्याग्रह आंदोलन खड़ा किया था और वे अपने अनुयायियों को लेकर अहमदाबाद से लगभग 300 किमी. दूर दांडी यात्रा पर निकल पड़े थे और नमक पर लगे कर के विरुद्ध बड़ा आंदोलन खड़ा किया था।

गांधी जी के विषय में एक अन्य लेखिका अवनी ने 'चालो चरखो रमीये' लिखा है जिसमें वर्तमान समय में चरखे के महत्व के विषय में बताया गया है।

धरती पर जो भी इनसान जन्म लेता है वह किसी न किसी धर्म का अनुयायी होता है। सबकी अपनी किसी विशेष धर्म के प्रति श्रद्धा होती है। तभी वह समाज को समाज के लोगों को ऊपर उठाने की बात सोचता है या करता है। समाजपयोगी बातें और समाज के लिए कुछ कर गुजरने को लेकर ओमप्रकाश जी उदासी 'स्वामी दयानंद सरस्वती' नामक जीवन दर्शन लेकर आए हैं। आर्यसमाज के संस्थापक रहे स्वामी दयानंद सरस्वती के मुताबिक "विदेशी शासकों द्वारा आर्थिक शोषण से देश गरीब हो गया है, जिस दिन हमें स्वराज की प्राप्ति होगी उस दिन यह धरती धन धान्य से संपन्न होगी"। स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपना पूरा जीवन पीड़ितों, गरीबों और शोषितों के पीछे लगा दिया था। इसी भावना को ओमप्रकाश उदासी ने अपनी पुस्तक में उजागर किया है।

दिनेश देसाई ने प्रसंगों का आलेखन तथा कहानी का संपादन करते हुए 'श्री जगदीशचंद्र एम. ठककर : व्यक्ति विशेष' लिखा है जिसमें गुजराती पत्रकारिता एवं मीडिया जैसे संवेदनशील साहित्य के धनी श्री जगदीशचंद्र ठककर के जीवन प्रसंगों को दर्शाया गया है।

गुजरात के जानेमाने पत्रकार और साहित्यकार श्री दिनेश देसाई 2010–11 में गुजरात सरकार की सेवा से जुड़े। तब से सहायक पी.आर.ओ. और सी.एम. के तौर पर श्री जगदीशचंद्र एम.ठककर के साथ बरसों तक जुड़े रहे। प्रस्तुत पुस्तक में उनके जीवन प्रसंगों का वर्णन किया गया है।

गुजराती साहित्य में जिनका नाम आदर से लिया जाता है ऐसे गणपत सोदा ने 15 विवेचनात्मक लेख 'अभिप्रेत' नामक पुस्तक में लिखे हैं। गणपत सोदा ने गुजराती साहित्य में अनेक कहानी संग्रह लिखे हैं। साथ ही वे आलोचना के क्षेत्र में भी लिखते रहते हैं। खास कर वे कथा साहित्य में ज्यादा रुचि रखते हैं। उन्होंने 'आधुनिक गुजराती लघु कहानी में विविध चेतना' विषय पर शोध कार्य किया है। जिसको गुजराती पाठकों ने सराहा है।

जे.बी. बोरा, आई.ए.एस. ने 'जाहेर बही बटना सूत्रो' पुस्तक गुजराती साहित्य को दी है। जिसमें लेखक ने अपने 40 साल के अनुभवों को लिखा है। गुजरात के बड़े शहरों में उन्होंने कार्य किया है। उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर रहते हुए समाज में ऐसे कार्य किए हैं जो नए कीर्तिमान बने। सत्ता का उपयोग करके जे.बी.बोरा ने सदैव लोगों के हित में काम किए हैं। अनेक जटिल समस्याओं का उन्होंने अपनी कुशलता से समाधान निकाला।

जे.बी.बोरा ने इस साल अन्य एक पुस्तक 'फाइल बोले छे' लिखी है। वे जब महसूल अधिकारी के पद पर थे तो ज्यादातर 'जर जमीन और जोरू' के मामले आते थे क्योंकि समाज में इन्हीं के लिए ज्यादा संघर्ष हुए हैं। जे.बी.बोरा ने सरकारी कायदे, अदालतों के फैसलों की सुनवाई के मद्दे नजर

सही इनसान को सही न्याय दिलाने की कोशिश की। समाज के पिछड़े लोगों की सेवा, गरीब आदिवासी जनता को उनके हक, तलाकशुदा एवं विधवा महिलाओं की वेदना को सुनकर कानून की मर्यादाओं का पालन करते हुए अनसुलझे मामलो को अपनी कुशलता से सुलझाया।

'फाइल बोले छे' में दर्शाए गए कथानक समाज की यथार्थ घटनाएँ हैं। कानून संविधान पर आधारित है। कानून लोगों के लिए है। इन कहानियों के अंत में दिए गए निर्णय मानवीय मूल्यों को उजागर करते हैं। न्याय के क्षेत्र में काम करते अधिकारी और संवेदनशील मनुष्यों के लिए यह पुस्तक प्रेरणादायक रहेगी।

अन्य पुस्तकों में इस साल 2020 में नवीन भींगराडिया द्वारा लिखित 'आठमों रंग अने उगता सूरज मूखी' एक तुलनात्मक अध्ययन है।

मानवीय संबंधो को चित्रित करती कथा 'कोरू आकाश' इसमें अजय सोनी ने मानव जीवन की विडंबनाओं और उससे उबर कर व्यक्ति अपने लोगों के लिए किस प्रकार परिश्रम करके जीवन जीता है यह बताने की कोशिश की है।

2020 में ही राम मोरी द्वारा लिखा गया 'कन्फेशन बोक्स' तथा शिल्पा देसाई द्वारा लिखा गया 'पोस्ट.... लागणीनी अक्षरयात्रा'... प्रमुख हैं।

कैप्टन नरेंद्र द्वारा लिखित 'परिक्रमा' है। इससे पहले कैप्टन नरेंद्र 'जिप्सीनी डायरी' गुजराती साहित्य को दे चुके हैं जिसमें उन्होंने अपने पद पर रहते समय के अनुभवों को बताया है। 'परिक्रमा' में आजादी के पहले और बाद की भारतीय जनमानस की समस्याएँ हैं। 1857 के बगावत के समय यह उपन्यास आकार लेता है। इसी परिवेश में पहुँचकर लेखक हमें उस समय का सजीव अनुभव कराते हैं।

इला. आर. भट्ट ने 'वुमन वर्क एंड पीस' मणीलाल पटेल ने 'वितक झंखे वहाल' तथा रमेश शाह ने 'रगरजो छलोछाय' गुजराती साहित्य को दिया है।

धरती पर जब मानव जीवन अस्तित्व में आया तब विवाह प्रथा नहीं थी। पर जैसे–जैसे जागरूकता आती गई, समय बदलता गया इनसान की सोचने और समझने की प्रवृत्ति बदली तब विवाह प्रथा अमल में आई जिससे कि विवाहित युगल शारीरिक संबंधों के जरिए अपने शारीरिक आवेग की पूर्ति कर सकते हैं। पर इसमें भी कई तरह की समस्याएँ सामने आने लगी और उस पर विचार विमर्श करके डॉक्टरों ने उन समस्याओं का हल निकालने की कोशिश की। इसी विषय पर डॉ. अरविंद एस. शाह ने 'जातीयता अने दोम्पत्यनुं मनोविज्ञान' (Psychlogy of sex and married life) नामक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक में लेखक ने विवाह के उद्देश्य, विवाह की योग्यता, मानव की जातीयता, स्त्री पुरुष की शरीर रचना, और शरीर शास्त्र, जातीयता में लैंगिक भूमिका, विवाह की कला, विवाह के लिए स्वास्थ्य और सुख इन सबको आसान भाषा में पाठकों को बताने की कोशिश की है। मित्तल पटेल ने 'सरनामा विनाना मानवीओ' में ऐसे लोगों के विषय में बात की है जिनका परिवार तो होता है पर रहने का ठिकाना ना होने के कारण किसी जगह को अपना कहा जाए ऐसा कोई घर नहीं होता। वे बंजारा जाति के लोग होते हैं जो काम की तलाश में गाँव शहर घूमते रहते हैं। इसीलिए उनका पता भी नहीं होता जिसकी वजह से भारत की भूमि पर जन्मे, पले–बढ़े होने के बावजूद भी उनका कोई पहचान पत्र नहीं होता। उनका आधार कार्ड, वोटिंग कार्ड जैसी कोई चीज उनके पास नहीं होती जिससे वे लोग सरकार द्वारा जारी की गई कोई भी मदद का लाभ नहीं ले सकते। सरकारी आवास, राशन कार्ड से राशन लेना, अन्य सरकारी लाभ से वे सदैव वंचित रह जाते हैं। सरकार से फरियाद करने पर वह मदद करने के लिए आगे आती है पर बात वहीं पर अटक जाती हैं कि उनके पास जन्म का प्रमाण–पत्र आदि कुछ नहीं होता। किसी तरह का कोई प्रूफ ना होने की वजह से वे लोग अपने बच्चों को भी स्कूल में प्रवेश नहीं दिला पाते। ये वे लोग होते हैं जो सागर किनारे नमक का काम करते हैं, गन्ने के खेतों में काम करते हैं, छुरी–चाकू बनाते बेचते हैं साँपों को पालने वाले सपेरे, रामलीला जैसी प्रदर्शनी कर पेट पालने वाले लोग, जंगल में शिकार करके जीने वाले लोग, घर–घर जाकर कंघी और सुई

जैसी चीजें बेचने वाले लोग जो अपने हुनर के साथ गाँव–गाँव फिरते हैं और समाज को उनके उपयोग की चीजें देकर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। इन्हीं बंजारा कौम के बीच जाकर मित्तल उनकी समस्याओं को समझ कर उसे सुलझाने का काम करती हैं।

इन लोगों के बीच जाकर उनकी ही जुबानी समस्याओं को सुनकर मित्तल अपने आँसुओं को रोक नहीं पाती और इसी आँसू में अपनी कलम को डूबो कर मित्तल उनकी वेदना की अनुभूति को अक्षरों के माध्यम से हम तक, पाठकों तक पहुँचाती हैं।

डॉ. वर्षा सोलंकी द्वारा लिखित 'अंतर्मन' कविता संग्रह है। जिसमें प्रकृति, प्रेम, संवेदना, मिलन, जुदाई, अकेलेपन की पीड़ा का उत्कृष्ट वर्णन किया गया है। इन कविताओं में कवयित्री ने अपने रचना संकलन में जहाँ एक ओर समाज की व्यथा–कथा को स्थान दिया है, वहीं उनके वैयक्तिक जीवन में घटने वाली घटनाओं को भी कविता का रूप दिया है। कई रचनाएँ दिल को झकझोर देती हैं। साथ ही पाठकों को संवेदनात्मक धरातल पर ला कर खड़ा कर देती हैं। इनकी कविता में नारी के सशक्तिकरण पर भी जोर दिया गया है। नारी को समाज में अपने हक के लिए आगे आने का आह्वान भी किया है। कवयित्री समाज में फैले भ्रष्टाचार की बात भी करती है। अछूतों की पीड़ा, समाज का दोगलापन उनकी कविताओं में उभर कर आता है। इस कविता संग्रह को पाठकों ने पसंद किया है, सराहा है।

मुख्यतः यही कहा जाएगा कि 2020 में गुजराती साहित्य में सभी विधाओं में लिखा गया है। नए उभरते लेखकों ने भी अपनी कलम की कला को पन्नों पर उकेरा है जिसने पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। आने वाले भविष्य में गुजराती साहित्य और समृद्ध होगा। गुजराती साहित्य निरंतर प्रगति कर रहा है।

– डी–7, इनकम टैक्स कॉलोनी, न्यू सिविल हॉस्पिटल के सामने मजूरागेट, सूरत, गुजरात–395001

❑❑❑

7

डोगरी साहित्य

ओम गोस्वामी

पूर्व–पीठिका

यह एक कड़वा सच है कि जनवरी, 2020 ई. से आगे का पूरा एक वर्ष कोरोना–संकट का समय रहा है। 'कोविड–19' अर्थात् विषाणु विशेष द्वारा फैली महामारी ने मानव जीवन की प्रत्येक गतिविधि को बाधित करके श्मशानों और कब्रिस्तानों की हलचल बढ़ा दी। मौत का डर और इससे उपजे सन्नाटे ने बरजोरी मानवता को अपने आगोश में भर लिया। उत्पादन, उद्योग, व्यापार ही नहीं, विशेष और सामान्य काम–काज भी एक अभूतपूर्व ठहराव का शिकार हो गए। गति की मंथरता ने प्रकाशन व्यवसाय पर भी फालिज गिरा दिया। फलस्वरूप, पुस्तक प्रकाशन का 'ग्राफ' जो विगत वर्षों में निरंतर सकारात्मक चढ़ाव की दिशा में बढ़ रहा था एकाएक गतिरोध से ग्रस्त हो उठा।

किंतु, लॉकडाउन की परिस्थितियों में चारदीवारी की सीमाओं में रहकर रचनात्मक वर्ग के लोगों ने इस संकट का सदुपयोग करते हुए, इसे सुअवसर में बदलने में कोई–कसर नहीं रहने दी। लेखक–कवि, चित्रकार, संगीतकार आदि लोग गति–बाध्यता अर्थात् लॉकडाउन की स्थितियों में भी सक्रिय रहे। अपितु बहुतों ने तो इस संकट काल में भरपूर लेखनी और तूलिका चलाई। इन पंक्तियों के लेखक को दर्जनों डोगरी कवियों, कहानीकारों और अन्य लेखकों के फोन आते रहे जिनमें वे अपने रुके हुए लेखन–कार्य के संपन्न होने की सूचना देते रहे। कइयों ने तो तीन–तीन पांडुलिपियाँ मुकम्मल होने का सुसमाचार भी दिया। इस संकट–काल में कई कलमकारों ने अपनी पुस्तकें प्रकाशित करवाने का पुरुषार्थ भी किया। गति–बाध्यता को सुअवसर में बदलने वाले कुछ लेखकों में ध्यान सिंह का नाम सर्वोपरि है। उन्होंने वर्ष 2020 की समय–सीमा में छः से अधिक पांडुलिपियों को प्रकाशित करवाने का अध्यवसाय सफलतापूर्वक संपन्न किया।

इस प्रकार स्वर्गीय लेखक कुँवर वियोगी की प्रकाशित तथा अप्रकाशित सामग्री को संपादित करवाने का कार्य जो उनकी पत्नी सुधा रंधीर चतुर्वेदी ने 2017–18 ई. में आरंभ किया था, वह सन् 2020 ई. में सामने आया। इन तमाम पुस्तकों पर प्रकाशन का सन् 2018 अथवा 2019 अंकित है। इस अध्यवसाय के फलस्वरूप 27 पुस्तकें मुद्रित हो पाईं। इनका लोकार्पण वर्ष 2021 में 21 मार्च को किया गया। स्वर्गीय लेखक के संपूर्ण लेखन को एकबारगी उपलब्ध करवाने की दृष्टि से संपन्न किए गए इस कार्य को "वियोगी दी वयाजा चा" नाम दिया गया, जिसका अर्थ और उद्देश्य स्पष्ट नहीं है। प्रत्येक पुस्तक को सत्ताईस में से एक क्रमांक

भी दिया गया है। इस ग्रंथावाली में प्रथम पाँच पुस्तकें अंग्रेज़ी भाषा में हैं। इनमें कुँवर वियोगी की प्रकाशित अथवा अप्रकाशित "सॉनेट्स", अंग्रेजी ग़ज़ले, कुछ कहानियाँ, निबंध, टिप्पणियाँ तथा छोटे–छोटे लेख संकलित हैं।

पुस्तकमाला के भाग–6 से लेकर भाग–26 तक डोगरी की पुस्तकें हैं। लेखक ने साहित्य की प्रत्येक विधा में कलम को आज़माया है। छह पुस्तकें तो मात्र डोगरी सॉनेट विधा से संबद्ध हैं। दो कविता संग्रह, तीन ग़ज़ल संग्रह, दो रुबाई संग्रह, एक गीत संग्रह, एक–एक कहानी संग्रह, यात्रा लेख, उपन्यास आदि सम्मिलित हैं। 21वें भाग को 'चुटकियाँ' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित किया गया है। इसमें डोगरी और उर्दू भाषा में लिखित गज़लिया शेरों का संकलन किया गया है। अंतिम अर्थात् 27वां संग्रह उर्दू भाषा में बताया गया है, किंतु इसकी लिपि देवनागरी है। "वो, तुम, मैं और कैंसर" शीर्षक से मुद्रित इस पुस्तक को हिंदी भाषा की कृति कहा जाता तो बेहतर होता।

स्वर्गीय लेखक के साहित्यिक योगदान को प्रकाश में लाने का यह यत्न सराहना के योग्य है। कुछ पुस्तकों के आवरण पर संपादक का नाम 'सुधा चतुर्वेदी' और कहीं "सुधा रंधीर चतुर्वेदी" प्रकाशित हुआ है– जबकि भीतर के पृष्ठों पर अशोक गुप्ता और मोहन सिंह का नाम भी बतौर संपादक छपा है। तीन–तीन संपादकों का नाम होने के बावजूद ग्रंथमाला की प्रस्तुति, और संपादन में बे–तरतीबी खलती है। प्रूफ शोधन की अशुद्धियों की भरमार के कारण सुचारू पठन में बाधा उत्पन्न होती है। सामग्री के विश्लेषण का अत्यावश्यक कोण भी नदारद है। चूँकि, ये तमाम सामग्री कुँवर वियोगी के मरणोपरांत मुद्रित–प्रकाशित की गई हैं, इसलिए ज़रूरी था कि मूल लेखक के विचारों की पुष्टि में समुचित संदर्भ और रचनाओं की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की जाती। समुचित परख और संपादन–कला के अभाव में इस ग्रंथमाला के मूल उद्देश्य को आघात पहुँचा है। शायद जल्दबाज़ी के कारण यह गड़बड़झाला हुआ हो।

इस प्रकार की ग्रंथमाला में आधे–अधूरे 'ड्राफ्ट' और अधकचरी रचनाएँ किस मजबूरी में प्रकाशित की गई हैं– कहना कठिन है। साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत इस लेखक की चुनिंदा रचनाओं को संकलित करने की जरूरत को नज़रंदाज करने के फलस्वरूप ग्रंथमाला का स्तर बेहद साधारण होकर रह गया है। यदि 27 के बजाय सात ही सुसंपादित ग्रंथ मुद्रित करवाए जाते तो स्वर्गीय लेखक को यह सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होती। यह पुस्तकमाला उनके योगदान का मील–पत्थर सिद्ध हुई होती। सुधा चतुर्वेदी जो कि इस ग्रंथमाला की प्रकाशक भी हैं, उनके सद्भाव और सत्कार्य की सराहना करना आवश्यक है। डोगरी भाषा से अनभिज्ञ होते हुए भी उन्होंने अपने पति द्वारा लिखित साहित्य को सुचारू रूप से मुद्रित करवाने का बढ़िया उपक्रम किया है। बढ़िया कागज, आकर्षक आवरण और स्तरीय मुद्रण से प्रत्येक पुस्तक खिल–सी उठी है।

विकास–पथ पर डोगरी कविता

पार[1]– वरिष्ठ डोगरी लेखक वेद राही कहानी और उपन्यास विधाओं में विशेष पहचान रखते हैं। किंतु, काव्य–क्षेत्र में 'चुप्प रेहियै प्रार्थना कर' के माध्यम से उन्होंने मानसिक भावों के प्रतिबिंब पूर्ण सफलता से प्रस्तुत किए हैं। इधर उनकी कविताओं का नया संग्रह 'पार' इस सूक्ष्म विधा में नई जमीन तैयार करने का प्रयास प्रतीत होता है। 27 कविताओं के इस संकलन में प्रत्येक कविता किसी एक या अधिक भाव–बिंबों के निर्माण का प्रयास करती दिखाई पड़ती है। सरल मनोभावों को साधारण भाषा में व्यक्त करने का यह अपनी तरह का एक अलग प्रयास है। 'भीतर के कपाट' (अंदरा दे भित्त) शीर्षक कविता आत्मालाप की दशा में उभरी अनुभूतियों का स्पष्ट चित्रण करती है। प्रत्येक मानव के भीतर का शैतान इस युग में अलादीन के जिन्न की तरह हाथ बाँधे खड़ा है। यही शैतान मर्यादाओं को तार–तार करने को उतावला है और आपके आदेश की प्रतीक्षा में है। कविता के रूप में किए गए ऐसे उत्तम प्रयास इस

पुस्तक में अन्यत्र भी उपलब्ध होते हैं। उर्दू शायर मीर तकी मीर तथा मराठी कवि विष्णु वामन शिखाडकर 'कुसुमाग्रज' पर लिखित दो कविताएँ निश्चय ही इस कविता संग्रह को विशेष पहचान देने में सक्षम हैं।

आपकी याद में[2]– प्रतिभा के धनी डोगरी कवि तारा स्मैलपुरी वर्ष 1990 में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किए गए। काव्य की विविध शाखाओं में अपनी पहचान बनाने के अलावा उन्हें लेख और निबंध लिखने में भी दक्षता प्राप्त थी। हास्य और व्यंग्य पर उनकी मजबूत पकड़ थी। उन्होंने डोगरी को इस भाषा के प्रथम दो कोश– 'डोगरी कहावत कोश' (1962 ई.) और 'डोगरी मुहावरा कोश' (1966 ई.) देकर अपनी प्रतिभा की धाक जमा दी। 2011 ई. में उनकी मृत्यु से डोगरी कविता में स्तर की अपूरणीय क्षति अनुभव की गई।

वर्ष 2020 में उनकी पोती संवेदना शर्मा ने अपने दादा की पुण्य स्मृति में उनकी अप्रकाशित काव्य–रचनाओं को प्रकाशित करवाने का अध्यवसाय किया। इस संकलन में स्वर्गीय कवि की 83 ग़ज़लों के अलावा 4 कव्वालियाँ और 19 कविताएँ भी सम्मिलित हैं। संभवतया, जीवन के अंतिम वर्षों में लिखी गई इन कविताओं में बहुधा सामाजिक विषयों पर कवि की प्रतिक्रिया उपलब्ध होती है। आधुनिक जीवन से संबद्ध समस्याओं की ओर भी उसका समुचित ध्यान गया है। देश प्रेम के मनोभावों के अलावा पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद पर भी कवि का पक्ष इनमें मौजूद है। यह कविता संग्रह स्वर्गीय कवि की याद को चिरस्थायी रखने में सहायक होगा, इसकी पूरी आशा है।

सागर मंथन[3]– कवि ज्ञान सिंह की सद्यः प्रकाशित इस पुस्तक में 48 कविताएँ संकलित हैं। कविताओं का विषय क्षेत्र बेहद व्यापक है। इनमें गंभीर भाव और विचारों का उद्बोधन पाठक की अनुभूति को उच्च आसन पर आसीन कर देता है। कहीं–कहीं व्यंग्य के माध्यम से हास्य का सहज प्रवाह और इनमें निहित संदेश, इनमें उच्चकोटि की कविताएँ होने का प्रमाण बन जाता है। अपने परिवेश से जीवंत और विचारोत्तेजक प्रसंग उठाकर कवि ने उन्हें डोगरी कविता की उस शृंखला से जोड़ने का प्रयास किया है जो इसका सुनहरा अतीत था। मानवतावाद से ओत–प्रोत इन कविताओं में कवि की दृष्टि एक सुधारक की रही है। 'मन', 'सुच्ची कामना', 'शनाखत', 'पाप' आदि कविताओं में कवि का हृदय उच्च मानवीय गुणों का गुणानुवाद करता दिखाई पड़ता है। 'संदेशा या चुनौती' तथा 'इदे कोला आप बचाओ' जैसी कविताओं में कवि का मानवता–प्रेमी दृष्टिकोण और संदेश पूर्णतया स्पष्ट है। इस संकलन की कुछेक कविताएँ डोगरी और डुग्गर की ईन–आन के प्रतीक वीर योद्धा 'मियां डीडो' पर आधृत हैं। कवि ने इस क्षेत्र के सांस्कृतिक सरोकारों की भी अनदेखी नहीं की। 'सागर मंथन' जागरूक कवि–मन की आधुनिक भारतीय परिदृश्य पर एक सशक्त टिप्पणी है। इस संग्रह की इस मुख्य कविता को वर्ष 2020 की विशेष उपलब्धि माना जा सकता है।

दर्द पिटारी[4]– गीतों और कविताओं का यह संग्रह नसीब सिंह मन्हास के पुनः डोगरी के रचनात्मक परिदृश्य पर प्रकट होने का प्रमाण है। दूरदर्शन में अपने दीर्घ सेवाकाल के दौरान कुछ समय निकालकर इस कवि ने अपने शृंगारिक भावों को कविता के रूपाकार में ढालकर भाषा और साहित्य के प्रति अपनी वफादारी का प्रमाण दिया है। कवि की भावना है कि उसके अंतस् की पीड़ा शब्दों का प्रवाह पाकर गीतों की सूरत में ढलती रही। फलस्वरूप वह पीड़ा जिसे कवि दर्द पिटारी में सहेजता रहा– अंततः इन कविताओं के रूप में प्रगट हुई। इनमें संयोग और वियोग शृंगार के दोनों पक्षों को अभिव्यक्ति मिली। पर्यावरण, प्रकृति और मानव के पारिस्थितिक सरोकारों को भी इन काव्य–रचनाओं में स्थान मिला।

अपने काव्य गुरु यश शर्मा के पग–चिह्नों पर चल रहे, इस गीतकार–कवि को अभी उस उत्स को छूने के लिए लंबी यात्रा करनी है जो उसका मुख्य लक्ष्य है। मन्हास ने प्रायः ऐसे

विषयों को अपनी गीति रचनाओं में उठाया है, जिन पर वरिष्ठ डोगरी कवि अलमस्त, यश शर्मा, पद्मा सचदेव आदि बहुत पहले लिख चुके हैं। इसके बावजूद नसीब सिंह मन्हास उन पारंपरिक भाव–बिंबों को निजी संस्पर्श देने में सफल रहे हैं।

1008 डोगरी हाइकु[5]– इधर भारतीय भाषाओं में जापानी काव्य–विधा 'हाइकु' का आगमन एवं प्रचलन तेज गति से हुआ है। इन पंक्तियों के लेखक ने 1990 ई. में डोगरी में सात 'हाइकु' लिखकर एक नया प्रयोग किया था। तदुपरांत सुतीक्ष्ण कुमार आनंदम् ने अपने हाइकु' 'चंद्रभागा संवाद' में प्रकाशित करवाए। बाद में कुछ और सज्जनों ने इस प्रयोग को आगे बढ़ाया। इस दिशा में ताज़ा–तरीन प्रयास यशपाल निर्मल की इस पुस्तक में उपलब्ध होते हैं। पुस्तक के नाम से स्पष्ट है कि इसमें 1008 हाइकु संकलित किए गए हैं।

तीन पंक्तियों और सात–आठ शब्दों की सीमा में बँधे इस काव्य–बिंब का डोगरी में आना एक स्वागत योग्य कदम है। यशपाल निर्मल के इस संजीदा प्रयास की जितनी सराहना की जाए कम है। इस भाव–चित्र को बाँधने के प्रयास की श्लाघा बहुत से लेखकों ने मुक्त–कंठ से की है। इन बहुत–से लेखकों के अभिमत को पुस्तक के आरंभिक पृष्ठों पर स्थान दिया गया है। पुस्तक के पृष्ठ 37 से 204 तक प्रकाशित हाइकु मौलिकता की मिसाल हैं। ऐसे प्रयासों में ही डोगरी भाषा और साहित्य की समृद्धि निहित है। इस पुस्तक को मुक्त कंठ से प्रशंसा दरकार है।

क्रोध एवं खेद[6]– इस वर्ष उद्यमी लेखक ध्यान सिंह की प्रकाशित छह डोगरी पुस्तकों का सीमा क्षेत्र विभिन्न विधाओं में फैला हुआ है। उन्होंने उपन्यास, निबंध, नाटक की पुस्तकों के अतिरिक्त अपनी कविताओं का संकलन भी प्रकाशित करवाया है। यह संग्रह स्तर की दृष्टि से उनकी छहों पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ है। इसे उनकी कविता–यात्रा का मील–पत्थर माना जा सकता है। इन कविताओं में कवि की काव्य–प्रतिभा रह–रह कर झलक उठती है। यह प्रयास उन्हें परंपरागत कविता के उस फलक से जोड़ता है, जिसे श्रेष्ठता की शिखर उपलब्धि माना जाता है। परंपरा और आधुनिकता के दोनों सिरों को कवि ने योग्यता से छुआ है। इसीलिए, इन कविताओं में नव–युग की उत्प्रेरणा और उच्छवास भरे दिखाई देते हैं। छंदोबद्ध और छंदहीन दोनों वर्गों की कविता में कवि की मजबूत पकड़ दिखाई देती है। आधुनिक जीवन की विडंबनाओं के अतिरिक्त डुग्गर के सांस्कृतिक मूल्यों को गहराई से समझने का प्रयास भी दिख जाता है। 'स्पर्श' तथा 'मैं' शीर्षक कविताएँ हृदयस्पर्शी बन पड़ी हैं। 'सैह्कदी मनुक्खता' तथा 'सतवंती नार एह् डुग्गर दी' इस संग्रह की श्रेष्ठ कविताएँ हैं। निश्चय ही इस संग्रह में कुछेक ऐसी कविताएँ मौजूद हैं, जिन्हें मुख्य–धारा की श्रेष्ठ कविता में सम्मिलित होने का सम्मान मिलना चाहिए।

दो सदियाँ, एक प्रवाह[7]– मात्र एक ही लंबी ग़ज़ल की यह पुस्तक अपनी तरह का पहला प्रयोग है। यह इस शैली की प्रथम कृति है। तथ्य यह है कि आज तक किसी भी भाषा में 721 शेरों की ग़ज़ल प्रकाशन में नहीं आई। ग़ज़ल विधा की जड़ें जिस गंभीरता से डोगरी में जमीं और जिस गंभीरता से डोगरी कवियों ने इसे कबूल किया, वह अपने–आप में एक इतिहास है। विगत कुछ वर्षों से डोगरी में ग़ज़ल कमजोर पड़ती नज़र आने लगी थी। बीच–बीच में कोई ग़ज़ल–संग्रह परंपरागत कविता की एकतानता को तोड़ता नज़र आ जाता था। किंतु, इस संग्रह के प्रकाशन से निराशा के बादल छँटते नज़र आने लगे हैं। विशेष बात यह है कि इस वर्ष शीराज़ा डोगरी के ग़ज़ल अंक ने इस विधा पर से धूल झाड़कर इसे पुनर्जीवित करने का महती प्रयास किया है। इसी बीच इस लंबी ग़ज़ल की आमद होने पर यों लगा जैसे विजय वर्मा ने धीमी पड़ रही आँच को फूँक मार कर इसमें जीवन संजीवनी भरने

का प्रयास किया है। निश्चय ही इस पुस्तक ने ग़ज़ल शैली में चले आए गतिरोध को भंग करने का सफल प्रयास किया है।

सादा–सरल इन शेरों का भाव–गांभीर्य सराहना के योग्य है। किन्हीं शेरों में अभिधा अर्थ से बिंब गढ़े गए हैं तो बहुत से शेर ऐसे हैं, जिनमें लक्षणा का आश्रय लेकर मुहावरे का प्रभाव उत्पन्न किया गया है। व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा व्यावहारिक पहलुओं पर गहरी चोट की गई है। आज के जीवन में कथनी और करनी के अंतर को इन शेरों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। पाखंड आज के जीवन में एक कला का स्थान पा चुका है। कवि विविध पाखंडों पर गंभीर चोट करने में सिद्धहस्त ही है। इस ग़ज़ल की विशेषता है कि इसका छोटा बहर, जिसका निर्वहन सफलता से किया गया है। यह पुस्तक इस वर्ष प्रकाशित होने वाली पुस्तकों में विशेष स्थान रखती है।

कहानी और उपन्यास का ताना–बाना

चित्रकार[8]– बारह नई कहानियों का यह संग्रह जगदीप दूबे का तीसरा कहानी संग्रह है। इस संग्रह का कथाकार अपने कथानक की जमीन को विस्तार देने में सिद्धहस्त है। पुष्ट भाषा–पक्ष के रहते वह कल्पना के क्षितिज से निकले कथानक को प्रामाणिक स्वरूप देने में सफल रहता है। किंतु, बहुत से स्थलों पर कथानक के किन्हीं अंशों की पृष्ठभूमि की कृत्रिमता कहानी के आधार को कमजोर कर देती है।

इस संग्रह की मुख्य कहानी 'रंगकार' का कथानक बनावटी फैलाव के कारण कहानी की रोचकता पर भारी पड़ जाता है। दीपक नामक चित्रकार घोड़ों की तस्वीरें बनाने के लिए 'सियोजधार' के खूबसूरत मैदान की ओर बढ़ता है, वहाँ लेखक जमीतू और रुकमदीन के माध्यम से रास्ते में पडने वाले महत्वपूर्ण स्थानों का यथार्थ वर्णन करके, इसे कहानी की परिसीमा से बाहर करके एक हल्के–फुल्के यात्रा–लेख का रूप दे देता है। यदि ऐसे अवांछित ब्यौरों का मोह छोड़ दिया जाता तो कथा–रचना में निश्चय ही कसाव आ सकता था।

चित्रकार दीपक घोड़ों विषयक इन चित्रों को एक निश्चित खरीददार की फरमाईश पर बना रहा था। खरीदार ने आरंभ में ही स्पष्ट रूप से कहा था' "मुझे तस्वीरें विदेश भेजनी हैं। समुद्र तट पर दौड़ते घोड़े। रंग आपकी मर्जी के होंगे– यों लगना चाहिए जैसे सच में घोड़े दौड़ रहे हैं।"

दो महीने के पश्चात् जब खरीददार अपने लिए निर्मित तस्वीरें लेने पहुँचता है तो चित्रकार दीपक उसे जो चित्र दिखलाता है उनमें घोड़ा नामक प्राणी पर हो रहे अत्याचार को चित्रित किया गया है। किंतु, ये तस्वीरें खरीददार की माँग या शर्त के अनुरूप नहीं थीं। बेड़ियों में बँधे घोड़ों का चित्र देखकर खरीददार खुद को ठगा–सा महसूस करता है। ऐसे में चित्रकार उसे उत्तर देता है– "मैंने आपसे कहा था, ये रंग और ब्रश मेरे गुलाम नहीं हैं।" यह पेशेवराना उत्तर नहीं, बल्कि इसमें फरार भरा हुआ है। इस उत्तर से कथानक का बंटाधार होता जान पड़ता है। खरीददार ने दीपक (चित्रकार) को दो महीने तक विशेष सुविधाएँ प्रदान की थीं। इसलिए जब वह इस प्रबंध पर हुए खर्चे की बात याद दिलाता है तो दीपक संयमित स्वर में उससे कहता है– "अगले सप्ताह आकर मेरे घर से ले जाइएगा।"

प्रश्न यह उठता है कि जो काम एक सप्ताह में घर के भीतर रहकर हो सकता था, उसे दो महीनों में किसी एकांत स्थल पर रहकर संपन्न करने के ताम–झाम की क्या आवश्यकता थी। ऐसे प्रसंगों से कहानी बिखरने का खतरा दरपेश रहता है।

'पूरने', 'सत्ती', 'मदारी', 'फजलां' आदि इस संग्रह की दिलचस्प कहानियाँ हैं। अन्य कहानियों में जीवन की रोजमर्रा की घटनाओं को साधारण पात्रों के माध्यम से सामने लाया गया है। ठेठ भाषाई प्रयोगों द्वारा कहानीकार अपने कथानक को सजीव बनाए रखने में सफल रहा है।

कोई तो है[9]– कहानीकार अशोक दत्ता का यह तीसरा कहानी संग्रह है। इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में कथा–लेखन के क्षेत्र में उतरे इस कथाकार ने इस अल्पावधि में ही अपनी अलग पहचान कायम की है। उनकी लेखनी में निरंतर निखार आता गया है। इस संग्रह में संकलित कुल 10 कहानियों में से प्रत्येक के कथानक पर उनकी मज़बूत पकड़ दिखाई देती है। कथाकार ने जीवन को बड़े निकट से देखा–परखा है। शायद इसी कारणवश कथा–पात्रों के जटिल मनोविज्ञान की परतें सहजता से खोल देता है। भाषा का संयम और ठेठ मुहावरे का प्रयोग कहानियों को सुरुचिपूर्ण बना देता है। संवाद बेहद सहज एवं चुटीले बन पड़े हैं। पात्रों का चरित्रांकन निहायत स्वाभाविक और सहज है। प्रत्येक कहानी विश्वसनीयता का एक चित्र मात्र है।

'त्री चिट्ठी', 'सूरदास', 'सिर–फिरे' भी रोचक कहानियाँ हैं। कहानीकार मध्यवर्गी तथा निम्न मध्यवर्गी परिवारों की जीवन–स्थितियों को सफलता से चित्रित कर पाया है। दैनंदिन जीवन–घटनाओं को कथानक में पिरोने की उसे दक्षता प्राप्त है। निश्चय ही यह कथा संग्रह डोगरी कथा साहित्य में एक अभिवृद्धि माना जाएगा।

कुछ पल जीवन के[10]– इस उपन्यास की कथा बीसवीं शती के तीसरे–चौथे दशकों से संबद्ध है। इसका घटनाक्रम दूरस्थ पहाड़ी गाँव के सज्जन पुरुष कश्मीरु से आरंभ होता है। वह एक प्रतिष्ठित और समृद्ध दुकानदार है। उसके मरणोपरांत उसके आश्रितों को विकट जीवन स्थितियों का सामना करना पड़ता है, जिसका वर्णन रोचक ढंग से हुआ है। कश्मीरु की पत्नी सुभद्रा और निराश्रित संतान जीवन–पथ पर संघर्ष करते हुए कठिनाइयों का सामना करते हैं। सुभद्रा और उसके बेटे राम कमल की जीवनचर्या का व्यवस्थित वर्णन करते हुए डोगरा समाज के रीति–रिवाजों को कारीगरी से संगुफित किया गया है। किंतु, किन्हीं स्थलों पर अनावश्यक विस्तार होने के कारण उपन्यास का कथानक लटक जाता है और यह उबाऊ प्रतीत होने लगता है। 29वें अध्याय में दिए गए दहेज की लंबी परिगणना बेकार का विस्तार बनकर रह जाती है। जीवन–मरण से जुड़े अनुष्ठानों का वर्णन भी इस परिवार के माध्यम से हुआ दिखाई पड़ता है। इस उपन्यास को लेखक का अपने अनुभवों को पाठक से साँझा करने का प्रयास मात्र मानना चाहिए। इससे आशा होती है कि आगे चलकर लेखक और भी परिपक्व शैली में उपन्यास दे पाएगा।

इस औपन्यासिक रचना की मुहावरेदार भाषा वर्तमान रचनात्मक कृतियों में बहुत कम दिखाई पड़ती है। अधिकांशतया डोगरी कृतियों में हिंदोस्तानी शब्दावली से लदीफदी सपाट भाषा का प्रचलन दिखाई देता है। बी.आर. गुप्ता चूँकि देहाती पृष्ठभूमि के लेखक हैं, संभवतया इसीलिए उनकी इस रचना में भाषा का ठाठ और निखार उभरा हुआ दिखाई देता है। उपन्यासकार ने वर्तमान उपन्यास में प्रकृति–चित्रण का समुचित प्रयोग किया है। इससे वे अपने वर्णन में फोटोग्राफिक गहराई दे पाने में सफल हुए हैं।

मसां का एक मात्र[11]– उपन्यासिका के नाम से प्रस्तुत यह कथा–रचना फेरू नामक एक गाँववासी युवा के जीवन से संबद्ध है। गुरबत के चंगुल में जकड़ी मसां का पुत्र फेरू, जीवन की विडंबनाओं के वशीभूत पढ़ाई छोड़कर अपनी जीवन नौका का घाट तलाशने के उद्देश्य से अपने चाचा शामू का आश्रय लेता है। शामू जो स्वयं एक पल्लेदार है उसे सहारा देता है। छोटे और आम लोगों की जीवनचर्या की क्षुद्र घटनाओं का एक व्यवस्थित जाल–सा संगुफित होता चलता है। फेरू के जीवन की यह कथा एक लंबी कहानी बन जाती है। इस प्रकार का प्रथम प्रयास होने के कारण इसमें कलात्मक दृष्टि से कोई विशेष उपलब्धि उभर कर सामने नहीं आ पाती। घटनाक्रम बेजान–सा है और मंथर गति से आगे बढ़ते हुए समाहार को प्राप्त होता है।

इस कथा–रचना के माध्यम से लेखक ध्यान सिंह का समृद्ध भाषाई मुहावरा अवश्य ही सामने आ पाया है। किंतु वागाडंबर का दोष

वाक्य–विन्यास में अस्पष्टता दोष भर देता है। लंबे–वाक्यों को यदि छोटे–छोटे वाक्यों में विभक्त किया जाता तो लेखक का कथन प्रसाद रस से रहित न रहा होता। पाठक उद्‌भ्रांत न हो, यह प्रत्येक अनुभवी लेखक का परम लक्ष्य होना चाहिए।

नाट्य लेखन : संवाद की दुनिया

पक्षपात[12]– इस मंचीय नाटक का ताना–बाना एक नाटक–मंडली के भीतर निजी स्वार्थों की खींच–तान को लेकर बुना गया है। यह नाट्य–रचना नाटककार ने रंगमंच से जुड़े उन कलाकारों को समर्पित की है, जिन्हें अपनी धरती और भाषा के गौरव की चिंता है। नित्यानंद के निर्देशन में खेला जाने वाला नाटक भी इसी खींच–तान की बलि चढ़ जाता है। नित्यांनद एक ऐसा समर्पित व्यक्तित्व है जिसे मंच की समझ भी है और कलाकार उसका सम्मान भी करते हैं। कलाकारों के निजी स्वार्थ के कारण यह नाटक–मंडली अंततः टूट जाती है। टकराव के दौरान पात्रों का चरित्र स्पष्ट होकर उभर आता है। श्रीकांत जो कि नित्यानंद को अपना गुरु मानता है, कहता है– "हमारी संस्कृति हमें अपने गुरुओं का आदर करना सिखलाती है, निरादर करना नहीं।" उसकी यह निष्ठा नाटक के अंत तक बनी रहती है। नाटक का कथानक बेहद ढीला–ढाला और उत्कर्षहीन है।

मक्कड़जाल[13]– कथानकहीन, किंतु स्थिति प्रधान इस नाटक में मात्र संवाद से संवाद जोड़ने का प्रयास प्रमुख है। इसके बावजूद लंबड़दार और सरो जैसे पात्रों का चरित्र–चित्रण स्पष्ट हो पाया है। स्थितियाँ नाटकीय मोड़ पाकर गतिशील होने लगती हैं। दुष्ट वृत्ति के लंबड़दार को फिल्मी अंदाज में ऐसे धाकड़ खलनायक के रूप में चित्रित किया गया है जो बुराई के क्षितिज को छूता दिखाई देता है। पाठक के समक्ष एक स्वाभाविक प्रश्न यह उठता है कि क्या गाँव का कोई लंबड़दार अपनी ज़िम्मेवारियों को भूल कर बुराई के उस उत्कर्ष पर पहुँच सकता है, जिसे नाटक में चित्रित किया गया है। मामूली–से लंबड़दार की हैसियत ही क्या है? यह चरित्र मात्र कोरी कल्पना की उपज दिखाई देता है।

आत्मप्रद एक नाटक की रिहर्सल[14]– संभवतया लेखक ने इस रचना के माध्यम से पहली बार नाटक–विधा में हाथ आज़माया है। इस मंचीय नाटक में प्रतीकों के माध्यम से अथवा भाषा के तिर्यक प्रयोगों से अभिप्रेत को साधने का प्रयास किया गया है। नाटककार संभवतया अनेकता में एकता का संदेश देना चाहता है। ये प्रतीक कहीं–कहीं अत्यंत दुरूह और असाध्य प्रतीत होते हैं। इससे अंदेशा होता है कि यदि इस नाटक को कभी मंच पर खेल पाना संभव हुआ तो दर्शक इसे अवाक् होकर देखता रह जाएगा और इसे समझने के लिए किसी दुभाषिए की आवश्यकता अनुभव करेगा।

अपने मंतव्य को प्रस्तुत करने हेतु सूत्रधार का आश्रय लेकर लंबे–लंबे संवादों का आधान किया गया है। इसी भाँति कथानक के भारीपन को हल्का करने के लिए लेखक ने डुग्गर की स्थानीय परंपराओं के आधार पर 'लोरी–गीत', 'बधाई–गीत' आदि का प्रयोग भी किया है। अच्छा होता यदि प्रकाशन से पूर्व इस नाटक के कुछेक मंचन करके इसका आवश्यक पुनर्लेखन कर लिया जाता।

धोबन की रूह, धोबी की छूह[15]– 236 डिमाई पृष्ठों का यह विस्तृत नाटक, इस दौरान प्रकाशित होने वाला सर्वाधिक लंबा नाटक है जो कि इक्यावन छोटे–छोटे दृश्यों में विभक्त है। नाटक में 42 से अधिक पात्र हैं। कथानक 1947 में देश विभाजन के उपरांत के जन–जीवन को चित्रित करता है। देहाती डोगरा समाज में पनप रहे धार्मिक सौहार्द और सामाजिक एकता का दिग्दर्शन भी इसमें होता है। इसमें दिखाया गया है कि उस दौर में हिंदू–मुस्लिम डोगरा समाज में एक परिवार की भाँति मिल–जुलकर रहते थे। उनकी सांस्कृतिक दाय सांझी थी।

नाटककार का भरसक प्रयत्न रहा है कि संवादों में साधारण जन की भाषा का समावेश हो। इसके लिए, उसने लोकवार्ता के विभिन्न अंगों का सम्यक प्रयोग करके कथानक को

विश्वसनीयता का पुट प्रदान किया है। यह नाटक लोकगीतों से ओतप्रोत है। दृश्य सोलह–सत्रह में ही नहीं, अन्यत्र भी लेखक ने लोकगीतों का भरपूर प्रयोग किया है। अधिकांश लोकगीत जम्मू–कश्मीर राज्य की कल्चरल अकादमी के लोकगीत संग्रहों से उठाए गए हैं। गीतों का प्रयोग नाटक को स्थानीय संस्कृति की रिवायतों का आभास देने के लिए किया गया है। गीतों की बहुतायत के कारण इस नाटक को गीतों भरी कहानी कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। नाटक के पात्र मुहावरेदार भाषा के प्रयोग में पारंगत है। डोगरी कहावतों का भरपूर प्रयोग भी हुआ है। भाषा संप्रेषण का आवश्यक अंग है। किसी भी कृति में इसकी सक्षमता आवश्यक है, किंतु नाटक की परख की कसौटी मात्र मंच है। यदि कभी यह नाटक मंचित हो पाया तो इसकी सफलता अथवा ग्राह्यता का उचित समाकलन हो पाएगा। कलेवर विस्तार के कारण यह नाटक चार घंटों की समय सीमा से आगे की प्रस्तुति होगा। यदि इसमें उद्धृत गीतों को पूरा–पूरा गाया गया तो यह समय–अवधि और अधिक बढ़ सकती है।

कथानक बोझिल न हो इसके लिए नाटककार ने हास्य और व्यंग्य का यथोचित प्रयोग किया है। नाटक में समाज के साधारण एवं साधनहीन कामगार एवं किसान–वर्ग की तस्वीरकशी का सफल प्रयास हुआ है। नाटक में उभारा गया वर्ग–चरित्र और वर्ग–संघर्ष और अधिक स्पष्ट होकर उभर सकता था, यदि इस तमाम कथानक को उपन्यास की शैली में प्रस्तुत किया जाता तो।

मिश्रित साहित्य

श्रीमद्भगवद् गीता[16]– भारतीय अध्यात्म–दर्शन की अद्भुत उपलब्धि श्रीमद्भगवद् गीता का प्रथम अनुवाद 1934 ई. में प्रो. गौरीशंकर द्वारा प्रकाशित करवाया गया। तदुपरांत विभिन्न विद्वानों द्वारा इस ग्रंथ के गद्य तथा पद्य अनुवाद प्रकाश में लाए जाते रहे। डेढ़ दर्जन से अधिक डोगरी अनुवाद इन पंक्तियों के लेखक की दृष्टि से अब तक गुज़र चुके हैं। चर्चित वर्ष 2020 में इस दिशा में एक नवीनतम प्रयास सतीश कुमार नामक डोगरी शोध छात्र द्वारा किया गया है, जिन्होंने श्रीमद्भगवद् गीता को योगेश्वर श्रीकृष्ण की वाणी के रूप में प्रस्तुत किया है।

इस शोधार्थी ने श्रीगीता के श्लोकों का अनुवाद करने के स्थान पर इनमें निहित दिव्य उपदेश को आधार बनाकर भक्ति, अध्यात्म एवं दर्शन से संबद्ध युगीन प्रश्नों को आधार बनाकर श्रीकृष्ण के दिव्य संदेश की सम्यक व्याख्या की है। मुख्य विषय जिन पर विषद चर्चा उपलब्ध होती है, उनमें से कुछेक इस प्रकार हैं–

- पात्रों की प्रासंगिकता
- आत्मा–परमात्मा का संबंध
- मोक्ष
- मोक्ष प्राप्ति
- मन की चंचलता
- पाप–पुण्य आदि
- सांख्य योग
- कर्म, कर्तव्य और ज्ञान
- भक्ति की परम सत्ता
- जीव, जगत, माया आदि

गीता के श्लोकों के आधार पर व्याख्याकार सतीश कुमार ने अर्जुन के उहापोह तथा श्रीकृष्ण की ओर से प्रस्तुत निराकरण को आधार बनाकर सुंदर व्याख्या की है।

अनुवाद– इस वर्ष डोगरी में मात्र दो अनुवाद ही प्रकाशित हुए हैं। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

(i) वासवदत्ता[17]– प्रबंध काव्य के रूप में प्रस्तुत यह कृति डॉ. संजीव कुमार द्वारा लिखित है। लेखक ने आगरा की गणिका वासवदत्ता के सिद्धार्थ उपगुप्त के प्रति आकर्षण को आधार बनाकर इस लघु काव्य की रचना की है। उपगुप्त द्वारा उसके निमंत्रण को ठुकराने के प्रसंग को इस काव्य–रचना में बुना गया है। छंदहीन इस काव्य का डोगरी अनुवाद एक सफल प्रयास है। डोगरी में ऐसी उच्चकोटि की रचनाओं का अनुवाद अवश्य होना चाहिए।

(ii) राधा माधव[18]– इस प्रबंध–काव्य का भाषा अनुवाद एक बेहद कठिन कार्य है। अनुवाद डोगरी के युवा साहित्यकार यशपाल निर्मल ने बड़ी सूझ–बूझ और मेहनत से किया है। प्रबंध–काव्य लेखन में यह परंपरा रही है कि इसमें छंदोलकार की मर्यादाओं का परिपालन किया जाता है। किंतु, मूल लेखक उदभ्रांत जी ने प्रबंध–काव्य की अपनी मर्यादाओं को स्थापित किया है। छंदहीन काव्य को भाव–प्रवण बनाकर एक सफल प्रयोग सामने आया है। इस अध्यवसाय के लिए यशपाल निर्मल साधुवाद के अधिकारी हैं।

डोगरा स्वाभिमान : शोध एवं अभिव्यक्ति[19] –इस पुस्तक के आवरण और शीर्षक से प्रतीत होता है मानो इसमें डोगरा कौम के ऐतिहासिक पहलुओं से साक्षात्कार कराया गया होगा। किंतु, विषय सूची पर दृष्टिपात करने पर यह तथ्य सामने आता है कि इसमें बहुधा साहित्यिक पक्ष से संबद्ध आलेखों का संकलन किया गया है। डोगरी साहित्य, लोकवार्ता और संस्कृति के किन्हीं पहलुओं पर इसमें 14 आलेख शामिल किए गए हैं। मात्र एक ही लेख डोगरा लोगों के इतिहास से संबंधित है। चार लेख डोगरी के स्वर्गीय लेखकों यथा–रामनाथ शास्त्री, मदन मोहन शर्मा, मधुकर, कुँवर वियोगी के साहित्य और जीवन पर केंद्रित हैं, जबकि पाँचवाँ लेख मोहन सिंह सलाथिया के व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित है। एक ओर लेखक ने जहाँ डोगरी की गीत–परंपरा पर चर्चा की है, वहीं डोगरी कविता में प्रगतिवाद और डोगरी साहित्य के काव्यात्मक स्वरूप पर भी सरसरी चर्चा की है। इसी भाँति लोकवार्ता के क्षेत्र में डोगरी लोकगीतों में पर्यावरण चेतना की तलाश का प्रयास उपलब्ध होता है वहीं लोक कथाओं के इतिहास और कथा–वाचन के स्रोतों की पहचान का प्रयास भी किया गया है।

डोगरा लोक–पर्व 'रुट्ट–राह्ड़े' पर भी एक परिचयात्मक लेख मौजूद है। भाषाई अस्पष्टता के बहुत से गुंझलक इसके सुचारू पठन में बाधा उत्पन्न करते हैं। लेखों में असंबद्ध सामग्री और संदर्भों की भरमार है।

भ्रमण[20]– यात्रा–साहित्य की विशेषता है कि यह न तो कहानी होता है न उपन्यास ही, इसके बावजूद यह इन विधाओं से कम रोचक नहीं होता। यात्रा–लेख यदि अनजान स्थलों के महत्व पर प्रकाश डालता चलता है और उनके सांस्कृतिक महत्व को भूलता नहीं है तो यह गल्प–साहित्य की तरह उत्सुकता जाग्रत करता है। इंदरजीत केसर के 'फेरा–टोरा' शीर्षक संग्रह में संकलित यात्रा–निबंध समुचित जानकारी से भरे पड़े हैं। अपने अनुभव को सहज शैली में प्रस्तुत करने के कारण यह निबंध सहज–ग्राह्य हो जाते हैं। धार्मिक तथा पर्यटन स्थलों का सिलसिलेवार ब्यौरा लेखक के आत्मिक संसर्ग में विशेष प्रभाव छोड़ जाता है। अपने वर्णन में पाठक को संग बहा ले जाने का गुण लेखक को सराहना का पात्र बना देता है।

प्रथम निबंध में उत्तराखंड में अवस्थित चार धाम (केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री एवं बद्रीनाथ) का मनोहारी वर्णन उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त भारत में स्थित तीन धामों और अन्य प्रमुख धर्म–स्थलों की यात्रा का प्रामाणिक वर्णन भी एक अन्य निबंध में किया गया है। अपनी यात्रा के दौरान लेखक उन तमाम स्थलों की वनस्पतियों और पशुओं आदि पर भी पैनी दृष्टि रखता है। रास्ते की दुश्वारियों और उनके निवारण पर भी उसकी पैनी नजर रहती है।

सात भागों में विभक्त इस निबंध संग्रह में लखनऊ, जयपुर, हिमाचल तथा पंजाब की यात्राओं का भी सविस्तार उल्लेख उपलब्ध होता है। आबू–धाबी की यात्रा वाला निबंध एक श्रेष्ठ रचना है।

संवाद शास्त्र[21]– 20 लघु निबंधों का यह संग्रह इस विधा के संवर्धन का नवीनतम प्रयास है। प्रायः प्रत्येक निबंध में लेखक का मानवतावादी दृष्टिकोण झलकता है। यह मानव–मैत्री का दृष्टिकोण मुख्यतः वामपंथी विचारधारा से प्रेरणा पाता है। राष्ट्रभक्ति के विषय में लेखक का

कहना है– "कौमों में सत्ता के लिए देश–भक्ति की धारणा का जुनून यदि सीमा से बढ़ जाता है तो मार–काट और खून–खराबे के कष्टप्रद दृश्य सामने चले आते हैं।" साम्यवादी अतिवाद से ग्रस्त दृष्टिकोण कहीं उग्र रूप में तो अन्यत्र लुके–छिपे रूप में सामने आता है। किंतु, यह तथ्य है कि लेखक अपने मूल दृष्टिकोण के प्रति पूर्ण निष्ठा से आगे बढ़ा है। अभिप्रेत को सुचारू रूप से सामने रखने के लिए वह न केवल रोचक दृष्टांतों का आश्रय लेता है, बल्कि अपनी वाक्य–रचना में डोगरी के सुंदर आख्यानों का समुचित प्रयोग भी करता है। इधर कुछ वर्षों से डोगरी लेखकों का ध्यान ललित निबंधों की उपेक्षित विधा की ओर गया है। इसके फलस्वरूप डोगरी में निरंतर लालित्यपूर्ण निबंधों की आमद होने लगी है। 'संवाद शास्त्र' इसी दिशा में एक सकारात्मक कदम है। 'सुखनें दे चलत्र', 'परोख', 'बदखोहियां', 'अबला–सबला' इस संग्रह के अच्छे निबंध हैं।

इच्छाओं की उड़ान[22]– बाल कविताओं के इस संग्रह में 54 कविताएँ संकलित हैं। बहुधा छोटे कलेवर की इन कविताओं का विषय क्षेत्र बाल–मनोविज्ञान का स्पर्श करता है। बालावस्था चौगिर्द के पर्यावरण से जान–पहचान बढ़ाने की आयु होती है। अपने निकटवर्ती वातावरण के प्रति बाल–मन जिज्ञासा रखता है। ऐसे तमाम विषय और वस्तुओं को प्रायः इन कविताओं में समाविष्ट किया गया है। पर्यावरण में मौजूद प्रायः तमाम विषयों पर सरल किंतु रोचक शैली में कविताएँ रची गई हैं। संबंधों से पहचान कराने हेतु 'मम्मी', 'पापा', 'दादी', 'दादू जी', 'नानी' आदि खूबसूरत कविताएँ मौजूद हैं। परिवेश से संबद्ध अन्य सरोकारों में 'घर', 'हमारा तालाब', 'मेरा गाँव' जैसी कविताओं के अतिरिक्त गाय, मुर्गा, चिड़िया, कव्वा, तितली जैसे नित्य दिखने वाले जीवों पर सुंदर रचनाएँ हैं। वनस्पति जगत को भी कवि भूला नहीं है। बाल–मानस अपने आस–पास आरंभ में जिन 'तुलसी', 'बड़' आदि वनस्पतियों को देखता है– उन पर भी सुंदर कविताएँ इस संग्रह में हैं। मुख्य पर्व–त्योहारों और अन्य सरोकारों पर भी यथोचित कविताएँ मौजूद हैं। सूरज, चाँद, सितारों और शिक्षा के महत्व को भी इन बाल–कविताओं में दर्शाया गया है। निश्चय ही ये बालोपयोगी कविताएँ डोगरी बाल–साहित्य में एक स्तरीय वृद्धि का प्रमाण हैं।

सतरंगी झूले[23]– बाल–साहित्य के इस मिश्रित संग्रह में 36 कविताएँ और कुछ गद्य रचनाएँ संकलित की गई हैं। कवि को बाल–मानस का विशेष ज्ञान है। वह इस आयु–वर्ग के मनोविज्ञान का जानकार भी है। बाल–जगत से संबद्ध वस्तुओं और बाल–वर्ग की सोच से जुड़ी इन कविताओं का फलक उसके आयु सीमा का परिज्ञान भी कराता है। इस पुस्तिका में तीन लोरियाँ भी शामिल की गई हैं।

परियो आओ, परियो आओ,
गिल्लू गी बिंद रहोल कराओ।

ऐसी और भी बढ़िया बाल–कविताएँ इसमें मौजूद हैं। जापानी शैली के हाइकु भी इसी पुस्तिका में प्रकाशित किए गए हैं। यह हाइकु बाल–साहित्य से परे की वस्तु प्रतीत होते हैं।

इस पुस्तिका में आठ गद्य रचनाएँ भी हैं, जिनमें कहानी, लेख तथा नाटक भी शामिल हैं। 'जितमल' की जीवन गाथा का वर्णन तथ्यों पर आधारित होते हुए भी इसे बाल साहित्य में शामिल करना वांछनीय प्रतीत नहीं होता।

डुग्गर का स्वर्ग 'बनी'[24]– मूलतः हिंदी में लिखित इस पुस्तक का डोगरी अनुवाद स्वतंत्रता मेहरा ने किया है। 'बनी' ज़िला कठुआ की पर्वतीय तहसील है जो कि सांस्कृतिक दृष्टि से एक समृद्ध क्षेत्र है। डोगरा संस्कृति और लोकवार्ता पर संकलन और शोध करने के इच्छुक लोगों के लिए यह क्षेत्र एक मूल्यवान स्वर्ग से कम नहीं। यहाँ की गद्या की भाषा के भाषा–वैज्ञानिक स्वरूप पर शोध की विस्तृत संभावनाएँ मौजूद हैं। इस पुस्तक का महत्त्व मात्र इतना है कि इसमें उस क्षेत्र के सांस्कृतिक स्थलों को सूचीबद्ध किया गया है।

डोगरी बुझारतें[25]– डोगरी की लोकवार्ता की समृद्धि जग–जाहिर है। यहाँ के सांस्कृतिक क्षेत्र में जितनी मूल्यवान सामग्री बिखरी पड़ी है– उसके संकलन का कार्य उतना ही कम हुआ है। इसके संकलन, संपादन और प्रकाशन की आवश्यकता पर सदा जोर दिया जाता रहा है। इसी वर्ग में बुझारतों का एक संकलन लगभग चार दशक पूर्व कृष्णलाल वर्मा ने प्रकाशित करवाया था। इसी विषय पर उन्होंने जम्मू विश्वविद्यालय से पीएचडी की थी। बरसों उपरांत गुरुदत्त शर्मा ने बुझारतों का एक संकलन प्रकाशित करवाने का उद्यम किया है। 72 पृष्ठों की पुस्तक में 619 बुझारतें संगृहीत की गई हैं। इनमें से एक बड़ी संख्या ऐसी बुझारतों की है जो कृष्णलाल वर्मा के बुझारत कोश में प्रकाशित हो चुकी हैं।

अच्छा होता यदि संकलनकर्ता मात्र बुझारतों का उत्तर देने के बजाय, प्रत्येक पूर्ण बुझारत का अर्थ सविस्तार समझाकर उत्तर की सूचना देता। इस से नई पीढ़ी को इन मूल्यवान पहेलियों की पृष्ठभूमि को समझने और उन्हें प्रयोग में लाने में आसानी रहती। तो भी बुझारतों को एकत्र करके पुस्तक के रूप में मुद्रित करवाने का यह स्तुत्य प्रयास है।

पत्र–पत्रिकाएँ आदि

शीराज़ा (डोगरी) जम्मू–कश्मीर कल्चरल अकादमी का साहित्यिक मुख–पत्र है। इस पत्रिका की डोगरी भाषा के आंदोलन में केंद्रीय हैसियत रही है। रचनात्मक साहित्य की विभिन्न विधाओं के अलावा इसमें संस्कृति, लोकवार्ता, शोध तथा डोगरा इतिहास एवं शौर्य गाथाओं विषयक मूल्यवान सामग्री प्रकाशित होती रही है। वर्तमान कालखंड में यह पत्रिका डोगरी साहित्य के रचनात्मक बैरोमीटर का काम कर रही है। इसमें शोध से जुड़ी बेशकीमती सामग्री भी प्रकाशित होती है। यह पत्रिका डोगरी भाषा के आधुनिक आंदोलन का प्रतिनिधित्व करती है। इस पत्रिका में युवा पीढ़ी को भी उचित स्थान दिया जा रहा है। 'आनलाईन' या 'इंटरनेट' के चुनौतीपूर्ण दौर में शीराज़ा प्रकाशित–शब्द (Printed Word) की महत्ता को स्थापित करने का गंभीर प्रयास कर रहा है।

वर्ष 2020 से जुलाई 2021 तक शीराज़ा के मात्र तीन अंक प्रकाशित हो पाए हैं। पूर्णांक–261 (अप्रैल–मई 2020) में लेख, कविताएँ, ग़ज़लें, कहानियाँ और सांस्कृतिक आलेख आदि शामिल हैं। पूर्णांक–262 (जून–जुलाई 2020) तथा पूर्णांक–263 (अगस्त–सितंबर 2020) क्रमशः ग़ज़ल और गीत अंक के तौर पर प्रकाशित किए गए हैं। लगभग तीन दशक पूर्व भी इन दोनों विधाओं पर केंद्रित विशेषांक प्रकाशित किए गए थे। ये दोनों अंक आज तक चर्चा में थे, किंतु अब उपलब्ध न थे। अतएव, अब अकादमी ने इन दोनों विधाओं विषयक सामग्री जुटाकर पुनः दो नए अंक प्रकाशित किए हैं। इन दोनों अंकों में स्तरीय सामग्री का चयन किया गया है।

डोगरी के प्रकाशन क्षेत्र में डोगरी संस्था जम्मू का महत्वपूर्ण स्थान है। संस्था द्वारा प्रकाशित पत्रिका नमीं चेतना के दो अर्ध–वार्षिक अंक अर्थात् पूर्णांक–205 और पूर्णांक–206 इस दौरान प्रकाशित हुए। इन्हें "कहानी विशेषांक और छंदमुक्त कविता विशेषांक" के रूप में प्रकाशित किया गया। इसके अतिरिक्त डोगरी संस्था ने परीक्षाओं के लिए संस्तुत कुछ पुस्तकें पुनर्मुद्रित कराके इन्हें छात्रों को उपलब्ध कराया है। ये पुस्तकें हैं–

1. कथा–कुंज (कहानी संकलन)

2. सरपंच (दीनूभाई पंत द्वारा लिखित नाटक)

3. नानू पीर दी जंग दा आखरी किला (ओम गोस्वामी द्वारा लिखित उपन्यास)

सुनने में आया है कि इस वर्ष के दौरान डोगरी अनुसंधान (संपादक–सुनीता भड़वाल) और सोच साधना (संपादक–चमनलाल) के अंक अभी प्रेस में हैं। किंतु प्रयत्न के बावजूद ये हस्तगत नहीं हो पाए।

समाहार– वर्ष 2020 के दौरान डोगरी की साहित्यिक गतिविधियों विशेषतया पुस्तक प्रकाशन के विषय में सार रूप में कहा जा सकता है कि–

(i) इस संकट–काल के वर्ष में भी डोगरी साहित्य येन–केन–प्रकारेण श्वास लेता रहा है। यह बड़ी बात है कि इस तूफान में भी यह दीपक बुझने से बच पाया। इससे सिद्ध होता है कि डोगरी में रचनात्मकता ने जड़ें पकड़ ली हैं। डोगरी लेखकों में साहित्य के प्रति यह जज़्बा उनके भाषा–प्रेम को दर्शाता है।

(ii) गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष उन विधाओं में भी पुस्तकें आई हैं जिनमें पिछले साल अनुपस्थिति दर्ज की गई थी इस विकट समय में दो उपन्यासों का सामने आ पाना एक उपलब्धि से कम नहीं है।

(iii) कविता संग्रह प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी अधिक मात्रा में प्रकाशित हुए हैं। किंतु, इस दौरान नाटक–विधा भी आश्वस्त करती है। इस वर्ष नाटकों की पुस्तकें भी पर्याप्त संख्या में सामने आई हैं।

(iv) डोगरी में प्रकाशित होने वाली साहित्यिक पत्र–पत्रिकाएँ छप तो रही हैं, किंतु वे अपनी निश्चित अवधि से दूर हैं। वर्ष 2020 के अंक वर्ष 2021 ई. में सामने आ रहे हैं। इससे सिद्ध होता है कि कोविड–संकट का सीधा प्रभाव डोगरी पत्रकारिता ने झेला है।

(v) ऐतिहासिक दृष्टि से जब कभी डोगरी के वर्तमान की परिचर्चा होगी तो निश्चय ही यह कहा जाएगा कि इक्कीसवीं शती का दूसरा दशक संख्या–वृद्धि का कालखंड था। पुस्तकें बढ़िया गेट–अप में प्रकाशित की जाने लगी थीं, किंतु साहित्यिक स्तर में आई गिरावट की अनदेखी कर दी गई थी।

(vi) इस वर्ष सामने आने वाली विरल रचनाएँ ही पठनीयता और स्तर की शर्त पर पूरा उतरती हैं। अधिक पुस्तकें छापने की होड़ से अनुमान होता है शहीदों में शुमार होने की भावना प्रमुख है ताकि अपने जीवन–परिचय (बायोडाटा) को भारी बनाया जा सके।

(vii) स्तरहीनता कभी भी श्रेष्ठ साहित्यिक मूल्यों का विकल्प नहीं हो सकती। लेखक यदि अधिक छपवाने का व्यामोह त्याग कर मात्र अपनी उत्तम रचनाएँ प्रकाश में लाने का निश्चय करें तो इस विचित्र स्थिति से बचा जा सकता है। अपनी रचनाओं का स्व–संपादन बहुत जरूरी है।

(viii) एक ऐसा भी लेखक–वर्ग देखा गया है जिसने पब्लिसिटी के लोभ में स्तरीयता को बिन आई मौत मर जाने दिया है। अतएव, इस वर्ष भी अधिसंख्य रचनाएँ स्तरहीनता के विषाणु से ग्रस्त रही हैं। डोगरी साहित्यकारों के समक्ष इन विषम स्थितियों से उभरने की कठिन चुनौती खड़ी है। उन्हें यह भगीरथ प्रयत्न करना ही होगा।

जिन समर्पित लेखकों ने इस संकटकाल को सुअवसर में बदलने का बीड़ा उठाया है, उनकी जिम्मेवारी है कि स्तर से समझौता न करें और इस सुअवसर को स्वर्णिम अवसर में बदलने के लिए प्रतिबद्ध हों। संख्या की तुलना में गुणवत्ता निश्चय ही एक श्रेष्ठ साहित्यिक लक्ष्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पार; वेदराही; दर्शना प्रकाशन, बी–303, जैस्मीन, सुदर्शन स्काय गार्डन, जी.बी. रोड़, ठाणे पश्चिम, मुंबई–400615 (महाराष्ट्र)

2. तुंदे चेत्ते च; तारा स्मैलपुरी; हाइब्रो पब्लिकेशंज़, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

3. ज्ञान सिंह; उषा प्रकाशन, 295–जानीपुर हाऊसिंग कॉलोनी, जम्मू–180007

4. दर्द पटारी; नसीब सिंह मन्हास; हाइब्रो पब्लिकेशंज़, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

5. 108 डोगरी हाइकु; यशपाल निर्मल; इंडिया गेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा –201301

6. रोह्–बसोस; ध्यान सिंह; लंगेह् प्रकाशन, बटैह्ड़ा, जम्मू।

7. दऊं सदियां इक सीर; विजय वर्मा, बुकमैन, जयपुर (राजस्थान)

8. रंगकार; जगदीप दूबे;

9. कोई ते ऐ; अशोक दत्ताय, हाइब्रो पब्लिकेशंज़, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

10. जीवन दे किश पल; बी.आर. गुप्ता; संतोष पब्लिकेशंज, सेक्टर–6, गली नं.–9, नानक नगर, जम्मू।

11. मसां दा मसां; ध्यान सिंह; लंगेह् प्रकाशन, बटैह्ड़ा, जम्मू–181206

12. पक्खपात मोहन सिंह, डुग्गर मंच, जम्मू।

13. मक्कड़ीज़ाला, मोहन सिंह, डुग्गर मंच, जम्मू।

14. इक आत्मप्रद नाटक दी रिहासल; ध्यान सिंह, लंगेह् प्रकाशन, बटैह्ड़ा, जम्मू।

15. धोबन दी रूह, धोब्बी दी छूह्; ध्यान सिंह, लंगेह् प्रकाशन, बटैह्ड़ा, जम्मू।

16. श्रीमद्भगवद्गीता; सतीश कुमार; हाइब्रो पब्लिकेशंज़, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

17. मूल हिंदी– डॉ. संजीव कुमार; अनुवाद–आशु शर्मा; प्रकाशक–इंडिया गेट बुक्स, सी–122, सेक्टर–19, नोएडा–201301, गौतम बुद्ध नगर (एन.सी.आर.) दिल्ली।

18. मूल कवि–उद्भ्रांत; डोगरी अनुवाद–यशपाल निर्मल; प्रकाशक–इंडिया नेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा–201301.

19. डोगरा स्वाभिमान दी खोज–पड़ताल दी अभिव्यक्ति; ध्यान सिंह, लंगेह् प्रकाशन, बटैह्ड़ा, जम्मू।

20. फेरा–टोरा; इंदरजीत केसर; जै माता प्रकाशन, छन्नी हिम्मत, जम्मू।

21. संवाद शास्त्र; ध्यान सिंह, लंगेह् प्रकाशन, बटैह्ड़ा, जम्मू।

22. तांह्ग डुआरां; सीताराम सपोलिया; दीपक पब्लिकेशन हाउस, विजयपुर (साम्बा) ज. क.

23. सतरंगी झूटे–झटारे, ध्यान सिंह, लंगेह् प्रकाशन, बटैह्ड़ा, जम्मू।

24. डुग्गर दा स्वर्ग–बनी, मूल–ओंकार पाधा कंचन; अनुवाद–स्वतंत्रता मेहरा; हाइब्रो पब्लिकेशंज़, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

25. डोगरी बुझारतां; गुरुदत्त शर्मा; हाइब्रो पब्लिकेशंज़, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

– 181, पहाड़िया स्ट्रीट, जम्मू तवी, जम्मू–180001

❑❑❑

8

तमिल साहित्य

डॉ. बी. संतोषी कुमारी

तमिलों की भाषा, तमिल भाषा तथा इस भाषा में लिखे साहित्य को तमिल साहित्य कहा जाता है। इस भाषा को बोलनेवाले लोग तमिलभाषी कहे जाते हैं। यह द्रविड भाषा परिवार की सर्वाधिक प्राचीन भाषा है और इसका साहित्य भी इस परिवार का सबसे पुराना साहित्य है। यह तमिलनाडु में रहनेवाले लोगों की भाषा है ऐसा कहना उचित नहीं है क्योंकि आज का तमिल प्रदेश बहुत छोटा है, जबकि प्राचीन तमिल प्रदेश की सीमा काफी विस्तृत थी। 'तोल्काप्पियम' नामक तमिल ग्रंथ में प्राचीन सीमा उत्तर में तिरुपति तथा दक्षिण में कुमरी नदी मानी गई है। उस समय कुमरी नदी तथा पहरुली नदी के बीच तमिल के 49 प्रदेश विद्यमान थे। सागर प्रलयों में तमिल का सारा विशाल भूभाग विलीन हो गया। इसका विवरण 'शिलप्पधिकारम' नामक प्राचीन महाकाव्य की टीका में मिलता है। तमिल का तुलनात्मक व्याकरण लिखने वाले काल्डवेल ने अपने ग्रंथ में तमिल प्रदेश की सीमा समस्त कर्नाटक, पूर्व और पश्चिम घाट के नीचे पालघाट से लेकर कुमरी अंतरीप तथा उत्तर में बंगोपसागर के उपकूल तक 60,009 वर्ग मील में फैली बताई। अनेक विद्वानों का मत है कि ईसा से अनेक शताब्दियों पूर्व तमिलभाषी प्रदेश पूर्व में जावा द्वीप से लेकर दक्षिण में अफ्रीका तक फैला हुआ था। आज यह तमिलनाडु तथा श्रीलंका के कुछ भागों की जनभाषा है।

इमैयम : 1964 को तमिलनाडु के कड्डलोर जिले में जन्मे इमैयम (वी. अन्नामलै उनका कलम नाम था) का पहला उपन्यास 'कोवेरु कजुथिगल' समीक्षकों के द्वारा अतिप्रशंसनीय रहा। इस उपन्यास का मलयालम और अंग्रेजी भाषाओं में भी अनुवाद किया गया था।

तमिल के प्रसिद्ध लेखक इमैयम के उपन्यास 'सेल्लाद पनम' को वर्ष 2020 के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुना गया है। यह उपन्यास विमुद्रीकरण ने उन क्षणों का विशद विवरण देता है जब लोगों के जीवन में पैसे का कोई मूल्य नहीं रहा। प्रसिद्ध लेखक जयमोहन ने उपन्यास पर अपने विचार देते हुए कहा कि 'पहली बार मैं एक उपन्यास पढ़ते हुए टूट गया।" उन्होंने समकालीन साहित्य की शानदार कृति के रूप में इनके काम की सराहना की। आपका दूसरा उपन्यास 'आरमुगम' को फ्रेंच भाषा में अनूदित किया गया।

शक्ति द्वारा रचित 'मारा नाई' काव्य संकलन को साहित्य अकादमी 2020 का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

नीला सरवनराज : आपने तमिल साहित्य के महानतम उपन्यास को दुनिया की दूसरी सबसे

व्यापक रूप में बोली जाने वाली अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करने के लिए कड़ी मेहनत की है।

नीला तमिलनाडु की समृद्ध सांस्कृतिक और पारंपरिक विरासत को संरक्षित करने में इच्छुक हैं वो हमेशा महान चोल सम्राट राजा चोल प्रथम की प्रशंसक रही हैं, जो मध्ययुगीन भारत के सबसे सफल सम्राटों में से एक हैं। 947 ई. में अरूलमोझी वर्मन के रूप में जन्मे, उन्होंने ऐसे बीज बोए जिसने परकेसरी राजाधिराज चोल प्रथम के तहत चोल साम्राज्य के विस्तार की नींव रखी। प्रशासनिक प्रतिभा और मंदिर निर्माण की भव्यता से लेकर सैन्य वीरता और धार्मिक आचरण तक, चोल सम्राट के पास यह सब था। उनके प्रारंभिक जीवन का सबसे प्रशंसित प्रकाशन, 'पोन्नियिन सेलवन' कवि कल्कि द्वारा तमिल भाषा में लिखा गया था। इस प्रकार का काम, तमिल साहित्य के इतिहास में अब तक लिखा गया सबसे बड़ा उपन्यास है।

नीला का मानना है कि मेरे जैसे मोनोग्लॉट के लिए, तमिल भाषा में दक्षता की कमी के कारण ऐसी उत्कृष्ट कृति तक पहुँचना मुश्किल था। चेन्नई की बारहवीं कक्षा की छात्रा नीला सरवनराजा के काम का अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिए उन्होंने अपने पिता का सहारा लिया। उसके इरादे शुरुआत से ही स्पष्ट थे– अनुवाद और रूपांतरण के साथ उसके पिता की सहायता करना और उन्हें कॉमिक्स का आकार देना जो पाठकों को प्राचीन तमिलनाडु के इतिहास, संस्कृति और परंपरा के महत्व और महिमा को समझने और उसकी सराहना करने के लिए प्रेरित करता है। उनका इंतजार केवल बधाई देने वाली टिप्पणियों और इशारों से नहीं था बल्कि मुख्यमंत्री कार्यालय से जुड़े तमिल विकास विभाग से 2020 का सर्वश्रेष्ठ अनुवाद के रूप में राज्य पुरस्कार प्राप्त करना था।

वह कहती हैं "मेरे पिताजी पोन्नियिन सेलवन पर आधारित कॉमिक्स बनाना चाहते थे, यह कुछ ऐसा था जो वह हमेशा से करना चाहते थे। इसलिए जब मैं आठवीं कक्षा में थी तब उन्होंने मेरे लिए एक प्रति प्राप्त की और मैं तब से ही इससे मोहित और जुड़ी हुई थी। उनका इरादा कॉमिक्स को दो भाषाओं अंग्रेजी और तमिल में प्रकाशित करना था। हमारी कार्य प्रक्रिया बहुत पद्धतिगत नहीं है। मेरे पिता तमिल संस्करण को संक्षेप में लिख देते हैं और मुझे एक मोटे मसौदे के रूप में देते हैं और मैं बाद में इसका अंग्रेजी में अनुवाद करती हूँ।"

दूसरी ओर उनकी चयन प्रक्रिया थोड़ी अधिक विशिष्ट है। जबकि उनके वर्तमान पोर्टफोलियो में पूरी तरह से यह पुरस्कार विजेता काम है, अधिक अनुवाद आधारित परियोजनाओं को अंतिम रूप दिया जा रहा है। हम चाहते हैं कि हमारा काम वर्तमान पीढ़ी को बीते युग के गुणों से प्रेरित करे, क्योंकि उनमें से अधिकांश समय के साथ खो गए हैं। हम जिस दुनिया में रहते हैं, उसमें कुछ खास मूल्यों का अभाव है।

पुस्तक के बारे में पूछे जाने पर वह दावा करती हैं कि प्रस्तुत सामग्री राजराजा चोल प्रथम के बचपन से संबंधित है, लेकिन उस तरह से नहीं जिस तरह से हम इसकी कल्पना करते हैं। कथा एक जासूस की नजर से आती है। पुस्तक में चोल राजा की जासूसी उसके बड़े भाई करिकालन द्वारा भेजे गए एक जासूस की गहरी निगाहों से होती है, जो कि राजकुमार था। कथानक चोल सिंहासन, उसके शासकों, पांडिया प्रतिद्वंद्वी राजाओं और कुलीनों की हत्या के इर्द गिर्द घूमता है। "यह पढ़ने के लिए अविश्सनीय रूप से आकर्षक है। मूल तमिल पाठ का अनुवाद करते समय, सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्सा लगातार सटीक अंग्रेजी शब्दों को खोजना था। वह उस दिन को याद करती हैं जब उन्हें राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

ए. वेन्निला : आपको अपने उपन्यास 'गंगापुरम' के लिए कस्तूरी श्रीनिवासन ट्रस्ट की ओर से वर्ष 2020 के लिए रंगम्माल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अरूंधति सुब्रहमण्यं : भारत की सबसे प्रसिद्ध समकालीन महिला कवयित्रियों में सबसे अधिक प्राकृतिक कौशल और लालित्य से परिपूर्ण हैं जिसको वह जीवनयुक्त कविता में लाती हैं। एक कवि के साथ–साथ एक सांस्कृतिक क्यूरेटर और आलोचक

भी हैं आध्यात्मिकता की भी खोज करती हैं और अपने छोर में अपने आसपास के विरोधाभासों और जटिलताओं को याद करती हैं।

चंद्रा तंगराज : 'मिलागु' (काली मिर्च) कविता प्रेमियों के लिए एक दावत है। आप अपनी कविताओं के माध्यम से तेनी प्रांत के परिदृश्य में फैली काली मिर्च की खेती की सुंदरता को दर्शाती हैं। वह पहाड़ी भूमि में एक किशोर लड़की के रूप में अपनी भावनाओं को पूरी किताब में कई रूपकों के साथ व्यक्त करती हैं।

कालानिलाई मातरथिन पुथियाथोर कुजानथाई कारोना (कोरोना वायरस पर्यावरण परिवर्तन का एक नया शिशु)

महामारी और विभिन्न क्षेत्रों पर कोविड–19 के प्रभाव पर कई निबंध और पुस्तकें जारी की गई हैं। हालाँकि पर्यावरण संगठन पूवुलागिन नानबर्गल द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में कोरोना वायरस के प्रभाव और वन्यजीवों के संभावित संचरण पर केंद्रित कई निबंध शामिल हैं। यह पुस्तक विभिन्न जीवित प्रजातियों जैसे जानवरों से मनुष्यों और इसके विपरीत के बीच प्रसारित विभिन्न जेनेटिक रोगों से संबंधित है। निबंधों में यह कहा गया है कि वनों की कटाई जेनेटिक रोगों के प्रसार का एक महत्वपूर्ण कारण है।

विटुपट्टवर्गल : इवरगलम कुजांथाइगल थान (द लेफ्ट आउट : वे आर चिल्ड्रन टू) : एनियन द्वारा रचित यह पुस्तक बच्चों के लिए नहीं है। बल्कि वयस्कों के लिए उन बच्चों के बारे में अपनी सोच शुरू करने के लिए एक प्रारंभिक बिंदु है जिन्हें ध्यान और स्नेह से वंचित रखा जाता है। यह एनियन द्वारा लिखित है, जो अपने संगठन पल्लंगकुझी के माध्यम से बच्चों के कल्याण के लिए काम करते हैं। पुस्तक तमिलनाडु भर के बच्चों के साथ लेखक की बातचीत के आधार पर बच्चों की मनोवैज्ञानिक जरूरतों और अपेक्षाओं के बारे में बात करती है। यह पुस्तक अनुसूचित जाति समुदाय इरूलास के एक उपनिवेश से शुरू होती है और रंग, लिंग, जाति और वर्ग से शुरू होने वाले बच्चों की दुनिया में लागू होने वाले विभिन्न प्रकार के विभाजनों को छूती है। हालाँकि पुस्तक तीसरी दुनिया के देशों के बच्चों के सामने आने वाले मुद्दों और उनके साथ सही व्यवहार करने में कमियों की व्याख्या करने के लिए गहराई से काम करती है। किताब का प्रकाशन नादत्रोर पब्लिकेशन ने किया है।

पू. को. सरवनन : आपके द्वारा रचित 'विसाविरकागा कथिरुकिरेन' यह पुस्तक डॉ. अंबेडकर की 'वेटिंग फॉर ए वीज़ा' का तमिल अनुवाद है। यह डॉ. अंबेडकर और अन्य लोगों द्वारा सामना की गई अस्पृश्यता की कुछ घटनाओं का वर्णन करता है। दलित राजनीति और समुदाय द्वारा झेले जा रहे उत्पीड़न के बारे में पढ़ने के इच्छुक लोगों के लिए यह एक उत्कृष्ट परिचय है। कोलंबिया विश्वविद्यालय में 'वेटिंग फॉर वीज़ा' का उपयोग पाठ्यपुस्तक के रूप में किया जाता है। यह नीलम प्रकाशन द्वारा प्रकाशित है।

– एच–410, द रॉयल कैसल पल्लावरम् टू थिरुमुडिवक्कम् रोड़, थिरुमुडिवक्कम्, चेन्नई–600044

❑❑❑

9

नेपाली साहित्य

ज्ञानबहादुर छेत्री

भारतीय नेपाली समाज की युवा पीढ़ी में अपनी मातृभाषा में बोलने, पढ़ने व साहित्य लिखने वालों की संख्या सीमित ही है। ऐसी परिस्थिति में नेपाली साहित्य का सृजन चुनौतीपूर्ण भले ही न हो किंतु नेपाली सर्जक का उत्साह कम नहीं हुआ है। आलोच्य वर्ष की शुरुआत से ही कोरोना के संत्रास ने सारे विश्व को बुरी तरह से भयभीत कर दिया। इसका प्रभाव साहित्यकारों पर पड़ना स्वाभाविक था। फलस्वरूप 2020 का साहित्य अलग पहचान, अलग संदेश लेकर आया है। विशेष रूप में पर्यावरण विषय पर आम नागरिक और लेखक अधिक सचेत हुए हैं।

कविता

कविता अभिव्यक्ति का सबसे कारगर माध्यम है। मानवीय संवेदनाओं को कविता के माध्यम से सशक्त रूप में संप्रेषित किया जा सकता है। समग्रता में देखें तो आज की नेपाली कविता समकालीन समय की जटिलताओं से रूबरू होकर यथार्थता को चित्रित करने में सफल हुई है। इस वर्ष प्रकाशित कुछ कविता संग्रहों से यह पुष्टि होती है कि अमानवीयकरण के इस विकट समय में कविता अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को सार्थकता से निभा रही है।

रुद्र बराल का कविता संग्रह 'तेस्रो आँखो' (तीसरा आँख) आलोच्य वर्ष, कोरोना काल का एक सार्थक काव्य संकलन है। इसमें कवि बराल की सत्ताईस कविताएँ समावेशित हैं। बिंब और प्रतीक के प्रयोग से बराल की कविताएँ पाठक का न केवल मनोरंजन कराती हैं, इसके साथ सोचने को भी मजबूर कर देती हैं।

हिजोआज
यो बुख्याचादेखि
मेरा घरका अन्य सदस्यहरु–
सेती गाई, घोर्ले खसी, तारे गोरु
कोही तर्सिदैनन, हर्किदैनन
जसरी हिजोआज डराउँदैनन धर्मगुरुहरु
पापको डरले

(बुख्याचा)

लतिका जोशी का 'संगरोध' (क्वारेन्टाइन) भी काफी चर्चित रहा। कवि ने इस समय फैली महामारी कोरोना वायरस को कविता के माध्यम से बताने की कोशिश की कि हमें क्या–क्या करना चाहिए, और कैसे इस बीमारी से बचना चाहिए। कवि ने कविता के द्वारा लोगों को बताया कि कैसे हम स्वच्छ रहें। कवि ने उनकी कविताओं के माध्यम से यह बताया कि इस बीमारी से डरने की जरूरत नहीं पर स्वच्छता और सफाई रखना जरूरी है। असम के बुद्धि सुवेदी समसामयिक भारतीय साहित्य में स्थापित युवा कवि हैं। 'एउटा समयको किनारमा' सुवेदी की 'रेखा' कविता का संग्रह है।

'रेखा' कविता की शुरुआत देश सुब्बा ने की, जो सभी भारतीय कवियों में जनप्रिय हो रहा है। सृष्टि का मूलाधार रेखा ही है। अतः इसी मूलाधार को मध्येनजर रखते हुए रेखा कविता आई है। 'शब्दहरु मेरा घाम हुन' नवीन कवि अनुपमा विनोद कट्टेल का पहला प्रकाशन (कविता संग्रह) पाठकों में समादृत हुआ। समालोचकों ने भी अनुपमा की कविताओं को काफी सराहा। संग्रह के ब्रह्मपुत्र, काकाकुल, कारागार, घड़ी, आगो, शब्दहरु मेरा घाम हुन जैसी कविताएँ सचमुच में स्तरीय हैं। पहाड़ी झरने की तरह मनुष्य के जीवन की गाड़ी भी अनेक समस्याओं को झेलते हुए आगे चलती है। 'बालासनको माया' कविता संग्रह की कविताएँ कवि सुकराज दियाली की जन्मभूमि के प्रति अकृत्रिम प्रेम भावना से संपृक्त हैं। 'कालिम्पोङ' के कवि हरीश मौक्तान अल्लेरे की नवीनतम कृति 'डढेलो लागेको बस्ती' को खंडकाव्य के स्वरूप में देखा जा सकता है। चार खंडो में सुसज्जित कविता में कवि अपने पुरखों की वीरता का स्मरण करते हुए देश से पूछता है उनको वासभूमि क्यों नहीं मिलती।

ए मेरो देश,
तिमी मलाई मेरो वासभूमि कहिले दिन्छौ।
तिमी मलाई मेरो वीरताको सनद कहिले दिन्छौ।। (पृ.90)

कविता गोरखालैंड की ओर संकेत करती है। असमिया और अंग्रेजी भाषा में भी बराबर कलम चलानेवाले युवा कवि अञ्जन बाँसकोटा 'आत्मानुसंधान' कविता संग्रह लेकर आए हैं। उनकी कविताओं में कवि की युगीन चेतना मुखरित हुई है। आलोच्य वर्ष में असम नेपाली साहित्य सभा की प्रकाशन सूची में एक बहुत ही महत्वपूर्ण काव्य संकलन आया है। 'समकालीन असमेली नेपाली कविता' शीर्षक के इस सामूहिक संकलन के संपादक हैं कृष्णनील कार्की। इसमें असम के कुल 135 नवीन–प्रवीण कवियों की समकालीन कविताएँ संकलित हैं। संपादकीय लेख में पूर्वोत्तर भारतीय नेपाली कविता का विकासक्रम चार चरणों में और कवि परिचय दिया गया है। यह एक पठनीय और संग्रहणीय ग्रंथ बन सकता है। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से प्रकाशित 'राष्ट्रीय भावना का भारतीय नेपाली कविता' में कुल 170 कवियों की राष्ट्रप्रेम की कविताएँ संकलित हैं। इस ऐतिहासिक संकलन के संपादक हैं सुकराज दियाली। 'लकडाउन बसिबियाँलो' सामूहिक साहित्य पत्रिका होजाड़ (असम) से प्रकाशित हुई जिसमें तीस लेखकों की रचनाएँ संकलित है। शीर्षक से स्पष्ट होता है कि इस संकलन के सारे लेख कोविड–19 लॉकडाउन अवधि में रचित हैं। इस संकलन के संपादक हैं बिमल प्रधान।

आलोच्य वर्ष में प्रकाशित कविता संग्रहों में विशाल केसी का 'चट्याङ' (कविता संग्रह), रेवतीमोहन तिमसिना का 'वर्ण पिरामिड' (पिरामिड आकृति की कविता), मिलन बोहोरा का 'तानाबाना' (रम्बस कविता), विलोक शर्मा का 'समयावकाश' (कविता संग्रह), नीता तामाङ का 'जीवनको अञ्जानमा यात्रामा' (कविता संग्रह), बिमला जोशी का 'ऐनाभित्र जिन्दागीको रङ्ग' (कविता संग्रह), निरु शर्मा पराजुली की 'तिर्खाएको मन केही पल' और 'कोसेली' (बाल कविता संग्रह), शर्मिला प्रधान 'टाकुराको लुङदर' (कविता संग्रह), श्रवण कुमार प्रधान का 'स्वीकृतिका याम' (गजल संग्रह), 'निमा तामाङ का 'शबेदछित्र' (रुबाइ संग्रह), प्रेम विश्वकर्मा का 'मादल' (गीत संग्रह) विशेष उल्लेखनीय काव्यग्रंथ हैं। पुण्य कोइराला का 'सिधा बाटो' (कविता संग्रह), रवि जौडेल का 'मनको हाउलो' (मुक्तक संकलन) भी चर्चित है।

निबंध–प्रबंध

यह साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विधा है क्योंकि विचारों का प्रत्यक्ष आदान–प्रदान मुख्यतः निबंध–प्रबंध के माध्यम से ही होता है। डॉ. ढुण्डिराज उपाध्याय नवीन लेखक हैं परंतु उनकी साहित्य कृतियों की संख्या आठ तक जा पहुँची है। उनका 'पुरातन प्रभा' आलोच्य वर्ष का स्तरीय ज्ञानगर्भ ग्रंथ है। इस ग्रंथ में वेद, पुराण, उपनिषदादि हमारे प्राचीन ग्रंथों का निचोड़ एवं इसके साथ कुछ जानेमाने समकालीन लेखकों का संक्षिप्त परिचय भी है। इसी तरह तैल नगरी डिगबोइ के वरिष्ठ लेखक युद्धवीर राणा का संस्कृति विषयक ग्रंथ की उपादेयता भी कम नहीं। 'नेपाली लोकसाहित्यर लोकसंस्कृतिको परिचय' शीर्षक से प्रस्तुत ग्रंथ में

लेखक युद्धवीर राणा ने लोकसंस्कृति का परिचय, नेपाली लोक साहित्य का वर्गीकरण, लोक नाटक, मुहावरों और लोकोक्तियों आदि विषयों की सोदाहरण चर्चा की है।

भारतीय नेपाली भाषा एवं साहित्य के विकास में देश की संस्था संगठनों के योगदान के बारे में ऐतिहासिक लेखों का 'वार्ता संकलन' असम नेपाली साहित्य सभा, नेपाली साहित्य सभा, नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, नेपाली साहित्य सम्मेलन, गोर्खा जन पुस्तकालय, नेपाली साहित्य परिषद, सिक्किम की देन पर 7 मई, 2016 को प्रायोजित संगोष्ठी में कार्यपत्र प्रस्तुत किए गए। गोर्खा जन पुस्तकालय, खर्साङ द्वारा प्रकाशित इस वार्ता संकलन के संपादक हैं डॉ. जसयोञ्जन प्यासी। इसी तरह 'चन्दिका' शतवार्षिकी विशेषांक का प्रकाशन भी गोर्खा जन पुस्तकालय, खर्साङ ने ही किया है। भारत की एक प्राचीनतम पत्रिका का प्रकाशन सब से पुरानी संस्था से होना इसकी गरिमा को दर्शाता है। चंद्रिका शतवार्षिकी विशेषांक की प्रधान संपादक हैं डॉ. कविता लामा। 'स्वच्छ डोनाउको किनारतिर' मुक्ति उपाध्याय की आस्ट्रिया यात्रा का वर्णन है। इस यात्रा ग्रंथ में आस्ट्रिया के अलावा रोम, वेटिकन सिटी, भ्रमण के अलावा उन जगहों के इतिहास पर भी प्रकाश डाला है। कीट्स–शैली की समाधि, काफ्का की मूर्ति जैसे संदर्भों का रोचक वर्णन पाठकों को वहाँ की सैर कराता है। चंद्र दुलाल का 'कार्यालय कार्यविधि' और 'हाम्रो चिन्नारी' (निबंध संग्रह) दोनों उपयोगी संग्रह हैं। ज्ञानबहादुर छेत्री द्वारा लिखित 'ग्लिम्पसेज अफ नेपाली लिट्रेचर एंड कल्चर' (अंग्रेजी निबंध) का उल्लेख करना उचित होगा क्योंकि इस ग्रंथ का विषय नेपाली भाषा–साहित्य–संस्कृति ही है।

आख्यान

कोविड–19 के चलते वर्ष 2020 में नागरिकों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा, स्कूल–कॉलेज बंद हुए, सामाजिक दूरी लोगों की मजबूरी बनी। लेखकों ने इसका भरपूर फायदा उठाया। कोरोना विषय पर भी काफी उच्चस्तरीय साहित्य रचित हुआ। नेपाली भाषा में भी इसका योगात्मक प्रभाव पड़ा। इंदु प्रभा देवी की नवीनतम कृति 'अनुहारमा आकाश' (उपन्यास) कोरोना काल का प्रोडक्ट है।

वर्ष 2020 में प्रकाशित एक उपन्यास है 'चेहरे के अंदर का आसमान'। इंदु प्रभा देवी द्वारा रचित यह उपन्यास असम की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। शतरंज खेल के प्रिय डॉ. राजीव भंडारी के चरित्र की लंबी जीवन परिक्रमा के बीच से उच्च शिक्षा के विविध मामलों के साथ ही असम की विभिन्न जनगोष्ठियों के बीच के भाईचारे की बातें इस उपन्यास में सुंदर रूप में प्रतिष्ठित की गई हैं। वर्तमान युवा मानसिकता के प्रतिफलन स्वरूप इस उपन्यास में प्रेम का भी वर्णित रूप प्रकाश में आया है। दिल्ली विश्वविद्यालय के अधीनस्थ महाविद्यालय में अध्यापक की नौकरी करनेवाले लक्षीमपुर के गोर्खा युवक डॉ. राजीव के अपने दोस्तों के साथ रहनेवाले रिश्ते या प्रेम का वर्णन या शतरंज खेल के वर्णन में ही नहीं, लेखिका ने उपन्यास में असम और असम के गोर्खा समाज जीवन के चित्रण पर भी ध्यान दिया है। गोर्खा लोगों की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं का भी इस उपन्यास में प्रतिफलन हुआ है।

'चेहरे के अंदर का आसमान' शीर्षक यह उपन्यास उत्कंठा से परिपूर्ण है। हँसी–रूदन, सुख–दुख, प्राप्ति– अप्राप्ति के समाहार से भी यह भरपूर है। पुरुष पात्र राजीव, प्रतीक, धरणीधर सर, पराग, देवजित, प्राणजित, भोला आदि के साथ ही नारी पात्र में अर्पिता, प्रीति, नम्रता, नैना आदि के चरित्र भी सुंदर रूप से प्रस्तुत किए गए हैं। राजीव की माँ और पिता के चरित्र भी इसी तरह से उज्ज्वल हो उठे हैं। उपन्यास में ब्रह्मपुत्र को भी एक जीवंत चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के एक महत्वपूर्ण स्थान पर इस तरह लिखा हुआ है– "मैं चला। पर उसके घर पहुँचने से पहले ही ब्रह्मपुत्र ने मेरे सवाल का जवाब दे रखा था! कठोर जवाब! प्रेम तथा विश्वास के न भूले हुए दिनों के पाठों को निःसंग हृदय में समेटकर मैं दूसरे दिन दिल्ली लौट आया था!"

यह उपन्यास कई भागों में विभाजित है। प्रस्तावना और निष्कर्ष समेत इसमें कुल तीन खंड हैं। खंड–3 में दो अंश हैं। हर खंड में उप शीर्षक

भी हैं। जैसे, खंड–1 (परिचित– अपरिचित चेहरे), खंड–2 (प्यास का अन्य भाग, अन्य राह), खंड–3–क–(स्वप्न के बाद का वास्तव), ख– (वर्षों बाद किसी दिन राह को चीरनेवाला राह की ओर)

यह उपन्यास प्रथम पुरुष में लिखा हुआ है। संलाप भी काफी है। बातचीत के माध्यम से कई हिस्सों को आगे बढ़ाया गया है। भाषा काव्यिक और सरल है। स्पष्ट और सुंदर है। अंतर्द्वंद्व व बहिर्द्वंद्व के कारण तथा काव्यिक भाषा के कारण भी यह उपन्यास पाठकों के लिए आकर्षक हो उठा है। असम में रचित आधुनिक नेपाली उपन्यास के तौर पर इसका महत्व रहेगा। विषय, भाषा और रचना शैली तीनों दिशाओं से इसमें काफी नयापन है।

उपन्यास की प्रस्तावना में मुख्य पात्र राजीव के जीवन के उतार–चढ़ाव के बारे में थोड़ा बहुत आभास कौशलपूर्ण रूप से दिया गया है– "अपने यात्राकाल में उसके पाँव के तलवे ने कभी उसे आह्लाद की समुद्री तरंग के साथ खेलने को कभी पीड़ा के कीचड़ में फँसने को मजबूर किया है और कभी ले गया है किसी निर्विकार शिखर पर!

प्रशंसा अथवा निंदा से दूर
प्रेम अथवा घृणा से दूर
आकर्षण अथवा विकर्षण से दूर
सुगंध अथवा दुर्गंध से दूर किसी मोहहीन शिखर पर! .....

इसी तरह विष्णु शर्मा का 'दियो कलश' भी असम की पृष्ठभूमि पर रचित सामाजिक सांस्कृतिक उपन्यास है। मणिकुमार प्रधान का उपन्यास 'लिलिथ', लेखनाथ छेत्री का उपन्यास 'फुलाङ्गे' पाठकों में काफी चर्चित हुआ। एनपीएस निरौला रटन के दो उपन्यास 'नजीकैका दृष्टान्तहरु' और 'अदृश्य प्रेमाकृति' इस वर्ष के सार्थक और उल्लेखनीय उपन्यास हैं।

'बास टुटेका जिंदगीहरु' में विनोद राई सागर की नौ कहानियाँ संकलित हैं। यह उनका दूसरा कहानी संग्रह हैं। देवेन सापकोटा का 'मनोराग' (कहानी संग्रह) समग्रता में आधुनिक भौतिक सुखों के चलते ह्रासोन्मुखी मानवीय मूल्यबोध को दर्शाता है। सुरेखा ढुङ्गेल की 'चिन्नारी' (कहानी संग्रह) में ग्रामीण परिवेश का सुंदर चित्रण मिलता है।

इस तरह आलोच्य वर्ष में प्रकाशित आख्यान साहित्य अपने विविध रंगो में हमारे सामने आते हैं और कहानी लेखन की विविधता भी दर्शाती है कि लेखक अब कथ्य की संकुचित दुनिया से बाहर निकलकर जीवन के विभिन्न पहलुओं को पहचानने, पकड़ने और आत्मसात् करने लगे हैं। आदमी का जीवन जितना कठिन और जटिल होता जा रहा है, वैयक्तिक–सामाजिक स्तर पर व्यक्ति जुझारू होता जा रहा है। इस परिवर्तन का आभास आख्यान साहित्य में मिलता है।

समालोचना

आलोच्य वर्ष में समालोचना विधा के भी कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हुए जिसमें ज्ञानबहादुर छेत्री का 'उत्तरआधुनिक सिर्जना र समालोचनाका आधारहरु' एक है। प्रस्तुत ग्रंथ में उत्तरआधुनिक साहित्य के पुरोधा व्यक्ति एडवार्ड सइद, मिसेल फुको, ज्याक लकाँ, जाँ फ्राँस्वां ल्योतार, रोलाँ बार्ट, ज्याक डेरिडा, होमी के भाभा, गायत्री चक्रवर्ती स्पीभाक, ज्याँ फ्राँस्वां ल्योतार, रोलाँ बार्ट, ज्याक डेरिडा, होमी के भाभा, गायत्री चक्रवर्ती स्पीभाक, ज्याँ बोद्रियार, रोबिन कोहेन जैसे सिद्धंतकारों का संक्षिप्त परिचय नेपाली साहित्य के कुछ वाद आंदोलन और शेष में मेजिकल रियलिज्म एवं अभिघात सिद्धांत के आधार पर कृतियों का अध्ययन किया है। सिक्किम के ख्याति प्राप्त समालोचक पेम्पा तामाङ का 'विचार अनि विवेचना' इस वर्ष प्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रंथ है। प्रस्तुत ग्रंथ में समालोचक तामाङ ने नारी नारीवाद नारीलेखन, बोर्हेस, कठपुतलीको मन र लीलालेखन, सबल्टर्न : संक्षिप्त परिचयात्मक इतिहास, शोभाकांति थेगिम, दलितवाद र दलित नारीवाद, नारीवाद, लीलालेखन, विनिर्माण अनि समालोचना, 'खिल्ली' : एक विश्लेषण, पवन चामलिङका कविताहरु : एक पठन, गुमानसिं चामलिङको आलोचना : एक पठन, लालबहादुर बस्नेतको हिज मेजेस्टिज पेयिङ गेस्ट––– कुल तेरह आलोचनात्मक लेख समावेश किए हैं। लक्ष्मण अधिकारी का 'सिर्जना विमर्श' में गीता उपाध्याय, शांति थापा, रुद्र बराल, ढुंडिराज

उपाध्याय, देवराज सापकोटा, मित्रदेव शर्मा और रेवतीमोहन तिमसिना की कृतियों पर समीक्षा की गई है। शेष में आस्ट्रेलिया से संचालित एक डायस्पोरा विषय पर वर्चुअल संगोष्ठी में भारत के लेखक ज्ञानबहादुर छेत्री का भारत के नेपालीभाषी भारत के भूमिपुत्र नागरिक हैं, डायस्पोरा नहीं हो सकते–तर्कपूर्ण वक्तव्य की सराहना की गई है। निमा शेर्पा का 'आस्वादन अध्ययन' समालोचना विधा का अवश्य पठनीय ग्रंथ है। नवीन पौडेल चर्चित समालोचक हैं। इस वर्ष प्रकाशित उनका 'कृति संधान' उल्लेखनीय समीक्षा ग्रंथ है।

बाल साहित्य और अनुवाद

बच्चे राष्ट्र की रीढ़ होते हैं। भविष्य की सुंदर रमणीय कल्पना का वितान देश के बच्चों पर ही निर्भर करता है। बाल साहित्य की परिधि है– शिशु, बालक और किशोर। शिशु के लिए रचित लोरी सृष्टि का पहला साहित्य है। आधुनिक संदर्भ में आयु के अनुरूप प्रश्नों और जिज्ञासाओं के साथ भाव–संसार की रचना ही बाल साहित्य है। बाल साहित्य की रचनाधर्मिता जीवंत और चाक्षुष होनी चाहिए कि उसमें सभी आयुवर्ग के लोग शामिल हो जाएँ और उस साहित्य का आनंद उसी प्रकार लें जैसे बच्चे अपनी आयु के मुताबिक बाल जीवन का प्राकृत रस और आनंद लेते हैं। आलोच्य वर्ष 2020 में नेपाली भाषा में बाल साहित्य की बहुत कम पुस्तकें प्रकाशित हुईं। निरु शर्मा पराजुली की 'कोसेली' (बाल कविता संग्रह) और कृष्ण प्रसाद पराजुली का 'नानीहरुलाई मीठो कोसेली'–– केवल दो पुस्तकें ही मिलीं, यह चिंता का विषय है।

अनुवाद साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। इसकी उपादेयता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। लक्ष्मीनंदन बरा का सरस्वती सम्मान से अलंकृत असमिया उपन्यास 'कायकल्प' अनूदित होकर नेपाली भाषा में आया है। इसका अनुवाद किया है असमिया और नेपाली भाषा के जाने माने साहित्यकार छत्रमान सुब्बा ने। समीर ताँती की असमिया कविता को 'म मानिसको निर्मल उत्सव' (अनुवाद कविता संग्रह)––– निरु शर्मा पराजुली ने नेपाली भाषा में अनुवाद किया है। थानेश्वर मालाकार का मूल असमिया (निबंध संग्रह) 'सर्व गुण संपन्न शङ्करदेव' ग्रंथ का विष्णु शर्माकृत अनुवाद महत्वपूर्ण माना जाता है। 'अमरजीत कौंके की चयनित हिंदी कविता' का भविलाल लामिछाने र खंडकराज गिरी ने अनुवाद किया है।

नेपाली पत्र–पत्रिका, स्मृतिग्रंथ, अभिनंदन ग्रंथ इत्यादि

साहित्यिक पत्रिकाओं के स्तर, संख्या और निरंतरता को लेकर प्रायः चिंता व्यक्त की जाती है। पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन कब प्रारंभ होता है और कब बंद हो जाता है इस विषय पर अनिश्चितता बनी रहती है। ऐसी पत्रिकाओं पर जब भी आर्थिक समस्या सुलझ नहीं पाती तो पत्रिका बंद हो जाती है। नेपाली भाषा में ऐसी पत्रिका नगण्य है जो विज्ञापन जुटा पाती है। कुछ पत्रिकाएँ, ग्रंथादि संस्थाओं द्वारा प्रकाशित की जा रही हैं। ऐसी पत्रिकाएँ नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। असम नेपाली साहित्य सभा, गोर्खा जन पुस्तकालय (खर्साङ), नेपाली साहित्य सम्मेलन (कालिम्पोङ), नेपाली साहित्य परिषद (सिक्किम) आदि संस्थाओं से नियमित रूप में पत्रिकाएँ और अन्य ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं। अस्सी वर्षीय तारापति उपाध्याय असम के एक पुरोधा साहित्यकार हैं। उनके सम्मान में 'भाषा सेनानी तारापति उपाध्याय व्यक्तित्व र कृतित्व' शीर्षक का बृहत अभिनंदन ग्रंथ, (सात अध्यायों में) प्रकाशित हुआ है। इस ग्रंथ के संपादक हैं लक्ष्मण अधिकारी।

दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रो में निवास, गरीबी, अशिक्षा, मातृभाषा माध्यम का अभाव आदि जैसे कारणों से नेपाली पत्र–पत्रिकाओं के प्रचार–प्रसार में अड़चन खड़ी होती है। इसके बावजूद नेपाली भाषा में दैनिक–साप्ताहिक अखबार और पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। नेपाली भाषा में प्रकाशित कुछ पत्र–पत्रिकाएँ निम्न प्रकार हैं–

चन्दिका (शतवार्षिकी विशेषांक, गोर्खा जन पुस्तकालय) –प्रधान संपादक डॉ. कविता लामा।

सभा दर्पण (असम नेपाली साहित्य सभा की पत्रिका) संपादक गोविंद शांडिल्य

सभा वार्ता (असम नेपाली साहित्य सभा का मुखपत्र) संपादक गोविंद शांडिल्य

बाल दर्पण (मासिक बाल पत्रिका), संपादक भीम प्रधान, सिक्किम

आरोहण, संपादक संजीव उपाध्याय, लखिमपुर

सिरोई सिर्जना (वार्षिक पत्रिका), संपादक राहुल राई बोगिको, मणिपुर

पानस (असम नेपाली साहित्य सभा, शोणितपुर जिला)––– संपादक नारद निरोला

वार्ता संकलन (भारतीय नेपाली भाषा र साहित्यको विकासमा विभिन्न सङ्घ–संस्थाहरुको योगदान, प्रकाशक गोर्खा जन पुस्तकालय)––– संपादक डॉ. जस योञ्जन प्यासी।

बिंदु –––संपादक केबी नेपाली, लामडिङ (असम)।

अभिव्यक्ति–संपादक बालकृष्ण उपाध्याय, दुलियाजान।

पूर्वाञ्चल स्मारिका (भारतीय गोर्खा परिसंघ, 20औ राष्ट्रीय परिषद सभा, गुवाहाटी)– संपादक अखिल प्रकाश शर्मा।

प्रदीपिका (साहित्यिक पत्रिका)––– संपादक टीका ढुङ्गेल रटन

तीन थुम्का (साहित्यिक पत्रिका)––– संपादक टीका ढुङ्गेल रटन

प्ररेणा (अर्धवार्षिक पत्रिका)––– संपादक एस के राई दलमान ढी गुरुङ

इन पत्रिकाओं के अलावा 'हाम्रो प्रजाशक्ति' (दैनिक, संपादक अंजन उपाध्याय), 'हिमालय दर्पण' (दैनिक, संपादक शिबु छेत्री), 'देशवार्ता' (साप्ताहिक, संपादक कुस्माखर उपाध्याय), 'हिमाली बेला' (साप्ताहिक, संपादक रूपेश शर्मा) साहित्यिक स्तंभ के साथ नियमित रूप से प्रकाशित हो रहे हैं। शिलिगुड़ी से 'पहल' नाम का एक राष्ट्रीय मासिक पत्रिका प्रकाशन में आई है, संपादक हैं कृष्ण प्रधान। कोरोना महामारी के चलते साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की तरफ से असम के 'कार्बी आङ्लाङ युवा लेखक मंच' और 'अनुपम चिंतन मंच' ने भी वर्चुअल माध्यम से साहित्य को आगे बढ़ाया।

निष्कर्ष

तुलनात्मक रूप से आलोच्य वर्ष में नेपाली साहित्य में अच्छी प्रगति हुई है। संख्यात्मक और गुणस्तर में भी पिछले वर्षों की तुलना में 2020 वर्ष का नेपाली साहित्य संतोषजनक माना जा सकता है। विशेष रूप से उपन्यास और कविता विधा में इसकी छवि स्पष्ट दिखाई देती है। विश्व साहित्य में उपन्यास विधा का महत्व सबसे अधिक प्रतीत होता है क्योंकि उपन्यास के विस्तृत कलेवर के कारण इस पर जीवन के हरेक पहलू समा सकते है। लेखक भी उपन्यास में ही अपनी सर्जन प्रतिभा को खुल कर उजागर कर पाते हैं। सर्वेक्षण में पता चलता है कि पिछले वर्षों में नेपाली भाषा में उपन्यास की संख्या बहुत ही कम थी। यह चिंता का विषय है। इस वर्ष कविता विधा सबसे आगे, और आख्यान साहित्य में भी बढ़ोतरी हुई। समग्रता में अन्य विधाओं को औसत रूप में संतोषजनक मान सकते हैं। कोरोना के चलते आलोच्य वर्ष में विशेष कर नारी और युवा लेखकों में साहित्य सर्जना में काफी उत्साह प्रतीत होता है।

– चानमारी, तेजपुर, गुवाहाटी, असम–784001,

❑❑❑

10

पंजाबी साहित्य

प्रो. फूलचंद मानव

पंजाबी भाषा और साहित्य के लिए साल 2020 में भी अनेक मुखरित कृतियाँ सामने आई हैं। विधा–विविधा का संचार यहाँ होता रहा है। कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास के अतिरिक्त समालोचना, शोध, अनुवाद, संपादन और साहित्य में भरपूर सामग्री एक जागरूक पाठक के सामने रही है। पत्रिकाएँ, विशेषांक, समाचार–पत्रों के साहित्यिक परिशिष्ट, ऑनलाइन सेमिनार, गोष्ठियाँ, कवि सम्मेलन होते रहे हैं। ऑफलाईन भी मंचों–पंडालों में बहुत कार्यक्रम संपन्न हुए हैं। कोविड–19, कोरोना प्रकोप के चलते, इसका प्रभाव भले विश्व स्तर पर अनुभव किया जाता रहा। पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन कुछ महीनों तक स्थगित रहा। रंगमंच, नाटक, गिद्दे–भंगड़े उस तरह सामने नहीं आ पाए, जैसे आते रहे थे। फिर भी 2020 का पंजाबी साहित्य संसार संतोषजनक कहा जा सकता है।

अभिव्यक्ति का अधिकार मनुष्य मात्र की प्राथमिकता है। हमारी सोच, चिंतन, कुलबुलाहट, चहल कदमी की दिशा में मुखरता या लेखकीय दायित्व, चिंतनशील हस्ताक्षरों ने खूब निभाया है। काव्य क्षेत्र में गीत, ग़ज़ल, मुक्त छंद के साथ अन्य कई रूपों में भी हमारे नए और पुराने कवि, स्वयं को अभिव्यक्त करते रहे हैं, जिनमें रविंदर रवि, जगजीत बराड़, सुरिंदर रामपुरी, बीबा बलवंत, रमेश कुमार, प्रीत मनप्रीत के साथ गुरप्रीत कौर, सतविंदर सिंह मड़ौलवी और दर्शन सिंह प्रतिमान आदि के काव्य संग्रह उल्लेखनीय हैं। प्रकाशकों, रचनाकारों, संपादकों द्वारा प्रेषित इनकी कृतियों में विविधता है। 'पार गाथाः 2020' रविंदर रवि का पच्चीसवाँ पंजाबी काव्य संग्रह है। कनाडा में छह दशक से रहते हुए इस कवि ने पंजाबी में काव्य नाटक, कहानियाँ, यात्रावृत्तांत, समीक्षा और गद्य की कुछ अन्य विधाओं में भी कृतियों की रचना की है। अंग्रेजी व हिंदी में भी रवि की पुस्तकें उपलब्ध हैं। भारत से बाहर पाकिस्तान तक में इनकी किताबें छपी, पढ़ी और सराही गई हैं। नेशनल बुक शॉप, दिल्ली से प्रकाशित 'पार गाथा' में 70 के आसपास कविताएँ, आज के युग और व्यक्ति के खोखलेपन को बयाँ करती हैं। अब, आज या अभी जैसी संस्कृति में विश्वास रखने वाले रविंद्र रवि अनेक सम्मान, पुरस्कार भी पा चुके हैं।

'रुक्ख दा गीत' अमरीका में रहते कवि, कथाकार, उपन्यासकार जगजीत बराड का दूसरा काव्य संग्रह है। 'धूप और दरिया' भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित इनके उपन्यास का गुजराती में भी अनुवाद, पुस्तकाकार छपा है और कविता के कारण, हिंदी में प्रायः सभी श्रेष्ठ पत्रिकाओं के संपादकों ने इन्हें प्रकाशित किया है। धर्मयुग, सारिका, कल्पना ज्ञानोदय, भाषा, वागर्थ, 'हिंदुस्तान' सहित दर्जनों

हिंदी पत्रिकाओं में जगजीत बराड़ की अनूदित कविताएँ हिंदी में मिलती हैं।

पिआ धमाका इस तरहां पंछी गिरे हजार–
चिट्टे घर तक पहुँच गई लाल लहू की धार।
ओह ही माचिस बेचदे, ओह ही बेचण तेल
जिहड़े अग बुझाण दा करदे वणज वपार
(पृ.62)

'रूख दा गीत' रचनात्मक, मौलिक कविताओं का एक प्रिय ग्रंथ है, जिसमें गज़ल, कविता, गीत शामिल हैं।

सुरिंदर रामपुरी का नया काव्य संग्रह– 'मन मरजी दी बुणती' इनके परिपक्व काव्य व्यक्तित्व की प्रतिनिधित्व करने वाला है। पचास से ऊपर इन कविताओं में मानव विरोधी संघर्ष व उसका विरोध, सहज संवेदना, जातिगत सजगता और प्रतिबद्धता का वाम स्वर गूँज रहा है।

आग/जलती रहे/सुलगती रहे लगातार/
बुझने का नाम तक न ले/हो जंगल को लगी
आग/ या लगी हो मन में/आग (पृ. 63)

सुरिंदर रामपुरी अपने संग्रह में निज को साधने पर बल देते हैं– *यह जीवन अपना है, हमारा निजी, हम ही लिखेंगे इस पर, मनचाही इबादत/तान देना है इस पर मनचाहा 'ताना', बुनेंगे मनचाही बुनती, स्वयं अपने हाथों।*

डॉ. रमेश कुमार को हम हरियाणा प्रांत के श्रेष्ठ पंजाबी कवियों में शुमार करते हैं। एक दर्जन से अधिक काव्य संग्रह प्रकाशित करवा चुके रमेश कुमार हिंदी में भी पढ़े जाते हैं, अपने अनूदित तीन काव्य संग्रहों के द्वारा संक्षिप्त, सारगर्भित कहने की कला में ये माहिर हैं। विस्तार, फैलाव से अलग, इनकी कविता में कम से कम शब्दों में बड़ा कथ्य मिलता रहा है। 'असहमत' इनका काव्य संग्रह समय और मनुष्य की त्रासदी पर चोट करता है। औकात, समंदर, तालाब, असहमति, भाषण और बेसुरे जैसी, तीखी कविताओं के साथ इनका बे–घर, ठंड, दौड़, स्पर्श, तस्वीर, दीवार आदि कविताओं में भी रमेश कुमार की शैली अलग से पहचान बना चुकी है, जब–जब भी मैं, खुद से, असहमत होकर भी सहमत होकर चला हूँ तो हर बार, कभी मेरे भीतर का भगतसिंह, मर रहा होता है, और कभी कोई करतार सिंह सराभा।

'अत्थरू गुलाब होए', 'सत्तां', 'दिल ते सुफने', 'खुशबू कैद नहीं हुंड़ी', 'चूड़े वाली बांह', 'अनमोल रतन' भी 2020 में आए, रेखांकित हो रहे काव्य संग्रह हैं। बीबा बलवंत, प्रीत मनप्रीत, गुरप्रीत कौर, सतविंदर मड़ालवी और दर्शन सिंह प्रीतिमान की इन कृतियों में काव्य मुहावरा अलग–अलग होते हुए भी समाज, मनुष्य, मन ही केंद्र में है।

'अनुवाद विचो झाकदी कविता' में अनुवादक संपादक प्रोफेसर सतीश कुमार वर्मा ने विदेशी और भारतीय कवियों की, मनचाही कविताओं के अनुवाद, चुने और एक साथ प्रस्तुत किए हैं। व्रतोल्लत ब्रेख्त, अज्ञेय, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, राहत इंदौरी, फूलचंद मानव, शैलेंद्र शैल सरीखे कवियों की अनेक प्रतिनिधि रचनाओं का अनुवाद, संकलन में सँजोया है। हम जानते हैं, काव्यानुवाद एक जटिल प्रक्रिया है। नाटयानुवाद की तरह यहाँ श्रम और प्रतिभा का खर्च भी अतिरिक्त रहता है। ईमानदारी, वफादारी वाली इस प्रस्तुति का पाठकों ने ही स्वागत नहीं किया, पंजाबी संपादकों, आलोचकों ने भी इसे सराहनीय माना है।

'उत्थों तीक' (वहाँ तक) नवतेज भारती के काव्य कौतुक का कमाल है। पंजाब से बाहर, देश के अन्य प्रांतों में, अथवा भारत से बाहर जाकर बस चुके, प्रवासी कहला रहे पंजाबी कवियों में नवतेज भारती की उपेक्षा नहीं की जा सकती। 'सिंबल दे फुल्ल' कृति का पुनर्सृजन करके, कवि ने स्वयं 'उत्थों तीक' अपनी पुस्तक में ,नारी स्वर उजागर करता पुरुष जाग उठा है। कवि स्वीकारता है कि मैंने नारी स्वर का अपहरण नहीं किया, अपनी ही आवाज को यहाँ स्थगित करने का प्रयास किया है। वे यहाँ स्वयं को इन रचनाओं, कविताओं के कवि नहीं, लिखारी मान रहे हैं। लेखक कौन और कहाँ है, नहीं मालूम। या तो लेखक यहाँ हैं नहीं, या फिर अनेक हैं। वे स्त्रीलिंग, पुल्लिंग के पार, कहीं ऊपर हैं। शायद यहाँ रचनाकार ने कविता की अलिंग लिंगरहित आवाज में, बोलने की कोशिश की है। 'उत्थों तीक' के रचनाकार

नवतेज भारती की कृति 'लीला', इससे पूर्व, अपनी तरह की अपूर्व किताब मानी जा रही है। संवेदना का यह शायद वैश्विक स्वर है। नवतेज भारती पत्रिकाओं में कभी–कभी या कम नजर आते हों, पुस्तकाकार में उनकी धूम कायम है।

रवींद्रनाथ टैगोर के पंजाबी में पर्याप्त अनुवाद, कथा, नाटक या काव्य कृतियों के रूप में मिलते हैं। हमारी दो तीन पीढ़ियों ने बांग्ला कवि रविंद्र नाथ को ट्रांसलेट किया है। विश्वस्तर का उनके नोबेल पुरस्कार का गायन विदित ही है। टैगोर का अनुवाद इतना सरल, सहज भी नहीं। लेकिन धुन के धनी को कौन रोक सकता है? 'द स्ट्रे वर्डस' रवींद्रनाथ ठाकुर की कृति का पंजाबी अनुवाद 'मौजी परिंदे' शीर्षक से राजेश शर्मा ने किया है। डॉ. शर्मा, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के अंग्रेजी विभाग में प्रोफेसर, एक्टिविस्ट हैं। अनुवाद के क्षेत्र में पंजाबी में इसे श्रेष्ठ, सराहनीय माना जा रहा है। एक पुनर्सृजन की तरह इसका आनंद पंजाबी में उठाया जा सकता है। टैगोर की मुक्त, बोध विधि का दूसरी–तीसरी किसी भाषा में रूपांतरण, इतना आसान नहीं कहलाता। एक दस्तावेज की तरह 'मौजी परिंदे संवेदना, चिंतन, कल्पना और विधा की दृष्टि से एक स्वतंत्र कला कृति है। अपने तंत्र की जननी सूत्र, महावाक्य, स्वतंत्र लघु कविताएँ और पराबौद्धिकता के स्वतः सिद्ध बोल ध्वनित होते हैं। यहाँ अंतरतम बौद्धिकता का सागर है। तूफान का नाद भी। प्रो. राजेश शर्मा की इस साल आई पंजाबी अनुवाद की यह बेहतर कृति है।

प्रचलित और लोकप्रिय विधा से हटकर किताबें हाथ लगती हैं, तो प्रसन्नता भी दे जाती हैं। नई दिशाएँ, नवीन संसार, नूतन मंच पाकर उनमें उतरने का मन करता है। साल 2020 की छपी पुस्तकों में दर्जनों ऐसी कृतियाँ हाथ लग सकती हैं, जो पाठक, फिर सजग पाठक को, आमंत्रित करती हैं। प्रकाशक कई बार 'रिस्क' लेकर भी उन्हें छापता, बाजार में उतारता है। फिर भी पुस्तकालय, आलोचक, उन्हें उछालते, सराहते या पढने़ की सिफारिश करते हैं। दिल्ली, पंजाब के अमृतसर, लुधियाना, चंडीगढ़, मोहाली, समाना या पटियाला के प्रकाशकों ने भी, ऐसी किताबें इस साल दी हैं।

पंजाबी कवि, उपन्यासकार मनमोहन को इधर हम लोग, मनमोहन आईपीएस कहकर पहचानते हैं। एक ही नाम से अनेक कवि, लेखक पंजाबी में हो, या किसी भाषा में, पहचान के लिए उन्हें 'अलग' से बताना जरूरी हो जाता है। एक दर्जन पंजाबी काव्य कृतियाँ मनमोहन आईपीएस की सन् 1982 के बाद आई हैं। 'निर्वाण' इनका एकमात्र उपन्यास है, जिस पर अकादमी पुरस्कार भी घोषित हुआ था। पंजाबी काव्य स्वर, इनके मुहावरे को अलग से रेखांकित करता है। सेवा में आने के बाद, ट्रांसफर के कारण, विभिन्न राज्यों के आंचलिक वातावरण, वहाँ की संस्कृति को भी इन्होंने पहचाना, रचना में अभिव्यक्त किया है।

मनमोहन के साथ भेंट वार्ताएँ, मुलाकातें या इनके इंटरव्यू 'वारता' नाम से तरसेम के संपादन में चेतना प्रकाशन, लुधियाना से विचाराधीन वर्ष में छपे हैं। उपिंदर जौहल, अमरजीत घुम्मण, रवि रविंदर, मुनीष कुमार, गुल चौहान, दलजीत सिंह वेदी सहित, तरसेम ने भी इनसे बातचीत करके, समय–समय पर जो कुछ अखबारों, पत्रिकाओं में छपवाया, यह उसी का संकलन–संचयन है। 'मेरी उपन्यास सृजन की प्रक्रिया' भी निर्वाण उपन्यास के संदर्भ में मनमोहन ने, अपने एक भाषण के रूप में यहाँ दी है। एक सौ पचास पृष्ठ की ऐसी सचित्र कृति को मैं पठनीय कह सकता हूँ।

राम सरूप अणखी, पंजाबी–हिंदी संसार का सुपरिचित नाम है। कथाकार, उपन्यासकार ने छह दशक तक पंजाबी में लिखकर, 'कहानी पंजाब– पत्रिका का संपादन भी किया। इनकी कृतियाँ हिंदी में भी उपलब्ध हैं। 'किवे लग्गिया इंग्लैंड', अणखी का सफरनामा है जिसका संपादन बेअंत बसरा द्वारा प्रकाशित हुआ है। इंग्लैंड के सामाजिक, पंजाबी, राजनीतिक संसार और परिचित दायरे पर पाठक समाज का वर्णन, यहाँ रोचकता के साथ हुआ है। चित्रों ने इस पुस्तक को मनोहारी बनाया है।

'जीणा थीणा' सतीश वर्मा की चिंतन परंपरा के बिंदुओं को अभिव्यक्त करती कोमल, किंतु उपयोगी पुस्तक है। लगभग 60 पृष्ठों में, मन–मस्तिष्क में उपजे विचार, भाषण या लेखन में आए सहज संग्रहनीय वाक्य, यहाँ संकलित हैं। उद्धरण, उक्ति के रूप में, 'कोटेशन' के तौर पर इनका उपयोग, सतीश वर्मा ने उपयोगी सिद्ध किया है। शोध सहायक, लेक्चरार, रीडर, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष के साथ ही युवक भलाई विभाग में मुखिया, डीन भाषा फैकल्टी में कार्यरत रहते हुए, सतीश कुमार वर्मा पंजाबी यूनिवर्सिटी से निवृत्त होकर, मंडी गोबिंदगढ़ में देशभगत यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अमेरिटस पद पर तैनात, सक्रिय हैं।

नाटक, रंगमंच सतीश वर्मा के अंग संग 45 साल से हैं। 'लगी नज़र पंजाब नूं', पंजाब संकट से संबंधित लघु नाटकों का संग्रह, इनके संपादन में, जसविंदर सैनी के साथ मेरे सामने है। इसमें नाटककार तेरा सिंह चन्न आतमजीत, अजमेर औलख, गुरशरन सिंह, दमन, पाली भूपिंदर सिंह, तेविंदर कुमार, कुलदीप सिंह दीप के साथ टोनी वातिश के लिखे लघु नाटक संकलित हैं। 'मसला पंजाब दा', डॉ. सतीश कुमार वर्मा का एक नाटक इसी संकलन में दर्ज है। 'वाहगे दे आर पार' एक अन्य संपादित संकलन में डॉ. वर्मा ने गुरदयाल सिंह खोसला, हरसरन सिंह, गुरसरन, कपूर सिंह घुम्मण, आतमजीत, पाली भूपिंदर, सतीश वर्मा जैसे प्रतिनिधि नाटककारों को शामिल किया है। नाटय विधा की दोनों पुस्तकें पाठयक्रम के लिए भी उपयोगी हैं।

उधर बाबासाहिब अंबेडकर की जीवनी–'धनंजय कीर' का पंजाबी अनुवाद, डॉ. बलदेव सिंह बद्दन के द्वारा 608 पृष्ठों में नवरंग प्रकाशन समाना से प्रकाशित हुआ है। डॉ. बद्दन एन.वी.टी. में मुख्य संपादक सह डिप्टी डायरेक्टर के पद से रिटायर होकर निरंतर सक्रिय हैं। हिंदी से पंजाबी में असंख्य पुस्तकें अनुवाद करके डॉ. बद्दन ने सम्मान–पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं। इन्हीं के संपादन में मिलती रही पुस्तकें उपयोगी कहला रही हैं। साधनाशील अनुवादक का श्रम और अनुवाद एवं विषय के प्रति समर्पण इस आत्मकथा (जीवनी) द्वारा झलक रहा है। भाषा सहज, सुगम, बोधगम्य और शैली पाठकोपयोगी है। इस साल की यह भी एक बेहतर अनूदित कृति है।

डॉ. श्यामसुंदर दीप्ति समाज वैज्ञानिक, लेखक और शूगर रोगों के माहिर डॉक्टर भी हैं। सक्रियता, निरंतरता और जागृति की भावना के साथ लगभग एक संस्था का काम कर रहे हैं। बठिंडा, मानसा, पटियाला, फरीदकोट या अमृतसर में, जहाँ भी इनकी कर्मभूमि रही है। सक्रियता और कर्मठता के साथ, साहित्य और सेवा का धर्म निभाते पाए गए हैं। 'मिन्नी कहानी' (लघुकथा) आंदोलन में पंजाबी में प्रणेताओं में से एक है। तिमाही लघुपत्रिका 'मिन्नी' के नियमित 128 त्रैमासिक अंक निकाल कर भी, 'गुप्तगू पंजाबी पत्रिका के तीन अंक पाठकों तक पहुँचा चुके हैं। 1976–77 में साहित्य संगम की गोष्ठियों से जुड़े, तो अब तक संग साथ कायम हैं।

'इक्क भरिया पूरा दिन' रोचनामचे की तर्ज पर दर्ज इनकी आत्मकथा का एकांश मेरे हाथ में है। शूगर की बीमारी से 45 लंबे वर्षों से जूझते हुए डॉ. दीप्ति ने खुद अपना परहेज, इलाज करते हुए, मरीजों को भी इससे बचाव के रास्ते इसी पुस्तक में बताए हैं। दुर्घटनावश एक पाँव, कटवाना पड़ा, कृत्रिम पैर के साथ पंजाब, हरियाणा ही नहीं, देश के अन्य प्रांतों में भी भाषण, सेमिनार के लिए जाते हैं। फरवरी 2020 में हमारे निमंत्रण पर डॉ. मनमोहन आईपीएस, डॉ. सतीश कुमार वर्मा और सात अन्य प्रांतों से आए विद्वानों के साथ साहित्य संगम ट्राइसिटी के मंच से, कमल किशोर गोयनका की अध्यक्षता में अपना शोध पढ़कर गए हैं, जहाँ, समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हमने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सहयोग से किया था। साहित्य, जीवन समाज और व्यक्ति, इसी दिशा में डॉ. दीप्ति ने इस कृति की रचना की है। एक भरा पूरा दिन जहाँ इनसान को व्यस्त–मस्त रखता है, कहीं मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, सामुदायिक उपचार के रास्ते भी सुझा रहा है। प्रेरणा प्रकाशन, अमृतसर

से इसी साल आई इस किताब में 'गुलाबी फूलों वाले कप में फीकी चाय' का हुनर समझाते हुए मीठे, मिठाई से परहेज, गुरेज पर भी चर्चा होती रही है। अठारह अध्यायों की यह गीता की कृति रोगी, निरोग, पाठक, आलोचक, सभी को कुछ न कुछ सिखा जाती है। 'कोरोना काल दीआं पैडां', और 'किव सचियारा होइए' दो अन्य पेपर बैक पुस्तकें डॉ. दीप्ति की प्रेरणा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुई हैं।

हिंदी कविताओं के दो संकलनों ने पंजाबी रूप में मुझे आकर्षित किया है। 'कविता दे बेहड़े' (काव्यांगन में) चुनींदा समकालीन हिंदी काव्य संकलन है। पवन नाद के संपादन में। पीपल्ज़ फार्म बरगाड़ी के इस प्रयास में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, कुंवर नारायण, चंद्रकांत देवताले, भगवत रावत, अशोक वाजपेयी, मंगलेश डबराल से लेकर विष्णु नागर, कुमार अंबुज, गगन गिल आदि कवियों की रचनाएँ, पंजाबी में अनूदित, पठनीय हैं। बाबुशा कोहली की हिंदी कविताएँ भी यहाँ ध्यान माँगती हैं। 168 पृष्ठों में 150 रु. की किताब (पेपर बैक) खरीदी जा सकती है। यों ही रजनी छाबड़ा की कविताएँ 'पिघलदा हिमालय' नाम से तेजिंदर चंडिहोक के अनुवाद में, 'सूरजां दे वारिस से प्रकाशित हुई प्रकाशन, बठिंडा मेरे आगे है। कवयित्री की छोटी–बड़ी इन कविताओं को पढ़कर पाठक, हिंदी कविता का एहसास पाता है।

अनुवाद के स्तर पर ही 'लियो तालस्ताएः जीवन ते यादां', और 'गॉडफलाई' (इथललिलिखन का औचित्य) मुझे बाँध रही हैं। तरक शील भारतीय प्रकाशन, बरनाला ने बेहतर पंजाबी साहित्य, अपेक्षाकृत कम दाम पर, उपलब्ध करवाया है। कमलजीत के अनुवाद और अमित मित्तर के संपादन में प्रथम पुस्तक जहाँ क्लासिक की श्रेणी में आती है, वहीं जंग बहादुर गोयल के अनुवाद में, दूसरी महत्वपूर्ण कृति भी पाठक को कुछ देकर जाने वाली है, जिसका प्रकाशन नवयुग, दिल्ली ने किया है– 'गॉडफ्लाई' विश्वस्तरीय उपन्यासों में आ सकता है। लगभग 300 पृष्ठों के इस मूल उपन्यास को अंग्रेजी में शायद उस तरह सम्मान नहीं मिल पाया जो इसके रूसी भाषा में, अनूदित होकर छपने पर मिला। एक सौ से अधिक रशियन संस्करणों में इस कृति की पचास लाख प्रतियाँ बिकने की बात सामने आई है। हिंदी–पंजाबी–अंग्रेजी के हमारे साथी लेखक जंग बहादुर गोयल ने पंजाबी में इसे अनूदित करके, साधारण लेकिन पठनीय भाषा में छपवाया है। 'गॉड फ्लाई' एक प्रतीकात्मक पात्र को बयान करती कथा है। इसमें प्रेरित करने, तैयार करने, कर्मठ व सक्षम बनाने की क्षमता पर बल दिया गया है। मूल लेखिका के साथ न्याय, कृति के रूप में सामने आता है।

'हंझुआं दे हड़' (आँसुओं की बाढ़) उपन्यास यशपाल शर्मा, 'धुप्प दरिया दी दोस्ती' (जगजीत सिंह बराड़) आरसी पब्लिशर्ज से नया संस्करण, 'विद्रोही सतरां दा सफर' (ओम प्रकाश गासो),और 'चढ़दे लहंदे परछांवें' (निर्मल सिंह नोकवाल) चार अन्य उपन्यास पंजाबी नावेल की तीन पीढियों को बयान करते हैं। आयु वर्ग, लेखनीय अनुभव, कथ्य की ताज़गी और प्रभावोत्पादकता, पारंपरिक शैली में उपन्यास को 'डील करने वाले में चारों उपन्यासकार, खूब पढ़े गए हैं। पठनीयता इनकी मेरिट है। समाज और मानव–संबंध, प्रेम–लगाव, राजनीति, द्वेष–पाखंड, ऐसा बहुत कुछ, इन चारों उपन्यासों के उमदा, मेरी मेज पर है। 2020 में छपे इन चारों उपन्यासों ने, मुझे कृति के साथ जोड़ा है।

अनुवाद की दृष्टि से पंजाबी में जगदीश राय कुलरीयां इन दिनों सक्रिय हैं। मिनी कहानी के इस रचनाकार ने 'गौरतलब' उनवान से 'जदों इतिहास वणदा है' में अपनी 30 लघुकथाएँ प्रकाशित करवाई हैं। मिनी कहानी लेखक मंच, पंजाब–अमृतसर की इस प्रस्तुति का स्वागत हुआ है। महत्वपूर्ण उपन्यास 'गुलारा बेगम' (शरद पगारे) का पंजाबी अनुवाद है, जिसमें प्रेम और समर्पण के अंदाज़ में कहानी को रोचक बनाकर लिखा गया है। शरद पगारे हिंदी में बहुपठित लेखकों में शुमार हैं। प्रेमचंद, परसाई की तरह इन्होंने अपना पाठक–वर्ग तैयार किया है। लोकप्रियता के अर्थों में जो स्वयं पठनीय कहलाकर पाठकों को पीछे

लगाए, जगाए, वह क्रांतिकारी हो सकता है। अमृताप्रीतम, गुलशन नंदा अपनी तरह के लोकप्रिय रहे हैं। पर शरद प्रमोद के इस उपन्यास 'गुलारा बेगम' को पंजाबी में अनुवाद करके जगदीश दास ने क्षमता–लगन–समर्पण का परिचय दिया है। उड़ान पब्लिकेशन, मानसा ने पेपर बैक 395 रु. (पृ. 300) में उपलब्ध करवाया है।

'सूरज कदे मरदा नहीं' (बलदेवसिंह) 'शोरूम' (बलबीर परवाना) 'मिट्टी बोल पई' (बलबीर माधोपुरी) 'तरेड़ां' (कृष्ण प्रताप) 'मैली मिट्टी' (हरविंदर मंडाल) 'ओह इक्की दिन' (गुरमीत कडियालवी) विचाराधीन साल में छपे पंजाबी के कुछ उपन्यास हैं। इनमें भिन्नता, समानता, सहजता है, तो पाठकों को जोड़ने की क्षमता भी है। कथानक शहराती हो या देहाती, लेखक, मन और माहौल के साथ पात्रों का सृजन करता है। नारी पात्रों का अपना संसार है तो नायक प्रधान उपन्यास उसकी गति के साथ स्थान बनाता है। पुरस्कृत व सम्मानित रचनाकार की कृति, प्रकाशक का सहयोग पाकर बड़े फलक पर पाठक वर्ग तक एप्रोच करती है। नया लेखक, उपन्यासकार भी, अपने लेखन के बलबूते, समाज में, पाठक के ज़ेहन तक, जगह बना जाता है।

पंजाबी में भी उपन्यास और कहानी, अन्य भारतीय भाषाओं की तरह, तरजीह पाकर छपती बिकती हैं। साहस और दहशत, कारपोरेट कल्चर और सांप्रदायिकता, संबंधों में तनाव या बनावट, हँसते गाते चेहरे, पंजाबी, उपन्यासों में बार–बार आते हैं। धारावाही प्रकाशन की परंपरा, पंजाबी अखबारों में कभी रहा करती थी, आजकल कम है। उपन्यास विशेषांक या पत्रिकाओं में उपन्यास का क्रमशः प्रकाशन भी 2020 में कम नज़र आया। मगर उपन्यास जब पुस्तकाकार सामने आता है, तभी उसका मूल्यांकन हो पाता है। अध्यापन परंपरा के तमाम लोग, विश्वविद्यालय में रहें या विद्यालयों में, स्थापित होने और स्थापित करने की चेष्टा में गतिशील मिलेंगे। तो भी पंजाबी उपन्यास विकास पथ पर अग्रसर लगा है।

महिंदर सिंह रंधावा आईसीएस भारत विभाजन के दिनों में, पंजाब के उच्चाधिकारी रहे। पुनर्वास योजना के अधीन पाकिस्तान से इधर भारत, पंजाब में आए, लुटे पिटे लोगों को गंभीरता से समझना, उनके हितों में काम करना, महत्वपूर्ण योजना के अधीन हो पाया। तत्कालीन परिस्थितियों में, सन् 1954 में पुस्तकाकार रूप में श्री रंधावा ने अपने अनुभव संकलित किए, जो उपन्यास की–सी रोचकता लिए हुए हैं। कारूक, त्रासदी, स्नेहसिक्त भी। इस किताब को अब 2020 में पंजाबी में अनुवाद करके डॉ. जगदीश कौर और पत्रकार दवी दविंदर कौर ने, चेतना प्रकाशन से छपवाया है। तीन भागों में इस सचित्र कृति में समय का चेहरा, राजनीति, मनुष्यता, सहायता भाव, सब झाँकता झलकता है। पंजाबियत इस कृति के विभिन्न अध्यायों में स्पष्ट है। तबाही की सीमा माइग्रेट्स, जमीन की स्थायी, अस्थायी एलाटमेंट, क्लेम, घरों, बागों की एलाटमेंट, आदर्श ग्राम, किसान, खेती, गाँवों का विकास– ऐसा ही बहुत कुछ रंधावा साहिब ने इस किताब 'राख चों उग्गे' में श्रम व अनुभव से लिखा है। यहाँ अनुवाद की खूबी है कि यह दिलचस्प बन पड़ा है।

'बहुसभ्याचारवाद अते पंजाबी साहित' बलदेव सिंह धालीवाल और सुखप्रीत कौर द्वारा संपादित है। यहाँ संस्कृति के इस नए संकल्प को पंजाबी में पहली बार परिचित कराने की चेष्टा की गई है। इसमें चौदह लेख शामिल हैं। प्रो. प्रीतम सिंह, धर्म सिंह, सतीश कुमार वर्मा, राजेंद्रपाल सिंह, बलजिंदर नसराली के साथ ही गुरमुखसिंह, गुरजीतसिंह, बूटा सिंह बराड़, अमनदीप कौर और बलदेव सिंह धालीवाल आदि के बहुसंस्कृति पर आधारित लेखों को, विभिन्न दौर के आधार पर मूल्यांकित किया गया है। गंभीर चिंतन और केंद्रित विषय पर चिंता को लेकर यह महत्वपूर्ण किताब इस साल बाज़ार में आई है। प्रचलित विषयों से अलग, नए मान मूल्य यहाँ स्थापित हो रहे हैं।

मीर तन्हा युसुफी के उपन्यास का लिप्यंतर स्वर्ण जीत कौर ने किया है। नर नारी की कामुक प्यास को लेकर इस उपन्यास पर पर्याप्त चर्चा हुई है। नर, किसी नारी के लिए, सर्वस्व गँवा बैठता है और नारी, अनियंत्रित कामना के अधीन, मर्द को

हवस की शिकार होकर दर–ब–दर भटकना यहाँ केंद्र में है। उर्दू, हिंदी में तो ऐसे उपन्यास होंगे ही, पंजाबी में लिप्यंतरित इस कृति ने बाजार में जगह बनाई है। 'माँ बोली पंजाबी' अजीत अखबार के संपादक बरजिंदर सिंह हमदर्द की भाषा पर केंद्रित उपयोगी कृति, कही जाती है। पंजाबी भाषा के विकास, इसकी समस्याओं पर साथ–साथ छपे संपादकीय इसमें आकर्षण का केंद्र है।

गुरमिंदर सिंह लंबी का उपन्यास 'जस्सा' लेखक का प्रथम प्रयास है। लेखकीय क्षमता और रचनात्मक प्रतिभा का साक्षात्कार इस रचना में सुलभ है। प्रो. नरेंद्र सिंह कपूर का लेखन पंजाबी में लोकप्रिय है। इन्होंने अपना पाठक वर्ग तैयार किया है। जीवनशैली और उत्साहवर्द्धन की दृष्टि से इनकी कृतियाँ सर्वाधिक बिकती भी हैं। 'रोशनियाँ' डॉ. कपूर का लेख संग्रह, सामान्य पाठकों, छात्रों, गंभीर अध्येताओं के लिए भी उपयोगी कृति है। दैनिक समाचार पत्रों में छपे इनके लेख चाव से पढ़े जाते हैं। पुस्तकाकार भी ऐसे निबंधों के संग्रह बेहद पसंद किए जाते हैं।

कथा कहानी की ओर आएँ तो 'नवीं रुत दे सपने' संकलन बलदेव सिंह धालीवाल द्वारा संपादित आया है। सात कथाकारों की कहानियाँ, पुस्तक में भूमिका के साथ प्रस्तुत है सांबलधामी–एह कोई नाटक नहीं, सरघी–होलि डे लाइफ, सुखपाल सिंह थिंड–काल कोठड़ी, बिंदर, बसरा–कल वी आउणै, त्रिपत के. सिंह सेवंथेंस और जावेद बूटा–हाफ टाइम, और सुरजीत कौर की कहानी 'सुरख सवेरा' यहाँ पठनीय सराहनीय है। ये कथाएँ सन् 2019 की उल्लेखनीय, चुनींदा कहानियाँ कही गई हैं। इसी बहाने 2019 की कहानियों पर डॉ. धालीवाल का लेख भी पुस्तक के महत्व को बढ़ाने वाला है।

जसवीर राणा पंजाबी में कथा के परिचित हस्ताक्षर है। इनकी कथाएँ पत्रिकाओं में स्थान पा चुकी हैं। 'उर्फ रोशी जल्लाद' इनकी ताज़ा पुस्तक आई है, जहाँ जल्लाद की आधारभूमि पर पहली बार कथा रचना पंजाबी में मिलती है। यों मरदम शुमारी (जगजीत बराड) में ऐसे कथानक को कलात्मक शैली में प्रस्तुत किया है, जो जगजीत बराड़ के संग्रह लाल निशाने में नहीं है। माध्यम, धुआँ, सिनेमाघर, वापसी, नादिर शाह, एंजल जैसी कहानियों ने पंजाबी शैली व शिल्प को एक मोड़ दिया है। जगजीत बराड की ये सभी कहानियाँ उनके संग्रह लाल निशान में दर्ज है। 'बेवकूफ सप्प ते मच्छीआं', 'नीले खंभों वाला क्लाक', 'झंडे नूं लगी मैल', 'इक्क फुट दा फासला' और 'चिट्टी कबूतरी दी तस्वीर' जैसी सशक्त कहानियाँ हिंदी में अनूदित, जगजीत बराड की, पाठकों ने पसंद की हैं। मौलिकता, सृजन का स्तर और अछूते विभिन्न विषयों पर कलम चलाकर जगजीत बराड ने पंजाबी कहानी में, अपनी विलक्षण जगह अमरीका में बैठकर ही बनाई है।

राम सरूप अणखी की चुनींदा कहानियाँ 'टीसी दवेर', 'सं बेअंत बाजवा', 'हरभजन सिंह खेमकरणीत' 'दिशा बदलदी हवा' और 'खुरदीआं कंधां', सुरिंदर कैले कृत 'सूरज दा छरछावां', भी इसी साल 2020 के प्रकाशन हैं। इन सभी कथा संग्रहों की कहानियों में पंजाबी पात्र बुलंदी पर हैं।

किसी योजना में अनुकूल बैठना, या सम्मान–पुरस्कार पा जाना, समय सापेक्ष भी साहित्य अकादमी द्वारा हो सकता है। वरिष्ठ कथाकार गुरदेव सिंह रूपाणा को इस साल 2020 के लिए उनके कथा संग्रह 'हवा..' के लिए पुरस्कृत करने की घोषणा हुई है। उपन्यासकार, कथाकार रूपाणा को हम गुरवचन भुल्लर का जोड़ीदार मानते हैं। 'नागमणि' पत्रिका में अमृताप्रीतम इन दोनों लेखकों की कहानियाँ तरजीह देकर प्रकाशित करती थी। यों ही आरसी व अन्य पत्रिकाओं में इनकी श्रेष्ठ कहानियाँ पाठक पढ़ते हैं। बड़ी उम्र में आकर लेखक को सम्मान घोषित करना एक संयोग ही कहलाता है। रूपाणा की पुस्तकें जब–जब छपी हों, अकादमी की ज्यूरी को शायद इनका नाम रास न आया हो। या योजनानुसार विगत 4–5 साल में इनकी पुस्तक छपने का सुयोग ही न बना हो। खैर, देर आयद, दुरुस्त आयद!! बधाई गुरदेव रुपाणा, अकादमी को भी।

'अक्खां खुल्लीआं बुल्ह सीते' जोगिंदर सिंह तूर का कहानी संग्रह है। इसकी भूमिका तेजवंत सिंह गिल ने लिखी है। किताब का वजन इससे भी बढना़ चाहिए। कहानी, 'नवां टेलिफोन', 'आसरा', 'कमल', 'दरद', 'जिम्मेवार कौन' के साथ ही 'इक एहसास', 'आरज़ी हलीमी', 'शामल तफनीश' आदि भी, जोगिंदर तूर की पठनीय कहानियाँ है। इन्होंने अनुवाद और संपादन के क्षेत्र में लगन और कर्मठता के साथ काम किया है। 'सोलां देसां दीआं इक्की' बाल लोक कहानियाँ संकलित व अनुवाद करके इन्होंने एक खास पाठक वर्ग को संतुष्ट किया है। बाल लेखन के क्षेत्र में पंजाबी में गंभीरता से काम हुआ नहीं, या फिर अच्छे काम को भी उस दृष्टि से देखा नहीं गया, जहाँ मूल्यांकन हो पाए। इस संकलन में 16 देशों के लेखकों की बाल लोककथा का चुनाव, संकलनकर्ता ने किया है। बेहतर प्रकाशन में नवरंग समाना से आई इस पुस्तक का स्वागत है।

बाल साहित्य, किशोर पीढ़ी के लिए या प्रौढ़ों के वास्ते किसी भाषा में कितना ही साहित्य क्यों न लिखा जा रहा हो, या छपकर सामने आए, थोड़ा पड़ता प्रतीत होता है पाठक वर्ग में भिन्नता, भाषा–शैली की विविधता के साथ कथ्य भी यहाँ महत्व रखता है। होता यही है कि पारंपरिक ढंग से, दोहराव के साथ, प्रायः एक जैसी कविताएँ, कथाएँ, बालोपयोगी मानकर छपती हैं। विशेषज्ञ आलोचक या बाल साहित्य की रचना करने वाले आमतौर पर कम ही मिलते हैं। पंजाबी में भी प्रायः यही स्थिति सामने है।

पंजाबी में बाल पत्रिकाएँ कम निकल रही हैं। जो हैं भी, उनका स्तर और स्वर संतोषजनक नहीं जान पड़ता। पूरे वर्ष संपन्न हुए 2020 में, बाल साहित्य के नाम पर संपन्न हुए दो तीन सेमीनार, गोष्ठियाँ भी याद नहीं आ रही। हाँ, साहित्य अकादमी रवींद्र भवन, नई दिल्ली से आपने मुख्य पुस्तककारों के साथ अनुवाद, युवालेखन, बाल साहित्य पर पुरस्कारों की घोषणा जरूर करती है। सराहनीय भी है। इस साल पंजाबी में 2020 के लिए बाल साहित्य पुरस्कार के लिए किसी पुस्तक की घोषणा नहीं की है।

सतविंदर सिंह मड़ौलवी पंजाबी बाल साहित्य पर काम कर रहे हैं। पेशे से अध्यापक सतविंदर, मोहाली सरकारी कालेज में हमारे पुराने छात्र रहे हैं। अभी मोरिंडा के पास अध्यापन कार्य करते हुए बालोपयोगी पुस्तकें लिख और छपवा रहे हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट से 2020 में 'अक्खीं डिट्ठे रंगीले पंछी रंगीन चित्रों के साथ प्रकाशित, इनकी उपयोगी कृति है। पत्र–पत्रिकाओं में इस पुस्तक की समीक्षा ने लेखक को पहचान दिलवाई है। कबूतर, हरियल, मोर, बगुला, तीतर से लेकर सोनचिड़ी, शिकरा, चील, उल्लू, गिद्ध, कौए, मुर्गा, कोयल, तोता, नीलकंठ, बुलबुल, बीजडा, मुनिया, चक्कीराहा व तिलियर जैसे पचास पंछियों पर सचित्र सामग्री, पाठकों को संतुष्ट करती है। यों ही पंडित काशी राम मड़ौली (1883–1915) जीवनी, 'उड़ उड़ गए चिडियां दे चम्बे' इनकी दो अन्य बालोपयोगी किताबें प्राप्त हुई हैं। इनमें बालपन की कथा शामिल है।

प्रोफेसर रिटायर्ड, डॉ. त्रिलोकसिंह आनंद कवि, कथाकार, गज़लकार और आलोचक हैं। 'परवाज–दर–परवाज पंजाबी मासिक 'मेहरम में ये स्तंभ लेखन करते रहे हैं। 'इक शेअर दी परिकरमा नामक स्तंभ मकबूल रहा। पंजाबी, उर्दू, हिंदी के 77 शेअरों को इस बार इन्होंने 'डील' किया। शेअर की आत्मा तक पहुँचकर शायर के मन को समझना, और फिर पाठक वर्ग को समझाना, आसान काम नहीं। शोधार्थियों के लिए यह उपयोगी काम है। पुस्तक 'इक शेअर दी परिकरमा' मेरी दृष्टि से साल 2020 की बेहतरीन किताबों में से एक सिद्ध होती है। 'परवाज़ तों पहिलां' भूमिका की तरह लिखकर विद्वान आलोचक ने अपना मकसद स्पष्ट किया है। एविस पब्लिकेशंस दिल्ली, जीरकपुर की यह प्रस्तुति गज़ल पर काम करने वाले शोधार्थियों के लिए ही नहीं, सामान्य पाठकों के लिए भी बहुत काम की पुस्तक सिद्ध हो सकती है। सोहनी महिवाल, सुलतान बाहू, गज़लगो रणधीरसिंह चंद, और प्रोफेसर पूर्णसिंह की दी कावि प्रतिभा सरीखी कृतियों के साथ डॉ. आनंद की लिप्यंतरित, संपादन, गुरमति ज्ञान की पुस्तकें भी पढ़ी–पढ़ाई जा रही हैं।

'दृष्टि, प्रसार ते संवाद' अरविंदर और कालड़ा के संपादन में 'सूरज दा परछावां' लघुकथा संग्रह एक आलोचनात्मक कृति है। सुरिंदर कैले के पंजाबी लघुकथा संग्रह 'सूरज दा परछावां' पर तेजवंत मान, अमर कोमल, जोगिंदर निराला, ब्रह्म जगदीश सिंह, डॉ. दीप, सुरजीत बराड़, आदि बीसेक समीक्षकों ने आलेख दिए हैं। उन्हें पुस्तकाकार प्रस्तुत करके अरजिंदर कालड़ा ने उपयोगी दिशा में काम किया है।

'उत्तर आधुनिकता अऊते समकाली पंजाबी कविता' डॉ. आतमसिंह रंधावा की चेतना प्रकाशन, लुधियाना की प्रस्तुति है। सन् 2002 से 2019 तक डॉ. रंधावा की 6–7 अन्य कृतियाँ कथा, कविता, आलोचनात्मक प्रवृत्तियों पर प्रकाशित हुई हैं। यह इसी साल आया किताब का संशोधित रूप है।

उत्तर आधुनिकता पर चिंतन भारतीय भाषाओं में कम हुआ है। और गंभीर रूप में भी अध्यापकीय, शोध, तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से इस पर विचार हुआ है। प्रस्तुत पंजाबी पुस्तक में सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य, अध्ययन दृष्टि समकालीन चिंतन और उत्तर आधुनिकता, समकालीन, पंजाबी कविताः उत्तर आधुनिक परिप्रेक्ष, डॉ. हरिभजन सिंह, पातर, देव, जगतार ढ़ाआ, परमिंदरजीत आदि कवियों के प्रसंग में इसकी चर्चा और उत्तर आधुनिकता का विकास, इसकी मूल स्थापनाएँ, कृति में उजागर हो रही हैं।

पंजाबी पत्रिकाओं में साल 2020 में प्रकाशन कोरोना काल में प्रायः स्थगित रहा है लेकिन 'सिरजणा', 'चिराग', 'समकाली साहित्य', 'लकीर', 'अक्खर', 'एकम', 'कहाणी धारा', 'कहानी पंजाब', 'शब्द', 'शब्द बूंद', 'हुण' और 'फिलहाल' आदि के अंक भी आए हैं। पत्रिकाएँ समाज और साहित्य में ताज़ा हवा के लिए, खुली खिड़की का काम करती हैं। इनके माध्यम से समसामयिक चिंतन, आलोचना, अनुवाद के अतिरिक्त विचार यात्रा भी हम तय करते हैं। यह पत्रिका संपादक पर निर्भर करती है कि वह प्राप्त हुई, आई सामग्री में से ही चुनकर या स्वनाम धन्य हस्ताक्षरों का चुनाव करके, अथवा परिचित सरोकारों से मिली रचनाएँ दे रहे हैं। या फिर 'साग्रह' लिखवाकर माँग कर, विषय विशेष पर सामग्री लिखवाकर पत्रिका को कालजयी बना रहे हैं।

पंजाबी साहित्यिक पत्रिकाओं में साल 2020 में उपर्युक्त पत्रिकाओं के अंक, विशेषांक आए हैं। लेकिन अधिकतर संपादकों को संपादकीय आलेख या स्वकथन लिखने की आदत नहीं। अगर है भी तो, नाममात्र की टिप्पणी लिखकर किनारा कर लिया जाता है। अगर गंभीर पत्रिका का दायित्व है कि नीति–रीति के अनुरूप, पत्रिका में शामिल सामग्री के अनुकूल, संपादकीय जरूर लिखा जाए। और कहीं–कहीं ऐसा हो भी रहा है। समस्या, प्रसंग, मुख्यधारा के अतिरिक्त अपने उद्देश्य, लक्ष्य को रूपायित करते संपादकीय भी दिए जाने लगे हैं। 'साहित्यिक एकम अक्खर', 'शब्द बूंद', 'फिलहाल', 'हुण' सरीखी पत्रिकाओं की तरह कुछ अकादमिक पत्रिकाएँ भी विश्वविद्यालयों से छपती हैं, तो उनमें संपादकीय शामिल रहते हैं। 'वाहगा', 'कवि शास्तर', 'राग' आदि पत्रिकाओं ने नए मान मूल्य भी स्थापित किए हैं। कविता, गज़ल, गीत, लघुकथा, कहानी के साथ आलेख, शोधपत्र, समालोचना, समीक्षा तो पत्रिका में रहती ही है। कथेतर विधा का प्रचलन भी धीरे–धीरे पंजाबी को प्रभावित कर रहा है। संस्मरण, डायरी, गद्यगीत, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज से आगे भी कभी–कभार इन या ऐसी पत्रिकाओं में, कुछ पढ़कर पाठक निहाल होता देखा गया है।

आज जो पत्रिकाओं में आ रहा है, भविष्य में उसी में से बहुत कुछ पुस्तकोपयोगी कहलाएगा। विवाद या चर्चा में रहेगा तो शायद कभी पाठयक्रम का हिस्सा भी हो सकता है। गुफ्तगू, मिन्नी कहानी, अणु, छोटे कलेवर की पत्रिकाएँ कहलाती हैं। लेकिन यहाँ संपादकीय सूझबूझ चौंकाने वाली मिलती है। व्यक्ति, लेखक की पत्नी से संवाद, लेखिका के पति से बातचीत, अनुवाद, सफरनामा, सचित्र सामग्री–बहुत कुछ ऐसा भी है, जो छात्रों, शोधार्थियों को उपयोगी लग सकता है। पत्रिकाएँ पृष्ठ कम करके, दाम बढ़ाने लगे। यह पाठक सहन नहीं करता। लेकिन प्रभावोत्पादक, प्रेरक

पत्रिकाओं के सामान्य अथवा विशेषांकों में ठोस सामग्री, पठनीय व ग्रहणीय लगे तो दो–दो सौ रूपए तक के 'फिलहाल' अथवा 'हुण' के अंक पंजाबी में बिकते भी हैं, सराहना भी पा जाते हैं।

साल 2020 में छपे हरियाणा, दिल्ली, जम्मू–कश्मीर, या अन्य प्रांतों में रहते हुए पंजाबी लेखकों की सूची पर्याप्त लंबी है। ठीक उसी तरह, जैसे कि अमरीका, कनाडा, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, जापान या अन्य देशों में गए प्रवासी पंजाबी लेखकों ने भी सफल साहित्य की रचना की है। आलोचना, काव्य, कथा, उपन्यास, अनुवाद या नाटक से आगे, अन्य विधाओं में भी ऐसे रचनाकारों ने पर्याप्त और संतोषजनक कृतियाँ वर्ष 2020 में पाठकों को दी हैं। लेखिकाएँ और लेखक, दोनों ही समान स्तर पर रचनारत नजर आते हैं।

हरियाणा के साहित्यकारों में डॉ. रमेश कुमार, सुदर्शन गासो, दर्शनसिंह, राजवंत कौर प्रीत, गुल्लू अच्चणपुरी, सुखबीर शर्मा, सुखवंत कौर व गुरजीत कौर के नाम सहज स्मरण आ रहे हैं। आलोचना, काव्य, कहानी आदि कई विधाओं में इनकी पुस्तकें 2020 में छपी हैं। 'नानक वाणी ते विचार' (गासो), 'अद्धी वाट दा सफर (दर्शनसिंह), मसले नैणां दे (रजवंत कौर प्रीत), इक्को वरगी गल्ल (गुल्लू अरछनपुरिया), 'गुरतेज कोहारवाला दी गज़ल दा अध्ययन' (सुखवीर शर्मा), 'किते मिलीनी पाएँ' (गुलवंत कौर संधू), 'खशबू कैद नहीं हुन्दी' (गुरप्रीत कौर) पुस्तकें उल्लेखनीय हैं। रचनाकार दिल्ली, हरियाणा, पंजाब में या अन्यत्र कहीं भी नौकरी में लगा, कारोबार की, या आवासी–निवासी कहलाता हो, पंजाबी लेखक, उसके लेखन की भी, उपेक्षा नहीं होनी चाहिए।

इन या ऐसे अन्य लेखक, देश–विदेश में कार्यरत, पंजाबी में रचनारत, सम्मान पा रहे हैं। इनकी विधाएँ अलग हैं, शैली, शिल्प और मुहावरे भी नवीनता लिए हुए हैं। हाँ, कथा के क्षेत्र में 'कैनेडा दीआं चोणवीआं कहाणीआं' और 'चोणवी बरतानवी' पंजाबी कहानी दो संकलन, क्रमशः हरमहिंदर चहल और हरजीत अटवाल के संपादन में सामने आए हैं। इनमें पंजाब से जा चुके, प्रवासी कथाकारों की कहानियों को संकलित किया गया है। यों इधर दैनिक पंजाबी ट्रिब्यून में ही 'आज़ादीआं' –सुखमिंदर सेखों, 'मौसम ठीक नहीं'– परगटसिंह सतोज, 'पछाण'– के.एल. गर्ग, 'रब्ब ते रूत्तां' –दपील कौर टिवाणा, 'जीऊणा मरणा'– गोवर्धन गब्बी, 'रुत फिरी वण कंविया'– दीप दविंदर सिंह, 'अग्ग बनण वाला' –जतिंदर हांस और 'हारीं ना वचनिया' –गुरमीत कडिय़ालवी जैसी डेढ़ दर्जन कहानियाँ रविवारी संस्करणों में भी सराही गई हैं।

कहानियों में बलीजीत की 'किसे पातर दी उडीक विच' सहित 'जिस तन लागे' (प्रेम मान), 'दूरीआं'–जिंदर, 'रब्ब जी'– गुरमीत कडिय़ालवी, 'कवणु देस है तेरा'–केसरा राम, 'मस्त'–हरजीत अटवाल, 'गति'–संदीप समराला, जैसी चौदह कथाओं को साल 2020 की चर्चित, रेखांकित रचनाओं में गिना जा रहा है। यों ही 'नोबल कमीना वायरस' –केसरा राम, 'छण–छण'–भगवंत रसूलपुरी की कहानी चर्चा में आई है। निरंजन वोहा, किरपाल कजाक, गुल चौहान, राकेश रमन, हरप्रीत सेखा, अतरजीत, मनमोहन बावा, बलबीर परवाना, मुख्तारसिंह, सरघी, प्रेम गोरखी, शशि समुंदरा, गुरप्रीत, जतिंदर सिंह हांस, प्रेम प्रकाश, जसवीर भुल्लर आदि समकालीन लेखकों की 2020 में छपी कहानियों पर बात चलती रही है। त्रैमासिक पत्रिका 'शब्द' ने तो परिशिष्ट ही 160 पृष्ठों में इस साल के कथाक्रम पर निकालने की घोषणा की है। 'अमरीका दीआं चोणवीआं कहाणीआं' संकलन रवि शेरगिल के संपादन में दिल्ली के आरसी प्रकाशन से आया है।

पंजाबी कहानी में 'तीन पीढिय़ाँ' दनदनाती रचनारत हैं। इनके विषय, शिल्प, शैली और भाषा के मुहावरे में समानता होते हुए भी भिन्नता, विविधता झाँकती है। इनके तेवर, ताजगी और आस–पास, समाज में घटित समस्याओं को ये पीढिय़ाँ डील कर रही हैं। उन्हें ट्रिटमेंट देकर, पाठक, संपादक, प्रकाशक को अपनी–अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं। कोरोना, शिक्षा, बेरोजगारी, धार्मिक उन्माद, आर्थिक विघटन, जैसे मुददों पर लिखने में ये लेखक सफल कहलाए हैं।

रोजाना देश सेवक, अजीत, नवांज़माना, जागरण पंजाबी जैसे अखबार साहित्यिक पृष्ठ रविवार को देते रहे हैं। इनमें उपयोगी, पठनीय सामग्री दैनिक पंजाबी ट्रिब्यून की तरह ही आती रही है। मासिक पंज दरियाँ, शब्द बूँद व अन्य कुछ पत्रिकाओं के साथ त्रैमासिक सिरजणा, कहाणी धारा, प्रवचन, लकीर, चिराग, समकाली साहित, एकम, अक्खर आदि भी पंजाबी में ताज़ा हवा के झोंके की तरह सामग्री प्रस्तुत करते हैं। फिलहाल, वाहघां, हुंण की अलग पहचान है। समग्रतः 2020 साल का पंजाबी साहित्य संतोषजनक है।

– साहित्य संगम 239, दशमेश एन्क्लेव, ढकौली (जीरकपुर के समीप), चंड़ीगढ़–140603

❑❑❑

11

बांग्ला साहित्य

डॉ. सुव्रत लाहिड़ी

2020 मानव सभ्यता के इतिहास का भयावह अध्याय है। कोविड–19 के कारण हर व्यक्ति आशंका, आतंक और जीवन की अनिश्चितता से ग्रस्त है। किसी से आज मुलाकात हुई तो कल क्या होगा कुछ भी पता नहीं। डर, चारों ओर कोरोना का डर। कोरोना महामारी बनकर छा गया। इस धरती के कोने में हर आदमी के लिए एक नया अलंकार यानी मुखौटा। महामारी की भाषा में मास्क पहनना बाध्यता हो गई। अब सान्निध्य की जगह पर अपनों से भी दूरी बनाए रखना विवशता हो गई। महामारी ने धनी, दरिद्र में कोई भेद नहीं रखा। विश्व के अति विकसित देश या विकासशील देश अथवा गरीब देश सब को अपनी चपेट में ले लिया। हर जगह कामकाज ठप्प। सब के सब तालाबंदी के घेरे में घरबंद रहे। दिन की रोशनी में भी सन्नाटा छाया हुआ था। भूतहा परिवेश स्कूल, कॉलेज, दफ्तर, बाजार हर जगह एक भी आदमी नज़र नहीं आता। सब थम सा गया। मानो प्रकृति ने ही हड़ताल कर दिया है। केवल अस्पतालों को हड़ताल से प्रकृति ने मुक्त रखा है। स्वास्थ्य कर्मी एस्ट्रोनॉट्स की तरह अपने तन को रक्षा कवच में ढक कर अपनी जान जोखिम में डालकर कोरोना पीड़ित लोगों की सेवा में लगे हुए हैं। खुशी या गम की चहलकदमी है। बेचैन हैं सारे लोग।

सृजनशील और सोच विचार करने वाले लोग ऐसे परिवेश में खुद भी बेचैन हैं। उनकी लेखनी भी अपने सारे अनुभव व अनुभूतियों को शब्दों में ढालने के लिए बेचैन है। वे आसन्न संकट को शब्दों में रूपांतरित कर आनेवाली पीढ़ी के लिए दस्तावेज के रूप में रखना चाहते हैं। लोगों तक अपनी बात पहुँचाने की आतुरता भी लेखक और बुद्धिजीवियों में है। पत्र–पत्रिकाएँ और पुस्तक प्रकाशन से जुड़े लोग लेखकों की अनुभूतियों को लोगों तक पहुँचाने की सामाजिक जिम्मेदारी निभाने का प्रयास कर रहे थे।

लॉकडाउन घोषित होने के बाद बंगाल का प्रकाशन केंद्र कॉलेज स्ट्रीट का 'बोइपाड़ा' और जिला सदरों के प्रकाशन केंद्र भी बंद रहे। छापाखाना भी बंद। प्रकाशन कार्य कुछ समय के लिए ठप्प हो गया। विकल्प के रूप में ई बुक, ई पत्रिका, दैनिक पत्र–पत्रिकाएँ या विभिन्न डिजिटल माध्यम ने लोगों की पुस्तक की भूख को मिटाने का प्रयास किया। कुछ बड़े प्रकाशक पुस्तक प्रकाशित करने का काम आगे बढ़ाते गए। धीरे–धीरे रचनात्मक कृतियाँ लोगों के हाथ आने लगीं। कम संख्या में उपन्यास, कहानी या कविता संकलन अथवा आलोचनात्मक कृतियाँ प्रकाशित होने लगीं। क्योंकि नाट्य मंचन बिल्कुल बंद रहा इसलिए नाट्य लेखन बहुत ही कम हुए। कुछ एकांकी संकलन प्रकाशित हुए।

उपन्यास

'हाय सजनी' : बांग्ला के प्रख्यात उपन्यासकार समरेश मजूमदार ने लॉकडाउन काल में 'हाय सजनी' उपन्यास की रचना की है। पत्र भारती ने इसका प्रकाशन किया। 'हाय सजनी' की कथा देखी सुनी घटनाओं के आधार पर उपन्यासकार में अपने अनुभव को अभिव्यक्त किया है। मृणालिनी और अमित इस उपन्यास के केंद्रीय पात्र हैं। मृणालिनी एक रूढ़िवादी अमीर परिवार की बेटी है। अमित कस्बे से आया हुआ बीस बाईस साल का लड़का है। वह विश्वविद्यालय में एम.ए. कर रहा है और बहुत ही साधारण परिवार का लड़का है।

मृणालिनी कॉलेज में पढ़ती है। दोनों का परिचय भी अजीब तरह से होता है। मृणालिनी कॉलेज गाड़ी से आया जाया करती है। एक दिन कॉलेज में जल्दी छुट्टी हो जाती है। मृणालिनी की गाड़ी आने में अभी चार घंटे की देर है। उसने तय किया कि आज वह बस से घर लौट जाए। जबकि इसके पहले कभी वह बस पर नहीं चढ़ी है। वह थोड़ी नर्वस लग रही थी। उसके घर को जाने वाली दो नंबर बस पर वह चढ़ने ही वाली थी कि किसी लड़के की आवाज में हैमलेट नाटक का विख्यात डायलॉग "टू बी और नॉट टू बी" सुनाई दिया। मृणालिनी रुक कर देखने लगी तो वह लड़का यानी अमित नजदीक आकर कहने लगा तो नॉट टू बी। मृणालिनी ने हाँमी भरी। परिचय धीरे–धीरे गहराया और दोनों में प्रेम हुआ। अमीर लड़की और गरीब लड़का दोनों में प्रेम यानी बहुत ही घिसी पिटी कथा है। पर उपन्यासकार ने साधारण सी इस प्रेम कथा को जीवन बोध से जोड़कर एक नया आयाम दिया। उपन्यास शुरू से अंत तक जीवन यथार्थ और संपर्क की खींचातानी के द्वंद्व को चित्रित करता रहा है। मृणालिनी और अमित को केंद्र में रखकर उपन्यासकार समरेश मजूमदार ने और कई चरित्रों को विकसित किया है। वास्तविकता को जीते हुए बार–बार बदलता जीवन बोध उभकर सामने आया। मृणालिनी आम प्रेमिका से अलग है। उसमें गहराई है। फिर भी मृणालिनी और अमित का संबंध अंततः त्रासद बनकर रह जाता है। समाज कितना भी प्रगतिशील बन जाए लेकिन धन और पारिवारिक रूढ़िवाद से हम शायद मुक्त नहीं हो पाए हैं।

'आलोकरेखा' : यह समरेश मजूमदार का दूसरा उपन्यास है जिसका प्रकाशन आनंद पब्लिशर्स ने किया। ब्रिटिश जमाने के एक चाय बागान को केंद्र मे रखकर रचा गया कृत्य इस उपन्यास का आधार है। स्कॉटलैंड के मुख्य कार्यालय से मैनेजर बना कर भेजा गया आयन स्कॉट इस उपन्यास का हम पात्र है। बंगाल और असम के सीमावर्ती इलाके के चाय बागान में आने के बाद आयन स्कॉट वहाँ के लागों के परिवेश में एकदम घुल मिल जाता हैं।

अंग्रेज जमाने का चाय बागान, वहाँ का मौसम, आसपास के जंगल का जीवन, बीमारी से घिरे रहते लोगों से उसका सरोकार हुआ। आत्मीयता बन गई। स्कॉट बहुत ही संयमी व्यक्ति है। पर चाय बागान के छोटे साहब बिल्कुल विपरीत चरित्र है।

जानवर हाथी सब इस उपन्यास के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। साथ ही चाय बागान बनाने के संघर्ष की कहानी को बड़ी बारीकी से उकेरा गया है। चूँकि उपन्यासकार स्वयं उत्तर बंगाल इलाके के रहने वाले थे इसलिए अपने व्यक्तिगत अनुभव से इस उपन्यास के ताने–बाने को नया आयाम दिया है।

'बेआबरू' : गोपाल मिस्त्री द्वारा रचित यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। बांगलार मुख प्रकाशन ने इसे प्रकाशित किया है।

मनुष्य के अवचेतन मन में होते रहते उथल–पुथल ही इस उपन्यास का आधार है।

प्रेम, मानसिक लगाव और अंतरंगता का भूखा दिव्यकांति इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है। सौतेली माँ के कारण वह स्नेह से वंचित है। हर स्त्री से वह प्रेम की आकांक्षा रखता है। बंजर जीवन जमीन को प्रेम वर्षा से भिगोने के लिए व्याकुल रहता है प्रेम का बादल। सभी स्त्रियाँ उसके प्रति उदासीन हैं। ऐसी हालत में दिव्यकांति एक दिन

नमिता भाभी के प्रेम जाल में फँस जाता है। धीरे–धीरे उसके भीतर तीव्र आत्मग्लानि और अपराध बोध होता है। इस पड़ाव से छुटकारा पाना चाहता है। भूलना चाहता है नमिता भाभी का यह अध्याय। लेकिन फिर वह अपने सहकर्मी की पत्नी के प्रेम जाल में फँस जाता है। वह मुक्त होना चाहता है इस तरह के छद्म संबंध से भीतर ही भीतर उस की छटपटाहट बढ़ती जाती है।

अंततः उसके जीवन में बड़ा परिवर्तन आता है। सुमि उसके जीवन में आती है। उससे वह विवाह कर लेता है। दोनों एक दूसरे से बेतहाशा प्रेम करते हैं। साल भर का विवाहित जीवन बहुत सुखमय था। एक तरफ उसका सुखी विवाहित जीवन और दूसरी तरफ उसका अतीत। वर्तमान और अतीत के दो पाटों के बीच उसका अवचेतन मन पिसता जा रहा है। भीतर ही भीतर दिव्यकांति बेचैन हो उठता है। वह अपनी पत्नी से सब कुछ कह देना चाहता है पर कह नहीं पाता। एक दिन पत्नी की गैरमौजूदगी में वह आत्महत्या कर लेता है। दिव्यकांति की आत्महत्या का गहरा असर सुमि पर पड़ता है। वह भी अपने जीवन के अतीत के प्रेम के बारे में सब कुछ बताना चाहती थी पर बता नहीं पाई। सुमि को लगता है कि दिव्यकांति उसके अतीत के बारे में सब कुछ जान गया था इसीलिए उसने आत्महत्या कर ली। इस घटना ने सुमि के अंतर्मन को झकझोर दिया। सुमि का मन आत्मग्लानि और अपराध बोध से छटपटाने लगता है। अंततः वह भी आत्महत्या कर लेती है। दोनों के जीवन का सबकुछ बेआबरू हो जाता है।

चेतन अवचेतन का द्वंद्व और दुखद अंत इस उपन्यास का कथानक है।

'सेफ्टी पिन' : यह स्मरणजीत चक्रवर्ती की रचना है। आनंद पब्लिशर्स ने इसे प्रकाशित किया है। उपन्यास के कथानक का विस्तार कई पीढ़ियों तक है। प्रेम से वंचित लोगों की दर्द भरी कहानी इस उपन्यास का आधार है। कई शताब्दियों तक भिन्न–भिन्न समय को उपन्यासकार ने इसमें बाँधा है। तीन कालखंड हैं– 1853–55 तक चला क्रीमिया का युद्ध, दूसरा महायुद्ध और नक्सल आंदोलन तक यादों की एक लंबी यात्राएँ हैं इस उपन्यास में एक छोटा सा सेफ्टीपिन इस यात्रा का संपर्क सूत्र है। सेफ्टी पिन यहाँ एक प्रतीक मात्र है। बदलते वक्त में खोने और पाने की यंत्रणा को अभिव्यक्त किया गया है। कई पीढ़ियों की लंबी यात्रा में कई पात्र जैसे वाटर और वर्जीनिया, रसिक और मेरी, साहिमा और पापू, विराज और सिएना के व्यक्तिगत संपर्क, दर्द को पाने न पाने की यंत्रणा में बाँधकर उपन्यासकार ने इस उपन्यास को बहुआयामी बना दिया है।

'एंजेल' : कुणाल बसु का रिजल्ट और देश का विशेष प्रकाशन है यह उपन्यास। कुणाल बसु की जड़ भारत में है पर कर्म सूत्र विदेश में है। वे अंग्रेजी और बांग्ला दोनों भाषाओं में साहित्य सृजन करते हैं।

उल्लिखित उपन्यास संगृहीत सत्य और कल्पना का अद्भुत सम्मिश्रण है। इस उपन्यास की प्रमुख चरित्र एंजेल पेरू की रहने वाली विदेशी महिला है। पेरू की संस्कृति उसकी रगों में है। भारत आने के बाद भारतीय संस्कृति के साथ भी वह घुल–मिल जाती है। दो संस्कृतियों में टकराव ना होते हुए भी आश्चर्य, आकर्षण और संवाद स्थापित होता है। उसकी वृद्धा माँ आदिम जनजाति के प्रतिनिधि के रूप में लंदन जा रही है एक जनजातीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए। हवाई जहाज में अचानक एंजेल की माँ बहुत अस्वस्थ हो जाती है। वृद्धा को बचाने के लिए हवाई जहाज को कोलकाता में उतारना पड़ता है। कोलकाता में घूमते हुए मैदान में बाउल और फकीरों से उसकी मुलाकात हो जाती है। किसी को बिना कुछ कहे वह उनके साथ दामोदर नदी के किनारे चली जाती है।

एंजेल की संस्कृति यानी उसकी भाषा, खानपान, रहन–सहन सब कुछ अलग तरह का है। न वह किसी की भाषा समझती है और न ही कोई उसकी। नगर सभ्यता से जिसका कोई मेल नहीं है। फिर भी कहीं न कहीं लोक–संस्कृति में दो भिन्न संस्कृतियों की जड़ है। प्राकृतिक कारणों से देश, महादेश अलग–अलग हो गए पर आत्मीयता का बंधन तो है और भी कई अनुघटक चरित्र इस उपन्यास में हैं।

'रहस्ये घेरा सुंदरबन' : इ आर सी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित देवाशीष बंदोपाध्याय द्वारा रचित भिन्न स्वाद के इस उपन्यास के केंद्र में सुंदरबन का जंगल और वहाँ के विभिन्न निजी विकास से जुड़े आदमी और प्रकृति हैं। सुंदरबन गंगा, मेघना और ब्रह्मपुत्र तीन नदियों की घाटी है। यह रहस्यमय जंगल है। इसी प्रकृति के रहस्य को लेखक धीरे–धीरे कलमबद्ध करते हैं।

विश्व में शायद यह अकेला जंगल है जहाँ बाघ और मनुष्य एक साथ खतरों से घिरा जीवन गुजारते हैं। मैंग्रोव जंगल में मौलि, बावली, माझि के जीवन संघर्ष की कथा है। वहाँ के सभी जीव जंतु, बाघ, गोसाप, पंछी इस उपन्यास के पात्र हैं। गाइड विनय इस उपन्यास का कथावाचक है। वह पर्यटकों को सुंदरबन घुमाते हुए वहाँ के जीवन, प्रकृति और जंगल की कथा सुनाता है।

वह गोसाबा द्वीप के नाम की बहुत सटीक व्याख्या करता है... गो यानी गोरु (गाय), सा मतलब साँप और बा का मतलब बाघ। तीनों के प्रथम अक्षर मिलकर गोसाबा नामकरण हुआ।

जंगल के इलाके में प्राकृतिक तूफान और वहाँ के रहने वालों के जीवन धर्म के लिए खतरनाक अंतरिक्ष तूफान का बहुत ही वास्तविक चित्र उपन्यासकार ने किया है। जीविका के लिए शहद संग्रह करने, कैसे माउली या मछली और केकड़ा पकड़ने वाला मछुआ या माजिदा खतरों से खेलते हैं। कभी बाघ के शिकार को जाते हैं या कभी तूफान में खो जाते हैं। इंतजार करते घरवाले निराश होकर मृत मान लेते हैं। इसमें सुंदरवन का यथार्थ चित्रण मिलता है।

कई प्राकृतिक आपदाओं और ध्वंस लीला ने हमें सतर्क किया है कि प्राकृतिक भार साम्य की रक्षा करना ही इस धरती को वासयोग्य बनाने की एकमात्र कुंजी है। इसी अवधारणा के परिप्रेक्ष्य में देवाशीस मैत्र ने 'अचिन पाखि' उपन्यास को रचा है।

'अचिन पाखि' : वर्ड विंग ने इस उपन्यास का प्रकाशन किया है। अमृत, शंख, व्रत और अर्चन इस उपन्यास के प्रधान चरित्र हैं। ये चारों उत्तरबंग के एक जंगल में प्रवासी पक्षी देखने गए हैं। अमृत किसी दल का नेता है। उनका एक ही उद्देश्य है प्रकृति की रक्षा करना। और भी ग्यारह लोग इस संरक्षित जंगल में आए हैं।

कुछ लालची लोग जंगली जानवरों को मारकर उनकी खाल व दाँत तथा जीवित पंछी पकड़ कर विदेश में स्मगलिंग का काम करते हैं। जंगल में जुटे पक्षी प्रेमी लोग एक अनजान पक्षी की सुरीली आवाज से आकर्षित हो जाते हैं सभी तन्मय होकर सुनते हैं। वहीं वे आसपास मारे गए पंछियों को जमीन पर पड़ा देखते हैं। शिकारी जो बेचने लायक हैं उसे रखकर फंदे में फँसे बाकी पंछियों को निर्ममता से मारकर फेंक देते हैं।

धरती और सभ्यता को बचाने के लिए मानव जाति को आगाह करने वाला 'जय' एक महत्वपूर्ण उपन्यास है।

'वृक्ष अनुवाद' : यह श्रीजात का सृजन है और आनंद पब्लिशर्स का प्रकाशन है। अनोखे विषय के परिप्रेक्ष्य में यह उपन्यास रचित है। दो अलग–अलग भाषा के कवि और उनके अनुवाद इस उपन्यास के केंद्रीय विषय हैं। श्री राधे स्वयं एक कवि और सफल अनुवादक भी हैं। कथा का जाल बुनते हुए उपन्यासकार अनुवाद दर्शन की भी चर्चा करते हैं। इस उपन्यास में तीन प्रमुख चरित्र हैं। अल्जाइमर से पीड़ित प्रख्यात अनुवादक विलियम ब्राइट, उनकी बेटी अनुवादिका और प्राध्यापिका कैरोल एवं अंग्रेजी साहित्य का विद्यार्थी सम्यक। अमरीका के 'हे फेस्टिवल' में अपने अनुवाद पाठ के लिए कोलकाता से सम्यक, कैंब्रिज से कैरोल आए हैं। वहीं दोनों में परिचय होता है और धीरे–धीरे परिचय गहराता है। प्रोफेसर ब्राइट भी जीवन के अंतिम दिनों को गुजारने के लिए समुद्र के पास एक वृद्ध आवास में रहने लगे हैं। इनके अलावा सम्यक की प्रेमिका पूर्णिया ब्राइट की एक पड़ोसन मारता, अनुष्ठान की संचालिका, पत्रकार एमिली आदि इस उपन्यास के अन्य पात्र हैं।

पूरे उपन्यास में असमय दिवंगत अमरीकी कवि सिलविया प्लॉथ और बांग्ला कवि जीवनानंद दास पूरी तरह हावी हैं। अनुवाद को केंद्र में रखकर इस उपन्यास का कथावृत्त रखा गया है।

'हावड़मंगल' : देवाशीष घोष द्वारा रचित 900 साल के लंबे समय तक विस्तृत, दक्षिणी राढ़ अंचल को लेकर रचित उपन्यास है। सप्तधा प्रकाशन ने इसे प्रकाशित किया है। यह इतिहास के तथ्यों से समृद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है। इतिहास के साथ दर्शन और पौराणिक कथा भी जुड़ी हुईं हैं। इतने लंबे समय को ही इतिहास आख्यान में रूपांतरित किया गया है ढेर सारी परतें हैं और विभिन्न कथाएँ सम्मिलित हैं।

राजा लक्ष्मण सेन के समय से आरंभ होकर कवि भारत चंद्र के समय तक लंबी विचार यात्रा पर यह उपन्यास समाप्त होता है। बख्तियार खिलजी ने राजा लक्ष्मण सिंह के राज्य को दखल कर लिया। पूरे हावड़ा अंचल में बदलाव आने लगा।

तत्कालीन समय में धर्म और दर्शन पर आए संकट को उपन्यासकार ने चित्रित किया है। दक्षिण अंचल में बौद्धविहारों की बढ़ती संख्या से हिंदू धर्म की दार्शनिक विचारधारा पर संकट आता है। इसी कारण से श्रीधराचार्य ने हिंदू विचारधारा को बचाए रखने के लिए 'न्यायकंदली' की रचना की। दूसरी ओर राजा का नैतिक पतन, समाज के खोखलेपन, राष्ट्र की ह्रासोन्मुखी संस्कृति का भी उपन्यासकार विश्लेषण करते हैं।

भूरी श्रेष्ठ राजा धीरे–धीरे अपने को प्रतिष्ठित कर रहे थे। नवद्वीप में श्री चैतन्य के नेतृत्व में भक्ति आंदोलन संगठित हो रहा था। आम लोग इस आंदोलन से अपने को जोड़ रहे थे।

शेरशाह, हूमायूँ जैसे चरित्र भी उस उपन्यास में अहम् हैं। भूरी श्रेष्ठ राजा रूद्र नारायण की पत्नी रानी भावशंकरी भी महत्वपूर्ण संघर्षशील स्त्रीपात्र हैं। इन्होंने पठानों को युद्ध में पराजित किया।

बंगाल में विभिन्न धर्म और संस्कृति के मेल मिलाप से समन्वयवादी संस्कृति के विकास को भी देवाशीष घोष ने बड़ी सफलता से दिखाया है। वस्तुतः हावड़ मंगल एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है और भी कई उपन्यास इस कालखंड में प्रकाशित हुए।

कहानी : इस वर्ष कहानी संकलन का प्रकाशन हुआ है। जिनमें कुछ चर्चित कहानी संकलनों की चर्चा की जा सकती है।

'गल्प संग्रह' : तिलोत्तमा मजूमदार की 45 कहानियों का संकलन है यह गल्प संग्रह। जिसका प्रकाशन आनंद पब्लिशर्स ने किया है।

डीपी बॉस तिलोत्तमा मजूमदार की कहानियों का आधार है। वह पितृ सत्तात्मक समाज में स्त्रियों के संकट, संघर्ष, वंचना, मुक्ति की छटपटाहट आदि विषय को लेकर बार–बार सवाल उठाती हैं। अनेदखी पर ज्वलंत समस्याओं को लेकर रचित कहानियों में समाज पर करारी चोट की गई है।

इस संग्रह की कहानियों में समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण मिलता है। उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, आम मेहनतकश वर्ग की प्रतिनिधि स्त्री चरित्र इसमें आँके गए हैं। इसी प्रकार नई पीढ़ी के जीवन दर्शन, बोध और प्रेम को लेकर उनकी उपभोक्तावादी दृष्टि झलकती है। इनमें आधुनिक जीवन का खोखलापन है तो उत्तरबंग की लोककथाओं को भी कहानी में ढाला गया है।

संग्रह की पहली कहानी 'अनुच्चारित' माँ और बेटी के द्वंद्व की कथा है। अरुंधती बड़े ओहदे पर काम करती है। वह अपने जीवन के निर्मम सत्य को अपने में दबाए बेटी और बेटे के साथ जीती है। बेटी यही मानती है कि माँ के कारण ही उसके पिता उन लोगों को छोड़कर लापता हो गए हैं। जबकि अंरुधती अपनी संतान के प्रति माँ–बाप दोनों का दायित्व सँभालती है। माँ और बेटी में निरंतर इसी विषय को लेकर द्वंद्व चलता रहता है। अंततः एक दिन अंरुधती भीतर से टूट जाती है और अपनी सारी गोपनीयता बच्चों के सामने खोलने को बाध्य भी हो जाती है।

'रूपोंर चामच निए जन्मानो' इस कहावत को लेकर लेखिका अपनी कहानी 'रूपोर चामच' में अद्भुत कथानक बुनकर पाठकों के सामने रखती है। कहानी का आरंभ एक चम्मच को लेकर होता है। एक अभिजात विमानयात्री विमान सेविका के दिए हुए एक चम्मच को चाँदी का समझकर अपनी जेब में छिपा लेता है। कथा के विकास क्रम में चम्मच कई हाथों से होकर अत्यंत दरिद्र गर्भवती स्त्री के पास पहुँचती है। वह भी इसे चाँदी का चम्मच मानती है। सोचती है कि गर्भ में पल रही संतान के जन्म लेने के बाद वह इस चम्मच को

उसके मुँह में डालेगी। उसकी संतान चाँदी का चम्मच लेकर जन्मेगी। चम्मच इस कहानी में खोखली सामाजिक मर्यादा और सपने के प्रतीक के रूप में आया है।

'पयमंतिनी' एक लड़की के शारीरिक दोस्त को लेकर रची गई कहानी है। इस कहानी के जरिए उन्होंने पढ़े–लिखे अभिजात परिवार के दिमागी दिवालियापन और दकियानूसी रूढ़िवादी विचारधारा को उभारा है।

आयन सुशील और सुंदर लड़की है। पर उसके दोनों पैरों की छोटी उंगलियों पर एक और उंगली है और उसमें नाखून भी है। इसीलिए उसे दिव्यांग कहा जाता है। बड़े घर में शादी होती है। पति बाहर रहता है। सास हेडमिस्ट्रेस है। उसे बहुत मानती भी है। ईमान को डेंगू होता है और ससुराल में एकाध दुर्घटना घट जाने के कारण उसे अपशकुन कह दिया जाता है और वह मायके में लौटा दी जाती है। शिक्षित ससुराल का कुसंस्कार, अमानवीयता और विचार का खोखलापन उभर कर सामने आता है। उसका पिता लाचार होकर समझौता कर लेता है। समाज में अक्सर ऐसा होता रहता है। स्त्रियों को हाशिए पर रखने वाले समाज और परिवार की कुछ निर्ममता का चित्रण इस कहानी में किया गया है।

'झिलम नदीर जल' झिलम और अरण्य के प्रेम, लगाव और विच्छेद की कथा है। 'झुटो मुक्तोर गल्प' कामकाजी महिलाओं के रोजमर्रा की कथा है। अदिति, आल्पना और पियालि के जीवन के पाने, न पाने, पूर्णता और अपूर्णताओं की कथा है। अधिकांश कहानियों में स्त्री जीवन का संकट, पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्रियों की वंचना, उत्पीड़न की कथा है।

'15टि गल्प' : 2020 का महत्वपूर्ण कहानी संकलन है। आलोक गोस्वामी के इस संकलन को सृष्टिसुख ने प्रकाशित किया है। उड़ानकथा, फेरारी बातास, अपरिवर्तनीय, पिपासार खान, तबु अंधकार आदि कहानियों के केंद्र में आम लोगों का संघर्षमय जीवन है। कैसे लोग विभिन्न घात–प्रतिघात उतार–चढ़ाव पार करने की कोशिश में रोज लड़ते रहते हैं यह चित्रित किया गया है। मानवीय संबंधों को महत्व देते हुए एक दूसरे का साथ देते हैं। सुंदर जीवन समाज और दुनिया का सपना देखते हैं। इनकी कहानियों में जीवन के अनुभव को आगे का पाथेय माना गया है।

'कामरेड ओ अन्यान्य गल्प' : बांग्ला की नई पीढ़ी के कहानी क्षेत्र में सौरभ होसेन उल्लेखनीय नाम है। उन्होंने अपनी कहानियों में भैरव नदी के किनारे तमाम गाँव और गाँववासियों के जीवन के चित्र को बहुत ही बारीकी से उकेरा है। गाँव के जीवन में समय के साथ बदलते जीवनबोध और मूल्यबोध को अपनी कहानियों में विश्लेषित किया है। भोगवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति के खिलाफ निरंतर संघर्ष करते गाँव के सत्यनिष्ठ और निश्छल संपर्क में आस्था रखनेवाले चरित्रों का सृजन किया है।

इस संकलन में कुल 9 कहानियाँ हैं। जीवन के तीखे अनुभवों से ये कहानियाँ समृद्ध हैं। ग्रामीण भाव बोध से भरपूर हैं इनकी कहानियाँ। 'फडुगाछाल' का प्रमुख चरित्र फडु खजूर गाछ काटकर और नारियल पेड़ से डाँग उतारकर अपना पेट पालता है। पुरखों से मिली यही उसकी जीविका है। पेड़ से गिरकर उसका पैर टूट जाता है। अब वह अपनी टूटी–फूटी झोपड़ी में पड़ा हुआ है। खजूर गाछ काटने का समय आ गया है परंतु गाँव में गाछ काटने वाला कोई नहीं है। फडु की लाचारी को बड़ी मार्मिकता से लेखक ने चित्रित किया है। ग्रामीण समाज में जीविका के लिए लोग तरह–तरह का पेशा अपनाते हैं।

'लाल घोड़ा' ऐसी ही एक विचित्र करुण कहानी है। एक बूढ़ा मालिक इस कहानी का केंद्रीय पात्र है। बुढ़ापे के कारण दोनों इस दुनिया में अप्रासंगिक हो गए हैं क्योंकि ये अब किसी काम के लायक नहीं हैं। घोड़े की जुबानी यह कहानी कही गई है। जीवन भर मेहनत करने के बाद अब हो रही दुर्दशा का विवरण पाठक को भीतर से झकझोर देता है।

'भुंईमानुष' कहानी में जमीन खोकर बेघर हुए किसान की यंत्रणा और दर्द का मार्मिक चित्रण किया गया है। खेती की जमीन और किसान के अंतर्संबंध को विश्लेषित करते हुए कहानीकार ने

ईंटभट्टी के लिए किस तरह जमीन का दखल किया जाता है उसका चित्रण किया है। जमीन से बेदखल होने के बाद किसान और उसका परिवार बेरोजगार हो जाते हैं। फाँके की जिंदगी जीने के लिए बाध्य हो जाते हैं या मजदूरी के लिए शहर को भागना पड़ता है। पर ऐसा क्यों होता है। बहुत सारे यथार्थ सवाल कहानीकार ने इस कहानी के माध्यम से उठाए हैं।

'कॉमरेड' इस संग्रह की एक राजनीतिक कहानी है। एक ईमानदार राजनीतिक कार्यकर्ता इस कहानी का केंद्रीय चरित्र है। बहुत दिनों तक एक दल का शासन रहने पर कुछ अवसरवादी इसका फायदा उठाते हैं। दूसरों को वंचित कर स्वयं ही सारी सुख सुविधाएँ बटोरते हैं। दूसरी ओर कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो अपने दल के आदर्श और विचारधारा पर विश्वास रखते हुए आजीवन पार्टी के साथ रहते हैं। जनकल्याण और समाज कल्याण उनका व्रत होता है। सालाम ऐसा ही एक आदमी है जो अपनी पार्टी के आदर्श और विचारधारा के साथ ईमानदारी से जुड़ा हुआ है। सत्ता बदल जाने पर कुछ लोग दल बदलकर सत्तारूढ़ पार्टी में चले जाते हैं। पर समर्पित कॉमरेड ऐसा नहीं करते क्योंकि उनकी आँखों में इनकलाब का सपना होता है। अभियान पब्लिशर्स ने इसे प्रकाशित किया है।

'अ–रूपकथा' : आईबी चट्टोपाध्याय की 18 कहानियों का संकलन है अ–रूपकथा जो परंपरा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ है। मनुष्य जीवन को लेकर कभी–कभी कल्पना में भी जीत है। लेकिन यथार्थ जमीन पर जीवन की तरह–तरह की जटिलताएँ सामने आकर जब उसे झकझोर देती हैं तब उसकी सारी कल्पनाएँ टूट जाती हैं। मनुष्य का जीवन कभी सीधे रास्ते नहीं चलता है, उसमें कई घुमाव हैं, कई पड़ाव हैं, कई कर्व मोड़ हैं। मनुष्य जगत के विचित्र अनुभवों को केंद्र में रखकर कहानियों का सृजन किया है। जीवन में सब कुछ अनिश्चित है। होनी और अनहोनी का द्वंद्व चलता रहता है।

एक ही परिवार की दो बेटियों के विवाह की समस्या 'अ–रूपकथा' कहानी के केंद्र में है। मातृत्व की समस्या उसका विश्लेषण, जन्म देने के बावजूद कोई स्त्री माँ नहीं बन जाती है वैसे ही बिना जन्म दिए भी कोई माँ हो सकती है आदि 'अ–रूपकथा' का मूल विषय है। 'प्रतीति' कहानी में दिव्यांग बच्चे को लेकर माता–पिता के मानसिक द्वंद्व का मनोविश्लेषण किया गया है। इस संकलन की सभी कहानियों में विभिन्न चरित्रों, परिवार और समाज का मनोविश्लेषण किया गया है।

'समीर रक्षितेर अनु गल्प' : यह समीर रक्षित की लघु कथाओं का संकलन है और दिया प्रकाशन ने इसे प्रकाशित किया है। 1969 से 2019 तक के लंबे कालखंड की विभिन्न घटनाएँ इस संकलन की प्रेरणा हैं। बाल विमर्श की कथाएँ भी इसमें मिलती हैं।

'दिन जाय' में किशोर आनंद की माँ अंधी है, पिता बढ़ई का काम करता है। आनंद घर का सब काम–काज नन्हें–नन्हें हाथों से करता रहता है। मसाला पीसता है टयूबवेल से घड़े में पानी भर कर लाता है। सारा काम–काज बड़े आनंद से करता है। वह सपना भी देखता है कि कभी तो अच्छे दिन आएँगे और उसे बहुत सारी खुशियाँ मिलेंगी। जीवन की निर्मम वास्तविकताओं को झेलते हुए भी वह किशोर सदा हँसमुख रहता है। वहीं पर उसका आनंद नाम सार्थक हो उठता है।

'पांजा' लघु कथा में पांजा एक बाल मजदूर है। 7 साल तक कोलकाता के कई होटलों में वह काम करता है। हरि साधु की दुकान में काम करते हुए उस पर चोरी का इल्जाम लगाकर उसे काम से निकाल दिया गया। पांजा सब कुछ बर्दाश्त कर अपमान सहकर, फटे हाल और खाली हाथ वहाँ से निकल जाता है। वह सोचता है एक दिन तो वह बड़ा होगा। उसका पांजा भी बड़ा हो जाएगा। मजबूती के साथ वह यहाँ लौट आएगा। हरि साधु की दुकान में खड़े होकर वह आज के अपमान का और इल्जाम का प्रतिवाद करेगा।

'अपुष्टिजनित' का केंद्रीय विषय भूख है। समाज का एक हिस्सा आधा पेट खाकर या भूखा रहकर जीवन गुजारता है। इस कहानी में भूख से पानू मर जाती है। उसकी माँ निष्पलक उसे देखती रहती है। आँसू भी नहीं है आँखों में। अब

पानू कभी भी माँ से नहीं कहेगा कि माँ कुछ खाने को तो दो। भूख से एक निर्मम मौत और दूसरी तरफ सरकार की घोषणा कि हमारे राज्य में भूख से कोई नहीं मरा है। भूख और दूसरी ओर सरकार का झूठा बयान यही इस कहानी के कथ्य का क्लाईमैक्स है।

'रामदेउ' एक दरबान के मन की प्रतिक्रिया की कथा है। वह साहब के घर के गेट के सामने दरबानी करता है। फाटक के सामने जुटे भिखमँगो को भगाता रहता है। डरकर भागते हुए भिखमँगे कीमती कैडिलैक गाड़ी के पीछे छुप जाते हैं। फिर आकर हाथ फैला के खाना माँगते हैं। बहुत दिनों तक ऐसा करते हुए एक दिन रामदेव के मन में सवाल उठता है कि इस धरती पर सारे लोग सुखी क्यों नहीं हैं! सब लोगों को भरपेट खाना क्यों नहीं मिलता। ऐसे ही सारे सवालों को सामने रखकर कथा खत्म होती है। सामाजिक अमानवीयता के खिलाफ प्रतिवादी चेतना समीर रक्षित की हर कहानी में मिलती है।

'अंतिम संलाप', 'भारती माहालि', निसार आभार केउ नमः आदि लघु कथाओं में समाज के विभिन्न पेशे और वर्ग के चरित्र मिलते हैं। इस संकलन में मजदूर, किसान, चिकित्सक, आम नौकरीपेशा लोग, भिखमँगा, असहाय, पीड़ित सभी की वंचना, शोषण, उत्पीड़न मानसिक द्वंद्व को उकेरा गया है।

कविता : संकटकालीन इस प्रकाशन वर्ष में कई कविता संकलन प्रकाशित हुए हैं। सब पर चर्चा करना संभव नहीं है। अतः चुनिंदा कुछ संकलनों पर प्रकाश डाला जा सकता है।

'यामिनी रायेर देश' : यह बांग्ला की युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि कवि अंशुमान कर की 18 कविताओं का संकलन है। सिग्नेट ने इसे प्रकाशित किया है। बंगाल के राढ़ अंचल विशेष बाँकुड़ा के ग्रामीण जीवन, गाँव के सौंदर्य और रंग–रूप को कवि ने आँका है। इस संग्रह की पहली कविता 'नदीर जीवन' की अंतिम पंक्ति में कवि का कहना है "छोटो नदीर जीवन आसले कविर जीवन"। नदी सभ्यता का जीवन और कविता असल में कवि का जीवन है। कविता में दादी की तरह भाव प्रवाह है। इस संग्रह की कविताओं में सुमकालीन गाँव का जीवन और कल जो गाँव थे पर आज धीरे–धीरे खोते जा रहे हैं उसका चित्र मिलता है। 'यामिनी रायेर देश' शीर्षक लंबी कविता में अतीत और वर्तमान गाँव का अंतरंग चित्र है।

'बने थाके बाघ' लंबी कविता है। यह चार भागों में विभाजित है। कवि का कहना है "मानुष जे एक समय जंगले थाकतो एवं भय पेतो बाघके सेटा तार काज कर्म देखें बेशक बोझा जाय।" असल में जीवन में बाघ हमारा नियंत्रक है। चाहे वह दफ्तर में हो, सड़क पर हो, हर जगह। इसी बाघ प्रवृत्ति के माध्यम से कवि के प्रतिवाद का स्वर भी सुनाई देता है। बाघ यानी क्षमता, बाघ यानी शेर, बाघ यानी दूसरों को दबाए रखना।

'बांगलार मोड़' कविता में तीख़ी अभिव्यक्ति करते है "बड़ हच्छे रास्ता/आर छोटो हच्छे राष्ट्रेर मन....।" 'महाराज, एक्का जाहाज बड़ बिपदे आज' : देवव्रत मुखोपाध्याय का कविता संकलन है जिसे धानसिडी ने प्रकाशित किया है। समाज बोध इनकी कविताओं का मूल आकर्षण है।

'भेसे जाबो अनिवार्य नीले' : देवाशीष चंद का नया कविता संकलन है। इसे दी सी बुक एजेंसी ने प्रकाशित किया है। उन्होंने अपनी कविताओं में चित्र कल्प का निर्माण किया है। अभिव्यक्ति माध्यम के रूप में प्रतीक और रूपक का संयोग बाहुल्य परिलक्षित होता है।

'नमः नमस्कारे' : दक्षिणेश्वर और आडियादह अंचल में पिछले 100 साल में रचित कविता को संपादक अमरनाथ भट्टाचार्य ने संकलित किया है। इतिहास की दृष्टि से यह बहुत ही महत्वपूर्ण संकलन है। इस संकलन में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के राष्ट्रवादी नेता एवं कवि ब्योमकेश चट्टोपाध्याय (1885 से 1996), इस अंचल की प्रथम प्रतिवादी स्त्री कवि अनिला घोषाल (1913–1996), मजदूर कवि कालीचरण मुखोपाध्याय (1911–1976), जनवादी कवि सुबोध राय (1936–1972), प्रगतिशील जीवन बोध के कवि संतोष भट्टाचार्य (1924–2002) आदि की कविताएँ संकलित हैं।

'कविता निर्यास' (दूसरा खंड) शंकर साहा का कविता संकलन है। इस संकलन में हर कविता एक पंक्ति की है। अर्थात् "देखने में छोटे लगे घाव

करे गंभीर" कवि बिहारी का यह भाव शंकर साहा की कविताओं को पढ़कर परिलक्षित होता है। कविता निर्यास के तीसरे खंड में दो पंक्तियों की कविताएँ हैं और चौथे खंड में कविताएँ चार पंक्तियों में सीमित हैं।

'बहे निरंतर' आशुतोष घोषाल, 'कतोदिन मिछिले हांटिनि तिलोत्तमा' अभिजित घोष आदि अनेक कविता संकलन इस कालखंड में प्रकाशित हुए हैं। 2020 में ही जय गोस्वामी के आठ काव्य ग्रंथों को आनंद पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित 'कविता संग्रह 6' में संकलित किया गया है। साथ ही कुछ अप्रकाशित कविताएँ और बच्चों के लिए लिखे गए छंद भी शामिल किए गए हैं।

विविध वैचारिक विषयों पर कई पुस्तकें इस कालखंड में प्रकाशित हुई हैं। इनमें जीवनी, संस्मरण, यात्रा साहित्य आदि हैं। लेकिन ईश्वरचंद्र विद्यासागर की द्विशतवार्षिक जयंती पर कुछ विशेष ग्रंथ प्रकाशित हुए। जैसे विद्यासागर बहुमात्रिक पर्यालोचन (संपादक देवव्रत घोष, प्रकाशक सेतु), अनन्य विद्यासागर जन्मद्विशत वर्षे श्रद्धार्ध (संपादक द्विजेंद्र भौतिक, आनंद पब्लिशर्स) आदि। परंतु अरुण कुमार सांपुइ का ग्रंथ 'विद्यासागर ओ बांग्ला थिएटर' (पत्रलेखा) उल्लेखनीय है।

विधवा विवाह के समर्थन में उस समय कई नाटक रचे गए। इसी सिलसिले में विद्यासागर भी नाटक जगत से जुड़े रहे। 1856 में उमेश चंद्र मित्र ने 'विधवा विवाह' नाटक की रचना की और स्वयं केशव चंद्र सेन ने इस नाटक का निर्देशन किया।

विद्यासागर स्वयं नाटक के हर मंचन में उपस्थित रहकर रंग कर्मियों को प्रेरित करते थे। उनका यह मानना था कि विधवा विवाह के समर्थन में जन को जागरूक करने के लिए नाटक की अहम् भूमिका है। इसीलिए नाटक के साथ उनका लगाव बहुत ज्यादा था।

देश विभाजन और विस्थापितों की व्यथा कथा पर राजा सरकार ने 'आंतुर घर' (कोर्ट प्रकाशन) और 'फिरे देखा एक जन्म कथा' (नया उद्योग प्रकाशन) जैसे दो ग्रंथों की रचना की।

कोरोना काल में लॉकडाउन और संकट के दिन गुजारने का अनुभव कई लेखकों ने शब्दों में बाँधा है। जिनमें शंकर द्वारा रचित 'दुसमयेर दिनगुलि' (देज प्रकाशन) महत्वपूर्ण है।

इस धरती पर बार–बार महामारी का प्रकोप हुआ है। आमलोग इस संकट को झेलते हुए मुक्ति का उपाय भी ढूँढते रहे। लगता था धरती का नाश हो जाएगा ऐसे समय में कुछ लोग और संगठन अपने जीवन को जोखिम में डालकर पीड़ित जनों की सेवा करते रहे। ऐसे सेवकों के रूप में संन्यासी, चिकित्सक, वैज्ञानिक, विद्यार्थी, राजनीतिक व्यक्तित्व आदि अपनी सामाजिक और मानवतावादी भूमिका निभाते हैं। महामारी को लेकर विभिन्न व्यक्तियों की सोच, कवि लेखक की सोच शंकर ने अपनी अनुभूति को लिपिबद्ध किया है।

'लॉक डाउनेर दिनलिपि' : आबीर मुखोपाध्याय द्वारा संपादित और बिशाला बुक काफे, शांतिनिकेतन द्वारा प्रकाशित की गई। यह महामारी से पीड़ित जन और समाज एवं मानव सभ्यता के सामने आई नई चुनौती के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न लेखकों की प्रतिक्रिया, अनुभव से समृद्ध विभिन्न निबंधों का संकलन है।

प्रवासी मजदूर, फिल्म, खेलकूद, समाज की विभिन्न संस्थाओं में कामगारों की रोजी–रोटी की समस्या को लेकर बहुत ही मार्मिक रचनाएँ इस संकलन में रखी गई हैं। आज मास्क हमारे जीवन का अहम् हिस्सा बन गया है। मास्क को लेकर इस संकलन में एक बहुत ही सरस और मार्मिक ललित निबंध भी है।

'बिजयेर गल्प' : यह लॉकडाउन के समय रचित विजय बसु की कहानियों का संकलन है। लॉकडाउन के समय घरबंदी में लोग चिंतन, मनन और सृजन से साँस लेने की तथा बौद्धिक भूख मिटाने की कोशिश करते हैं। यह कहानी संकलन ऐसा ही एक प्रयास है। अनुप्रेरणा, अंजलि, कर्तव्य, छाता, चोर, दायित्व आदि कहानियों के माध्यम से खराब समय में अपने अड़ोस–पड़ोस, अपने समाज को पहचानने का आख्यान है। हम एक दूसरे के लिए जीते हैं। विशेषतः कोविडकाल में बदलते

समय में नया जीवन दर्शन और संकटकाल में जीवनबोध का प्रतिफलन की कहानियाँ संकलन में मिलती हैं।

2020 के इस महामारी वर्ष में जहाँ स्वाभाविक जीवन यात्रा थम सी गई थी वहाँ सृजन और प्रकाशन से जुड़े हुए व्यक्तियों ने बांग्ला साहित्य के प्रकाशन को सक्रिय रखा। लोगों तक उनकी बौद्धिक और मानसिक भूख मिटाने के लिए पुस्तकों को पहुँचाने का प्रयास किया।

– 63–ए, साउथ सिंथी रोड, कोलकाता–700030

❑❑❑

12

मलयालम साहित्य

डॉ. बी. अशोक

साहित्य किसी भाषा या संस्कृति या परंपरा का दस्तावेज होता है। यह मानवीय अभिव्यक्ति का शक्तिशाली स्वरूप है। अनुभूति और कल्पना से मिले हुए शब्दों को साहित्य प्रस्फुटित करता है। समाज में व्याप्त दुख, कटुता, प्रेम, वात्सल्य, दया और आंदोलन को साहित्यकार अनुभव करता है और उसे लेखन में उतारता है। इसलिए साहित्य के विकास की कहानी किसी न किसी प्रकार मानव सभ्यता के विकास की भी गाथा बनती है। यहाँ साहित्य के तथाकथित मानदंडों के आधार पर 2020 के मलयालम साहित्य पर प्रकाश डाला गया है।

चली आ रही प्रणालियों को कविता ललकारने लगती है। वर्तमान कविता की पहचान उसकी बहुस्वरता है। स्त्री, हाशिए की पुकार, प्रवास जीवन, साइबर जैसे विषयों को अब मलयालम की कविता अपनाती है। पुरुष और स्त्री के समान किन्नरों के मानसिक व्यापार भी वर्तमान कविता रेखांकित करती है। इन सबके बावजूद आज की मलयालम कविता विषयवस्तु पर केंद्रित होती जा रही है। यह असल में कविता में से 'कविता' को बहिष्कृत करता है। कविता एक प्रकार से रपट बन जाती है। आम रूप में प्रयुक्त होनेवाले भाषा प्रयोगों को छोड़कर नई भाषा का प्रयोग करने की ललक वर्तमान कवि में दिखाई पड़ती है।

कविता को आत्मा का प्रस्फुटन माननेवाले एषाचेरी रामचंद्रन की भावुक कविताओं का संग्रह है– 'वेरजीनिया के इस धूप के मौसम में' नामक रचना। इसमें कवि सूचित करते हैं कि किसी भी ज़माने में हो, किसी भी देश में हो, उपहासों के काँटों के बीच में भी कविता के धूप का मौसम आशा का आसरा बनकर उदित हो जाएगा। प्रणय की धड़कनों को खिलानेवाले सोलमन की उँगलियों को चूमनेवाले अक्षरों के समान कविता की आदिम कोंपलें समय के अधरों पर रंग बिखेर देंगी। कवि का सपना है, शब्दों की खोई हुई लय, लड़ों के भूले हुए ताल और ध्वनियों के मुरझाए हुए सांमजस्य धूप के मौसम में लौट आएँगे। कवि गाते हैं– *हे वेरजीनिया के धूप के मौसम/मेरे स्वप्निल यादों के/सेने के बीच के अतंराल में/तू कहाँ खोया पड़ा था।* अमरीका के वेरजीनिया के रिचमोंड में लंबनोन की जनता द्वारा निर्मित सेंट आंटणी के गिरिजापर्व के प्रीतिभोज में अंगूर रस का माधूर्य चखते हुए कवि के हृदयनीड़ का पक्षी पंख फड़फड़ा रहा है– *कहीं भी रहें/एक नीड़ में हम रहें/एक स्वर में हम गाएँ। वेरजीनिया में भी कवि अपनी मिट्टी की गंध भूलते नहीं।* 'न्युयोर्क से उषवूर को मेघसंदेश' नामक कविता इसका दृष्टांत है। कवि चाहते हैं कि यह स्वर्गिक धूप हर जीवन में हमेशा रहे। वेरजीनिया के धूप में भी पालस्तीन की चिड़ियाँ

चहचहा रही हैं। रोहिंग्यन की दस्तक किवाड़ पर सुनाई पड़ती है। कवि पहचानते हैं कि संवेदनाहीन समय में एकमात्र सहारा कविता है जो हमें साथ गाने का आह्वान करती है। प्रेम की इस फीकी धारा को महाप्रवाह में बहा देना कविता का लक्ष्य है।

वर्तमान मलयालम कविता को सामाजिक भावबोध से जोड़नेवाले सशक्त हस्ताक्षर हैं एस. जोसफ़। दलित जीवन की अनुभूतियों को समग्रता के साथ उनकी कविताओं ने आत्मसात् किया है। मानव, प्रकृति और प्रणय का सामंजस्य दिखानेवाली 'टोकरी' नामक कविता इसका दृष्टांत है। हमारे लिए टोकरी एक औजार मात्र है। परंतु कवि अपनी भावना से टोकरी में जान फूँकता है। कविता ग्रामीण संस्कृति की पुरानी यादें जगाती है। टोकरी को दिखाकर कवि कहता है– दो टोकरियाँ मिलकर पृथ्वी बन जातीं। इसी प्रकार मोहनकृष्णन कालडी की कविताएँ पारिस्थितिक दृष्टिकोण को नया आयाम देती हैं। उनकी मशहूर कविता है– 'गेंद उगनेवाला टीला'। मात्र छह पंक्तियोंवाली यह कविता पाठकों में गृह–विरह पैदा करती है। प्रकृति के भोलेपन पर मानव का हिंसात्मक हस्तक्षेप दिखानेवाली कविता बीज बोकर पौधा उगानेवाली हमारी प्राचीन कृषि संस्कृति की यादें दिलाती है। टीलों को क्षण में उखाड़ ले जानेवाली यंत्र संस्कृति की भीषणता कविता की संवेदना है। पंक्तियाँ यों हैं– *टीले को उखाड़नेवाले हे भीमकाय यंत्र/मिट्टी को रौंद उठानेवाले यंत्र हाथों/गेंद जैसी कुछ मिले/तो हमें सचेत करना न भूलें/सालों पूर्व हमारा बोया था वह/गेंद के पौधे उगाने।* कवि की पीड़ा है कि प्राचीन कृषि संस्कृति किसी को भी उगाने की भावना रखती थी तो वर्तमान उपभोक्ता संस्कृति सबको उखाड़ने की भावना रखती है। के.आर.टोणी की 'हानी' कविता याद दिलाती है कि सबको प्राप्त करने में सक्षम आधुनिकोत्तर वातावरण में भी पुरानी हानियाँ दुख का कारण बनती हैं। गरीबी में भी गाँव में फुटबॉल खेलने में माहिर बननेवाले बच्चे को सातवीं कक्षा में पढ़ते वक्त गाँव की एक टीम पाँच रुपए पारिश्रमिक में खेलने को आमंत्रित करती है। कवि इसे बहुमूल्य स्वीकृति के रूप में देखता है। परंतु दादा ने जाने से रोक दिया। समय बीत गया। बड़े होने पर लाखों रुपए देकर कई टीमें उसे ले जाती हैं। रोकने को दादा अब हैं ही नहीं। परंतु कवि को लगता है कि अब मिलनेवाला लाख रुपया भी उस पाँच रुपए का बदला नहीं कर पाता। कुछ हानियाँ ऐसी हैं। उसका मूल्य कभी चुका नहीं पाता। वर्तमान कविता बनी बनाई राहों को तोड़–मरोड़ देती है। हाशिएकृत राहों से चलते हुए 2020 की कविता अपना स्वत्व खोज रही है।

कविता के समान वर्तमान मलयालम कथा साहित्य भी एक सृजनात्मक विधा में सीमित न होकर सामाजिक सरोकार को व्यंजित करनेवाला सशक्त हथियार बन गया है। इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक की शुरुआत की चुनौतियों का प्रतिबिंब उपन्यास तथा कहानी संग्रह में दिखाई देता है। कथाकारों के वैयक्तिक राजनीतिक झुकाव की अपेक्षा कहानी तथा उपन्यास में चित्रित राजनीतिक परिवेश का बड़ा महत्व है। कहानी परिसर, बिंब, मुद्राएँ, प्रतीक यहाँ तक कि पात्रों के नामकरण में भी राजनीति का परोक्ष संकेत देखा जा सकता है। इस प्रकार वर्तमान कथाएँ छपे हुए पन्नों तक सीमित न होकर पाठकों के विचारों को उस पार पहुँचानेवाली नौकाएँ हैं। 2020 के उपन्यासों तथा कहानियों में इसका प्रतिबिंब है।

अपने उपन्यासों की शैली के कारण पाठकों को विस्मय जगत में पहुँचानेवाले उपन्यासकार हैं सुभाष चंद्रन। उनका नया उपन्यास है 'समुद्रशिला'। इसमें पुराण, इतिहास आदि के किनारे से गुज़रकर उपन्यासकर ने एक नारी की सोच के माध्यम से पुरुष समाज का मूल्यांकन करने का प्रयास किया है। इसकी नायिका अंबा की विचारधाराएँ पाठकों के मन मस्तिष्क को लंबे अरसे तक नोंचती रहेंगी। एक सेन कहानी के माध्यम से शुरू होनेवाले उपन्यास की कथावस्तु सृष्टि, स्थिति, संहार जैसे तीन खंडो में आगे बढ़ती है। तीनों खंडों में नौ–नौ अध्यायों में अंबा के विचारों की प्रतिध्वनि गूँजती रहती है। कहानी की अंबा पाठक को कहीं स्वप्न

जीव के समान लगती है तो कहीं रक्त मांसवाली नारी के समान लगती है। लेखक यह साबित करने की कोशिश करता है कि स्त्री, पुरुष से भी श्रेष्ठ जीव है। 'समुद्रशिला' की खासियत है कि उपन्यास में यथार्थ जीवन के कई पात्र असली नाम से इसके पात्रों की भूमिका अदा करते हैं। अंबा नामवाली एक अपरिचित नारी को सपने में देखनेवाला लेखक बाद में उसी के संपर्क में आ जाता है और अनजाने ही उसकी विनाश भरी जिंदगी का हिस्सा बन जाता है। यही समुद्रशिला की कथा वस्तु है। महाभारतीय अंबा की संज्ञा और मनोभाव वाली नायिका पात्र अंबा और उसका अधूरा पुत्र अप्पु पाठकों के मन में गहरा उतरते हैं। अंबा बिना शर्तों का प्रणय पुरुष से चाहती है। हर स्त्री पुरुष से ऐसा प्रणय चाहती है। वस्तुतः समुद्रशिला की कथा को नारी के दृष्टिकोण में विकसित करने में उपन्यासकार सफल बन चुका है।

वर्तमान मलयालम के प्रिय लेखक जीवन जोब तोमस द्वारा रचित 'मधुमक्खी रानी' उपन्यास विभिन्न समयखंडों में भिन्न अनुभव जगत को जीनेवाली तीन युवतियों की कथा बताता है। यह प्रणय, जलन और अतिजीविता की गहराई को रेखांकित करता है। नृविज्ञान यह बताता है कि भाषाओं में लिपियों के जन्म के पहले पृथ्वी के देवताओं में नारी रूप की प्रमुखता थी। देवताओं में पुरुष रूप का उद्भव मानव के साक्षर होने के बाद हुआ था। वाचन और लेखन ने मानव के दिमाग पर जो प्रभाव डाला, उसकी खोज करने की कोशिश है 'मधुमक्खी रानी'। पचास साल बीतने पर भी निरक्षर कालिंदी पिता द्वारा उसके लिए रचित उपन्यास पढ़ने की ललक में साक्षर हो जाती है। यही उपन्यास की पहली नारी है। दूसरी नारी स्करलट है। वह पागलपन तथा हिंसा भरी अपनी जिंदगी से बचने की कोशिश में खुद का मृत्युनाटक खेलती है। तीसरी नारी मालविका है जो नए–नए देवताओं के उदित होनेवाले मिथकीय ज़माने में अपने ज्ञान के बल पर बाधाओं का सामना करती है। इस प्रकार भिन्न परिस्थितियों में जीनेवाली तीन युवतियों के मानसिक संघर्ष से एवं उनसे लड़कर प्राप्त उत्तरजीविता से कथावस्तु रोचक बनती है। पुरुष प्रभुता से लड़ते हुए अपने व्यक्तित्व को बचानेवाली तीन युवतियों के अस्तित्व की मौजूदगी उपन्यास को गरिमा प्रदान करती है।

मलयालम की प्रिय कथाकार हैं के.आर. मीरा। मीरा को 2015 का केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। 2012 में बंगाल की पृष्ठभूमि में रचित 'जल्लाद' उपन्यास ने भारत के भीतर और बाहर उनको ख्याति दिला दी। मीरा का हाल ही में प्रकाशित उपन्यास है 'कब्र'। कब्र की नायिका भावना सच्चिदानंदन एक शक्तिशाली स्त्री पात्र है। परिवार, प्रणय, प्यार का खोखलापन आदि से युक्त 'कब्र' उपन्यास भावना नामक जिला न्यायाधीश के आख्यान के रूप में शुरू होता है। लॉ कॉलेज में साथ–साथ पढ़नेवाले भावना और प्रमोद के बीच प्यार हो जाता है और वह शादी में परिवर्तित हो जाता है। परंतु जो समता प्रणय के समय में दोनों महसूस करते थे, शादी के बाद वह नष्ट हो जाती है। धीरे–धीरे पुरुष की प्रभुता घर करने लगती है। पत्नी को नौकरी में मान्यता मिलने पर उत्पन्न ईर्ष्या पति–पत्नी के बीच के प्यार में दरारें पैदा करती है। पत्नी की कोख भरने में होनेवाली देरी और बच्चे की मानसिक दिव्यांगता से उत्पन्न बहस तलाक में परिवर्तित हो जाती है। तलाक के उपरांत भावना जिला न्यायाधीश बनती है। मानसिक दिव्यांगता वाले बेटे का सहारा बनकर उसमें आत्मविश्वास जगाने की कोशिश करती है। कचहरी में नियम की संरक्षिका बननेवाली भावना पति की दूसरी शादी के वक्त पुत्र के साथ जाकर उसे आशीष भी देना नहीं भूलती। कचहरी में आनेवाला एक मुकदमा जो कब्र से संबंधित है, भावना के आगे एक प्रश्न खड़ा करता है। अदालत में खयालुद्दीन अपने पूर्वजों की पुरानी कब्रवाली मिट्टी के लिए मुकदमा दर्ज करता है और उसके तीन भाई उसका विरोध करते हैं। अपने जादुई प्रभाव से कई प्रकार से भावना को नीचा दिखाने की कोशिश खयालुद्दीन करता है। बाद में भावना की क्षमता वह मानता है और उसका आदर करने

लगता है। धीरे–धीरे दोनों के बीच प्रेम हो जाता है। प्रणय में भी खयालुद्दीन भावना से आदर के साथ बर्ताव करता है। मानसिक दिव्यांगता वाला बच्चा भी खयालुद्दीन के जादू में खुश रहता नज़र आता है। अदालत में कब्र का कोई दस्तावेज न दे सकने के कारण खयालुद्दीन मुकदमे में पराजित हो जाता है। इसके बीच 9 नवंबर, 2019 को खयालुद्दीन की आकस्मिक मृत्यु होती है। वास्तुविद् के रूप में काम करनेवाला खयालुद्दीन एक पुराने स्मारक के पुनर्निर्माण के बीच एक खंभा सिर पर गिरने से मृत्यु का शिकर बनता है। खयालुद्दीन की मृत्यु तिथि तथा बाबरी मसजिद के अंतिम फैसले के दिन में समानता है। परंतु उपन्यासकार कहीं भी स्पष्ट रूप से वह सूचित नहीं करती। उपन्यास मनुष्यता और प्रेम का प्रश्न उठाता है।

मलयालम के मशहूर रचनाकार सारा जोसफ का उपन्यास है 'बुधिनी' जो तीखी अनुभूतियों का जीता जागता दृश्य पाठक के सामने लाता है। यह सच्चाई भूले नहीं भूलती कि प्रकृति को नकारकर लानेवाला विकास कार्यक्रम अंततः भयावह होता है। प्रकृति और जीव–जंतुओं को जड़ से उखाड़कर भी विकास के नाम पर कुछ लोग डींग मारते हैं। असल में ये विकास विनाश के धब्बे हैं। विकास के नाम पर ग्रामीण जीवन तथा जनजातीय संस्कृति की बलि चढ़ाई जाती है। सारा जोसफ का उपन्यास 'बुधिनी' इस सच्चाई को सामने लाता है। विकास के नाम पर शरणार्थी बनने को विवश होनेवाली जिंदगियों का जीता जागता परिवेश इस रचना के इर्द–गिर्द में है। साथ ही प्रकृति के प्रति गहरा दृष्टिकोण कथावस्तु को सफल बनाता है। इसकी कथा संथाल जनजाति से जुड़ी हुई है। संथाल झारखंड की जनजाति है। प्रकृति नियमों का सटीक पालन करके हरियाली को आत्मसात् करनेवाली परंपरा है। यह इनका विश्वास है कि नदियों, टीलों और पेड़ों पर आत्माएँ रह रही हैं। ये बाँध भी इनके जीवन के हिस्से हैं। किंतु दामोदर नदी में बने बाँध ने इनकी चेतना में अशांति का बीज बोया। अपनी झोंपड़ियों को बाँध के भीषण जलसागर में डूबते देख इनको शरणार्थी बनना पड़ा। जगदीप मुरमु इनका प्रतिनिधि है। जंगल की शीतलता से कोयलेखानों की तपती गरमी में उसका जीवन उखड़ गया। उसकी पत्नी सोमनीता और बेटा जोला पाठकों को रुलाता है। पोती रुचि मुरमु की खोजों में कहानी विकसित होती है। उपन्यास की नायिका बुधिनी मेजान रुचि से दूर का रिश्ता रखती है।

दामोदर नदी के पांजेत बाँध के उद्घाटन के लिए आए भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को बुधिनी हार पहनाती है। यह उनके स्वागत सत्कार का कार्यक्रम था। बुधिनी दामोदर घाटी निगम की मज़दूरिन थी। कर्मचारियों के आदेशों का पालन उसने किया था। लेकिन संथाल जाति ने तो हार पहनाने के इस कार्यक्रम को शादी के रूप में देखा। प्रधानमंत्री संथाल जाति का बाहरवाला होने के कारण पूरा गाँव और समाज द्वारा बुधिनी भ्रष्ट हुई। गाँव से वह बहिष्कृत की गई। इस प्रकार 15 साल की बुधिनी विकास के नाम पर दुख के अथाह सागर में फेंक दी जाती है। समाज द्वारा शिकार की जानेवाली नारी का प्रतीक बनकर बुधिनी रह गई। जंगली वाद्यों की धुन, अकृत्रिम नृत्य का भँवर, हरीतिमा का स्वर्गिक आनंद, जंगली नदों की शीतलता तथा वन की उन्मत्तता के परिप्रेक्ष्य में ज़िंदगी की तपती सच्चाइयाँ कथानक को अनुपम छटा प्रदान करती हैं। प्रगति के नाम पर अपनी जड़ों को भूलकर बेहिचक पर्यावरण का संहार करनेवाले ज़माने में यह रचना कई सवाल उठाती है।

इंदुगोपन की तीन लंबी कहानियों का संग्रह है 'ट्रिंकिल रोसा और बारह प्रेमी'। पुस्तक की शीर्षकवाली पहली कहानी तथा अन्य दो कहानियों के स्त्री पात्र प्रणय की हरीतिमा में जीनेवाले हैं। ये नारियाँ पुरुष से डरती नहीं हैं। उनका संसार विचित्रता से भरा है। उनकी बातचीत हमें प्यार भरा आनंद प्रदान करनेवाली है। जादुई यथार्थवाद की समस्त खूबसूरतियों से कहानियाँ आच्छादित हैं। रोसा के बारहों प्रेमी उसके शारीरिक सौंदर्य से मोहित होते हैं। अंत में रोसा को मनपसंद प्रेमी प्राप्त होता है। विभिन्न प्रकार की चाँदनी के

अलग–अलग नाम इसमें दिए गए हैं। कहानी में सूर्य की रोशनी में ही नहीं बल्कि चाँदनी में भी इंद्रधनुष रंग बिखेरता दिखाई पड़ता है। पुण्यालन नामक द्वीप के खूबसूरत दृश्य देखने के लिए द्वीप के टेरी से शादी करके रोसा वहाँ पहुँचती है। वह कौड़ी लेने के लिए टेरी के साथ पानी में डुबकी लगाती है।

मलयालम में अनेक कहानियाँ हैं जिसमें नारी को प्रकृति की प्रतिकृति के रूप में चित्रित किया गया है। परंतु इस कहानी में कौड़ी, पानी, चाँदनी, पानी की गहराई, केकड़ा, चिड़ियाँ सब मात्र ट्रिंकिल रोसा के लिए बने हुए हैं। शादी की प्रथम रात की चाँदनी देखने को निकलनेवाली रोसा के पैरों पर मछली के चुंबन का चित्रण देखिए– उसने पानी में पैर रखा। पहले चाँदी की पायलों पर पूर्णचंद्र की आभा ने चूमा। उसके पीछे सैकड़ों छोटी–छोटी मछलियाँ आकर पैरों को चूमने लगीं। द्वीप के इतिहास में इतने सुंदर पैर मछलियों ने कभी नहीं देखे थे। उनमें होड़ बन चुकी थी। चूमने का उत्सव मनाया गया। रोसा ने आँखें मूँद लीं। उसे लगा कि वह पहली लड़की होगी जिसे प्रथम रात में इतनी चूबनें मिली होंगी। इस प्रकार ये कहानियाँ नारी मन की सच्चाइयों का पर्दाफाश करती हैं।

'मेरा तीसरा उपन्यास' मलयालम के प्रतिष्ठित कथाकार टी. पद्मनाभन का कहानी संग्रह है। बस प्यार, तीर्थाटन, लेखक और लेखिका, मैं ही मैं, मेरा तीसरा उपन्यास जैसी नौ कहानियों का संग्रह है यह रचना। इसकी कहानियाँ प्रणय, द्वेष, जय, पराजय, असहायता आदि से युक्त जीवन की उलझनों को छूनेवाली हैं। संग्रह की 'लेखक और लेखिका' कहानी का एक अंश इस प्रकार है– 'इस प्रकार समस्त संसार से रूठकर जब घर के बीचों–बीच के कमरे में बंद टी.वी को ताकता रहा तब बाहर बरामदे में किसी की पदचाप सुनाई पड़ी। धीरे से पलटकर देखा तो पुरानी लेखक मित्र थी। मैंने तुरंत आँखें हटा दीं। क्यों इसका स्वागत सत्कार करूँ? इतने दिनों तक यह कहाँ थी? अब देखने आई है कि मरा कि नहीं? थोड़ी देर बाहर खड़ी होकर आगंतुक ने पूछा– 'अंदर आऊँ?' मैंने न चेहरे पर नज़र डाली न कुछ बका। लेखिका धीरे से बोली– बैठूँ?...' नाटकीय ढंग से कहानी आगे बढ़ती है। संग्रह की सारी कहानियाँ अपनी आत्मनिष्ठ शैली का सहारा पाकर भावना तथा यथार्थ की दुनिया की सीमारेखा का अतिक्रमण करते हुए दिखाई पड़ती हैं।

कविता और कथा को छोड़कर 2020 के मलयालम साहित्य की अन्य विधाएँ भी केरल की सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक धड़कनों को प्रतिबिंबित करने में सक्षम रही हैं। साहित्य को समग्रता से देखनेवाले पाठक के लिए चाहे ये सब एक ही हार के विभिन्न फूल हों, परंतु अपनी शैली की भिन्नता के कारण इन्होंने अपनी अलग छटा और सुगंध से मलयालम साहित्य को समृद्ध किया है।

'आपका प्रिय' मलयालम के मशहूर कथाकार बन्यामिन के पत्रों का संग्रह है। इन पत्रों की अलग विशेषता है। हर पाठक के अपने प्रिय लेखक होते हैं। वे उनसे अपने मन की बात बाँटना भी चाहते हैं। इस प्रकार पाठकों के मन में अपने प्रिय लेखकों के बारे में उठनेवाले विचारों को भावनात्मक ढंग से पत्र के रूप में बन्यामिन ने प्रस्तुत किया है। गब्रियेल गारसिया मारकेस को उनके पुत्र रोड्रिगो गारसिया द्वारा लिखी गई चिट्ठी से शुरू होनेवाले संग्रह में बेपुर सुलतान बशीर, के. आर. मीरा, मलयाट्टूर रामकृष्णन, पावला कोयलो, एस. के पोट्टक्काडु जैसे मशहूर कथाकारों के नाम पर ये चिट्ठियाँ संगृहीत हैं। इसमें पाठकगण द्वारा अपने जीवन पर असर डालनेवाली किताबों का जिक्र अपने अनुभव से जोड़कर पेश करने की शैली है।

इंदुगोपन ने समाचार पत्र के क्षेत्र में काम करते हुए लेखन में भी अपना व्यक्तित्व स्थापित किया है। बाल साहित्य को ताकत देनेवाली उनकी उन्नीस कहानियों का संग्रह है 'पेपर रॉकट'। हर मनुष्य के भीतर एक बच्चा निवास करता है। इसी कारण से बच्चे ही नहीं बड़े लोग भी बाल साहित्य में रुचि रखते हैं। 'पेपर रॉकट' एक ओर मनोरंजन प्रदान करता है तो दूसरी ओर हमें सोचने के लिए

विवश करता है। उसकी कहानियाँ बाल्य जीवन की स्मृतियों को लौटा लाने में सक्षम हैं। मञ्ञन नाम का कुत्ता, बेटा रास्ते में है, शिक्षक और छात्र, पेपर रॉकट आदि संग्रह की श्रेष्ठ बाल कहानियाँ हैं। सरल एवं आकर्षक भाषा संग्रह की कहानियों की विशेषता है।

श्रीपारवती का जासूसी उपन्यास है 'पोयट्री किल्लर'। इामें जुर्मों की परंपरा है, पर वे आम जुर्मों से भिन्न हैं। इसका मुजरिम केवल रचनाकारों को शिकार बनाता है। लगातार होनेवाली तीन हत्याएँ। तीनों के शिकार कथाकार हैं। इनकी हत्या में दो समानताएँ थीं। एक तो तीनों की लाशें नंगी थीं। दूसरी, लाशों के पास मीठी कविताएँ थी। डेरिक जोण नामक पुलिस अफसर जुर्मों का रास्ता खोज रहा था तभी अगली हत्या होती है। उसमें भी लाश नंगी थी और लाश के पास मीठी कविता भी थी। परंतु वह हत्या अन्य हत्याओं से थोड़ी भिन्न थी। उस धागे से डेरिक सच्चाई तक पहुँच जाता है। हत्याएँ केरल के एरणाकुलम जिले के इर्द–गिर्द में होती हैं। प्रमुख जासूसी उपन्यासों के समान यह भी अंत तक मुजरिम को पाठक से छिपाकर रखता है। अतिनाटकीयता से यह जासूसी उपन्यास युक्त है। हत्यारे द्वारा अंग्रेज़ी कविताओं की सुंदर पंक्तियाँ छोड़ देना पाठकों में रुचि और जिज्ञासा पैदा करती है। उपन्यास का शीर्षक भी उसी के अनुरूप डाला गया– पोयट्री किल्लर। आम जासूसी उपन्यासों की अपेक्षा इसकी कहानी जाँच अधिकारी के परिप्रेक्ष्य में विकसित होती है। डायरी, साक्षात्कार, संवाददाता सम्मेलन आदि के माध्यम से कहानी सरल ढंग से बुनी गई है। लेखिका उपन्यास के पात्रों के वैयक्तिक विकास का वर्णन कम करती है। वह पाठकों की कल्पना पर छोड़ देती है।

बलींदर धनोवा और हरींदर धनोवा द्वारा 'ह्वानसाङ् की भारतयात्रा' नामक इतिहास ग्रंथ का अनुवाद एन.बी.एस की ओर से पी.के.बी नायर ने किया है। यात्रावृत्तांत एक सबूत है। यात्रा करनेवाले व्यक्ति के समय का सीधा चित्र और उसके पूर्वकाल की लोकश्रुतियाँ मिलकर यात्रावृत्तांत सफलता पाता है। जिस ज़माने में यात्रावृत्तांत क्या, छपाई की भी कोई गुंजाइश नहीं थी, उस ज़माने में चीनी यात्री ने भारत यात्रा का जो वर्णन अंकित किया था, उसे धनोवा ने मिलकर यात्रावृत्त का रूप दिया। उक्त रचना का अनुवाद नायर ने सफलतापूर्वक किया है जो तत्कालीन भारत से पाठक को जोड़ता है। बौद्ध धर्म के अध्ययन करने के उपलक्ष्य में ह्वानसाङ् चीन से भारत पहुँचे थे। तेरह साल तक भारत की विभिन्न जगहों में घूमते रहे और नालंदा जैसे विख्यात विश्वविद्यालय में पठन–पाठन करते रहे। हर्षवर्धन के समय के भारत की जीती–जागती तस्वीर उन्होंने देखी थी। चीन से भारत आने के बीच होनेवाली दिक्कतों का वर्णन ह्वानसाङ् ने किया है। लौटनेवाले चीनी यात्री को हर्षवर्धन द्वारा सोना और चाँदी उपहार के रूप में देकर विदा देने का जिक्र यह दिखाता है कि अतिथियों के स्वागत–सत्कार में भारत कितनी सतर्कता बरतता था। अनुवाद रचना का पुनर्लेखन है। इसके द्वारा संस्कृति का साहित्य के माध्यम से आदान–प्रदान होता है। सदियों पूर्व के भारतीय इतिहास, शिक्षा, संस्कृति तथा आचार–विचारों का सच्चा चित्र अनुवाद के माध्यम से मलयालम के पाठकों को प्रदान करके नायर ने अनुवाद कला का उत्तम नमूना पेश किया है। हमारी संकल्पनाओं में एथन्स एक जादुई भूमि है। प्राचीन यवन संस्कृति तथा कला की खूबियों को आज भी सुरक्षित रखनेवाली एथन्स हर यात्री को अपनी ओर आकृष्ट करनेवाली नगरी है। पुस्तक के पन्नों पर बिखरी पड़ी नगरी को निकट से देखने पर जो दृश्य मनपटल पर अंकित हुआ, वह संतोष एचीकानम के यात्रावृत्तांत के रूप में प्रस्फुटित हुआ– 'एथन्स पत्थर है' नाम पर। यह यात्रावृत्तांत मात्र जगहों का जिक्र नहीं बल्कि वहाँ की जनता की ओर भी लेखक ने दृष्टि दौड़ाई है। विभिन्न प्रकार के लोगों की भीड़, उनका जीवन यापन उनकी रुचियों आदि पर यह रचना प्रकाश डालती है। मनुष्य, प्रकृति, आबोहवा आदि पर गहरी दृष्टि डालनेवाली यह रचना अंततः जिंदगी की बारीकियों को दर्शाने में कामयाब है।

वस्तुतः 2020 के मलयालम का साहित्य पाठकों को प्रत्याशा देनेवाला रहा। किसी रचना की सफलता का मापदंड समय होता है। कम अंतराल में उसकी साहित्यिक चीरफाड़ खतरे से खाली नहीं है। फिर भी साहित्य के नियत मानदंडों के आधार पर एक परख अनिवार्यतः आशावान है। स्पष्ट है, 2020 का मलयालम साहित्य विभिन्न विधाओं के माध्यम से अपना अस्तित्व जता रहा है।

– 'साकेत' दर्शन नगर, 225, कुडप्पनक्कुन्नु पी. ओ., त्रिवेंद्रम, केरल–695043

❑❑❑

13

मैथिली साहित्य

डॉ. वैद्यनाथ झा

यह निर्विवाद सत्य है कि मैथिली एक पूर्ण एवं स्वतंत्र भाषा है। दीर्घकाल तक लोग इसे हिंदी की एक बोली समझते रहे। उत्तर बिहार और नेपाल के 7 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाने वाली इस भाषा का विकास भी वाया संस्कृत–प्राकृत–अपभ्रंश का सफर तय करते हुए वर्तमान स्वरूप में हुआ। मैथिली का वाचिक एवं लिखित साहित्य अन्य भाषाओं से पुराना है। विधाओं से भरपूर मैथिली साहित्य में 'कन्टेन्ट' में परंपरा और प्रगतिशीलता का समन्वित रूप काफी विकसित हो रहा है। कविता, कहानी, नाटक, लघुकथा/बीहनिकथा, बाल साहित्य, अनुवाद, आलोचना, संस्मरण, उपन्यास, डायरी, रिपोर्ताज, रचनावली, निबंध, विनिबंध– सभी विधाओं में खूब लिखा जा रहा है। जहाँ मैथिली के साहित्यिक धरोहरों जैसे ज्योतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति, जीवन झा, मणिपद्म, मार्कंडेय प्रवासी आदि को नियमित रूप से विभिन्न विधाओं में सहेजा जा रहा है, वहीं आर्थिक उदारीकरण, भूमंडलीकरण, 'विश्वग्राम–अवधारणा' के सामाजिक व सांस्कृतिक प्रभाव भी दर्ज हो रहे हैं। रचनाओं का प्रकाशन भी संस्थागत रूप लेता जा रहा है। 'नवारंभ प्रकाशन', मधुबनी, 'शेखर प्रकाशन', पटना, 'मैलोरंग प्रकाशन', नई दिल्ली, 'साहित्यिकी', सरिसब पाही, 'किसुन संकल्प', 'सुपौल', 'अंतिका प्रकाशन', नई दिल्ली, जखन–तखन, दरभंगा, पाठकों तक साहित्य पहुँचा रहे हैं।

एक नजर विभिन्न विधाओं में सन् 2020 में प्रकाशित विविध पुस्तकों और पत्रिकाओं पर–

कविता

मैथिली कविता इन दिनों बहुत अच्छे दौर से गुजर रही है। कविताओं में बिंब, प्रतीक, शिल्प, भाषा में प्रगतिशीलता निरंतर जारी है। मैथिली का कवि कविता की पारंपरिक रूढ़ियों को तोड़ कर नए–नए प्रयोग कर रहा है। इस संदर्भ में वे अन्य भारतीय भाषाओं के कवियों से प्रतिस्पर्धात्मक रूप से आगे बढ़ रहा है।

1. 'हम कोसिकन्हाक एकटा कवि'

प्रतिवर्ष बाढ़ से तबाही लाने वाली, बिहार का शोक कही जाने वाली नदी कोसी का भूभाग 'कोसिकन्हा' कहा जाता है। चूँकि यह क्षेत्र प्रतिवर्ष प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़ और भूमिकटाव से ग्रस्त रहता है अतः यहाँ निवासियों के सामने सामाजिक अस्मिता का प्रश्न खड़ा रहता है। दूसरे क्षेत्र के लोग यहाँ के वासियों को उतनी अच्छी नजर से नहीं देखते।

मैथिली कविता के अवतार सिंह 'पाश' माने जाने वाले कवि अजित आजाद की 114 कविताओं वाला यह कविता–संग्रह 'हम कोसिकन्हाक एकटा कवि' इसी अस्मिता की लड़ाई लड़ रहा है। विषमता, विसंगति के विरुद्ध विद्रोह और आक्रोश अजित आजाद की कविताओं का मुख्य स्वर रहा है।

यह संग्रह वस्तुतः शृंखलाबद्ध कविताओं का संग्रह है। कोसिकन्हा, कुसहा, बाढ़ि, मुदा, पटना में छठि, आम्रपाली, मधुबनी, भूख एवं राजनीति आदि शृंखलाबद्ध कविताएँ हैं। अवचेतन पर हावी भय को इस कविता में देखिए–

भयाओन जंगल में बाहर अयबाक छटपटीमे
बिसराय गेल अछि सोझ एकपेरिया
.....
किंतु बाटसँ भटकल बटोहीक कंठ पर
असबार रहैत छैक भय असंख्य।

2. 'अनभुआर होइत समय'

कवि अजित आजाद का ही दूसरा कविता संग्रह 'अनभुआर होइत समय' 105 कविताओं का दूसरा संग्रह हैं। इस संग्रह में भी शृंखलाबद्ध कविताएँ हैं।

समय को पहचान कर ही व्यक्ति समकालीनता को जी सकता है। समय के साथ कदमताल कर सकता है पर कवि इस भागते समय को न पहचान पाने को एक त्रासदी मानते हैं। बदलते समय के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक ताने–बाने में भी बदलाव होता है और समय हमारे लिए अलक्ष्य रह जाता है–

जाहि समयमे पँच–पँच साल पर
बुझाओल जाइत अछि जाति–धर्म आ बूथ संख्या
ओही समय में जे सभटा थाहल बाट
लागि रहल अछि अनभुआर
.....
अनभुआर होइत समय में
एहिसँ बेसी कयलो की जा सकैत अछि।

इन कविताओं में भाषा, शैली और शिल्प मौलिक, प्रवाहमान और सघन कल्पनाशील है।

3. 'कविता –समय'

'कविता–समय' मैथिली के समकालीन साहित्य में कई विधाओं में लिखने वाले रमेश जी के 5 कविता संग्रहों का समेकित संकलन है। ये पाँच कविता संग्रह हैं– 'पाथर पर दूभि', 'समवेत स्वरक आगू', 'संगोर', 'नागफेनी' और 'कोसी घाटी सभ्यता'।

इस कवि की कुछ विशेषताएँ हैं जैसे मानवता की प्रबल पक्षधरता, अपने समय की विसंगतियों के विरुद्ध सक्रिय, सार्थक और करुण हस्तक्षेप और शिल्प की विलक्षणता। ये इनके काव्यों की प्रवृत्तिगत विशेषताएँ हैं और सुधी पाठक को पढ़ने को लालायित करती हैं। मैथिली में गद्य–कविता कम लिखी गई है। रमेश जी के इस संग्रह के 'पाथर पर दूभि' की शैली गद्य–कविता है। 'नागफेनी' गज़ल संग्रह है। एक गज़ल देखिए–

चर–चाँचड़िमें जिनगी बौआइत अछि कतौ
उजरा–आँचर में चिनगी, औनाइत अछि कतौ।

'मोनक मंजूषा'

यह कविता–संग्रह कवयित्री लक्ष्मी सिंह ठाकुर की कृति है। कवयित्री गृहिणी है मगर अत्यंत संवेदनशील हैं और बाल–कहानी और कविता लिखती हैं। लेखन का ध्येय स्वान्तः सुखाय है। इन कविताओं में जीवनानुभव, आधुनिक दृष्टि और समकालीन बोध है। कविताएँ सीधी–सपाट हैं। उनमें बोझिलता नहीं है। मिथिला की माटी की गंध है, शिल्प में मिथिला के लोकगीतों के संस्कार की छाया है।

'साखी'

मैथिली साहित्य में दलित विमर्श की उपस्थिति यदा–कदा तो मिलती है। 'साखी' नामक यह कविता संग्रह दलित विमर्श पर ही केंद्रित है। दलित कविताओं का यह पहला संकलन है। श्री तारा शंकर वियोगी इस संग्रह के रचनाकार हैं। कवि– हृदय इस बात से बहुत क्षुब्ध है कि ईश्वर की सृष्टि में सभी की उत्पत्ति एक जैसी होने के बावजूद समाज का एक छोटा वर्ग एक विशाल तबके को अपनी उँगलियों पर नचाता है, शोषण करता है, अपमान करता है, उनकी सोच, दृष्टि, कार्यो को निर्देशित करता है। कवि इस अन्याय के विरुद्ध इन सभी कविताओं में क्रुद्ध खड़ा है। एक कविता देखिए–

दोख हमर ही
तँ दोख हमर किछु नहि
मनुक्ख मनुक्ख लग नहि रहत तँ जाएत कतए?

लेकिन हे, सब दुख दीहह गोसाँई
बाभन पड़ोसिया नै दीहह
चंठ बाभन पड़ोसिया।
'मोनक व्यथा, कहियौ ककरा'

मैलोरंग प्रकाशन, नई दिल्ली से कविता की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है– 'मोनक व्यथा, कहियौ ककरा'। कवि हैं सतीश चंद्र मिश्र, 'सुमन' जी। इस संग्रह में 122 कविताएँ हैं।

ये कविताएँ स्वानुभवजन्य प्रभाव से प्रभावित हैं। तमाम सदाशयता के बावजूद जब कवि को प्रत्याशा में वैसा व्यवहार नहीं मिलता तो उसका मन व्यथित हो जाता है। इन कविताओं में पर्यावरण, प्राकृतिक सौंदर्य, अध्यात्म, वैश्विक व तकनीकी विकास के मुद्दे भी कथ्य के रूप में छाए हैं।

'गीत मंजूषा'

गीत मतलब छंदानुशासन में बंधी गेय कविता। डॉ. चंद्रमणि झा ने 92 गीतों और 9 गज़लों के इस संग्रह 'गीत–मंजूषा' की रचना की है। वे बहुत लालित्यपूर्ण गीत रचकर गाते हैं। उनकी निम्न गज़ल देखिए–

बाट देखबैत चान से हेराय गेलै
पंथ–पाथेय गज़ल गीत लेभराय गेलै
एक कठजीव हमर प्राण सांस घीचैय
प्रेम पुनगैत पिहुक रागहि बौराय गेलैक।

इसके अतिरिक्त 'कहबाक अछि हमरा' (संस्कृति मिश्र), 'ई नहि थिक हमर प्रार्थना' (आनंद मोहन झा), 'तृषित पुष्पांजलि' (कालीकांत झा), 'अँइठार पर औन्हल अछि गाम' (मैथिल प्रशांत), 'एहि अकलबेरा में' (गज़ल संग्रह–अजित आजाद), 'बाजब बदलि रहल अछि' (मनोज शांडिल्य), 'स्वेद राग' (सं. –धीरेंद्र प्रेमर्षि), 'धाराक विरुद्ध' (विजेता चौधरी) भी प्रकाशित हुए हैं।

कहानी

मैथिली साहित्य इन दिनों उत्कर्ष पर है। इस उत्कर्ष की एक झलक एक कथा संग्रह 'रहथु साक्षी छठि घाट' में मिलती है। कहानी संग्रह की लेखिका हिंदी और मैथिली की प्रसिद्ध कथाकार, नाटककार, रंगकर्मी विशेषरूप से एकल अभिनय और रूम थिएटर 'अवितिको' समूह की संस्थापिका श्रीमती विभा रानी हैं।

इस संग्रह में ग्यारह कहानियाँ हैं। कहानियों का एक केंद्रीय स्वर स्त्री–विमर्श है। सहज प्राकृतिक स्त्री गुणक–धैर्य, शांति, ममता, निस्वार्थ सेवा, सहिष्णुता विभिन्न पात्रों के माध्यमों से 'रिफ्लेक्ट' किए गए हैं। इसके अतिरिक्त किन्नरों का आत्मसम्मान, धर्मस्थलों पर प्रवेश में भेदभावपूर्ण नीति, विधवा–पुनर्विवाह जैसे मुद्दे भी कहानियों में मिलते हैं।

सारांशतः इस कथासंग्रह 'साक्षी रहथु छठि घाट' को स्त्री–विमर्श का दस्तावेज कहा जा सकता है क्योंकि इन कथाओं में नारी मन की तमाम सूक्ष्म व स्थूल हलचलें कथात्मक रूप में दर्ज हैं।

'उनटा गंगा'

'उनटा गंगा' कहानी संग्रह के लेखक डॉ. वीरेंद्र झा हैं। वह गद्य धारा के अंगों जैसे कहानी, लंबी कहानी और उपन्यास पर समान रूप से लिखते हैं।

इस संग्रह में 4 लंबी कहानियाँ हैं– 'टिकट', 'उनटा गंगा', इन्काउन्टर' और 'अखाड़ा'। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त विकृतियों से आँखें मूंदे नहीं रह सकते। ये विकृतियाँ उनके मन मस्तिष्क को आलोड़ित करती हैं। ये हलचल ही इन कथाओं में व्यक्त होती है। राजनीतिक मूल्यों के घोर पतन की भाषा 'टिकट' कहानी में उभरती है, 'उनटा गंगा' में समाज की अच्छाइयाँ –बुराइयाँ, राग–विराग और प्रेम–घृणा के द्वंद्वों की जोरदार उपस्थिति, कानूनी लड़ाई और जीत का उत्साह दिलाती दिखाई पड़ती है। 'इन्काउन्टर' सैनिक जीवन की गाथा है तो 'अखाड़ा' कालेजों –यूनिवर्सिटीज में राजनीतिक उठापटक की दास्तान है। कथाएँ सच पर से पर्दा हटाती हुई रोचक व पठनीय हैं।

'कथा –समय'

'कथा–समय' के लेखक रमेश जी हैं। उन्हीं के दो कथा संग्रहों –'समानान्तर' और 'समाड' का समेकित संकलन है। इस संकलन में 'समानान्तर' की ग्यारह कहानियाँ हैं और 'समाड' की 15 कहानियाँ हैं। इन कहानियों के कालखंड का विस्तार 1979 से 2019 तक का है। कहानियों की विषयवस्तु को किसी परिधि में सीमित नहीं किया जा सकता है। इन कहानियों में मिथिला, वहाँ का

परिवेश, संक्रांतिकालीन मिथिला में चल रहे उथल–पुथल, बेरोजगारी, विस्थापन, अनैतिक विलासवादी प्रवृत्ति सहजता से मिलती है।

'खोंता'

मैथिली कथा साहित्य में सैन्य–जीवन पर कहानियाँ बहुत कम मिलती हैं। 'खोंता' में सैन्य–जीवन के संस्मरणों पर आधारित चौंतीस कहानियाँ हैं। लेखक मेजर परमेश्वर झा 'प्रहरी' स्वयं सेना में मेकेनाइज्ड इंफैंट्री में अधिकारी रहे हैं। भीषण प्रतिकूल भौगोलिक, सामरिक परिस्थितियों में भी साहस, संघर्ष, उत्सर्ग की भावना सैनिक जीवन की विशिष्टताएँ हैं और इन कहानियों के माध्यम से पाठक तक पहुँचती हैं।

ये कहानियाँ, सैनिक जीवन के रोमांचक अनुभवों का कहानीकरण हैं और शिल्प–वैशिष्ट्य का अच्छा उदाहरण हैं। संग्रह के तीन खंडों में लेखक ने अपने विभिन्न सेवास्थलों के संस्मरण लिखे हैं– मध्य भारत के दस, उत्तराखंड के दस और कश्मीर से संबंधित सात कहानियाँ हैं और सात अन्य विविध कहानियाँ हैं।

इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता संस्मरण और कहानी विधाओं का 'फ्यूजन' है।

'धुंधमे भटकैत मोन' और 'टूटल किनारक बौराएल माँझी'

कहानी के क्षेत्र में एक और लेखक का आगमन हुआ है। वे हैं डॉ. सुनीलानंद झा। लगभग बत्तीस वर्ष तक बहुराष्ट्रीय कंपनियों में मानव संसाधन प्रबंधन क्षेत्र और कारपोरेट संस्कृति की छाया में काम करने से मानव मन की विभिन्न गुत्थियों को समझने, उसे सुलझाने और अपने अनुभवों को कहानी में गूंथने की प्रक्रिया में लगे डॉ. सुनीलानंद झा के इस वर्ष दो कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं– एक 'धुंध में भटकैत मोन' और 'टूटल किनारक बौरायल माँझी'। 'धुंध में भटकैत मोन' संग्रह में बारह कहानियाँ हैं और 'टूटल किनारक बौराएल माँझी' चौदह कहानियों का संग्रह है। सभी कहानियों में जीवंत जीवन है। संवेदनात्मक क्षण है, सरलता है और थोड़े में बहुत कह जाने का शिल्प है।

लघुकथा

लघुकथा विधा पर भारतीय विश्वविद्यालयों पर काफी शोध भी हो रहे हैं। मैथिली में भी यह विधा अपनी जड़ें जमा चुकी है। हाँ, एक बात देखने में आ रही है कि मैथिली भाषा में लघुकथा के 'फार्मेट' में लिखे जाने वाले साहित्य को एक अन्य नाम दिया है– 'बीहनिकथा'। अब इसे बीहनिकथा कहें या लघुकथा, विधा की मूल अंतर्रचना एक ही है।

आलोच्य वर्ष 2020 में डॉ. अनमोल झा की लघुकथाओं का एक संग्रह प्रकाशित हुआ है– 'संवेदनाक स्पर्श'। यह 88 लघुकथाओं का संग्रह है। इन लघुकथाओं का मुख्य 'थीम' अशिक्षा, बेरोजगारी, पारिवारिक व सामाजिक संबंधों में बदलते जीवन मूल्य और संदर्भ पर आधारित घटनाएँ हैं। 'शोभाकांत', 'अपग्रह', 'लोथ', 'अपराध', 'समय' जैसी अच्छी लघुकथाएँ हैं। शिल्प और शैली की दृष्टि से भी लघुकथाएँ पठनीय लगती हैं।

इसी वर्ष 2020 में दो लघुकथा संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं– 'ककिया' और 'दद्दा'। इन दोनों लघुकथा संग्रहों के लेखक ज्ञानवर्द्धन कंठ हैं। 'दद्दा' 54 लघुकथाओं का संग्रह है और 'ककिया' 49 लघुकथाओं का।

इन कथाओं में जीवन की प्रायः रुटीन घटनाओं में कथातत्व को तलाशा और तराशा गया है। कथावस्तु का परिक्षेत्र आधुनिक जीवन शैली विद्रूपताओं, समय के साथ दौड़ने के क्रम में बदलते समाज की गाथा, कार्यस्थलों के तनाव और यथार्थ को झेलते विसंगतियों से दो–दो हाथ करते लोगों की कहानियाँ है। 'भाड़ाक माय', 'ब्लड प्रेशर', 'तनाव–मुक्ति', 'भगवानक घर' जैसी कई लघुकथाएँ पठनीय हैं क्योंकि ये परिवार के संगत–विसंगत अंतर्संबंधों को उजागर करती हैं।

इसके अतिरिक्त 'संकेत' (बैकुंठ झा), 'सिनेहक भाव (आभा झा) और 'घुच्चीमें अकास' (चंदन कुमार झा) संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

उपन्यास

मैथिली और हिंदी में समान अधिकार से लिखने वाली, लेखिका डॉ. उषाकिरण खान का

सद्यः प्रकाशित मैथिली उपन्यास पाठकों के सम्मुख आया है। उपन्यास का नाम है– 'मनमोहना रे'। यह पुस्तक नवारंभ प्रकाशन ने प्रकाशित की है।

डॉ. उषाकिरण खान जो मूलतः इतिहास की प्रोफेसर रही हैं, इतिहास को साहित्य में गूंथने में दक्ष है। उन पर नागार्जुन के साहित्यिक व्यक्तित्व की गहरी छाप पड़ी है। वह संवेदनशील कलमकार हैं और मानवीय संबंधों के कोमल तंतुओं पर हाथ रखने में दक्ष हैं।

'मनमोहना रे' एक प्रेमाख्यानमय उपन्यास है। इसमें सभी औपन्यासिक तत्व हैं– नायक–नायिका, खलनायक, समाज, जाति, जीर्ण परंपरा। कथा की पृष्ठभूमि सन् 1960 के कालखंड की है। नायिका आरती व नायक कुंवर जी की प्रेमकथा है। उनका प्रेम परवान चढ़ने में वही 'टिपिकल' बाधाएँ हैं– जाति, समाज और जीर्ण परंपराएँ। दोनों का विवाह अलग–अलग जगहों पर होने, अलग गृहस्थी के बाद भी उनकी प्रेम–ज्योति सतत जीवित रहती है। आरती की अगली पीढ़ी –उसकी बेटी को भी अन्य जाति के युवक से प्रेम होता है पर आरती बेटी के प्रेम विवाह में बाधा नहीं बनती, बल्कि सहर्ष अनुमति देती है।

उपन्यास का सबसे मार्मिक पक्ष यह है कि नायिका आरती को प्रेम में मिली हार –उसके कोमल संवेदनशील मन पर इतनी गहरी चोट करता है कि वह विक्षिप्त हो जाती है।

बाजार के चकाचौंध में जहाँ प्रेम स्वार्थ, छल–कपट में लिपट अपनी नैसर्गिकता खो बैठता है, प्रेम की इस अमर ज्योति को जलाए रखना इस औपन्यासिक कर्म की विलक्षणता है।

उपन्यास विधा में एक उल्लेखीय पुस्तक प्रकाश में आई है– 'बाती कोना जराड'। साहित्य अकादमी से पुरस्कृत मैथिली के बहुविध रचनाकार श्री श्याम दरिहरे इस उपन्यास के लेखक हैं।

श्याम दरिहरे की कहानियों और उपन्यासों के किरदार प्रायः मध्यम या निम्नवर्ग के होते हैं। इस उपन्यास में भी साधारण घर की एक बेटी शोभना के संघर्ष की गाथा है। गरीबी, शोषण, अपराध का दलदल, उससे मुक्ति की छटपटाहट इस वर्ग का मूल चरित्र है। अपने आर्थिक, सामाजिक वर्ग से उच्चतर वर्ग में पहुँचने की महत्वाकांक्षा भी है। यही महत्वाकांक्षा उसे अपराधी–नेता गठजोड़ का सहारा लेने के लिए ललचाती है। इस लालच का फल दुखद होता है। कथावस्तु का नैरेशन दरिहरे जी की विशिष्ट शैली का अंग है। रोचकता बढ़ती है। इस उपन्यास में भी शोभना का संघर्ष, होनी–अनहोनी उसके प्रति करुणा उपजाती है।

'परफेक्ट क्राइम' मैथिली का संभवतः पहला जासूसी उपन्यास है। हिंदी में तो श्री गोपाल गहमरी, सुरेंद्र मोहन पाठक, इब्ने शफी आदि ने खूब लिखा है पर मैथिली में पहला प्रयास प्रतीत होता है। सुनीलानंद झा इस जासूसी उपन्यास के लेखक हैं। यद्पि उपन्यास बहुत छोटा, लगभग 56 पृष्ठों का है पर उपन्यास लेखन की शैली इसे रोचक, जिज्ञासापूर्ण बनाती है। चलती ट्रेन में एक जनप्रतिनिधि की हत्या और उसकी तहकीकत उपन्यास का कथानक है।

डॉ. सुनीलानंद झा ने छोटे उपन्यास लेखन के क्रम में एक और उपन्यासिका लिखी है– 'अहां रहब नै हमरा संग'। 46 पृष्ठों की यह उपन्यासिका –रोमांचक प्रेम कथा है। हिंदी फिल्मों की लव स्टोरी की तरह ट्रेन –डकैती के समय नायिका को कुदृष्टिवश खींचकर ले जाते डकैत से अपनी जान पर खेलकर भिड़ जाने और नायिका को बचाने वाले आईपीएस अफसर पंकज के साहसिक कार्य से नायिका के हृदय में नायक के प्रति पनपा प्रेम दोनों को अटूट बंधन देता है। टिपिकल लव स्टोरी लगते विषयवस्तु को रोचक बना दिया गया है।

नाम के अनुरूप विभूति आनंद मैथिली साहित्य की विभूति हैं। कथा, उपन्यास, कविता, लघुकथा, संस्मरण, अनुवाद आदि विधाओं में अब तक उनकी 23 गद्य रचनाएँ (कथा, लघुकथा, उपन्यास आदि), व संपादित रचनाएँ और 12 कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनका भावुक, संवेदनशील, सृजनात्मक व्यक्तित्व उनकी इन रचनाओ में दिखाई देता है।

उनके उपन्यास 'पराजिता–अपराजिता' में उन्होंने सामाजिक, पारिवारिक ताने–बाने की सूक्ष्मता

को अच्छी तरह दर्शाया है। समाज के निचले तबके के दांपत्य जीवन के उतार–चढ़ावों का बखूबी वर्णन किया है। तांगा चालक रमजानी –हुस्ना की हँसी–ठिठोली, क्रोध, मान–मनौव्वल, सांप्रदायिक सद्भाव, ग्रामीण राजनीति के विभिन्न पहलू सभी लेखक की नजर की जद में रहे। उपन्यास का निम्न वाक्य सांप्रदायिकता पर एक जमीनी आदमी की आम रुचि को दर्शाता है–

"धरम–करम कोनो जाति–बेरादर नै होइ है। मैंया। हम तऽ कहियो ने जनली जे की होइ हइ हिन्नू आ मोसलमान।"

यह है लेखक के समाज के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वहन।

इसके अतिरिक्त इस वर्ष निर्मल गंगा (वीरेंद्र झा), अन्हरियाक चान (वीरेंद्र झा), लय (विभूति आनंद), मैना (रेवती रमण झा) उपन्यास प्रकाशित हुए हैं।

एक उपन्यास 'कोखि' बहुत चर्चा में आ रहा है। इस उपन्यास के लेखक प्रदीप बिहारी हैं। प्रदीप जी कथा, उपन्यास, अनुवादक एवं रंगकर्मी हैं। उनका संवेदनशील लेखकीय राडार अपने आस–पास के पात्रों के मर्म को तलाश लेता है। वे उन पात्रों में जीवन की गति, विविधता, उनके आंतरिक और बाह्य संघर्षो के आयाम को उपन्यास के साँचे में ढाल लेते हैं। स्वाभाविक है कि उपन्यास किसी न किसी सामाजिक समस्या को केंद्र में रख कर लिखा जाता है।

इस उपन्यास के किरदार बुद्धिजीवी, रंगकर्मी, शिक्षा जगत से संबद्ध हैं। परिवार व समाज के संदर्भ में पारंपरिक व आधुनिकता के संघर्ष में भी इस उपन्यास के पात्र शाश्वत आदर्श एवं मानवीय मूल्यों को परिस्थितियों के तूफान में भी दीए की रोशनी की तरह सँजोए हुए हैं।

उपन्यासकार की भाषा, शैली, कथानक एवं शिल्प में एक खास गढ़न मिलती है। कई जगह प्रसंगानुरूप वाक्य मुहावरेदार हो मुग्धकर हो उठते हैं।

सारांशतः उपन्यास इतना रोचक है कि एक बैठक में ही पढ़कर आनंद लिया जा सकता है।

नाटक

नाटक विधा के अंतर्गत नाट्यालेख उपविधा में नवारंभ प्रकाशन से एक महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाश में आई है –'धूर्त समागम'। पुस्तक के लेखक हैं डॉ. अरविंद अक्कू।

"धूर्त समागम" वस्तुतः सात सौ साल पहले कविशेखर आचार्य ज्योतिरीश्वर द्वारा संस्कृत, प्राकृत–मैथिली में इसी शीर्षक से लिखी गई पुस्तक का परिवर्तित और परिवर्द्धित मैथिली रूप है। मूल रूप में ज्योतिरीश्वर की यह पुस्तक प्रहसन के रूप में थी एवं छोटी थी जिससे दर्शकों की उत्सुकता शांत नहीं होती थी। डॉ. अक्कू ने अपनी मौलिक कल्पनाशीलता एवं लेखकीय कौशल से वाक्य–विन्यास, शैली और अभिनय कौशल से इसे सर्वथा नया रूप दिया। प्रत्येक दृश्य में उत्सुकता उत्पन्न की गई। इसलिए यह 'धूर्त समागम' ज्योतिरीश्वर की कृति का अनुवाद न होकर मौलिक स्वरूप ले चुका है।

नवारंभ प्रकाशन ने लेखक डॉ. अरविंद अक्कू का एक और नाटक 'मीनाक्षी' प्रकाशित किया है। यह नाटक मैथिली के सुपरिचित कथाकार प्रोफेसर मनमोहन सिंह की कहानी 'मीनाक्षी' पर आधारित है।

किसी भी ऐतिहासिक घटना या धारा के समकालीन दृष्टिबोध को वर्तमान में प्रस्तुत करने में बहुत खतरे होते हैं और अक्कू जी ने ये खतरे सफलतापूर्वक उठाए हैं।

नाटककार ने इस नाटक में बंग राजकुमार के संग मीनाक्षी के प्रेम–प्रसंग को मिथिला की उदात्त संस्कृति के अनुरूप ढाला है। कुशल नाटककार अक्कू जी ने मूल कथा को मिथिला के तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक परिदृश्य को वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। इस नाटक के लोकप्रिय होने का यही मुख्य कारण है।

इन पुस्तकों के अतिरिक्त 'जस करनी तस भरनी' (सतीश साजन) और 'घटकैती' नाटक (डॉ. कमलकांत झा) प्रकाशित हुए।

आलोचना

मैथिली साहित्य में आलोचना विधा सन् 1910 से स्पष्ट रूप से सामने आई। कई लोगों ने इस

क्षेत्र में लिखना शुरू किया। पर आचार्य रमानाथ झा ने इस विधा में परिमाणात्मक व परिणामात्मक योगदान किया। उन्होंने एक तरह से आलोचना के स्वरूप को मानकीकृत किया। फिर तो कई समालोचक विभिन्न कृतियों पर बेबाक आलोचना/समीक्षा लिखने लगे। उनमें से मोहन भारद्वाज का स्थान उल्लेखनीय है।

वर्ष 2020 में एक पुस्तक 'मैथिली उपन्यासः समय, समाज आ सवाल' प्रकाशित हुई है। पुस्तक के लेखक डॉ. कमलानन्द झा हैं जो अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में हिंदी के प्रोफेसर हैं। इस पुस्तक में मैथिली के उपन्यासों की हरि मोहन झा के प्रसिद्ध उपन्यासों 'कन्यादान' (1929), 'द्विरागमन' (1945) से लेकर 2020 में प्रकाशित महाकाव्यात्मक उपन्यास 'अल्लाह हो राम' तक के कथ्य शिल्प और शैली पर विवेचना की गई है।

यह पुस्तक आलोचना के क्षेत्र में नवीन औपन्यासिक मान्यताओं को स्थापित करने और पुरानी अवधारणाओं को तोड़ने के कारण मील का पत्थर साबित हो रही है। हरिमोहन झा के उपन्यासों के आलोचनात्मक विश्लेषण के माध्यम से हास्य–व्यंग्य के पीछे छिपी करुणा, व्यथा के अस्तित्व को भी स्वीकारा गया। इसी तरह राजकमल चौधरी के उपन्यास 'आंदोलन' को डॉ. कमलानंद झा की विवेचना संपूर्ण भारतीय भाषा आंदोलन पर लिखा गया एक मात्र उपन्यास सिद्ध करती है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और इक्कीसवीं सदी के पहले दशक में लिखे गए उपन्यासों जैसे 'पारो और नवतुरिया' (वैद्यनाथ मिश्र, 'यात्री'), 'पटाक्षेप' (लिली रे), 'पृथ्वीपुत्र' (ललित), 'लौरिक विजय' (मणिपद्म), 'बालादित्य' और 'वैशाखी' पूर्णिमा' (चंद्र, नारायण मिश्र), 'मोड पर' (धूमकेतु) 'भामती' (उषाकिरण खान), 'दाग' (गौरीनाथ), 'अल्लाह हो राम' (सच्चिदानंद सच्चू) तक को इस विमर्श की परिधि में रखा गया है।

आलोचना विधा में एक उल्लखनीय पुस्तक प्रकाशन में आई है– 'यात्री–नागार्जुनक मिथिला'। आलोचना की इस पुस्तक के लेखक सुपरिचित कवि व उपन्यासकार श्री दिलीप कुमार झा हैं।

यह सर्वविदित है कि वैद्यनाथ मिश्र मैथिली और हिंदी दोनों में लिखते थे। हिंदी में नागार्जुन उपनाम से और मैथिली में यात्री उपनाम से। हिंदी में तो प्रगतिशील काव्यधारा के तीन कवियों केदार नाथ अग्रवाल, नागार्जुन और त्रिलोचन की तिकड़ी मशहूर थी।

'यात्री' जी की मातृभाषा मैथिली थी और वे समान त्वरा से बल्कि मैथिली में गहराई से लिखते थे। यायावरी जीवन–पद्धति के कारण उनके पास अनुभवों का विशाल भंडार था। मैथिली भाषा, समाज और संस्कृति उनके प्राणों में बसती थी जो उनकी मैथिली कृतियों में सिक्त मिलती है।

यह पुस्तक 6 अध्यायों में है और उनकी दृष्टि का विस्तार से पड़ताल करती है।

आलोचना विधा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित हुई हैं। "मैथिली अनुवादः सिद्धांत और विवेचना"। पुस्तक की लेखिका डॉ. निक्की प्रियदर्शिनी हैं।

डॉ. निक्की ने अनुवाद जैसे कठिन चुनौतीपूर्ण कार्य के सैद्धांतिक एवं संरचनात्मक पक्ष की विशद विवेचना की है। अनुवाद एक व्यापक विधा है। जहाँ एक तरफ स्रोत और लक्ष्य भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्वों का विनिमय होता है, वहीं अनुवाद और मूल लेखक की रचनात्मकता का भी समांगीकरण होता है। यह पुस्तक अनुवाद के मूलभूत सिद्धांतों, भाषा सिद्धांत, अनुवाद की वर्तमान स्थिति, कठिनाइयों, समाधान आदि का विशद विवेचन है।

पुस्तक की अंतर्वस्तु शोधपरक दृष्टिकोण से प्रस्तुत की गई है अतः –मैथिली के गंभीर अध्येताओं और शोधार्थियों के लिए पठनीय है।

समीक्षा पर एक पुस्तक प्रकाशित हुई है– 'टीका–टिप्पणी'। श्री वीरेंद्र झा इस पुस्तक के लेखक हैं। पुस्तक की भूमिका में ही स्पष्ट कहा गया है–

अपनी साहित्यिक अभिरुचि के कारण डॉ. वीरेंद्र झा ने मैथिली साहित्य की सभी विधाओं में प्रकाशित सभी समकालीन कृतियों को टटोला है, परखा है और साहित्यिक निष्कर्ष पर कसा है। एक साहित्यिक अभिमत सुनिश्चित किया है। ये

अभिमत, समीक्षा और आलोचना के बीच की क्षीण रेखा को तोड़ते दिखाई देते हैं।

आलोचना की उपरोक्त पुस्तकों के अतिरिक्त 'मैथिली उपन्यासों में दलित विमर्श' (सुरेश पासवान), मूल्यांकन (धनाकर ठाकुर), समालोचनाश्री (अरविंद कुमार सिंह झा) आदि पुस्तकें भी प्रकाशित हुई है।

भाषा–प्रशिक्षण

औपचारिक शिक्षा में भाषा शिक्षण एक महत्वपूर्ण कदम होता है जिसमें व्याकरण एक उपकरण तो है ही पर अन्य कारक भी इस शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। यह शिक्षण नितांत तकनीक आधारित होता है और कौशल की आवश्यकता होती है।

मैथिली साहित्य के इतिहास में भाषा शिक्षण पर पहली बार एक पुस्तक प्रकाशित हुई है –'भाषा शिक्षण : मैथिली'। पुस्तक के लेखक डॉ. अरूणाभ सौरभ हैं। डॉ. अरूणाभ केंद्रीय विद्यालय में भाषा के अध्यापक रहे हैं और अब राष्ट्रीय शैक्षणिक व अनुसंधान परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.), भोपाल में भाषा के असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। वे मूलतः कवि हैं और ज्ञानपीठ नवलेखन पुरस्कार व साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार से सम्मानित हैं।

लेखक की उपरोक्त योग्यता की चर्चा करने का उद्देश्य यह है कि भाषा शिक्षण के क्षेत्र में उनका व्यापक 'फील्ड एक्सपीरियन्स' है और यही अनुभव उनकी इस पुस्तक में सभी जगह दृष्टिगोचर होता है।

इस पुस्तक में कुल 18 अध्याय हैं जिनमें भाषा–शिक्षण के विविध तकनीकों, सिद्धांतों, उपागमों, शिक्षा में मातृभाषा की भूमिका, भाषिक विशेषज्ञता, कथा, कविता, उपचारात्मक व निदानात्मक शिक्षण आदि के परिदृश्य में एक मापिक दृष्टि विकसित की गई है जिससे मैथिली भाषा का शिक्षण और अधिक उपयोगी हो गया है। सबसे सुखद पक्ष यह है कि भाषा –शिक्षण प्रविधि का समाजशास्त्रीय मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण से भी निरूपण किया गया है।

अनुवाद

भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट, पुरस्कृत, स्तरीय रचनाओं को परस्पर अनुवाद कराने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान साहित्य अकादमी, नई दिल्ली का है। सूची में शामिल सभी 24 भाषाओं की साहित्यिक कृतियों का परस्पर अनुवाद कराकर प्रकाशित करती है।

अकादमी ने वर्ष 2020 में 9 भारतीय भाषाओं–तमिल, ओड़िया, पंजाबी, मलयालम, उर्दू, बोडो, अंग्रेजी, हिंदी, पूर्वोत्तर भाषाओं के 12 पुस्तकों (कहानी संग्रहों, कविता संग्रह, उपन्यास) का मैथिली में अनुवाद कराया है।

'काल, पहर आ घड़ी' पंजाबी कविता संग्रह **'कान, पहर ते घड़ियाँ'** का अनुवाद कवयित्री डॉ. वनीता और मैथिली में अनुवाद मैथिली के चर्चित आलोचक, कवि, अनुवादक, उपन्यासकार प्रोफेसर डॉ. पंकज पराशर ने किया है।

काव्यानुवाद अपेक्षाकृत चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। इस काव्यसंग्रह की कविताओं का अनुवाद पढ़ने से लगता है कि विद्वान अनुवादक की पंजाबी भाषा के रूप–गंध, मुहावरों, लहजे पर गहरी पकड़ है। कविताओं के एक–एक शब्द की अच्छी समझ है। अनुवाद की गुणवत्ता का आलम यह है कि कवयित्री डॉ. वनीता खुद आश्चर्य करती हैं और उन्हें दीवाना अनुवादक कहती हैं।

साहित्य अकादमी के प्रकाशन के अंतर्गत एक पुस्तक प्रकाश में आई है– 'आधुनिक बोडो भाषाक छोट–छोट खिस्सा पिहानी।'

असम में 20 लाख बोडो भाषा–भाषी हैं। इस भाषा का साहित्य विकासशील अवस्था में है। भाषा का लोकपक्ष तो मजबूत रहा है पर मुद्रित साहित्य ज्यादा पुराना नहीं है। 1970 में बोडो भाषा में पहला मुद्रित कथा संग्रह **'फाइमल मिजिक'** (लेखक–चितरंजन मुशहरी) था और इस संग्रह में संकलित 'अबारी' (ले.–इशान मुशहरी) प्रथम प्रकाशित बोडो लघुकथा है।

यह पुस्तक 'आधुनिक बोडो भाषाक छोट–छोट खिस्सा–पिहानी' ग्यारह छोटी–छोटी कहानियों का संग्रह है। इसे लघुकथा के प्रचलित 'फार्मेट' के अनुरूप लघुकथा तो नहीं कहा जा सकता, हाँ, इसे छोटी कहानी कह सकते हैं।

यह संग्रह मूल बोडो कहानियों के अंग्रेजी अनुवाद 'माडर्न बोडो शार्ट स्टोरीज' (अंग्रेजी

अनुवादक जयकांत वर्मा) का मैथिली अनुवाद है। मैथिली में अनुवाद अजय कुमार झा ने किया है। संग्रह की कहानियाँ बोडो के प्रसिद्ध लेखकों अनिल कुमार ब्रह्मा, इशान मुशहरी, बंधुराम बासुमनरी, मनोरंजन लहरी, नीलकमल, ब्रह्मा, हेरावां नरजारी द्वारा लिखी गई हैं। अपने सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सरोकारों से लैस ये कहानियाँ बोडो की प्रतिनिधि रचनाएँ कही जा सकती हैं।

साहित्य अकादमी की ही एक और पुस्तक प्रकाशित है– अमलतासक छाहरिमे अंग्रेजी भाषा के इस कथा संग्रह के मूल लेखक ईस्टर्न हिल्स विश्वविद्यालय, शिलांग के पूर्व प्रोफेसर तेमसुला आओ और मैथिली में अनुवाद किया है ओ.पी. झा ने। इस संग्रह में आठ कहानियाँ हैं। संग्रह की सभी कहानियाँ संवेदना से संतृप्त हैं, कथ्य में मिथक और आधुनिकता का संतुलन है, आधारभूत मानवीय मूल्य हैं, प्राकृतिक सुषमा और सौंदर्यबोध की महक है। पहली ही कहानी 'अमलतासक छाहरिमे' कब्रगाह पर अमलतास के वृक्ष पर खिले पीले–पीले फूल संपूर्ण परिदृश्य को सौंदर्य से आप्लावित कर देते हैं। इन कथाओं में प्रेम है, विद्रोह है, समर्पण है।

इसके अतिरिक्त अकादमी ने ओड़िया कथा–संग्रह 'आन्हर कोलखी' (लेखक–अखिल मोहन पटनायक, अनुवाद–परमानंद प्रभाकर), उर्दू कहानी संग्रह (लेखक रामलाल, अनुवाद–सदरे आलम गौहर), ओड़िया कविता संग्रह 'तन्मय धूलि' (कवयित्री–प्रतिभा सत्पथी, अनुवाद–इंद्रकांत झा), पूर्वोत्तर भारत की कहानियाँ 'धरा गीत' (लेखक– कैलाश सी बराल, अनुवाद– नरेंद्र नाथ झा), ओड़िया कहानी संग्रह 'पाटदेई' (लेखक–वीणापाणि मोहंती, अनुवाद–चंद्रमणि झा), मलयालम उपन्यास 'भगवानक खेलौर' (एम. मुकुंदम, अनुवाद–जयंती मिश्र), 'मारीशस की हिंदी कहानियाँ' (बी. कमल किशोर गोयनका, अनुवाद–रवींद्रनाथ झा), तमिल उपन्यास शिवकामीक सप्पत (लेखक –काल्कि, अनुवाद–शालिनी झा) और तमिल कहानी संग्रहक 'हमर बाबूक मीत (लेखक–अशोक मित्रन, अनुवाद–राजाराम प्रसाद) भी प्रकाशित किए हैं।

नवारंभ प्रकाशन से भी 'धन्य ई आँखि' अनूदित कथा संग्रह (अनुवादिका–संस्कृति मिश्र) और 'आमीन' मूदित ग़ज़ल संग्रह, अनुवाद–रजनीश झा) भी प्रकाशित हुए हैं।

विनिबंध

विनिबंध विधा में साहित्य अकादमी की ओर से तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं– 'दामोदर लाल दास' (ले. भैरव लाल दास), 'बाबू गंगापति सिंह' (ले. खुशी लाल झा) और तीसरी, 'महाप्रकाश' (ले. तारानंद वियोगी)।

रचना संचयन

साहित्य अकादमी ने इस वर्ष चार संचयन प्रकाशित किए हैं– 'आधुनिक मैथिली साहित्यिक शिल्पी' (सं. वीणा ठाकुर)। यह एक संगोष्ठी में व्यक्त किए गए विचारों/व्याख्यानों को संकलित आलेखों का संग्रह है।

दूसरा संचयन 'समकालीन मैथिली कथा–संचयन' है जिसका संपादन वीणा ठाकुर एवं अशोक कुमार झा अविचल ने किया है।

तीसरा संचयन साहित्य महारथी आचार्य सुरेंद्र झा सुमन (संगोष्ठी आलेख– डॉ. वीणा ठाकुर) और चौथा संचयन हरिमोहन झा, 'व्यक्ति ओ रचनाकार' (संगोष्ठी आलेख –डॉ. शंकर देव झा) प्रकाशित हुए हैं।

बाल साहित्य

यह कहने में संकोच नहीं है कि मैथिली में बाल साहित्य उतना नहीं लिखा जा रहा है जितना अन्य भारतीय भाषाओं में। पर शिक्षकों में से कई लोग बच्चों के बीच के अपने अनुभवों, उनकी मानस–रचना, समझ, ग्राह्यता आदि कारकों को ध्यान में रख बच्चों के लिए कविता, गीत, कहानियाँ लिख रहे हैं।

इस वर्ष बाल साहित्य में तीन पुस्तकें प्रकाश में आई हैं। पहला है– 'आम छू, अमरोड़ा छू', दूसरा –'उड़न छू' और तीसरा है– 'जुबिली ग्रह पर भानु'।

'आम छू, अमरोड़ा छू' के लेखक अक्षय आनंद सन्नी हैं। अक्षय आनंद सन्नी उन कतिपय उत्साही बालसाहित्यकारों में से हैं जिनकी बाल कविताएँ, राइम्स बहुत सरल, सहज और गेय हैं। उनका

पहला बाल कथासंग्रह 'ओल कतरा, झोल कतरा' काफी लोकप्रिय हुआ था। शिक्षक होने के नाते वे बच्चों के मनोभावों से अच्छी तरह परिचित हैं। उनके 'राइम्स' मातृभाषा पढ़ने–सीखने में बहुत सहायता करते हैं। शब्दों का चयन भी बाल मनोविज्ञान के अनुरूप है। इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता है कि सभी कविताएँ वर्णमाला के स्वरों और व्यंजनों के आधार पर हैं। एक उदाहरण देखें–

'त' से तरबूज, फऽल कमाल
हरियत खोंइचा, गुद्दा लाल
फुटबाल सन, एकर रूप,
रस भरल छै, सुआद अनूप।

दूसरी पुस्तक है –'जुबिली ग्रह पर भानु'। लेखक हैं अमित मिश्र। यह पुस्तक 10 बालविज्ञान कथाओं का संग्रह है। संग्रह की प्रत्येक कथा किसी न किसी वैज्ञानिक सिद्धांत, सोच/दृष्टिकोण या घटना पर आधारित है।

अमित मिश्र भी पेशे से शिक्षक हैं और बच्चों के बीच रहकर उनके स्वभाव, कल्पनाशीलता, तार्किकता को प्रोत्साहित करते हैं। ये कहानियाँ इसी उद्देश्य की पूर्ति करती हैं। 'जगल में इंटरनेट', 'दुलहजा क्लोन', 'चैम्पियन' आदि कहानियाँ पठनीय हैं।

तीसरी पुस्तक 'उड़नछू' चौदह बाल कहानियों का संग्रह है। इसके लेखक डॉ. वीरेंद्र झा हैं। पेशे से वकील हैं पर मन संवेदनशील है, परिवेश की सूक्ष्म घटनाओं पर भी नजर रखते हैं। बाल–मन की अच्छी पहचान है। 'उड़नछू' कहानी एक मामूली सी बच्ची की कल्पना में लगे पंख और यथार्थ के धरातल से 'टेक–आफ' करती अभिलाषा की उड़ान की कहानी है। 'यू–ट्यूब' कहानी में आज का बच्चा पौराणिक पात्रों के कार्यों को वर्तमान धारणाओं और अवधारणाओं के परिप्रेक्ष्य में सवालों के कटघरे में खड़ा करता है। सच में, आस्था तर्क के समक्ष विचलित हो जाती है। यहाँ बाल मनोविज्ञान का एक रूप प्रकट होता है। इस कहानी से बच्चे का सवाली रूप प्रकट होता है –बच्चा अर्थात् जिज्ञासु अर्थात् सवालों का बम।

इन्हें पढ़कर लगता है कि मैथिली में भी बाल साहित्य समृद्ध हो रहा है।

इतिहास

इस वर्ष "मिथिलाक इतिहास" पुस्तक का प्रकाशन बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी पटना ने किया है। लेखक राधाकृष्ण चौधरी हैं।

डायरी

डायरी विधा में विभूति आनंद की 'लॉकडाउन डाइरी' और 'फेसबुक डाइरी' और रतीश चंद्र झा की 'डायरी' प्रकाशित हुई है।

– मकान नं. – 405, बी ब्लॉक (हुडा प्लॉट), सेक्टर–56, गुरुग्राम–122011

❑❑❑

14

संथाली साहित्य

डॉ. रेखा

विश्व विदित है कि गत वर्ष कोरोना महामारी से समस्त विश्व त्राहि–त्राहि कर उठा। स्थितियों पर नियंत्रण रखने के लिए सभी जनमानस को घरों मे कैद रहना पड़ा और यह ऐसा विकट समय था जब किसी भी क्षेत्र विशेष में कोई तरक्की देखने को नहीं मिली। फिर भी मानव जाति ने हार नहीं मानी और प्रत्येक स्थिति का सामना जी जान लगाकर किया। जिसके भीतर जो प्रतिभा थी उसे निखारने का अवसर मिला, आत्ममंथन कर स्वयं से साक्षात्कार का समय मिला। परंतु गत वर्ष में साहित्य के प्रकाशन का कार्य बहुत ही सीमित मात्रा में हो पाया।

भारत के संदर्भ में देखा जाए तो भारतवर्ष विविधता में एकता का देश है। यहाँ एक ओर जहाँ शहरी व ग्रामीण परिवेश है वहीं दूसरी ओर विभिन्न जनजातियाँ भी अपनी पहचान बनाई हुई हैं। समस्त जीवित समूह आपस में संवाद किए बिना नहीं रह सकता फिर भले ही संवाद मौखिक, लिखित या सांकेतिक रूप में ही क्यों न किया जाए। सभी जीवों में सर्वश्रेष्ठ है– मानव जाति जिसके पास भाषा जैसा सशक्त माध्यम है। ऐसी ही एक अनूठी भाषा है– संथाली, जो धीरे–धीरे साहित्य जगत में नित नए आयाम गढ़ रही है। वर्तमान में संथाली आस्ट्रोएशियाई भाषा परिवार में मुंडा शाखा के अंतर्गत आती है। संथाली भाषा भारत, बांग्लादेश, नेपाल और भूटान में लगभग 76 लाख लोगो में बोली जाती है। भारत में यह असम, बिहार, झारखंड, ओड़िशा, छत्तीसगढ़, त्रिपुरा और बंगाल में बोली जाती है। अंग्रेजी काल में संथाली रोमन में लिखी जाती थी। संथाली की अपनी पुरानी लिपि ओलचिकी है। पंडित रघुनाथ मुर्मू को ओलचिकी लिपि का जनक माना जाता है। यह वर्तमान में अत्यधिक विकसित, साहित्यिक व पूर्व वैदिक काल की समृद्ध, सांस्कृतिक विरासत है। संथाली भारत की आधिकारिक भाषा है, इसे 22 दिसंबर, 2003 को भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया। इस दिन को संथाली भाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। संथाली लिपि ओलचिकी फॉन्ट को विश्व स्तर पर संस्करण 5:1:0 पॉइंट के रिलीज के साथ 4 अप्रैल, 2008 को विश्व स्तर पर यूनिकोड मानक से जोड़ा गया। भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास द्वारा दिल्ली में 8 सितंबर, 2009 को सार्वजनिक डोमेन में संथाली ओलचिकी सॉफ्टवेयर टूल्स जारी किया गया। संथाली भाषा साहित्य के डिजिटलाइजेशन एवं विकास के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सरकारी और गैरसरकारी संस्थानों द्वारा कार्य हो रहा है, जिनमें मुख्य रूप से ओलचिकी सॉफ्टवेयर विकास की परियोजनाएँ शामिल है। इसी विकास क्रम को आगे बढ़ाते हुए

1925 में पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा संथाली के लिए वैज्ञानिक ओलचिकी लिपि की खोज के साथ, 1988 में 'अखिल भारतीय संथाली लेखक संघ' की स्थापना, 2006 से संथाली भाषा के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्रदान करना आरंभ कर दिया गया और 2016 में 'जुवान ओनोलिया' नामक संथाली भाषा साहित्य की अंतरराष्ट्रीय संस्था की स्थापना हुई।

संथाली साहित्य में गद्य और पद्य की विभिन्न शाखाओं जिनमें, उपन्यास, कहानी, काव्य रचना, शब्दकोश, बाल साहित्य सभी शाखाओं पर प्रचुर मात्रा में कार्य हुआ है। संथाली शब्दों का संग्रह जो कि संथाली अंग्रेजी शब्दकोश के रूप में आठ खंडों में प्रकाशित है इसका श्रेय बोडिग साहब को जाता है। संथाली लिखित साहित्य का श्रीगणेश बोडिग जैसे विदेशी धर्म प्रचारकों के हाथों हुआ। संथाली का संपूर्ण कथा जगत, "ओलखोन दो युति गे सोरेसा" अर्थात् लेखन से किस्सागोई ही श्रेष्ठ होता है की पद्धति अपना कर चलता है। इस तरह की कहानी, गीत, कविताएँ, मुँह और दिमाग में ही रचने वाले विद्वानों के किस्सागोई से संथाल समाज भरा पड़ा है। दूसरी ओर संथाली साहित्य के लिखित साहित्य युग की शुरुआत 1854 से होती है। किसी संथाली और किसी तरह की मिशनरियों की सहायता के बिना 1897–98 में पहली पुस्तक की रचना माँझी रामदास टुडू द्वारा 'खेरवाल बंसो धोरोम पुथि' के नाम से हुई जो कि एक धर्म ग्रंथ है। श्री बोस्वास ने सन् 1909 में 'फोक लोर ऑफ संथाल परगनास' के नाम से संथाली कथाओं का अनुवाद किया।

उसके बाद 1936 में पॉल जुझार सोरेन ने 'ओनोड़हे बाहा डालवाग' नामक पुस्तक की रचना की जो एक कविता संग्रह है। भाषा और साहित्य के क्षेत्र में डॉक्टर समीर का योगदान अग्रगण्य है। मूल्यांकन करने पर सहज ही समझ आ जाता है कि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने जिस तरह सरस्वती पत्रिका के माध्यम से साहित्य को चमकाने का काम किया उसी प्रकार डॉक्टर समीर ने 'होड सोम्वाद' नामक संथाली साप्ताहिक पत्रिका के माध्यम से किया। इनकी प्रकाशित पुस्तकों में, 'हिंदी में संथाली भाषा (दो भाग)', 'संथाली प्रकाशिका', 'राष्ट्रपिता', 'दिशाम बाबा', 'गिदरा को रासकाक् पूथी', 'सेदाय गाते', 'अखीर आरोम', आखिर मारसाल (3 भाग)', 'बुल मुंडा', 'अखिल हार', 'संथाली साहित्य', 'माताल सेताक', 'हिंदी–संथाली शब्दकोश' और 'संथाली लोक कथाएँ' हैं जिनमें संथाली की उन लोक–कथाओं को स्थान मिला जो युगों से लोगों के कंठ में विराजती हैं।

श्री एस सी मुर्मू नामक संथाल लेखक द्वारा 138 छोटी–छोटी लोक कथाओं का संग्रह संथाली भाषा में दुमका से प्रकाशित हुआ है। जिसमें 'अन्यान्य समाज' में प्रचलित संथाली लोक कथाएँ वर्णित हैं।

सुशील टुडू ने संथाली साहित्य में राष्ट्रीय भावना नामक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने राष्ट्रप्रेम के साथ जनजातीय परंपरा को जीवंत रखने वाले भावों, उद्गारों को भी अभिव्यक्ति प्रदान की।

श्री भागवत मुर्मू ठाकुर द्वारा संगृहित कुल 12 लोक कथाओं की एक पुस्तक कोहिमा से प्रकाशित हुई। जिसमें सृष्टि कथाएँ–पृथ्वी, चंद्र, सूर्य, पेड़–पौधों की उत्पत्ति आदि हैं। संथाली व्रत, उपवास, त्योहार, रीति–रिवाज, गोत्र से संबंधित देवी–देवता, भूत–प्रेत, ओझा से संबधित मित्रता और शत्रुता से संबधित कथाएँ और अन्यान्य कथाएँ भी हैं।

जोबा मुर्मू संथाली की चर्चित लेखिका है उनका लघु कहानी संग्रह 'ओलोन बहा (अलंकार पुष्प)2019' के लिए साहित्य अकादमी का बाल साहित्य पुरस्कार देने की घोषणा की गई जो उन्हें 2020 फरवरी–मार्च में प्रदान किया गया। उन्होंने 2009 में, 'बहा उमुल', 2010 में, 'बेवरा' और प्रेमचंद की सरस कहानियों का संथाली अनुवाद 2014, रवींद्रनाथ टैगोर रचित गीतांजलि का अनुवाद 2015 में किया। जोबा सी आर माँझी की पुत्री व साहित्यकार पितांबर हाँसदा की पत्नी हैं। जोबा की तरह पितांबर हाँसदा भी साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता हैं। पितांबर हाँसदा को उनकी पहली कहानी 'जिब जियाली कोवैक गिदरा कहानी (जानवर की कहानी)' के संग्रह के लिए पुरस्कार मिला। 65 पेज की पुस्तक में हाथी, बाघ, खरगोश

आदि जानवरों की कल्पना करते हुए कहानी गढ़ी गई है। साथ ही बच्चों के लिए भाषा को आकर्षक व आनंददायक बनाया गया है, इसीलिए पुरस्कार के अधिकारी बने हैं।

कृष्ण चंद्र टुडू ने 'संथाली भाषा अन्वेषिका' नामक पुस्तक लिखी जिसमें भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के विषय में संपूर्ण चित्रण प्रस्तुत किया गया है। कृष्ण जी ने प्रयास किया है कि उनकी संस्कृति जन–जन तक पहुँचे।

डॉक्टर विनय कुमार ने 'संथाली भाषा, लोकगीत एवं नृत्य' विषय को लेकर पुस्तक की रचना की है। जिसके अंतर्गत विभिन्न आयोजनों पर कौन–कौन से गीत व नृत्य आयोजित किए जाते हैं उन्हें श्रृंखलाबद्ध करने का कार्य भी इन्होंने किया।

डॉक्टर रत्न हेम्ब्रम ने भी 'संथाली लोकगीतों में साहित्य एवं संस्कृति' के विषय में पुस्तक का प्रकाशन करवाया। जहाँ विनय कुमार लोकगीत व नृत्य को विभिन्न आयोजनों से जोड़ते हैं वही रत्न हेम्ब्रम जी ने लोकगीतों में समाहित संस्कृति व प्राचीन परंपराओं की झलक का जिक्र किया है।

संथाली भाषा के लिए सर्वप्रथम जदुमणि बेसरा को सबसे पहले अपनी कविता 'भावना' के लिए 2005 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला वहीं कालीचरण हेम्ब्रम को 2019 में संथाली साहित्य अकादमी पुरस्कार लघुकथा संग्रह 'सिसिरजली' के लिए 25 फरवरी, 2020 के लिए मिला है।

उनकी लघुकथा का विषय संथाल की संस्कृति, सामान्य जनजीवन, प्रेम कथा रही। साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2018 में रानी मुर्मू को 'होरपोन मयंक कुकमू' लघुकथा के लिए मिला। गुहिराम किस्कू को 'जारपी दिशोमरिन मानमी (कविता)' 2019 का पुरस्कार मिला है।

बाल साहित्य के लिए पुरस्कार लक्ष्मी नारायण हासंदा को 'बड़ी गोन्ग गर्न थायलाग' नामक लघुकथा के लिए मिला। लक्ष्मण चंद्र सोरेन को 'झारूमझाग' कविता के लिए 2019 में पुरस्कार मिला।

गोविंद चंद्र माँझी वे 'नहला' कविता, भुजंगा टूडु ने 'ताहिरा न लागी रे', कविता संग्रह लिखा। श्यामसुंदर बेसरा ने 'मारोम' नामक उपन्यास की रचना की। अर्जुन चरण हेम्ब्रम ने 'चंदा बोंगा' नामक कविता संग्रह की रचना की, जिसके लिए उन्हें भी साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इन सब के अतिरिक्त रामचंद्र मुर्मू, खेरवाल सोरेन, बादल हेम्ब्रम, दमयंती बेहा, भोगला सोरेन, आदित्य कुमार मांडी, गंगाधर हासंदा, जमादार किस्कू, रविलाल टूडु, गोविंद चंद्र माँझी ऐसे प्रमुख साहित्यकार हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं से संथाली साहित्य को नए आयाम प्रदान किए हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत की अनमोल धरोहर है– जनजातियाँ। मनुष्य जाति में जिन विभिन्न विशेषताओं के होने की बात कही जाती है वो इनमें प्रचुर मात्रा में होती हैं। फिर चाहे वह– ईमानदारी, मानवता, सभ्यता, साहित्य, समभाव, आदरभाव, जिजीविषा, संतोष, प्रकृति संरक्षण, अतीत सरंक्षण हों इनमें सब विद्यमान हैं जो लेखन के अभाव में प्रकट रूप से सामने नहीं आ पाता। परंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो इसकी नितांत आवश्यकता भी है जिससे इन्हें समानधारा से आसानी से जोड़ा जा सके और संवाद संभव हो सके। हमें खुशी है इस बात की, कि इस मार्ग पर हम निरंतर प्रयासरत होने के साथ प्रगति पथ पर हैं। साथ ही ऐसा नहीं कि संथाली साहित्य केवल यहीं तक सीमित है, जिनके नाम मैं नहीं लिख पाई हूँ ऐसा नहीं कि वे महत्वपूर्ण नहीं हैं। सीमित लेख में सभी को सम्मिलित कर पाना या सभी रचनाओं को शामिल कर पाना संभव नहीं हो पाया इसलिए मैं उनसे क्षमा प्रार्थी हूँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

झारखंड पब्लिकेशन, छत्तीसगढ विकिपीडिया

– मकान नं. – 2340, हाउसिंग बोर्ड सेक्टर–3, रोहतक, हरियाणा–124001

❑❑❑

15

संस्कृत साहित्य

डॉ. अजय कुमार मिश्र

यह सच है कि ग्लोबलाइज़ेशन के इस घातक दौर में रचनाधर्मिता और उसके साहित्य के संघीय तथा प्रजातांत्रिक रिश्तों पर भी खतरों के बादल मँडरा रहे हैं। लेकिन इसका भी ख़्याल रहे कि आई.टी. तथा भूमंडलीकरण की यह मिलीभगत साहित्य का विकल्प हरगिज नहीं हो सकता है। न ही कोई ई. टेक्स्ट भी। यह बात अलग है कि ये दोनों संदर्भों की दुनिया थोड़ा नाम जरूर कमा सकते हैं। लेकिन ये संदर्भ मूल पाठ/पुस्तक का अंतः साक्ष्यों के रूप में कतई पुख़्ता विकल्प भी नहीं हो सकते हैं। ई–लाइब्रेरी की एक क्लिक की लाखों किताबें भी किसी एक पुस्तक की खरखराहट तथा उसकी खुशबु के बराबर मन–मस्तिष्क में पाठकीयता की रौशनी कभी नहीं बिखेर सकती हैं और न ही लेट कर या सो कर अथवा करवटें बदल कर पढ़ने की आज़ादी दे सकती हैं।

हिंदुस्तानी पाठकीयता के बाज़ार की गर्माहट तथा पुस्तक को रीडर ओरियंटेड इंद्रधनुषीय मल्टी कलर की छवि बनाए रखने के लिए 'वार्षिकी' (सर्वे ऑफ इंडियन लिटरेचर) भी प्रत्येक वर्ष भारतीय साहित्य की विविध विधाओं को देश–विदेश के अदबी बाज़ार में रंग बिखेरने तथा सृजन की क्षमता को महफूज़ तथा उनको बरकरार रखने में तड़ित चालक के रूप में सतत संलग्न है और हाँ, साथ ही साथ इसका भी ध्यान रहे कि ऐसी ही साहित्यिक सामग्री इतिहास संरचना प्रक्रिया के लिए अंतः साक्ष्यों के रूप में अहम् भूमिका निभाती है।

यह बात अलग है कि शिशिर कुमार दास या सुधीर चंद्र जैसे साहित्य लेखन के जाने–माने इतिहासकार भी अपनी लेखन सामग्री में समसामयिक संस्कृत की रचनाधर्मिता के साक्ष्यों को मुहय्या कराने में अपने आप को कमोबेश असमर्थन सा ही पाते हैं। फलतः संस्कृत की जीवंतता को लेकर अनेक मन गढ़ंत सवाल भी उठाए जा रहे हैं। इन सारी खाईयों को पाटने तथा औपनिवेशिक बौद्धिक आक्रमण के मिथक को धराशायी करने में लब्धप्रतिष्ठ पत्रिका 'वार्षिकी' की भी भूमिका गौरतलब हो सकती है।

साल 2020 में भी संस्कृत साहित्य के बाज़ार में इनकी विविध विधाओं को लेकर श्लाघनीय कार्य हुआ है जो ग्लोबाइज़ेशन को खुली चुनौती देता भी लगता है।

किसी भी भाषा के साहित्य में उनकी विधा की संख्या में ईज़ाफ़ा होना भी बहुत ही तोष का विषय है, वह भी आज के घोर बाज़ारवाद के घातक दौर में। समसामयिक संस्कृत की दुनिया में भी साहित्यिक विधाओं की संख्या में सार्थक ईज़ाफ़ा देखा जा रहा है। सन् 2020 के कुछ चुनिन्दे संस्कृत किताबों की तहकीकात इस प्रकार की जा सकती है–

साल 2020 ने न केवल संस्कृत के समीक्षात्मक स्वतंत्र समीक्षा ग्रंथ, इतिहास परक ग्रंथ, बाल साहित्य अपितु अपने वाङ्मय में अभिनव विधा की धाराओं को उन्मीलित करने का सार्थक प्रयास किया है। विधाओं की संख्या में इजाफ़ा उस विधा के साहित्य की रचनात्मक संवृद्धि के साथ–साथ उसकी साहित्यिक वैपुल्य की भी तस्दीक करता है। इस लिहाज़ से श्री प्रफुल्ल कुमार मिश्र रचित 'पत्रप्रिया'[1] नामक संस्कृत पत्र कथा–संग्रह भी काफ़ी गौरतलब है। शृंगार रस के संयोग तथा वियोग पक्षों को लेकर संस्कृत के आधुनिक साहित्य का उसे पहला प्रेम का काव्य माना जा सकता है। साथ ही साथ यह काव्य तन्मय प्रवास विप्रलंभ का एक बेजोड़ नजीर माना जा सकता है जिस वियोग में भीतर तथा बाहर सभी तरफ़ वही दिखता है जिसे वह दिल दिमाग से चाहता है। विप्रलंभ के चार प्रकार हैं– "सच पूर्वरागमानप्रवास करूणा–त्मकश्चतुर्धास्यात।" और कहा भी गया है "तन्मयं तत्प्रकाशो हि बाह्याभ्यन्तरस्था।" इस 'पत्रप्रिया' पर यत्र–तत्र कालिदास के क्रमशः अभिज्ञानशाकुन्तल तथा मेघदूत की भी छाप प्रतिबिंबित होती दिखती है जिसमें भाव की कमनीयता तथा लालित्य भारतीय सौंदर्यशास्त्र का पालन करता है। लेकिन कथानक में समकालीनता का बड़ा ही जीवंत प्रभाव भी दिखता है। दुष्यंत जब अपने मित्र माधव्य (विदूषक) को शंकुतला के बने चित्र को दिखाता है तो उन दोनों के बीच इस चित्र की वास्तविकता को लेकर थोड़ी देर के लिए गलतफहमी भी हो जाती है– "सानुमती–अहमपीदानीम–वगतार्था, किं पुनर्यथा–लिखितानुभाव्येषः। (छठा अंक)।"

उसी प्रकार गोतीयर (आक्सफोर्ड), जोहानसबर्ग क्योटो (जापान), मासाचुसेट, टुविङ्गेन् (शर्मण्यदेश), चंद्रभागा (नदी) के किनारे मॉरीशस, सेंट्पीटर्सबर्ग, दिल्ली, पुदुच्चैरी, केपटाउन, अलास्का, बालुकंदल ग्राम से (जो प्रियतमा का मूल निवास स्थान है), पुरी, हाइडिल वर्ग, पैरिस, वाराणसी, कन्स्टाण्टाईन, मायामी वेलाभूमि, भुवनेश्वर, उज्जयिनी, हरिद्वार तथा ज्युरिख जैसे देशी–विदेशी जगहों से लिखे प्रेम पत्रों की आकुलता से भरे वियोग का गजब का सिलसिला पढ़ने को मिलता है। इन पत्रों में जहाँ अनुपम प्रेम की गहन सघनता में वियुक्त प्रेमी युगल के मिलनोत्कंठा का ज्वार भाटा उनके देह के समुद्र में बार–बार उठता है। गौरतलब है कि कालिदास ने जहाँ उपर्युक्त चित्र प्रसंग में शकुंतला के चित्र को वास्तविकता का जामा पहनाना चाहा है वहीं इस ललित पत्रप्रिया कथा साहित्य में प्रेमिका अपने प्रेमी के लव लेटर को ज्योत्स्ना मानती हुई अपने आप को चकई (चक्रवाक) समझती है– "प्रिय। किंभो किं प्रकुरूषे! महीय पत्रं प्राप्य कथं नोत्तरितं त्वया? त्वत्पत्रज्योत्स्नायाः चातकीभूय नितरां तृषर्स्ताऽस्मि। न जाने कदा किं भविष्यति।" (वही पृ.124)। इतना ही नहीं उसके इस प्रवास–जन्य वियोग की दुःखद स्थिति में उसके लिए यह जीवन लाक्षा गृह की तरह बन गया है जो गृह उसके वियोग–जन्य गर्म श्वासों से मानो पिघल रहा है। लेखक ने यहाँ महाभारत के मेटाफोर को बड़ी ही संवेदनात्मक बारीकी तथा सटीकता से प्रयोग किया है– "ऋते त्वया किमवशिष्यते लब्धुम? जीवनस्य जातुगृहं दीर्घश्वास सन्तापेन तरलयति।" (वही)। दुष्यंत शकुंतला का चित्र बनाकर अपने वियोग के दुःखद क्षणों को किसी तरह गुजारना चाहता है। लेकिन इस प्रेमपत्र कथा की नायिका अपने प्रिय के पत्र पर उसका हस्ताक्षर देखकर उसको साकार रूप में देखकर मचल उठती है।

इस प्रकार यहाँ अनुभव किया जा सकता है कि काव्य/नाट्य (विशेषकर) में चित्रकला एक शास्त्रीय टूल के रूप में इस्तेमाल की जाती रही है। अब ऐसे पत्र काव्य में भाव की गहनता को चित्रांकित करने के लिए सूफियाना फलसफा जैसे मिजाज़ को भी महत्व दिया जा रहा है। अतः समकालीन संस्कृत साहित्य अपनी तब्दीली के साथ युगीन शैली के प्रजातंत्र की तलाश में भी जुटा मालूम पड़ता है। संस्कृत भाषा के ललितालंकार कानन में पाठको को भटकाने से बेहतर कवि प्रिय के मांसल भाव पेशलता को प्रभावी ढंग से पाठक मन को सिक्त करने के लिए अपने आस–पास तथा सहज वातावरण तथा उनके उपकरणों को प्रयोग कर संस्कृत के मोनोटोनस अलंकारवादी

घटाटोप को विदीर्ण कर संस्कृत भाषा के ब्लू ब्लडेड मानसिकता को भी थोड़ा कम करता दिखता है। यही कारण है कि इस कथा का कांत अलास्का जैसे घोर बर्फीले इलाके में अपनी कांता के प्रेमोष्मा के पत्र को पाकर काफ़ी ऊर्जावान तथा मिलन की आशा से ओत–प्रोत हो गया है और उस पत्र की गर्मी से सारा बर्फ़ पिघलकर धरती को सिंचित कर हरीतिमा की चादर ओढ़ा देगा– "प्रियतमे, लब्धं ते भावद्योतितमावेगगर्भित महार्धं पत्रम्। दूरे हिमाच्छादिताऽऽलास्काशीतभूमौ त्वल्लेखं पठित्वा उष्मतामनुभवामि। मन्ये सकलं हिमवितानं औज्ज्वल्येन ते पत्राग्निना तरलीभूय जलप्रवाहेण जवीयसा शस्यश्यामलिम्ना पुष्पमुकुलमण्डितं भविष्यति।" (पृ.70)। इस प्रकार देखा जा सकता है कि यहाँ प्रेम की स्निग्धता कैसे व्यष्टि से समष्टि होकर जड़–चेतन की शुभकामना से तरंगायित हो उठता है। इस गद्यांश में भाषा की सरलता के साथ–साथ भाव भी सहज रूप में पढ़े जा सकते हैं।

जाने–माने कवि–समीक्षक आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी साहित्य लेखन में उपमा या रूपक आदि अलंकार को लेकर बार–बार इस तथ्य पर बल देते हैं कि कवि/रचनाकार जब तक अपने इन अलंकारों में नवानुसंधान/प्रयोग नहीं करेंगे, तब तक उनके साहित्य में जीवंतता नहीं आएगी। मुख की तुलना चाँद से ही करने की बात कब तक ढोई जाएगी। अभिज्ञानशाकुन्तल में अनुसूया चुटकी लेती कहती है कि अरे शकुंतला! तुम जानती हो न कि आम के पेड़ को नवमल्लिका अर्थात् चमेली का फूल जीवन साथी के रूप में मिल गया है– "हला शकुंतले! इयं स्वयंवरवधु सहकारस्म त्वया कृतनामधेया वनज्योत्स्नेति नवमालिका।" प्रथम अंक। यह संवाद ध्वनि में हो रहा है लेकिन 'पत्रप्रिया' की नायिका अपने प्रिय के छरहरे बदन की तुलना शालवृक्ष तथा अपने आप को लता से कर के उस शालवृक्षरूपी प्रिय के शरीर में लिपट जाना चाहती है– "अहं यावत्शक्यं शीघ्रं ते नेत्रपथाथितिं भविष्यामि। ममाङ्गलतिका तव शालप्रांशुभूते देहवृक्षे छंदिता भविष्यति।" (पृ.134–त्रयत्रिंशपत्रम्)। यहाँ प्रेम के लय में एक दूसरे में समा जाने के अर्थ के लिए 'छंदिता' शब्द काफ़ी महत्व का लगता है।

उसी प्रकार मायामी वेलाभूमि के समुद्र के किनारे को अपनी प्रिया की यादों को तरोताज़ा करते हुए बखान किया जाना कि चाँद की किरणें सागर की जलोर्मि में उसकी प्रिया के दुपट्टे होने (झिलमिलाहट के कारण) की आशंका उत्पन्न कर रही है और उस दुपट्टे की फड़फड़ाहट मानो सोने जैसी बालूराशि को चुंबन कर रहा है– "तस्मिन दुकूलायिते उड्डीयमाने पथ्यामि कदाचिदावयोः भ्रमेणं ग्रीष्मावासे मया (मी) : वेलापान्ते। हस्तेन हस्तं ते परामृश्य दुकूलं फरफरायमाणं कदाचित स्वर्णरेणुं स्पृशति।" (पृ.114, षड्विंशपत्रम्)। कालिदास ने सही लिखा है कि जब कोई दुःख अपने प्रियजनों में बाँट देता है तो वह कम हो जाता है और फिर उसकी वेदना असह्य नहीं रह जाती है– "स्निग्धजनसंविभक्तं हि दुःखं सह्यवेदनं भवति।" (अभिज्ञानशाकुन्तल, तृतीय अंक)। नायक नायिका भी अपने–अपने पत्र वाचन–लेखन से अपने–अपने मन को हल्का करते हैं और अनेक पाश्चात्य साहित्य चिंतक इस बात को मानते हैं कि साहित्य लेखन अपनी दमित इच्छाओं की पूर्ति का एक प्रबल माध्यम है। उस लिहाज़ से भी इस पत्रप्रिया कथा का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

प्रस्तुत उम्दा लेखन से इस तथ्य की भी पुष्टि होती है कि प्रेमिका ने अपने 'वैज्ञानिक कार्यों में रात दिन लगे रहने के कारण तथा विदेशों में लगातार भ्रमण के कारण अपने व्यक्तिगत जीवन को खो दिया है और वह अब अपने कैरियर को भूल कर अपनी लाईफ की ओर फिर से लौटना चाहती है। साथ ही साथ रचना में यह तथ्य भी सही ढंग से उठाया गया है कि आज आई.टी के दौर में साहित्य कैसे बासी होता जा रहा है। ग्लोबलाइज़ेशन के ख़तरों से हम लोगों को सावधान रहना ही होगा– "साहित्यं नाम इदानीन्तनस्य मनुष्य जीवने तथावश्यकं न भवति। मन्ये अंतर्जालं फेसबुक, दूरदर्शनादिकञ्छ मुद्रितं साहित्यं गिलति। साहित्यस्य महिमा ह्रासति सर्वथा चेरि–पुष्परागेण रञ्जितं जीवनं मत्कृते दुःखायते।"

(पृ.24, पञ्चमपत्रम्)।

फिर भी इस तथ्य का हमेशा ध्यान रखा जाना चाहिए कि प्रस्तुत नूतन विधा का महत्वपूर्ण

काव्य संग्रह आधुनिक भौतिक तथा मशीनी जीवन के पशोपेश भी एक अनुपम प्रेम कथा की अमर कहानी है। लेकिन इस अमर प्रेम कथा का युगल प्रेमी अंततः हर हाल में एक दूसरे पर अटूट विश्वास तथा आस्था का बेमिसाल प्रस्तुतिकरण करता है आज के भागते दौड़ते जीवन में किसी दांपत्य का सेल्फ कैसे महफूज़ रखा जाए? इस दृष्टि से यह रचना पठनीय हैं। प्रस्तुत रचना का मूल संस्कृत से हिंदी भाषा में डॉ. राधेश्याम शुक्ल तथा डॉ. प्रमिता मिश्रा ने मिलकर अच्छा तर्जुमा तो किया है लेकिन ऐसा भान होता है कि अंतिम के कुछ अनुवादों पर विशेषकर वर्तनी को लेकर (ख़ास कर उनत्रिंशपत्र) ध्यान नहीं रखा गया या किसी कारणवश प्रूफ रीडिंग नहीं हो सकी अथवा टाइपिस्ट पर एक तरफ़ा विश्वास कर लिया गया। यह बात भी समझ में नहीं आती कि इंटरनेट के लिए 'वैद्युतिक दुर्गम अंतर्जाल' (पृ.57) तथा दाढ़ी के लिए 'श्मश्रु' जैसे कठिन शब्दों को अनुवाद के लिए क्यों चयनित किया गया है? उसी प्रकार 'आँखों में पानी' (पृ.55, चतुर्दशपत्रम्) की जगह 'आँखों में आँसू' अधिक अनुवाद के करीब होता। लेकिन मदाशावर्तते रात्रि गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम् (मनभावन सूक्ति है। (पृ. 70, पञ्चदशपत्रम्) प्रस्तुत प्रेम कथा में राज्य तथा वतन का नॉस्टैल्ज़िया ने दांपत्य तंतु को बाँध रखा है।

संस्कृत साहित्य के लेखन को लेकर आम जनता यही सोचती समझती है कि इस वाङ्मय का साहित्य शृंगार प्रधान अथवा पौरोहित्य विद्या से भस पड़ा है। इतना ही नहीं बहुत से इतिहासकार यह मानने की भी चूक करते हैं कि आज के संस्कृत साहित्य में जीवंतता का सर्वथा अभाव है तथा उसमें इतिहास चेतना की बात करना तो कपोल कल्पना ही है। संस्कृत–हिंदी के जाने–माने कवि पद्मश्री रमाकांत शुक्ल की लिखित इस साल की कवितावली 'प्राच्यविद्याशताब्दीयम'[2] साहित्य और इतिहास के बीच एक बड़ा ही ठोस रिश्ता तलाशती नज़र आई है। जाने–माने कवि आचार्य शुक्ल ने संस्कृत तथा उससे संबंधित भगिनि भाषाओं से जुड़े राष्ट्रीय प्राच्य सम्मेलन (AIOC) के विषय में प्रस्तुत किताब में श्लोकबद्ध इतिहास लिखा है। यह संग्रह 'प्राच्यविद्याधिवेशनम् चित्राणि', 'प्राच्य–विद्याशताब्दीयं नागपूराधिवेशनम् चित्राणी' तथा 'अध्यक्षीयभाषानि' के अलावा अंतिम चौथे अंश में "अ.भा. प्राच्यविद्यासम्मेलनस्य पञ्चाशत्तमधिवेशने पठितो लेखः" के रूप में प्रामाणिक तथा दुर्लभ सामग्री के साथ संस्कृत साहित्य के बाजार में दाखिल हुआ है। घटनाएँ घट जाती हैं। समय के साथ वे गर्त में चली जाती हैं। शब्द को ब्रह्म कहा गया है। उनका कभी नाश नहीं होता। लेकिन उनका अंतर्नाद ब्रह्मांड में सुनाई पड़ता है। यह तथ्य अलग है अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलनों की प्रोसेडिंग तो छप जाती है लेकिन उसमें शोधपत्रों का सार मात्र ही प्रकाश में आ पाता है। उन सम्मेलनों में पठित शोध पत्रों को भी धरोहर के रूप में महफूज बनाए रखने की जरूरत है। इस दिशा में अभी तक कोई पहल नहीं दिखती है। लेकिन आचार्य कवि शुक्ल की यह रचना इसलिए महत्वपूर्ण है कि उन्होंने बतौर एक प्रत्यक्षदर्शी के रूप में इन सम्मेलनों की बौद्धिक तथा सांस्कृतिक क्रिया–कलापों को अपने लयमय शब्दों में सार्थक ढंग से गूँथने का श्लाध्य प्रयास किया है। साथ ही साथ इनमें अपने अनुभवों का भी पुट डालने का प्रयास किया है। पुस्तक के अवगाहन से भान होता है कि पद्मश्री आचार्य शुक्ल ने किस तरह से गीता रूपी इस अखिल भारतीय प्राच्य सम्मेलनों का ख़ाका एक विराट पुरुष के रूप में खींचा है। इसे उन प्राच्य सम्मेलनों का ऐतिहासिक दस्तावेज का प्रथम प्रयास माना जाना चाहिए। लेकिन यह भी कोई कम सच नहीं है कि यत्र–तत्र इसमें कविगत अनुभवों तथा प्रसंगों की भरमार है। अतः साहित्य के इतिहास या इतिहासकार ही इस तथ्य को ठोस ढंग से बता सकते हैं कि प्रस्तुत ग्रंथ इतिहास ग्रंथ है अथवा उनका साहित्यिक यात्रावृत्तांत। लेकिन चाहे जो कुछ भी हो संस्कृत साहित्य के आधुनिक साहित्य में उसे एक अद्यतन विधा धारा की रचना माननी चाहिए। साथ ही साथ शेल्डॉन पॉलोक जैसा पाश्चात्य विद्वान जो आज की संस्कृत भाषा को 'डेड लैंग्वेज' का खिताब पहनाता है उसे अपने इस भ्रामक मत को सुधारना चाहिए क्योंकि इतिहास

को या अपने यात्रावृत्तांत को संस्कृत के लयात्मक पद्यों में समेटना कोई आसान काम नहीं। वस्तुतः यह पहल भाषा के बहुआयामी संप्रेषणों की सफल अभिव्यक्ति का बड़ा ही ठोस आधार है। कवि की पंक्ति स्पष्ट करती है कि इस अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन का श्रीगणेश सन् 1919 में किया गया था– तस्याः सभायाः प्रथमाधिवेशनं पूणेनगर्यामभ वत्सुयोजितम/नन्दात्मनन्देन्दु (१९१९) समङ्कितेऽब्दके कृस्तीयपञ्चाङपरंमरायुते।।9।। इस अखिल भारतीय प्राच्य सम्मेलनों से जुड़े अध्यक्षों तथा महासचिवों का भी जिक्र किया है जिनको पढ़ने से पता चलता है कि संस्कृत के सभी दिग्गज इससे किसी न किसी रूप में सक्रिय रूप से संबद्ध रहे हैं। साथ ही साथ नाट्यशास्त्र के मर्मज्ञ पाश्चात्य विद्वान सिलवाँ लेवी ने भी इस सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला है। उसी प्रकार फ्रेडरिक विलियम थामस ने भी अध्यक्ष पद को सुशोभित किया है। 1955 के अन्नामलाई में हुए अधिवेशन के अध्यक्ष सर्वपल्ली राधाकृष्णन थे। कवि शुक्ल ने वहाँ की प्राकृतिक सुषमा तथा ऊर्जा का बखान करते लिखा है– "पर्वता विहगा वन्या जीवाः किञ्चसरीसृपः/अभयारण्यगा दृष्टाः चेतोमोदप्रदायकाः"।।73।। इसी प्रकार जम्मू–कश्मीर (1961) के प्रत्यभिज्ञा दर्शन तथा वहाँ के डलझील, शारदा मंदिर आदि के चिंतन तथा परिदृश्य कभी ओझल होते नहीं दिखते हैं 'डलझीलं महारम्यं शारदामंदिर तथा/रक्तं चतुष्पथं दृष्ट्वा विद्वांसो मोदमाप्नुवन।।86।। कवि अपने इस साहित्यिक बौद्धिक यात्रांवृत्तांत में देश–दुनिया के तमाम प्रसंगो का वर्णन तो करता ही है साथ ही साथ अपने जनपद खुर्जा के हमजोली शक्तिधर शर्मा तथा सज्जन सिंह का भी जिक्र करना नहीं भूलता है। यद्यपि कवि का मानना है कि इस राष्ट्रीय प्राच्य अधिवेशन में भारत के नाना युवा प्रौढ़, वृद्ध तथा विद्वत–समाज अठारह सत्रों में अपने–अपने शोध–पत्रों का वाचन करते हैं– "भारतस्य युवानोऽथो प्रौढा वृद्धा मनीषिणः/अष्टादशविभागेषु शोधपत्राण्यवाचयन्"।।147।। लेकिन समय निष्ठा की दृष्टि से इस बौद्धिक महामेला को खंगालने की आवश्यकता जान पड़ती है। कवि अपना तोष जताते हुए कहता है कि इसके एक अधिवेशन में प्रसिद्ध रंगकर्मी गिरीश करनाड का चर्चित नाटक 'ययाती' का भी मंचन किया गया तथा राजस्थानी 'धरती धोरारी' की प्रस्तुति भी काफ़ी मनभावन बन पड़ी थी– "धरती धोरारी त्येषा राजस्थानीयगायैकः/प्रस्तुतिः श्लाघिता जाता दर्शकैः सर्वकैरपि"।।177।। उसी प्रकार चर्चित संस्कृत कवि–गीतकार आचार्य राजेंद्रमिश्र का गीत "न में प्रिये रोचते एव जीवनं/न वा जगच्चास्ति प्रियं त्वया विना"।।238।। तथा युवामन के कवि आचार्य जर्नाधन प्रसाद पांडेय 'मणि' की कविता/गीत ने भी नेताओं का मन मोहा था। कवि उस प्राच्य सम्मेलन चर्चा के बहाने उत्तराखंड के संस्कृत विश्वविद्यालय में नोटबंदी के दौरान आयोजित श्रीहीन इस राष्ट्रीय आयोजन का जिक्र करना नहीं भूला है– "उत्तराखंड सं. वि.वि.– प्रायोजित उत्सवः/'नोटबंदि'–हते काले श्रीहीन इव लक्षितः"।।365।। कवि शुक्ल ने साफ तौर पर माना है कि 2014 ई. में यह प्राच्य सम्मेलन जो गौहाटी (गुवाहाटी) में आयोजित किया गया था उसमें संस्कृत के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान कवि आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का अध्यक्षीय भाषण बड़ा ही माकूल था– "राधावल्लभी आचार्यो महाध्यक्षासनस्थितः/त्रिपाठी निज वक्तव्यं प्रादात् तर्कसमन्वितम"।।362।। उसी प्रकार विगत वर्ष के नागपुर अधिवेशन तथा वहाँ आचार्य श्री निवास वरखेडी का सारस्वत सक्रियता भी बड़ा ही प्रभावी रहा।

किसी प्रकाशक द्वारा चार रंगों में किसी किताब को प्रकाशित करना बड़ी हिम्मत की बात होती है। प्रकाशक देव वाणी–परिषद ने संस्कृत की इस पारंपरिक विद्या तथा उनसे जुड़े सांस्कृतिक– अकादमिक क्रिया कलापों को रंग–बिरंगी चित्रावली में छाप कर सराहनीय कार्य किया है। यह बात अलग है कि इन चित्रों में कवि शुक्ल के चित्रों का ही पलड़ा भारी जान पड़ता है और यह लाजमी भी लगता है।

शोध सम्मेलनों को आचार्य शुक्ल द्वारा काव्य के रूप में तब्दील किया जाना संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्य के नजरिए से बड़ा ही मानीखेज माना जाना चाहिए। एक सधा कवि ही यह कर

सकता है। अतः इतिहास की काया पर काव्य के माला का पिरोया जाना समसामायिक संस्कृत की ऊर्जाधर्मिता के लिए एक सुखद आश्चर्य माना जाना चाहिए और आजकल की लिखी जाने वाली संस्कृत की रचनाधर्मिता पर सवाल उठाए जाने वालों को खुद में चेत जाना चाहिए। कवि तत्सम, तद्भव या आंग्ल पदों के युग्म प्रयोग में कोई हिचक नहीं करता– "मेट्रोयानं ट्रामयानं मूषकाणां बिलानि च/रिक्शायानं जलयानं वेलूरमठमेव च" ।।161।। उसी प्रकार 'एशियाटिक सोस्याट्या' (।।196।।) भी पठनीय है। कवि द्वारा इतिहास के इन पन्नों पर संस्कृत के सुभाषित वचनों तथा इस प्राच्च सम्मेलनों के काव्य प्रयोजन को भी सहज पढ़ा जा सकता है। "यत्र विश्वं भवत्येकनीडं ज्ञानां सुमेधसाम्। सन्मत्युद्बोधिनी श्लेषा प्राच्यविद्या जयेत्सदा"।।427।। इसी प्रकार– "शास्त्रार्थे गर्जनं श्रुत्वा को नाम न सुखी भवेत्"।।106।। पंक्ति भी अपने आप में संस्कृत के पारंपरिक संस्कार के अनुकूल एक अभिनव सुभाषित का क्षितिज गढ़ती दिखती है। इस सम्मेलन की किसी एक कवि संगोष्ठी में बिजली का एकाएक चला जाना जिस सबब से किसी छोटे टॉर्च को थोड़े समय के लिए जलाना और भरी सभा में उस रौशनी की तुलना किसी भगजोगनी (खद्योत) से किया जाना भी एक नया तथा सटीक उपमा का ताना बाना लगता है– "सभागारे कृतं कैश्चिल्लघुटार्च प्रदर्शनम् /यत्प्रकाशकणा आसन् ध्वान्ते खद्योतका इव" ।।207।। संस्कृत भाषा तथा इसके साहित्य पर वर्ग/धर्म विशेष का ठप्पा माना जाता रहा है। लेकिन कवि ने संस्कृत तथा भगिनि भाषाओं के प्रजातंत्र तथा समुदायिकता की पहचान को बताते हुए इस अखिल भारतीय प्राच्च विद्या सम्मेलन के विषय में लिखा है– "संस्कृतां पारसीकां चारबीं यत्र विपश्यितः/पश्यन्ति तुलनादृष्ट्या प्राच्यविद्यां नतोऽस्मि ताम"।।444।। प्रस्तुत पुस्तक में कवि पद्मश्री शुक्ल ने अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन (1993 ई.) के अपने क्लासिकल संस्कृत सेक्सन के अध्यक्षीय उप्बोधन में प्रचुर सामग्री प्रस्तुत की है। उसी प्रकार 1997–98 में उनके द्वारा प्रदत्त अर्वाचीन संस्कृत साहित्य की सामग्री दुर्लभ तथा पुख़्ता है। यह अच्छी बात है कि लेखक ने अपने इस ग्रंथ में छपे अशुद्ध अंशों का 'शुद्धि पत्रम' भी छाप दिया है।

इस हक़ीक़त को नज़रअंदाज नहीं किया जाना चाहिए कि संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्य में बाल साहित्य की रचनात्मक उष्मा की गर्माहट भारत के कुछ अन्य बाल साहित्य से थोड़ा कम लगती है। जबकि संस्कृत का क्लासिकल बाल साहित्य ने हिंदुस्तान ही नहीं अपितु अरब जैसे अन्य मुल्कों के लिए रोल मॉडल का काम किया और यह बाल लेखन साहित्यिक क्रांति के रूप में पूरी दुनिया में समा गया। यह तथ्य अलग है कि अभिराजेंद्र राजेंद्र मिश्र, विश्वास तथा वनमाली विश्वाल सरीखे बाल लेखकों ने उस दिशा में सार्थक कदम बढ़ाए हैं। इस साल की प्रकाशित बाल कथा 'बुभुक्षितः काकः'[3] (डॉ. हर्षदेव माधव) की प्ररोचना में लब्धप्रतिष्ठ नक़्क़ाद आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने बाल साहित्य की समस्या को लेकर जो प्रश्न उठाया है ग़ौरतलब है– "तत्र क्रीडाकेलिमय्यो बालकथाः पर्यङ्किकागीतिकाः वा प्राचीन संस्कृत साहित्ये न विरचिताः। ऋग्वेदस्य केषाञ्चित् सूक्तानां कालिदासादिप्रणीतकाव्यानां वा ससङ्क्षेपं संपादनं विधायै बालैः पठनीयं रूपं तत्र दातुं शक्यं, किंतु त्रदग्वेदादिकं कालिदासादिकाव्यं वा मूलतः स्वतो वा बालसाहित्यं नास्ति।" लेकिन आचार्य हर्षदेव माधव की प्रस्तुत बाल कथा, आज के बाल साहित्य पर लग रहे आरोप कि इस अदब के कथानकों पर प्रौढ़ अभिजात्यीय प्रभाव, हावी होने के कारण आज का संस्कृत बाल साहित्य बालक/बालिका के लिए आकर्षण का केंद्र बिंदु बनने में अमूमन दमक विहीन ही हो जाता है, उसका भी सर्वथा खंडन करती है। नदीष्ण रचनाकार हर्षदेव माधव ने इन आक्षेपों का समाधान खोजने का सार्थक प्रयास किया है– अपने इस प्रस्तुत संग्रह में। संस्कृत भाषा तथा साहित्य के जाने–माने विद्वान तथा मर्मस्पर्शी कवि–शायर (संस्कृत) अभिराज राजेंद्र मिश्र के 'नांदीवाक' से अलंकृत इस बाल कथा में तिस्रः पिपीलिकाः', 'तपसः सिद्धिः', 'बुभुक्षितः काकः', 'रात्रिदिवसौ कथम् अभवताम्', 'प्राणिनां तीर्थस्य यात्रा', 'मंत्राणां शक्तिः','क्रोधालुः ऋषिः',

'केशवः धीवरः राजकुमारः अभवत', 'दुर्ललितः शक्तिसिंहः', 'दयावान राक्षसः', 'बुद्धिमान् गोपालः', 'भूतस्य शिखा' तथा 'गोकुलः मृत्यृमुखात् प्रत्यागच्छति' जैसी तेरह रोचक कहानियों का संचयन है जिसमें लेखक ने खेल–खेल में बच्चों को भारतीय संस्कृति, देवशास्त्र (मिथक), भौगोलिक, पर्यावरणीय, ब्रह्माण्डीय ज्ञान के बीज–बिंदुओं के अलावा लोक तथा व्यवहारज्ञान को सहज भाषा तथा बच्चों के आस–पास के उपादानों से सिखाने का बलात नहीं अपितु सहज ललित तथा सरल तरीकों से करने का सार्थक प्रयास किया है। इनके कथानकों में न ही प्रौढ़ मानसिकता का दबाव मालूम पड़ता है और न ही मोनोटोनस कथाबिंबों की बोझिलता। यही सबब है कि माधव की यह बाल लेखन विधा बाजी मारती मालूम पड़ती है। रचनाकार ने कथा तंतुओं का ताना बाना कभी साँप, कभी भूत, कभी ठगों की चतुराई, तो कभी पाताल लोक या आसमानी दुनिया के वर्णन के जरिए बाल मन को बाँधे रखने का सार्थक प्रयास किया है। बच्चे ऐसे कौतूहलपूर्ण रंग–बिरंगी दुनिया में खुदबखुद समाते चले जाते हैं। लेकिन इसका भी ध्यान रहे कि कथाकार भूत–प्रेतों का ज़िक्र कोई सामाजिक विकृतियों का पोषण करने के लिए नहीं करता, अपितु कथानक के अंग रस में वर्णन करके अपने अंगी रस बाल चरित्र निर्माण, सांस्कृतिक पहचान तथा परंपराओं की विरासत को समझाने के साथ भारतीय ज्ञान–विज्ञान तथा विजडम का भी अहसास दिलाता है। लेखक माधव यत्र–तत्र हैरी पोटर की बाल सुलभ रंग–बिरंगी दुनिया की तरह भारतीय संदर्भों में अपने बाल पाठकों को सैर कराते हैं। अतः उनका नए तेवर का बाल साहित्य का आगाज़ संस्कृत के समसामयिक लेखन की श्रीवृद्धि करने में संलग्न दिखता है।

डॉ. श्रद्धा त्रिवेदी ने प्रस्तुत मानीखेज़ संचयन का गुजराती भाषा में अनुवाद के साथ संपादन भी किया है। गुजराती भाषा का मुझे ज्ञान नहीं। अतः इसके इस तर्जुमा पर टीका–टिप्पणी मैं नहीं कर सकता। लेकिन इस सच को नकारा नहीं जा सकता कि ऐसे मनोरम संस्कृत बाल साहित्य को हिंदुस्तान (पाश्चात्य भी) की अन्य भाषाओं में भी सार्थक अनुवाद किया जाना चाहिए क्योंकि बच्चे ही किसी साहित्य का भावी–प्रबल पाठक होते हैं। साथ ही साथ इसमें अनुवाद प्रौद्योगिकी में उसकी मूल भाषा की सनास भी पुख़्ता ढंग से बन पाती है।

'तिस्रः पिपीलिका' में सरला कमला तथा विमला नामक चीटियों की कहानी भी काफ़ी प्रेरणास्पद है जिसमें एक सखी आम के फल को खाने को आतुर है और अंततः एक हाथी के सहयोग से वह उस फल का स्वाद चख लेती है। काफ़ी श्रद्धापूर्वक अनुनय–विनय के बाद वह हाथी आम्र शाखा को पृथ्वी की ओर झुका देता है जिससे वे सभी आम खा पाती हैं– "अहं शाखामेव भुवि आनेष्यामि। यूयं सर्वाः उदरपूर्तिं कुरूथ।" गजराजेन शुण्डां प्रसार्य एका शाखा आकृष्ट। सहसैव बहूनि आम्रफलानि भुवि पतितानि। (पृ. 12)। उसी प्रकार 'तपसः सिद्धि' भी बच्चों के लिए काफी लुभावन कहानी मानी जा सकती है इसमें सुतपा नाम के एक ऋषि की कहानी है जो धीरे–धीरे अपने तप प्रभाव को तपस्या से काफ़ी बढ़ा लेता है और उसी का प्रभाव होता है कि नग्नवृक्ष फलदार तथा सरोवर जलमय हो जाते हैं। यहाँ तक कि साँप और मयूर एक दूसरे के जानी दुश्मन आपस में घुल–मिलकर रहने लगते हैं। लेकिन राक्षसों द्वारा उसके यज्ञों में उत्पात मचाया जाता है तो वह सुतपा उसका मुस्कुराते हुए जमकर सामना करता है। अतः राक्षस उससे पनाह माँगते हैं। उसी प्रकार इस कहानी में अँधेरी गुफा में सौ फण वाले नागराज का आगमन तथा उसकी मणियों से गुफा का प्रकाश से जगमगाना भी बच्चों के लिए कौतुहलपूर्ण समा बाँधता है। उसी प्रकार मिथक (देवशास्त्र) तथा संस्कृति का सहकारी वर्णन भी बाल मन को भाता है। इसमें भगवान शिव, माँ पार्वती (उमा), सिंह तथा नंदी प्रसंग भी ज्ञानवर्धक हैं "सुतपाः सिंहासने उपविष्टम ईश्वरम अपश्यत्। ईश्वरस्य मस्तके छत्रं भूत्वा सः एवं सर्वंराजः शोभते स्म। पार्श्वे भगवती उमा आसीत्। तस्याः पादपीठस्य समीपे सिंहः आसीत्। नंदी ईश्वरस्य चरणयोः समीपे उपाविशत्।"(तपसा सिद्धि, पृ.22)। उसी प्रकार सुतपा द्वारा अपने वर लेने के क्रम में समूची पृथ्वी के प्राणियों की खुशहाली, निरोगिता

तथा समय पर सभी जगहों पर बारिश की कामना 'वैदिक सुभाषित' 'वसुधैव कुदुम्बकम' को चरितार्थ करता है। वरदान के इसी क्रम में देवता, यज्ञ तथा वर्षा के 'वैज्ञानिक कारणों को भी स्पष्ट करते हैं– "वत्स, यत्र यत्र यज्ञाः भविष्यन्ति, तत्र तत्र पर्ज़न्यः नूनं वर्षिष्यति।" (वही, पृ.23)। उसी प्रकार मनोरम प्रसंगों तथा वर्णनों के माध्यमों से सृष्टि के रहस्यों तथा उसकी प्रक्रिया को लेकर रात्रिदिवसौ कथम् अभवताम' भी बाल मन के लिए दिलचस्प हो सकता है– "अहं न जानामि, किंतु ते सर्वे' अत्र एकत्र स्थातुं न इच्छन्ति।" प्रजापतिः सूर्यस्य सर्जनं अकरोत्। सः सूर्यात् एकम् अंश गृहीत्वा पृथिव्याः सर्जनम् अकरोत्। प्रजापतिः देवेभ्यः स्वर्गे निवासम अददात्। सः मानवेभ्यः पृथिव्यां निवासं अददात्। सः दानवेभ्यः पाताले निवासम अददात् इत्थं देवाः स्वर्गे न्यवसन्, मानवाः पृथिव्यां न्यवसन्, दानवाः पाताले न्यवसन्। सूर्यः सततं अतपता" (पृ.43)। प्रस्तुत बालकथा संकलन की प्रस्तावना में आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने बुभुक्षित काकः को लोक कथा की विशेष श्रेणी में माना है। इसमें चतुर नाम के कौए के मार्फ़त लोक, जनजीवन तथा प्राकृतिक संस्कारों की महत्ता को बच्चों तक रोचक प्रसंगों के माध्यम से सार्थक रूप में पहुँचाया गया है। साथ ही साथ लोक व्यवहार से कैसे ज्ञान का विजडम पनपता है उसका भी ख़याल रखा गया है। लेखक ने इस कथा में एक भूखे कौए को अपनी क्षुधा शांत करने के लिए जो अथक प्रयास करते अंकित किया गया है उससे जीवन में श्रम के महत्व पर भी प्रकाश पड़ता है। उसी प्रकार 'प्राणिनां तीर्थस्य यात्रा' में नीरव, धवला तथा गजराज नामक क्रमशः चूहा, बिड़ाल तथा कुत्ते की कहानी है। जो अपने–अपने पापों को धोने के लिए काशी की तीर्थ यात्रा करना चाहते हैं। नीरव एक बच्चे की किताब को कुतर डालता है और जब वह बच्चा अपने पापा से नई किताब लाने की माँग करता है तो उसके पिता पैसे के अभाव में किताब खरीदने में अपने आप को असमर्थ बताता है। यह बात सुनकर बेचारा चूहा बहुत ही दुःखी हो जाता है। लेखक ने आम घटना के माध्यम से चूहे और बच्चे के रिश्तों को बड़े ही सार्थक रूप में गढ़ा है– "तात! मम पुस्तकं मूषकः अकर्तयत। अधुना अहं कथं पठिष्यामि? मह्यं नवं पुस्तकम् आनयतु।" पिता अवदत् "पुत्रक! वयं दरिद्राः स्मः। नवं पुस्तकं क्रेतुम् अधुना धनं नास्ति।"

"एतत् श्रुत्वा नीरवः दुःखितः अभवत्। सः अचिन्तयत्, अहं नित्यं पापं करोमि। क्षेत्रेषु कृषिवलानां धान्यं खादामि।..... अधुना अहं पापानां नाशार्थं तीर्थयात्रां करिष्यामि।" (पृ.51)। प्रस्तुत संग्रह की यह ख़ासियत है कि इसमें बाल मन को रिझाने के अनुकूल प्लॉट को बनाया गया है जिससे इस पर प्रौढ़वादी मानसिकता वाले बाल साहित्य का आरोप अपने आप अपाकृत होता मालूम पड़ता है जो बाल साहित्य की नदीष्णता को लेकर शुभ का सूचक है। उसी प्रकार 'क्रोधालुः ऋषिः' में क्रोधदर्शन जिनका मूल नाम सुदर्शन है का चरित्रांकन भी काफ़ी मनोरंजक है। इसमें चूहों का एक झुंड गुस्सा करने वाले इस ऋषि पर धावा बोल देता है। कोई चूहा उसके वल्कल वस्त्र, तो कोई कमंडल की लकड़ी, तो कोई झोपड़ी की घास, तो कोई उसकी जटा आदि को कुतर देता है। इतना ही नहीं एक मोटा चूहा तो उस क्रोधी ऋषि की गोद में बैठकर उसकी दाढ़ी तक को काट डालता है– "तदा महाकायः मूषकः तस्य अङ्कम् आरूह्य तस्य श्मश्रुम अकर्तयत्" (पृ. 90)। लेखक माधव ने इस कहानी के माध्यम से बच्चों के बीच 'संघे शक्ति कलियुगे' के साथ–साथ पूर्वजन्म संस्कार की शिक्षा के माध्यम से अच्छे तथा बुरे कामों के फल की भी बातों को उठाया है– "ते अपि पूर्वजन्मनि ईर्ष्यां कृत्वा, असूयां कृत्वा, विना कारणं हिंसा कृत्वा, अन्येभ्यः पीडां दत्वा प्राणिनः अभवन्। पूर्वजन्मनः चौराः अपि अत्र पिपीलिकाः भूत्वा वसन्ति।" (पृ.91)। उसी प्रकार भारतीय देवशास्त्र के अनुसार उनके वाहन (सवारी) की जानकारी भी बालमन के ज्ञान में इजाफा करेगा। साथ ही साथ इससे एनवायरनमेंटल जस्टिस की भी थोड़ी जानकारी से अवगत होंगे– "पथ्य, मूषकः गणेशस्य वाहनम् अस्ति। सर्पः शिवस्य आभूषणम् अस्ति। सिंहः अम्बिकायाः वाहनम् अस्ति। मकरः गङ्गायाः वाहनम् अस्ति। मयूरः सरस्वत्याः वाहनम् अस्ति। गरूड़ः मम वाहनम अस्मि। सर्वे देवाः एव त्वां शिक्षितुं

एतान् प्राणिनः प्रेषितवन्तः।" (पृ.92)। 'दयावान् राक्षसः' कथा भी एक दयालु तथा समझदार राक्षस (दयाराम) की कथा है जिसमें भी मेल–जोल की संस्कृति के साथ–साथ पर्यावरण संतुलन की नसीहत दी गई है– "वनेत्रयः तक्षकाः कुठारैः सह आगच्छन्। ते हरितान् वृक्षान् छेत्तुम ऐच्छन्। सर्वे वृक्षाः दुःखिताः अभवन्। वटवृक्ष दयारामम् अवदत्–भ्रातः! एते सर्वे श्वः अस्माकं विनाशं करिष्यन्ति। अहं तु वृद्धः। अतः मम मनसि मरणस्य भयं नास्ति किंतु सर्वे पक्षिणः गृहविहीनाः भविष्यन्ति। प्राणिनः अपि निराधाराः भविष्यन्ति। वृक्षान् विना जलदाः अपि जलवर्षणं न करिष्यन्ति। अत्र विजनं भविष्यति।" (पृ.136)। प्रस्तुत बालकथा की अंतिम रचना 'गोकुलः मृत्युमुखात् प्रत्यागच्छति' को प्रौढ़ बालकथा माना जाना चाहिए और इसके पात्र गोकुल को लेकर जो साँप काटने का प्रसंग है, जाने–अनजाने बच्चों के बीच थोड़ा गलत मैसेज दे सकती है। यह तथ्य अलग है कि इस कहानी के जरिए यह कहने का प्रयास किया गया है कि 'कर भला तो हो भला'।

पद्य–गद्य मिश्रित काव्य चम्पू साहित्य को लेकर अन्वेषकों का बड़ा ही कम ध्यान गया। ग़ौरतलब है कि दसवीं शताब्दी (ए.डी) के बाद संस्कृत की इस विद्या पर कवियों का विशेष ध्यान जाता है! वह भी ख़ास कर दक्षिण भारत के काव्य पंडित समाज में। अभी तक अमूमन दो सौ अठ्ठावन चम्पू काव्यों की जानकारी मिल पाई है और ऐसा माना जाता है कि शताधिक इसकी पांडुलिपियाँ अपने साया की बाट जोह रही हैं। अतः डॉ. संतोष कुमार जोशी द्वारा श्रीजगन्नाथ लिखित 'जगन्नाथचम्पूः'[4] का प्रकाशन संस्कृत साहित्य को चतुरस्र बनाने में महत्वपूर्ण लगता है। आंध्र प्रदेश के राजा वीरभद्र के संरक्षण में रहे श्रीजगन्नाथ की इस रचना का प्रकाशन सर्वप्रथम 1878 ई. में तेलुगु लिपि में श्रीनिधि प्रेस से कांची श्रीनिवासराय (Kanchi Srinivasraya) के द्वारा किया गया। प्रस्तुत चम्पू के "दम्भोलि–धर्तुर्युधि जम्भवैरिन् कुम्मीशमारूह्य निजं विहर्तुः/ कुम्मीनसारातिरपि प्रसह्य स्तम्भीकृताङ्गो भविता तवाग्रे"।।49।। (द्वितीयस्तबकः) यृद्ध वीर रस की छटा से सिक्त है। उसी प्रकार श्रृंगार की भाव पेशलता तथा कमनीयता इस चप्पू में भरे पड़े हैं।

ग्लोबलाइज़ेशन तथा आई टी की मिलीभगत से साहित्य (हार्ड कॉपी) का बाजार थोड़ा, मंदा दिख रहा है। ऐसी हालत में संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं की माली हालत खराब होना और लाजमी है क्योंकि दुनिया की नामचीन साहित्यिक पत्रिका ग्रांटा और न्यूयार्कर (दोनों अमरीका) ने अपने हार्ड कॉपी प्रकाशन की जगह ई–टेक्स्ट के छपने के रूप में पनाह ले ली है। अतः संस्कृत भाषा के उदीयमान विद्वान डॉ. लाला शंकर गयावाल का स्वतंत्र समीक्षा ग्रंथ 'स्वातंत्र्योत्तर संस्कृतशोध पत्रकारिता'[5] नामक प्रकाशन ने संस्कृत पत्रकारिता के श्रमसाध्य सर्वेक्षण से इसके काल खंडों को 1. 19वीं शताब्दी की संस्कृत–पत्रकारिता (1866 ई. से 1900ई.), 2. स्वतंत्रता पूर्व की संस्कृत–पत्रकारिता (1900ई. से 1946ई.) तथा 3. स्वातंत्र्योत्तर संस्कृत–पत्रकारिता (1947 ई. से वर्तमान समय तक) भागों में विभक्त करते हुए स्वातंत्र्योत्तर संस्कृत पत्रकारिता एवं संस्कृत शोध पत्रिकाएँ स्वातंत्र्योत्तर संस्कृत शोधपत्रिकाओं के संपादन, वैदिक शोध आलेखों की विवेचना, व्याकरणशास्त्रीय शोध आलेखों की विवेचना, काव्यशास्त्रीय शोध आलेखों की विवेचना, दार्शनिक शोध आलेखों तथा साहित्यिक शोध आलेखो के अंतर्गत सात अध्यायों में बड़ी ही मंजुल सामग्री प्रस्तुत की है। पुस्तक में संलग्न प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र तथा म.म. देवर्षि कलानाथ शास्त्री के क्रमशः 'नांदीवाक्' तथा 'शुभाशंसन' सामग्री के पुख्ता होने की तस्दीक करते हैं।

इस साल राजेंद्र मोहन कौशिक ने 'द डिवाइन कॉरिडोर ए. मेटाफिजिकल ऑटोवायोग्राफी'[6] नाम की अपनी किताब में जहाँ एक ओर अपने तमाम जीवन की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा दार्शनिक यात्राओं का इंद्रधनुष खींचा है वहीं ऐसी किताबों के प्रकाशन से इतिहास के स्रोत भी मजबूत बनते हैं और इस बात की भी पुष्टि होती है कि किसी वंश परंपरा के दार्शनिक फलसफे भारतीयता के परिप्रेक्ष्य में क्या हो सकते हैं? लेखक ने 'स्टक इन

नीगेवीटि कंफ्यूजर ग्लेओर', 'वीदर मी', 'विजिट्स' तथा 'द. ट्रांसफॉरमेशन' जैसे अध्यायों के अंतर्गत अपनी बातों को रखने का प्रयास किया है। इन अध्यायों में 'विजिट्स' निश्चित रूप से यात्रा वृत्तांत को एक व्यक्तिगत अनुभव के गुलाल के साथ जीवंत तस्वीर खीचता है। लेखक कौशिक ने पटना नामक अपने सारगर्भित एक पृष्ठीय आलेख में गागर में सागर भरने का प्रयास तो किया है लेकिन पाटलीपुत्र के नामकरण संस्कार यथा पुष्पपुर आदि का भौगोलिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का भी थोड़ा जिक्र हो जाता तो और अच्छा ही हो जाता। उसी प्रकार तीर्थस्थल रामेश्वर वर्णन प्रसंग में लेखक ने अपने अनुभव पर उसके स्थापत्य तथा सौंदर्य कला को भी उभारने का प्रयास किया है। वाकई में सांस्कृतिक धार्मिक तथा ऐतिहासिक कलेवरों के विविध आयामों में गुंफित प्रस्तुत महत्वपूर्ण पुस्तक इस साल पाठकों को काफ़ी रास आ सकती है। 'मिलिटेंसी इन कश्मीर' भी कई इन साइड–स्टोरी को सामने लाता है और लेखक अपने रिश्तेदार अनुपम घर की आतंकवादी द्वारा हत्या की घटना (14 सितंबर, 1989) की चर्चा करते लिखता है कि कैसे खास वनवासी अपने प्राण की रक्षा के लिए आतंकवादियों के चंगुल से भागकर कश्मीरी पंडितों के शरणार्थी कैम्प में आ बसे थे। उन्हें कश्मीरी भाषा नहीं आती थी। फिर भी कश्मीरी पंडितों के नाम पर उन्हें भी तबाह किया जाता था। वाकई में आतंक और माइग्रेशन तथा आतंकवाद की ख़तरनाक लीला को यह आलेख बड़े ही कम शब्दों में तथा बड़े ही प्रभावी ढंग से सामने लाता है।

पुस्तक तथा शोध लेखक का अपना–अपना स्वतंत्र महत्व होता है। इसके पाठक समाज भी अलग–अलग होते हैं। लेकिन ग़ौरतलब है कि जब अच्छे और प्रामाणिक शोधलेख ख़ास विषयों को प्रकाश में लाते हैं तो उनकी पाठकीयता अधिकाधिक उन्मीलित तो हो ही जाती है साथ ही साथ उस विषय को लेकर उसके अनुसंधान के आयाम भी चतुस्र रूप में विस्फारित हो जाते हैं। इस मायने में दिनेशचंद्र शास्त्री की 'श्रुति–पन्थाः'[7] भी महत्व की लगती है। इसमें कमशः संस्कृत तथा हिंदी उपभागों के अंतर्गत सात तथा उन्नीस महत्वपूर्ण आलेखों को स्थान दिया गया है।

यह औपनिवेशिक बौद्धिकता का दुष्परिणाम रहा है कि वेद तथा ज्योतिष के अलावा आयुर्वेद शास्त्र जो भारतीय बौद्धिक परंपरा में सहकारी रूप में पठन–पाठन का माध्यम हुआ करता था। इन समन्वित शास्त्रों में फॉक बना दिया गया। लेखक ने अपने आलेख 'वैदिक ज्योतिषविज्ञानम्' में वेद तथा ज्योतिष विज्ञान को संक्षेप रूप में उजागर करने का भरसक प्रयास ज़रूर किया है। उसी प्रकार वेद मंत्रों के तथाकथित भद्दे और अश्लील अर्थों का आर्ष परिस्कार भी पठनीय माना जा सकता है जिसे ग्रिफिथ ने अंग्रेजी में इन मंत्रों का अनुवाद तो नहीं किया है। लेकिन परिशिष्ट के रूप में इसका लैटिन भाषा में अनुवाद कर टिप्पणी देते हुए लिखा है कि मानो ये मंत्र किसी असभ्य उच्छृंखल बेलगाम मनमौजी गड़ेरियों के प्रेमगीत के अंश हैं। ऋग्वेद (1.126 सूक्तं) भावयव्य (भाव्य या भावयु का पुत्र स्वनय) राजा और उसकी पत्नी रोमशा का युवती होते गुप्तांग प्रसंगों को महर्षि दयानंद के हिसाब से बड़ा ही सार्थक खंडन प्रस्तुत किया है। वैदिक वाङ्मय का चिंतन भारतीय मनीषा की दृष्टि से युगीन माँग है, वह भी ग्लोबलाइज़ेशन तथा नाना खतरनाक सोशल मीडिया के मनमौजी दौर में। लेखक ने वेद और मांस के खाने और न खाने के वैदिक स्रोतों को लेकर अच्छी सामग्री प्रस्तुत की है कि वेद मांस भक्षण की कतई अनुमति नहीं देते हैं। लेकिन अच्छा यह होता कि लेखक अपने इन उद्धरणों के साथ अपना चिंतन प्रस्तुत करते। तब पूर्ण तथा उत्तर पक्ष ठीक से सामने आ पाते।

उसी प्रकार शिव प्रकाश अग्रवाल की "ऋदग्वेद के चतुर्थ मंडल के चयनित सूक्तों में राकेट, उपग्रह विज्ञान"[8] नामक पुस्तिका भी भारत के अतीत गौरव को खंगालने में अच्छी मानी जा सकती है। चूँकि प्रस्तुत पुस्तक का लेखक अभियांत्रिकी विधा से जुड़ा है फलतः उसके द्वारा वैदिक वाङ्मय में ऊर्जा, उपग्रह, राकेट तथा भू–स्थिर

उपग्रह (जीयो स्टेशनरी सेटेलाइट) के नजरिए से थोड़ी जाँच–पड़ताल जायज मालूम पड़ती है। आज यह समय की माँग है कि वैदिक ज्ञान–विज्ञान को वैश्विक स्तर पर प्रकाश में लाने के लिए भगिनि भाषा–विधाओं को मिलकर काम करना चाहिए। अतः प्रस्तुत पुस्तिका पाठक समाज को तरोताजा पाठकीय जायका दे सकती है। लेखक ने अपने चिंतन का आधार दयानंद सरस्वती के ऋग्वेदभाष्य को बनाया है। साथ ही साथ पाश्चात्य विद्वान् ग्रिफिथ के अनुवाद के साथ अपना स्पष्टीकरण देने का भी प्रयास किया है। हाँ किताब को पढ़ने से यह अंदाज तो जरूर होता है कि किताब का जैसा शीर्षक है वैसा उसका विषय प्रवेश साक्षात् पढ़ने को नहीं मिलता है। लेकिन इतना तो ज़रूर है कि लेखक ने अपनी विषय सामग्री को बीज तत्व के रूप में इसके दार्शनिक नजरिए से रखने का थोड़ा प्रयास जरूर किया है।

उसी प्रकार छह अध्याय में विभक्त किताब 'यजुर्वेद में दार्शनिक तत्व'[9] (ममता मेहरा) द्वारा क्रमशः विषय प्रवेश, सृष्टि जिज्ञासा, परमात्मा एवं जीवात्मा जिज्ञासा, कर्मयोग अवचिंतन, वैदिक जीवनदर्शन एवं नैतिक आदर्श तथा पुनर्जन्म जिज्ञासा एवं मोक्षसिद्धि विषयों के अंतर्गत अपने चिंतन को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक यजुर्वेद परक चिंतन को इकट्ठे अच्छी सामग्री के रूप में पाठक समाज तक पहुँचाती लगती है। कुछ जटिल सवालों को सरल माध्यम से समझे–समझाने का प्रयास किया गया है क्योंकि कर्मकांडपरक सूक्तों के दार्शनिक आवरण को सरल तथा सुबोध भाषा में लिखना कोई आसान काम नहीं होता है और यजुर्वेद के फलसफे को लेकर स्वतंत्र रूप में सामग्री बहुत अधिक प्रकाश में नहीं आ सकी है।

सामान्यतः इधर के एकाध दशकों में यह देखा गया है कि रामायण तथा महाभारत या रामचरितमानस में जीवन प्रबंधन के दूरगामी आयामों को तलाशने और उन्हें स्थापित करने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। लेकिन इस दृष्टि को लेकर वेदसम्मत विचारों को अधिकाधिक उजागर करने की ज़रूरत है। शिव प्रकाश अग्रवाल की किताब 'ऋग्वेद के प्रथम सूक्त में आधुनिक प्रबंधनं'[10] इस दिशा में एक प्रयास माना जा सकता है। लेखक ने 'अग्नि' देवता को किसी संस्थान के सी.इ.ओ, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, देश के प्रबंधन में संविधान के उच्च शिखर पर आसीन राजा या सेना नायक के रूप में सर्वशक्तिमान या सर्वव्यापी की तरह माना है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से अर्थविस्फारन की दृष्टि से यह काफ़ी महत्वपूर्ण है। लेकिन यह भी समझने की बात है कि वेद के पारंपरिक विद्वत–समाज इसके आधिभौतिक, आध्यात्मिक तथा आधिदैविक अर्थों को कैसे लेते हैं? उसी प्रकार 'ईले' वैदिक शब्द को–श्रद्धा पूर्वक आदेशों के पालन का प्रण लेना भी इस दृष्टि से चर्चा के लायक है। फिर भी यह माना ज़रूर जाना चाहिए कि लेखक ने ऋग्वेद के इस सूक्त से अच्छी सिनथैसिस करने की कोशिश की और पारंपरिक शोध पद्धति–संक्षेप से विस्तार की ओर अग्रसर होने की बात को भी चरितार्थ किया है।

वेदमूलक स्वतंत्र ग्रंथ के अलावा ज्योतिषशास्त्र को भी लेकर इस साल अच्छी किताबें प्रकाश में आई हैं। इनमें सूर्यासिद्धांत[11] को लेकर श्री रङ्गनाथ लिखित 'गूढ़ार्थ प्रकाशिका' तथा सोपपत्तिक –'प्रकाशिका' हिंदी व्याख्या के साथ आचार्य रामचंद्र पांडेय ने संपादित किया है। लेखक पांडेय ने यह स्पष्ट किया है कि जो लोग यह मानते हैं कि सूर्य सिद्धांत आर्षग्रंथ नहीं है उनको यह समझना चाहिए कि इस ग्रंथ में वर्णित मय–सूर्य संवाद इसके आर्षभाव की तस्दीक करता है।

साल 2020 में योग दर्शन की विधा पर सोमवीर आर्य लिखित पुस्तक 'योगदर्शन'[12] भी योग के शास्त्र को समझने के जिज्ञासु पाठक समाज के लिए काम की लगती है। लेखक ने महर्षि पतञ्जलि लिखित योगदर्शन नामक ग्रंथ पर व्यासभाष्य के आधार पर हिंदी व्याख्या प्रस्तुत की है। आज जो पूरी दुनिया योग का लोहा मान रही है उसका आकर ग्रंथ तो पतंजलि का ही माना जाता है। कोई योग से जुड़ा विद्वान इसका अनुवाद करेगा तो उसके तर्जुमा की खूशबू तथा सटीकता और बढ़ जाती है। विविध भाषाओं में प्रामाणिक ढंग से इस योग–दर्शन का छापा जाना

जहाँ योग शास्त्र की रक्षा है वहीं दूसरी ओर जनमानस तक योग की पुख्ता सामग्री पहुँचाना भी है। पुस्तक में धीरज पी. जोशी (वाशिंगटन, अमेरिका) आदि की पुस्तक में लगी संस्तुति भी इस पुस्तक के लोक पक्ष के महत्व की पुष्टि करता है।

प्रीति शुक्ला तथा देवानंद शुक्ल ने मिलकर स्वामी शंकराचार्य की नदीष्ण कृति "श्रीमद्भगवतगीता शाङ्करीविवृतिः"[13] को बड़े प्रामाणिक रूप में अपनी टीका टिप्पणियों के साथ प्रकाश में लाया है। सच यह है कि संस्कृत की असंख्य पांडुलिपियाँ अपनी महत्ता के बावजूद यत्र–तत्र बिखरी पड़ी हैं और संस्कृत जगत के अनुसंधान की परंपरा में इस विधा को लेकर थोड़ी कम पहल दिख रही है। इसलिए यह प्रकाशन भी काफ़ी मानीखेज़ माना जाना चाहिए। ग्रंथ की लेखिका तथा लेखक ने अपने श्रमसाध्य प्रयास से आचार्य शंकर के शाङकरभाष्य, हनुमत के पैशाचभाष्य, श्रीधराचार्य के सुबोधनी, अभिनव गुप्त के गीतार्थ संग्रह तथा नीलकंठ के चतुर्धरी जैसे भाष्यों के समेकित कलेवर को मिला कर बड़ा ही प्रामाणिक तथा अर्थपूर्ण संपादन प्रस्तुत किया है। साथ ही साथ श्रीमद्भागवत में आए पदों के साथ इन टीकाकारों के चिंतन को समादृत किया गया है। टीकाएँ जो शब्दार्थ की गुत्थियों को खोलती हैं और मूल पाठों की भी रक्षा करती हैं। लेखक द्वय ने मिलकर उपरोक्त नामचीन टीकाकारों के हिसाब से अर्थ की उपस्थिति दी है जिससे पाठक समाज तथा अनुसंधानकर्ताओं के लिए अन्वेषणात्मक सामग्री भी मुहैया, हो गई है। सामान्यतः हिंदी भाषा में प्रकाशित किताबों में भी मूल पाठ से जुड़े परिशिष्ट के रूप में सहायक सामग्री पढ़ने को नहीं मिलती है। संस्कृत की किताबों में श्लोकानुक्रमणी तो मिल जाती है। लेकिन संदर्भों के साथ पादानुक्रमणी के रूप में परिशिष्ट पढ़ने को नहीं मिलता है। इसका बहुत बड़ा सबब यह है कि यह कार्य अंग्रेज़ी भाषा की किताबों की जगह हिंदी या संस्कृत भाषा में संगणकीय दृष्टि से सॉफ्टवेयर की ठीक ढंग से उपलब्धता न होने के कारण इसे मैन्यूअल ही किया जाता रहा है। फलतः यह बड़ा ही श्रमसाध्य काम होता है। तीन परिशिष्टों के अलावा कुल 18 अध्यायों में विभक्त प्रस्तुत ग्रंथ इस साल की महत्वपूर्ण कृति मानी जा सकती है।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा मान्यताओं को प्रचारित तथा प्रसारित कर सुरक्षित रखने में महर्षि व्यास रचित 'श्रीमदभागवत–महापुराणम'[14] की अहम् भूमिका रही है। इसके नाना पारायण से इसका पाठ सुरक्षित रहा है। लेकिन अन्य पुराणों की तरह ही व्यास जी के इस महापुराण पर संभवतः वैसा साया प्रकाश में नहीं आ सका है जिसमें इस महापुराण से जुड़ी बहुचर्चित टीका भावार्थ दीपिका (श्रीधरी) के साथ–साथ इनका हिंदी रूपांतर, पदच्छेद–पदार्थ–टिप्पणी आदि के साथ एक बहुआयामी तथा इसके मूल पाठ के शब्दों की सटीकता को लेकर लिखा गया हो। इसके अनुवादक तथा व्याकरण शास्त्र के निष्णात–प्रकांड वैश्विक विद्वान कवि आचार्य आजाद मिश्र मधुकर के द्वारा संस्कृत शास्त्र विद्या के अध्ययन–अध्यापन की दृष्टि से श्रीमद्भागवत– महापुराण के श्लोकों को बड़े ही ज्ञानपूर्ण दृष्टि से चीड़–फाड़ करने का प्रयास किया है जिसका मूलाधार श्रीधरी टीका, तथा इस महापुराण के पाठ संदर्भ है। इनके मूल पाठों के पदच्छेद–पदार्थ या टिप्पणी आदि जहाँ शास्त्र के आधार को पुख्ता बनाता है वहीं इसका सरल तथा सरस अनुवाद पुराण की सरल शैली को भी इंगित करता है। साथ ही साथ अनुवाद भी अपने शब्दस्तबक के साथ सरल भावों का लच्छेदार बैजयंती बनाने में तनिक भी चूक करता नहीं मालूम पड़ता है। वाकई में सच यही लगता है कि कवि वैयाकरण 'मधुकर' ने श्रीमद्भागवत–महापुराण के मर्म सागर में अपने ज्ञानावगाहन से इस पुराण के क्लासिकल एप्रोच को और अधिक पुख्ता और बहुआयामी बनाया है। यही कारण है कि आज जो अनुवाद की दुनिया में मक्खियों पर मक्खियों को बैठाया जाता है उससे सर्वथा भिन्न प्रस्तुत अनुवाद तथा पाठ्य सामग्री प्रतीत होती है। इसका बहुत बड़ा कारण यह भी है कि अनुवादक को अपनी भाषा जिसमें वह अनुवाद करना चाहता है और जिस भाषा से करना चाहता है– अनिवार्य रूप से उन दोनों भाषाओं के संस्कारों से अनुवादक को

रूबरू होना ही चाहिए। आचार्य मधुकर इन दोनों संस्कृत हिंदी भाषाओं के सुलझे विद्वान होने के कारण उनका अनुवादिक भाव स्खलित नहीं दिखता है। इस ग्रंथ के अनुवादक टीकाकार ने अपने आत्मनिवेदन में प्रस्तुत ग्रंथ तथा टीकाओं/टीकाकारों से जुड़ी महत्वपूर्ण पुष्कल सामग्री विषय प्रवेश की दृष्टि से काफ़ी महत्वपूर्ण दी है। अतः यह ग्रंथ सहृदय पाठकों के लिए पाठ स्वयं शिक्षक के रूप में माना जा सकता है। और संस्कृत साहित्य में सामान्यतः पुराण जो अपने मूल पाठ तथा इसके सामान्य अनुवाद मात्र के कारण उपेक्षित हो रहे हैं उन पुराणों का भी आचार्य मधुकर जी द्वारा चतुस्र तथा बहुआयामी संस्करण के रूप में प्रकाशित होना चाहिए। सच में अनुवाद ने श्रीमदभागवत महापुराण के श्लोकों की गुत्थी/प्रसंग को अपने आदित्य नामक टीका–टिप्पणी से भावार्थ को खोलने में चार–चाँद लगा दिए हैं जो उसी विद्वान द्वारा संभव है जो इस मूल पाठ के मर्म को बड़े अंतः करण से समझता हो। अतः व्याकरण तथा संबद्ध विषय–प्रवेश के मणिकांचन संयोग का ही परिणाम है कि पुराण से जुड़ा ऐसा उम्दा साया इस साल प्रकाश में आ सका है जो प्रथम भाग के रूप में इस महापुराण के माहत्म्य तथा प्रथम स्कंध से जुड़ा है। इन अंशों का अकारादिक्रम श्लोक सूची भी पाठक को पाठकीयता की सुगमता प्रदान कर सकती है।

भारतीय साहित्य के उपजीव्य महाकाव्य को लेकर बाल्मीकि रामायण के नारी पात्र[15] नामक ग्रंथ की लेखिका ममता पांडेय ने अपने विद्या वारिधि से अंलकृत प्रस्तुत ग्रंथ के माध्यम से दुनिया की आधी आबादी स्त्री के विविध आयामों को समेटने का बड़ा ही सार्थक प्रयास किया है। प्रस्तुत ग्रंथ में क्रमशः बाल्मीकि के समय समाज तथा नारी, राम तथा रावण के पक्ष के स्त्री पात्र, अन्य स्त्री पात्र तथा सामग्री को प्रस्तुत किया है। साथ ही साथ बाल्मीकि रामायण विषयक सुभाषितों को भी खंगालते हुए जेंडर जस्टिस के सवालों को उठाने का सार्थक प्रयास किया है। लेखिका ने अपने विषय स्थापना के क्रम में इसके बहुआयामी संदर्भों को उठाकर विषय को व्यापक बनाने का प्रयास किया है। कहने को तो यह ग्रंथ साहित्य विषय पर लिखा गया है लेकिन भाव के स्पष्टीकरण में शब्द की व्याकरणिक भूमिका को भी तलाशने का सार्थक प्रयास किया गया है। नज़ीर के तौर पर सीता माँ की महिमा बखान के लिए व्याकरण को भी आधार बना कर बहुत ही मनोरम व्युत्पत्ति उपस्थित की गई है। 1. सूयते इति सीता–जो जगत को उत्पन्न करने वाली है। यह सीता शब्द 'षूङ् प्राणिगर्भविमोचने' धातु से बना है। 2. सवति इति सीता जो ऐश्वर्य से भरा है। इसका ताल्लुकात 'षु प्रसवैश्वर्ययोः' धातु से बना है। 3. स्यति इति सीता जो संहार करती हैं या क्लेशों को दूर करती हैं। यह 'षोऽन्तकर्मणि' धातु से बना है। 4. सुवति इति सीता जो सत्प्रेरणा देने वाली है। यह सीता शब्द 'षू प्रेरणे' धातु से बना है। 5. सिनोति इति सीता– जो बाँधने वाली है, वश में करने वाली है। यह षिञ् बँधने धातु से बना है। कुछ विद्वान सीता को तालव्यादि (शीता) मानकर लिखते हैं– शीता नमः सरिति लांगलपद्धतौ च। शीता दशानन रितोः सहधर्मिणी च। इति तालव्यादौं धरणिः। अर्थात् श्यायते इति शीता अर्थात् सर्वत्रगामिनी। यह 'शीता' शब्द 'श्यैङ गतौ' धातु से बना है। वाल्मीकि रामायण में सूक्ती प्रसंग भी बड़ा रोचक तथा प्रभावी वर्णन लगता है। जटायु का कथन है कि जिस प्रकार अपनी पत्नी को दूसरे पुरुष के स्पर्श न होने देने की बात होती है उसी प्रकार दूसरों की पत्नी की भी रक्षा की जानी चाहिए– 'यथा तव तथान्येषां रक्ष्या दारा निशाचर' ।5 ।19 ।7 ।

आचार्य नन्दिकेश्वर लिखित 'अभिनय दर्पण'[16] जो भरतनाट्यम से जुड़े कलाकारों के लिए बड़ा ही प्रामाणिक शास्त्र ग्रंथ माना जाता है, वैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ का संपादन अनिता वल्लभ ने उसके मूल पाठ ट्रांसलिट्रेशन, अर्थ, टिप्पणी तथा श्वेत–श्याम चित्र–भंगिमाओं के साथ किया है। सामग्री का आधार पी.एस.आर अप्पा राव (संपादित) तथा मनमोहन घोष (संपादित तथा अनुवादित) द्वारा संपादित अभिनय दर्पण को बनाया है जिससे ग्रंथ की प्रामाणिकता और बढ़ जाती है। साथ ही साथ

इसका भी ख्याल रहे कि लेखिका अनीता वल्लभ भरतनाट्यम की विश्वविश्रुत विदुषी हैं। अतः ग्रंथ की सामग्री ठोस तथा रोचक बन गई है। अतः भारतीय नृत्य तथा कला में रुझान रखने वाले पाठकों के लिए यह काफ़ी महत्व का प्रकाशन है। चूँकि इसकी भाषा अंग्रेज़ी है फलतः यह एक वैश्विक संस्करण है। लेखिका ने रंगप्रयोग/नृत्य प्रयोग (विशेषकर भरतनाट्यम) के लिए आंगिक अभिनय के रूप में जिस चित्रावली को प्रस्तुत किया है उसके माध्यम से अभिनय दर्पण के फलसफा को प्रायोगिक दृष्टिकोण से समझना और आसान हो जाएगा। इसमें लेखिका का विषय इसे और अच्छा तथा प्रामाणिक बनाएगा। इस तथ्य की उम्मीद की जा सकती है। रंगमंच पर विविध पशु–पक्षियों तथा वृक्षों आदि को आंगिक विशेष कर हस्त मुद्राओं के द्वारा प्रस्तुतीकरण भी गौरतलब है।

इस प्रकार हम पाते है कि सन् 2020 का संस्कृत साहित्य भी भारत की अन्य भाषाओं तथा उनके साहित्य की तरह ही वैश्विक महामारी कोविड–19 के दौर में भी छप कर हिंदुस्तान की साहित्यिक अस्मिता में अभिनव विद्या तथा रचनात्मक ऊष्मा के साथ श्रीवृद्धि करने में निरंतर संलग्न है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ज्ञान भारती पब्लिकेशंस, दिल्ली।
2. देववाणी–परिषद्, दिल्ली।
3. संस्कृति प्रकाशन, अहमदाबाद।
4. संस्कृत अकादमी, हैदराबाद।
5. विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।
6. इंटरनेशनल कौशिक मेमोरियल ईस्ट, जम्मू तवी।
7. एपेक्स बुक्स पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली।
8. आस्था प्रक़ाशन, दिल्ली।
9. भारती प्रकाशन, वाराणसी।
10. आस्था प्रकाशन, दिल्ली।
11. चौखंभा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
12. चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।
13. एपेक्स बुक पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली।
14. उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
15. आस्था प्रकाशन, दिल्ली।
16. बी.आर. रीदम्स, दिल्ली।

– फ्लैट नं. 2/802, ईस्ट एंड अपार्टमेंट, मयूर विहार, फेज–1 एक्सटेंशन, नई दिल्ली–110096

❑❑❑

16

हिंदी आलोचना

डॉ. आलोक रंजन पांडेय

आलोचना के बारे में कहा जाता है कि वह किसी कृति के मूल्यांकन की पद्धति है। आलोचना के स्वरूप को ठीक–ठीक बताने के लिए भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य के विद्वानों ने उसकी विभिन्न प्रकार की परिभाषा की है। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका के अनुसार वस्तु का गुण–दोष प्रकट करना तथा निर्णय देना आलोचना या समालोचना का काम होता है। समालोचक का काम सौंदर्य संपन्न वस्तुओं की विशेषताओं तथा मूल्यों का निर्धारण करना है, चाहे वह साहित्य क्षेत्र में हो या कला जगत में। पाश्चात्य साहित्य विचारक ड्राईडेन ने 'आलोचना' को वह कसौटी माना है जिसके आधार पर किसी रचना का मूल्यांकन किया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आलोचना किसी भी स्थिति के गुण–दोषों का विवेचन करती है। हिंदी साहित्य पिछले कई वर्षों से आलोचना के क्षेत्र में लगातार समृद्ध होता आ रहा है और लगातार नए–नए विचारकों से साहित्य के क्षेत्र में नए प्रकार के विचारों को जगह मिल रही है। 2020 में संपूर्ण विश्व कोरोना महामारी के कठिन दौर से गुजरा, जिसका असर साहित्यिक रचनाओं पर भी दिखता है। इस महामारी के दौर में स्वतंत्र लेखन एवं पठन–पाठन का कार्य तब भी चलता रहा पर लॉकडाउन के कारण हर साल की तरह आलोचना की उतनी पुस्तकें पाठकों तक नहीं पहुँच पाई। इस साल प्रकाशकों ने भी अपनी रुचि लगातार नई एवं मूल्य आधारित आलोचना की पुस्तकों के प्रकाशन में दिखाई, फलस्वरूप वर्ष 2020 में मात्रा की दृष्टि से भले ही आलोचना की पुस्तकें कम दिखाई देती हों पर गुणात्मक दृष्टि से वर्ष 2020 हिंदी आलोचना को समृद्ध करने वाले एक वर्ष के रूप में हमारे सामने दिखाई देता है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में मध्यकाल एक बड़ा क्षेत्र है जिस पर बहुत सारा काम हुआ है। परंतु आलोचना समय के साथ विकसित होने वाली विधा है और मध्यकालीन कविता अपने पुनर्पाठ की माँग भी करती है। आज से सौ–दो सौ वर्ष पहले उस पर जो लिखा गया यदि आज भी वैसा ही लिखा जाए तो उसका अर्थ है कि आलोचना अपने आप को विकसित नहीं कर पाई परंतु प्रोफ़ेसर करुणाशंकर उपाध्याय की पुस्तक 'मध्यकालीन कविता का पुनर्पाठ' एक ऐसी पुस्तक है जिसमें मध्यकालीन कविताओं को नए सिरे से देखने की कोशिश की गई है। नामदेव भारतीय काव्य के प्रारंभिक दौर के रचनाकार हैं और आलोचक ने इस पुस्तक में उनके काव्य की सार्थकता वर्तमान समय के वैश्विक संसार में हमारे समक्ष रखी है जो कि उनको पढ़ने का नया दृष्टिकोण है। कबीर का जितना साहित्य समाज की सामाजिक रूढ़ियों पर केंद्रित है उतना ही या उससे अधिक

साहित्य उनकी योग साधना आदि पर भी है, परंतु कबीर को हमने सामान्य रूप से समाज–सुधारक के तौर पर देखने की आदत डाल ली है। परंतु, इस पुस्तक में उनके उस दूसरे पहलू भारतीय योग परंपरा और कबीर के माध्यम से उनके दूसरे तथा कमछुए पहलू पर बात करने की कोशिश आलोचक ने की है। कबीर पर हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की पुस्तक आ जाने के बाद रामचंद्र शुक्ल पर बहुत सारे लोगों ने आरोप लगाए परंतु इस पुस्तक में रामचंद्र शुक्ल के कबीर संबंधी मूल्यांकन का पाठ प्रस्तुत करते हुए आलोचक ने शुक्ल जी की पैनी दृष्टि जो कबीर की ओर भी पड़ी उसको उद्घाटित करने का एवं पाठकों के सामने लाने का गंभीर प्रयास किया है। भक्तिकाल में सूफ़ी काव्य धारा अपना एक अलग स्थान रखती है और उसको वर्तमान आलोचना के उपकरणों के माध्यम से इस पुस्तक में देखकर प्रस्तुत करने की भी कोशिश की गई है।

रामराज्य की अवधारणा वर्तमान समय एवं समाज में भी एक प्रचलित अवधारणा के रूप में हमारे सामने उपस्थित है। इस पुस्तक में 'रामचरितमानसः आदर्श सामाजिक व्यवस्था का महाकाव्य' ,'रामायण और रामचरितमानस में प्रतिष्ठित मूल्यों की सार्वभौमिकता' जैसे विषयों से उस समय एवं समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक मूल्यों को नए चश्मे से देखने की कोशिश की गई है। इस पुस्तक में काव्य शास्त्रीय मानदंडों पर तुलसीदास के ऊपर लगे आरोपों का बहुत ही तार्किक खंडन 'हिंदी के पहले नारीवादी कवि तुलसी' नामक पार्ट में मिलता है।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आपको यह लगेगा कि प्रोफेसर करुणाशंकर उपाध्याय जो विवादित पहलू हैं उनसे बचने की कोशिश न करते हुए अपितु उस विषय पर अवश्य रूप से जुड़ते हैं और उनका एक तार्किक हल पाठकों के समक्ष प्रस्तुत भी करते हैं, इस तरीक़े से वे एक ऐसे आलोचक के रूप में सामने आते हैं जो विषयों को सुलझाकर सामने लाने की कोशिश करते हैं। हम अपने मध्यकालीन स्थापत्य कला का उदाहरण देते हैं परंतु इस पुस्तक में 'तुलसीदास और ताजमहल' नामक लेख में उन्होंने तुलसीदास की जो स्थापत्य और सौंदर्य दृष्टि को देखने की कोशिश की है वह हिंदी साहित्य में पहली मौलिक कोशिश है। किसी आलोचक ने पहली बार तुलसीदास और ताजमहल को एक साथ रखकर उनकी वास्तु कलाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। इस अध्याय में लेखक ने बताया है कि तुलसीदास अनेक शास्त्रों एवं अनुशासन में गति रखने के साथ–साथ वास्तु कला और ललित कला के विशेषज्ञ हैं। जिस तरह किसी भवन की बनावट की संरचना वास्तु कला का आधार है उसी तरह किसी कृत्य में जाति विशेष की सभ्यता, संस्कृति, समृद्धि, सौंदर्य बोध, गर्व, प्रतिष्ठा, महत्वाकांक्षा, भाषाई परिपूर्णता को भी गौर से देखा जा सकता है। इसमें लेखक ने यह भी बताने की कोशिश की है कि तुलसी का वास्तु विषयक और स्थापत्य कला संबंधी ज्ञान ताजमहल की स्थापत्य कला से बेहतर था। तुलसी के समय भले ही ताजमहल का अस्तित्व ना हो परंतु वह अपनी मूर्ति विधायिनी कल्पना के सहारे रामचरितमानस में राजा जनक की आज्ञा से मंडप रचना में निपुण कारीगरों द्वारा जिस मंडप का निर्माण कराते हैं वह न केवल ताजमहल की रचना का पूर्वाभास है अपितु उससे कई मायनों में बेहतर भी है। तुलसी मंडप निर्माण की प्रक्रिया का चित्रण करते हुए लिखते हैं कि उन कारीगरों ने ब्रह्मा की वंदना करके अपना कार्य आरंभ किया तथा सोने के केले के खंभे बनाए, फिर हरे–हरे मणियों से पत्ते बनाए। यह देख के विधाता का मन भी अपनी सुध–बुध खो बैठा। कुशल कारीगरों ने ऐसी बेल बनाईं जो सोने की सुंदर नागबेली से भी अधिक अच्छी दिखाई दे रही थी। बीच–बीच में मोतियों की झालर सुशोभित हुई। मानिक, पन्ने, हीरे और फिरोजी रंग आदि रत्नों से सुंदर वास्तु कला का नमूना पेश किया है। वर्तमान समय में जब हमें अपने आस–पास के पर्यावरण को बचाने की एक बड़ी चुनौती मिल रही है, उस समय भारतीय पर्यावरणीय दृष्टि और संत

जाम्भोजी का चिंतन नामक लेख में हमारे मध्यकालीन पर्यावरणीय चिंतन को स्पष्ट रूप से सामने रखा है जिसकी प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी उतनी ही महत्वपूर्ण रूप से बनी हुई है। 'मध्यकालीन कविता का पुनर्पाठ' वर्तमान समय में मध्यकाल को समझने के लिए आवश्यक पुस्तक के रूप में जान पड़ती है।

'आलोचना का सांस्कृतिक आयाम' परशुराम की पुस्तक है जो संभव प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। इसमें निबंधों के माध्यम से मार्क्सवादी दृष्टिकोण से ऐतिहासिक परिस्थितियों एवं उनकी जटिलताओं का विश्लेषण किया गया है। इस पुस्तक में मार्क्सवाद के बुनियादी तत्वों के आधार पर उत्पादक शक्तियों, उनके हथियार एवं उनके इस्तेमाल का ज़िक्र किया गया है। इस पुस्तक में साम्राज्यवाद की तह तक पहुँचने के लिए जो ज़रूरी अवधारणाएँ हैं उन पर विस्तार से विमर्श किया गया है। यश पब्लिकेशंस दिल्ली से दिनेश कुमार माली की पुस्तक 'राधामाधवः एक समग्र चिंतन' उद्‌भ्रांत कृत महाकाव्य राधा माधव को ही केंद्र में रखकर यह पुस्तकाकार रूप संभव हो सका है। इस पुस्तक में उन्होंने राधा और माधव की प्रामाणिकता, उसकी कथावस्तु का पूर्ण विवेचन, उसके संवेदनात्मक पहलू तथा शिल्पगत दृष्टि से विस्तार से विवेचन प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में एक बड़ी बात जो कही गई है वह यह कि हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण महाकाव्यों जैसे प्रियप्रवास, कनुप्रिया, जानकी वल्लभ शास्त्री की राधा एवं रमाकांत रथ की श्रीराधा के क्रम में यह एक महत्वपूर्ण कृति है। इसमें एक महत्वपूर्ण बात या प्रसंग जो निकलकर आया है वह यह है कि इसमें कृष्ण और राधा के बहुत सारे प्रसंगों को आधुनिक आयाम दिया गया है। इस पुस्तक में राधा माधव में मौजूद वर्तमान समय के विमर्शों को किस प्रकार देखा गया है यह भी एक नए रूप में हमारे सामने आया है इस प्रकार यह राधा प्रेमियों के लिए पठनीय पुस्तक बन सकती है। 'नागरी लिपि का उद्‌भव और विकास' ओमप्रकाश भाटिया की अनुज्ञा बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित नागरी लिपि के इतिहास को संतुलित तरीक़े से प्रस्तुत करने वाली पुस्तक है। लिपि में किस प्रकार उसकी भाषा की आवश्यकता के अनुसार संकेत होते हैं इन सब का विवरण इस पुस्तक में आपको देखने को मिलेगा। ध्वनि से वर्ण, शब्द, वाक्य तक भाषा के जितने भी अवयव हैं उनका विवेचन इसमें मिलेगा। इस पुस्तक में नागरी लिपि का पूरा इतिहास दर्ज है उसकी शुरुआत से लेकर अब तक की उसकी एक लंबी विकास यात्रा को ओमप्रकाश भाटिया ने इस पुस्तक में संकलित किया है।

मध्यकालीन हिंदी साहित्य का क्षेत्र बहुत विस्तृत है एवं समय बीतने के साथ–साथ पुराने पाठों को हमें नए तरीक़े से पढ़ाने की आवश्यकता लगातार पड़ती है। 'अब्दुररहीम खानेखाना' वाणी प्रकाशन से प्रकाशित एक ऐसी ही पुस्तक है जिसमें उनके काव्य को देखने की नई दृष्टि हमें मिलेगी। इसका संपादन हरीश त्रिवेदी ने किया है। रहीम अक़बर के नौ रत्नों में से थे। उन्हें भारतीय भाषाओं के साथ ही साथ अरबी, फ़ारसी और तुर्की जैसी महत्वपूर्ण भाषाएँ भी आती थीं। रहीम की कविता में नीति के जो तत्व मिलते हैं वह न सिर्फ़ उन्हें साहित्य में अपितु लोक–जगत में भी काफ़ी प्रसिद्धि दिलाने में सहायक हुईं। सामान्यतः रहीम को उनके नीतिपरक दोहों की वजह से ही जाना जाता है परंतु रहीम का संपूर्ण रचना–संसार सिर्फ़ नीतिपरक या उपदेशात्मक दोहों तक ही सीमित नहीं है इसमें अन्य कई कलेवर भी मौजूद हैं जो सामान्य रूप से कम देखे जाते हैं। इस पुस्तक में वही कलेवर हमें देखने को मिलता है। इसमें उनकी भक्ति भावना भी है, रहीम द्‌वारा श्रृंगार पर लिखी गई कविताओं का विषय विवेचन किया गया है, जीवन के जो सामान्य अनुभव हैं उस पर जो उन्होंने कविताएँ लिखीं, उसका उन्होने वर्णन किया है। हमारे परिवेश से जुड़ी हुई चीज़ों का जो उन्होंने अपनी किताब में उपयोग किया है इसमें उसका विवेचन मिलता है। एक महत्वपूर्ण पक्ष जो इस पुस्तक में नया मिलता है वह यह है कि उस समय विभिन्न जातियों और व्यवस्थाओं की जो कामकाजी महिलाएँ हैं उनका सजीव और सरस

वर्णन है, जो पूरे रीतिकाल के कवियों में अन्यत्र दुर्लभ है। रीतिकाल के कवियों में स्त्रियों के विविध पक्ष मिल जाते हैं परंतु यह पक्ष देखने को शायद ही मिले। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस पुस्तक में रहीम को देखने का एक विस्तृत नज़रिया हमें मिलता है।

अपूर्व जोशी की अनन्य प्रकाशन से 'लोकतंत्र, राजनीति और मीडिया' नाम की पुस्तक आई है जो समकालीन संदर्भों में ज्वलंत विषयों पर बहुत तीव्रता से प्रहार करती हुई नज़र आती है। इस पुस्तक में अपूर्व जोशी ने प्रभाष जोशी की पत्रकारिता पर भी कई लेख लिखे हैं। उन्होंने वर्तमान मीडिया में मौजूद समस्याएँ, मीडिया की खो रही विश्वसनीयता, पोस्टट्रुथ, सोशल–मीडिया, पेड–न्यूज़ जैसे विषयों पर गंभीर लेखन किया है। वर्तमान मीडिया ने राजनीति को किस तरीक़े से देखा है और उस राजनीति से हमारा लोकतंत्र किस तरीक़े से प्रभावित हो रहा है इसकी पूरी बानगी हमें इस पुस्तक में देखने को मिलती है। मीडिया में दिखाए जा रहे सच और झूठ को किसने पाटने की कोशिश की है और किस तरीक़े से झूठ आज का सच बनता जा रहा है इन तमाम विषयों पर इस पुस्तक में गंभीर चर्चा है। 'कहानीः परिदृश्य और प्रश्न' प्रकाशन संस्थान द्वारा प्रकाशित 'शंकर' की एक महत्वपूर्ण पुस्तक है जो कहानी पर उनके द्वारा लिखे गए लेखों का संग्रह है। एक रचनाकार के तौर पर इन्होंने कहानियाँ तो लिखी हैं परंतु कहानियों की आलोचना एवं विमर्श पर लगातार सक्रिय होकर इन्होंने अपनी टिप्पणियाँ भी लिखी हैं। समकालीन कहानी की दुनिया में होने वाले विमर्शों में इन्होंने लगातार अपनी सक्रिय सहभागिता दर्ज कराई है और यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक उसी सक्रिय सहभागिता का प्रामाणिक दस्तावेज़ है। उनकी कथा दृष्टि में समाज में मौजूद मूल्य एवं उन मूल्यों को बचाए रखने की दृष्टि मिलती है। इस पुस्तक के माध्यम से हम ये समझ सकते हैं कि किस प्रकार कहानी समय एवं समाज से जुड़े रहने की एक प्रक्रिया के अंतर्गत लिखी जाने वाली महत्वपूर्ण कृति है। इस पुस्तक में उन्होंने बताया कि किसी क्षण विशेष के अनुभव से कोई कहानी जन्म ले सकती है और ऐसी बहुत सी कहानियाँ हमारे साहित्य में हमें देखने को मिलती हैं। परंतु जब बात उपन्यास की आती है तो वह किसी क्षण विशेष से जन्म ना लेकर उन क्षणों की सुसंगत एवं संबंधित शृंखला से जन्म लेती है और बाद में अनुभव के विशाल फ़लक पर हमारे सामने आती है। इस प्रकार शंकर कि इस पुस्तक ने कहानी पर सार्थक हस्तक्षेप किया है।

शैलेंद्र चौहान की 'कविता का जनपक्ष' मोनिका प्रकाशन से प्रकाशित कविता आलोचना के इतिहास की एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। इस पुस्तक में आलोचना के अब तक के अनेक चरणों को हमारे सामने क्रमवार तरीक़े से रखने की कोशिश की गई। हिंदी आलोचना में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना के समानांतर हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने आलोचना की नई लकीर खींची। ठीक इसी समय बहुत सारे रचनाकार भी आलोचक की भूमिका में नज़र आए जिसमें रामधारी सिंह 'दिनकर' का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है जिन्होंने 'शुद्ध कविता की खोज', 'काव्य की भूमिका' जैसी बहुत सारे आलोचनात्मक हस्तक्षेपों से एक नया आयाम दिया। इसके पश्चात् स्वयं सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', नलिन विलोचन शर्मा जैसे प्रख्यात साहित्यकारों ने अपनी रचनात्मक लेखनी से आलोचना को समृद्ध किया। हिंदी कविता में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। उन्होने आलोचना को एक अलग रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया। एक कवि होने के कारण उसमें उनके कवि होने का अनुभव भी शामिल था। हिंदी साहित्य में जब आलोचना की बात आती है तो 'परिमल' का नाम इसमें आदर के साथ शामिल है। रामस्वरूप चतुर्वेदी, विजयदेव नारायण साही जैसे लोगों ने इस समूह के माध्यम से आलोचना को समृद्ध किया। वहीं दूसरी तरफ मार्क्सवादी सिद्धांतों को पकड़ कर चलने वाली आलोचना में रामबिलास शर्मा, शिवदान सिंह चौहान, नामवर

सिंह आदि लोगों ने अपना योगदान दिया। हिंदी साहित्य के दो प्रमुख आचार्य रामचंद्र शुक्ल एवं हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना पद्धतियों को क्रमशः रामबिलास शर्मा एवं नामवर सिंह ने आगे बढ़ाया। इस पुस्तक में कुल मिलाकर आलोचना के विभिन्न दौर एवं विभिन्न आलोचकों का एक दस्तावेज़ हमें दिखाई पड़ता है।

अनन्य प्रकाशन से 'नारीवादी आलोचना' नाम की पुस्तक किंग्ससिंह पटेल की आई है जो नारीवादी सिद्धांतों की पड़ताल करती हुई नज़र आती है। आज नारी विमर्श अकादमिक जगत के साथ–साथ पूरे समाज में चर्चा का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है और ऐसे में नारीवाद के नाम पर बहुत सारा लेखन कार्य हो रहा है। नारीवाद क्या है? इसकी शुरुआत कैसे हुई? उसके अपने मानदंड क्या हैं? नारीवादी आलोचना किस तरीक़े से विकसित हो रही है,आदि विषयों पर इस किताब में सुंदर प्रस्तुति मिलती है। इस पुस्तक में नारीवादी आलोचना की समस्या को जाना गया है व उसके समाधान की ओर भी क़दम बढ़ाते हुए दिखाया गया है।

सिनेमा साहित्य की तरह समाज को आईना दिखाने की चीज़ है। समय के साथ–साथ सिनेमा के विषयों में भी लगातार बदलाव होते रहे हैं। जिस तरीके का सिनेमा साठ और सत्तर के दशकों में आता था ठीक वैसा ही सिनेमा अब नहीं रह गया है। भूमंडलीकरण के बाद इसमें तमाम तरीके के परिवर्तन दिखाई देते हैं। जिस तरीके से साहित्य में अनेक विमर्शों ने जन्म लिया है उसका ही प्रतिबिंब सिनेमा में देखने को मिलता है और वहाँ पर भी जातिगत विमर्श,धार्मिक विमर्श संबंधी मुद्दों को अब स्थान दिया जाने लगा है। समाज में जब प्रभुत्वशाली वर्ग के द्वारा क्रूरता बढ़ाई जाती है तब एक तबका शोषित होता है और उसके शोषण में जन्म होता है विरोध का। इस पुस्तक में ऐसे शोषितों के द्वारा आवाज़ उठाए जाने को केंद्र में रखकर बातें कही गई हैं। अनन्य प्रकाशन से प्रकाशित 'प्रतिरोध और सिनेमा' पुस्तक महेंद्र प्रजापति द्वारा लिखी गई है।

2020 में हिंदी सिनेमा पर फिल्म समीक्षक जय सिंह की पुस्तक 'सिनेमा बीच बाजार' एक महत्वपूर्ण पुस्तक है, जिसमें लेखक ने सिनेमा को कला के साथ–साथ सांस्कृतिक उत्पाद के रूप में स्थापित करने की कोशिश की है। साथ ही सिनेमा और बाजार के रिश्तों को गंभीरता से समझाया है। लगभग 144 पृष्ठों की इस पुस्तक को 10 अध्यायों में विभाजित किया गया है वे अध्याय हैं: 'हिंदी सिनेमा इतिहास के पन्नों से', 'सिनेमा कला अथवा उत्पाद', 'मनोरंजन उद्योग– कहाँ है सिनेमा', 'डिजिटल तकनीक के सहारे– मुट्ठी में बाजार', 'फिल्मों में ब्रांडः कहानी और किरदारों के बहाने', 'संगीतः धुनों पर झूमता बाजार', 'विश्व बाजार में भारतीय सिनेमाः सात समुंदर के पार की उड़ान', 'क्षेत्रीय सिनेमा– बाजार गढ़ने में सफल', 'बाल सिनेमा– बड़ा है बाजार', 'भारत में विश्व सिनेमा बड़े बाजार तक पहुँचने की मजबूरी'। सिनेमा दुनिया की एक ऐसी कला है जिसके बनाने में करोड़ों रुपए की लागत आती है इतनी लागत आने के बाद उसकी बिकने की कोई गारंटी नहीं होती, फिर भी इसका बाजार भाव हमेशा आसमान छूता रहता है। बिक्री की चीज होने के कारण इसे उत्पाद भी माना जाता है। बिकाऊ होने के कारण कुछ विद्वान इसे कला नहीं मानते पर इस किताब में तर्कपूर्ण संदर्भों के साथ लेखक यह बताता है कि सिनेमा एक ऐसी कला है जो बाद में आने के बावजूद पूरी दुनिया पर छाई हुई है। किताब के आरंभ में ही लेखक यह सवाल उठाता है कि फिल्म निर्माण में शीर्ष पर रहने के बावजूद भारत देश फिल्मों से कमाई के मामले में नंबर सात पर क्यों है? वह जानना चाहता है कि इसके पीछे क्या कारण है? साथ ही स्वतंत्रता से पहले और स्वतंत्रता के बाद तथा 2000 ईस्वी के बाद सिनेमा में किस तरह का बदलाव आया है उस पर गंभीरता से विचार हुआ है। इस पुस्तक में लेखक ने यह भी बताया है कि वैश्विक परिदृश्य में भारतीय सिनेमा ने अपना दायरा किस तरह बढ़ाने की कोशिश की है। भारतीय फिल्म उद्योग भले ही आज एक उत्पाद हो गया है और इस उत्पाद में किस तरह

इंटरनेट का बढ़ता दायरा, ओटीटी प्लेटफॉर्म, मेगाप्लेक्स, मल्टीप्लेक्स, वीडियो ऑन डिमांड, मोबाइल क्रांति और मूव ऑन व्हील्स जैसे नए बाजार मॉडलों ने सिनेमा उद्योग को एक नई शक्ति और ऊर्जा देने की कोशिश की है। आगे लेखक ने यह भी बताया है कि बाल फिल्मों के साथ–साथ क्षेत्रीय सिनेमा किस तरह मुख्यधारा की सिनेमा को कंटेंट, ट्रीटमेंट और तकनीक के आधार पर चुनौती दे रहा है। अपनी बात की पुष्टि के लिए लेखक ने तथ्यों और आंकड़ों का सुंदर सामंजस्य किया है। अंतिम अध्याय में भारत में विश्व सिनेमा पर विचार करते हुए लेखक ने यह बताने की कोशिश की है कि किस तरह विश्व सिनेमा भारतीय बाजार में अपनी धाक जमाने के लिए तत्पर हुआ है। कुल मिलाकर यह किताब सिनेमा में रुचि रखने वाले हर पाठक को सिनेमाई इतिहास, बाज़ार से उसके रिश्ते और बाल फिल्मों की महत्ता आदि की प्रस्तुति, तथ्य और सहज–सरल भाषा की वजह से आकृष्ट करती है।

आलोक कुमार पांडेय की 'समकालीन साहित्य और मूल्य विमर्श' एक महत्वपूर्ण पुस्तक है जो ज़रूरी विषयों पर ध्यान आकृष्ट करती है। समकालीन साहित्य में राजकमल चौधरी को समकालीनता का बहुत बड़ा व सशक्त नाम माना जाता रहा है और उनका काव्यात्मक व्यक्तित्व और कृतित्व उसी तरीके से काफ़ी विरोधाभासी भी रहा है। उनके बारे में कई बार हम एक राय देखने को नहीं पाते हैं, इस पुस्तक में इन विषयों पर एक संतुलित लेखन देखने को मिलता है। वर्तमान युग में मूल्यों को बचाने की चुनौती को लेकर काफ़ी महत्वपूर्ण कार्य यहाँ पर देखने को मिलता है। पुस्तक अनन्य प्रकाशन से प्रकाशित हुई है।

हिंदी आलोचना के क्षेत्र में मधुरेश एक चर्चित नाम है। कहानी एवं उपन्यास की आलोचना पर उन्होंने पहले भी हिंदी आलोचना को समृद्ध किया है। आधार प्रकाशन से उनकी नई आलोचना की पुस्तक 'ऐतिहासिक उपन्यासः इतिहास और इतिहास दृष्टि' प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में ऐतिहासिक व्यक्तित्व के ऊपर लिखे गए उपन्यासों का ज़िक्र किया है। हिंदी साहित्य में पिछले कुछ दिनों में बहादुर शाह ज़फ़र, अक़बर, बाबर, औरंगज़ेब, हुमायूं, रज़िया सुल्तान आदि जैसे विराट व्यक्तित्व पर उपन्यास लिखे गए। यह महज़ उनके चरित्र का बखान नहीं है अपितु उसके माध्यम से हम इतिहास की निर्मिति की टोह भी ले सकते हैं। ऐसे उपन्यास सामान्य तौर पर इतिहास से थोड़े अलग भी होते हैं। वे इतिहास का निर्माण करते हैं परंतु उसके समांतर उनके जीवन के बहुत सारे पहलुओं को जो छूट चुके हैं उनका भी ज़िक्र करते हुए चलते हैं। मधुरेश ने इस पुस्तक में ऐसे ही तमाम पात्रों का ज़िक्र किया है जिसमें उनके व्यक्तित्व के और कई पक्षों का उद्घाटन कर सकें।

'विश्वविद्यालय परिसर जीवन और हिंदी उपन्यास' प्रो. सत्यकेतु सांकृत द्वारा लिखी एक नए विषय पर पुस्तक है जिसका प्रकाशन नई किताब प्रकाशन के द्वारा हुआ है। इस पुस्तक के शीर्षक से ही स्पष्ट है कि इस तरीक़े के विषयों पर हिंदी में लेखन मौजूद नहीं है। इसलिए भी यह पुस्तक अपने आप में काफ़ी महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक में विश्वविद्यालय परिसर के तमाम पहलुओं को उजागर करने की कोशिश की गई है। जिस प्रकार उच्च शिक्षा आज हमारे समाज को अपना देय दे पा रही है एवं उसमें आने वाली समस्याएँ किस तरीक़े से विश्वविद्यालयों के लिए संकट बन रही हैं उसका भी बयान इसमें किया गया है। आज के समय में विश्वविद्यालय जीवन में किस तरीके के परिवर्तन दिखाई दिए हैं उनका भी एक बड़ा लेखा–जोखा यहाँ पर देखने को मिलता है। विश्वविद्यालय परिसर पहले शांत थे परंतु जिस प्रकार वहाँ पर गतिविधियाँ तेज हुई वहाँ पर राजनीति, छात्र राजनीति का उभार आया उसी प्रकार उन परिसरों का बयान भी हमारे उपन्यासों में देखने को मिलता है। धीरे–धीरे हमारे उपन्यासों में इसकी उपस्थिति अधिक रूप में दर्ज होने लगी। हिंदी उपन्यासकारों ने दिशाहीन युवा पीढ़ी का ही नहीं उसे दिग्भ्रमित करने वाली स्थितियों का भी पूरा ज़िक्र किया है। इस पुस्तक में विवेकी राय, देवेश

ठाकुर, रामदरश मिश्र, काशीनाथ सिंह, श्रीलाल शुक्ल, शिव प्रसाद सिंह, गिरिराज किशोर जैसे महत्वपूर्ण रचनाकारों के उपन्यासों के तमाम पहलुओं का ब्यौरा देखने को मिलता है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि मार्च 2020 में कोरोना महामारी के बावजूद इस साल आलोचना की कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें पाठकों को पढ़ने को मिलीं, जिससे न केवल हिंदी आलोचना समृद्ध हुई अपितु इस महामारी के दौर में पाठकों को हिंदी साहित्यिक आलोचना में गोता लगाने को मिला। वैसे ऊपर बहुत सारी किताबों की चर्चा नहीं हो पाई है जिसमें कविता की आलोचना, मीडिया और सिनेमा से संबंधित पुस्तकें हैं। इस तरह महामारी के बावजूद 2020 हिंदी आलोचना के लिए सही रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. 'मध्यकालीन कविता का पुनर्पाठ', प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, वाणी प्रकाशन, 2020

2. 'आलोचना का सांस्कृतिक आयाम', डॉ. परशुराम, संभव प्रकाशन, 2020

3. 'राधामाधव, एक समग्र चिंतन', दिनेश कुमार माली, यश पब्लिकेशंस, 2020

4. 'नागरी लिपि का उद्भव और विकास', ओमप्रकाश भाटिया, अनुज्ञा बुक्स प्रकाशन, 2020

5. 'अब्दुररहीम खानेखाना', संपादक– डॉ. हरीश त्रिवेदी , वाणी प्रकाशन, 2020

6. 'लोकतंत्र, राजनीति और मीडिया', अपूर्व जोशी, अनन्य प्रकाशन , 2020

7. 'कहानी, परिदृश्य और प्रश्न', शंकर प्रकाशन संस्थान, 2020

8. 'कविता का जनपक्ष', शैलेंद्र चौहान, मोनिका प्रकाशन, 2020

9. 'नारीवादी आलोचना', किंग्ससिंह पटेल, अनन्य प्रकाशन, 2020

10. 'प्रतिरोध और सिनेमा', डॉ. महेंद्र प्रजापति, नई किताब प्रकाशन, 2020

11. 'सिनेमा बीच बाजार', जय सिंह, सामयिक प्रकाशन, 2020

12. 'समकालीन साहित्य और मूल्य विमर्श', आलोक कुमार पांडेय, अनन्य प्रकाशन, 2020

13. 'ऐतिहासिक उपन्यास, इतिहास और इतिहास दृष्टि', मधुरेश, आधार प्रकाशन, 2020

14. 'विश्वविद्यालय परिसर जीवन और हिंदी उपन्यास', प्रो.सत्यकेतु सांकृत, नई किताब प्रकाशन, 2020

– डब्लू ज़ैड–250 बी, निकट इंद्रपुरी एम टी एन एल, नई दिल्ली–110019

❑❑❑

17

हिंदी उपन्यास

डॉ. तरसेम गुजराल

(कोरोना काल में आशा का दीप)

साल 2020 कोरोना महामारी के कारण भारत सहित पूरे विश्व के लिए हर तरह से घातक और अनेक परेशानियों को जन्म देने वाला साल रहा है। हमें अनेक तबाहियाँ झेलनी पड़ी हैं। मानवीय बिरादरी ने जिन दुखों को झेला है उनका आकलन आसान नहीं है। हमें व्यापक स्तर पर बेरोजगारी, कारोबार में हानि और कुछ आत्मीय जनों की मौत को भी झेलना पड़ा है। लॉकडाउन के नियमों के कारण आम जन के लिए खासकर श्रमिक वर्ग के लिए विस्थापन और पलायन की स्थिति रही। निश्चित रूप से हम सभी के लिए यह एक मुश्किल दौर रहा है।

उपन्यास साहित्य का ही अभिन्न अंग है और साहित्य ने मुश्किल से मुश्किल समय में अपने काम और शब्द को अपना हथियार बनाया है। बेहतर जीवन के लिए संघर्ष हिंदी उपन्यास का कर्म रहा है। प्रस्तुत लेख में शामिल उपन्यासकारों ने यथार्थवादी दृष्टिकोण से चीजों को परखते हुए निराशा में भी आशा के दीप जलाने की कोशिश की है। इस संघर्ष, सत्य की लौ और आशावादी दृष्टिकोण को सलाम।

इतिहास विशेष व्यक्तियों, राजाओं और महाराजाओं की गाथा को ही इतिहासबद्ध करता है या इतिहासबद्ध करवाया जाता है। तब जरूरत होती है इतिहास के भस्मकाल से मामूली आदमी के इतिहास को पुनर्जीवित करना। एक साहित्यकार को यह रुतबा हासिल है कि वह एक किसी साधारण व्यक्ति को इतिहासबद्ध कर दे। अलका सरावगी अपने उपन्यास (कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए) इसी लक्ष्य को समर्पित है जो देश की विभाजनकारी स्थितियों के बीच मनुष्यता खोकर हिंदू–मुस्लिम होकर रह जाता है और जितना अधिक वह हिंदू–मुसलमान होता जाता है उतनी ही उसमें मानवता लुप्त होती चली जाती है और निर्दयता अपना मकसद पा जाती है तत्कालीन ईस्ट पाकिस्तान की सीमा पर विभाजन हुआ और दंगों का विकराल रूप सामने आता रहा। मुक्तिवाहिनी का संघर्ष अपनी जगह था और विस्थापन की त्रासदी की दुर्दांत घटनाएँ सामने आती चली गईं।

उपन्यास में भूषण सुंदर नहीं है। बचपन में ही दर्पण में अपना चेहरा देखकर मायूस हो गया था। अपने भाई–बहनों में उसका रंग मटमैला तो था ही जिस तरह नाक–नक़्श भी या तो चिपके हुए थे या फूले हुए। बचपन में गुस्सैल भी था। माँ की हर बात से चिढ़ थी। पिता से इसलिए नफ़रत कि उनकी बदसूरती विरासत में मिली थी।

किशोरावस्था में श्यामा धोबी मिला। उसे इतना बदसूरत पाया कि उससे ज्यादा बदसूरत इनसान होगा ही नहीं। तवे जैसी रंगत, चेहरे पर चेचक के

दाग। मात्र आँखों की सफेदी से पता चले कि आँखें हैं। परंतु वह सदा खुश नजर आता था। इस श्यामा धोबी ने कुलभूषण को भूलने के बटन के बारे में बताया जो उसे तेरह साल की उम्र में एक जोगी ने भूलने के बटन के बारे में बताया था। कभी भी मन पर कोई परछाईं घिरने लगे तो बस बटन दबाना और चमत्कार देखना।

पाठक सोच सकते हैं कि क्या जीवन में व्यावहारिक स्तर पर ऐसे बटन मिल पाते हैं? फिर तो परेशानी को चाहे वह कैसी भी हो, धत्ता बताया जा सकता है। क्या ऐसे बटन काम करते हैं? लोग गम या मानसिक चोट भूलने के लिए, कहीं शराब, कहीं किसी महिला मित्र, या बाजार में बैठने वाली वेश्या का सहारा तो लेते रहे हैं परंतु ऐसा बटन नहीं खोज पाए। भूषण की व्यापक संवेदना जहर बटन बन जाती है जब वह दर्द झेलती परेशान भाभी का कंधा हाथ से दबाता है, जिसे डॉक्टर (फ्रोजन शोल्डर) कह कर बेईलाज घोषित कर चुके थे।

बेटे प्रशांत और उसकी पाली हुई बेटी मालविका के आपसी संबंधों के प्रश्न से टकराते हुए। वह बार–बार भूलने का बटन दबाता है परंतु प्रश्न टलते नहीं। प्रश्न है क्या वे संबध समाज के माने हुए दायरे से बाहर के थे? क्या मालविका ने इसीलिए जीने की बजाय मरने की राह ली?

कुलभूषण रो रहा था। यदि माँ और पिताजी देखते तो शायद सोचते कि वह अपने काम–काज, घर–द्वार छूटने और भाइयों–भाभियों के साथ के जीवन के बारे में सोच कर रो रहा है। परंतु कुलभूषण को पता था कि वह सिर्फ़ और सिर्फ़ ईस्ट बंगाल की अपनी 'गंगा–गोराई नदी के लिए रो रहा है। गोराई के बिना उसे अपना जीवन वैसे ही सूना लगा जैसे टाका पट्टी की तंग गलियाँ बिना पेड़ों की हरियाली के निपट सूनी है। यह प्रेम संबंध अवर्णनीय है। आप अपनी नदियों, पहाड़ों, यहाँ तक कि रास्तों से इतना बँध जाते हो कि छुटकारा संभव नहीं होता। पता तब चलता है जब आप यह सब छोड़कर जाने पर विवश होते हैं।

पत्रकार पूछता है– "तो आप कहना चाहते हो कि ईस्ट बंगाल को छोड़ने में सबसे ज्यादा तकलीफ़ गोराई नदी के छूटने में हुई? लेकिन कलकत्ता में भी तो गंगा बहती है।" कुलभूषण ने मुस्कुराकर कहा–यही बात तो किसी को समझाना मुश्किल है। गंगा कलकत्ता में भी बहती है, पर यह बात लोगों को तभी याद आती है जब कभी हावड़ा से गंगा पार कर उधर जाना होता है। लोग शहर में नदी से सीखकर जीवन जीते हैं। पत्रकार सीधे प्रश्न पर आया... 'अच्छा तो आजादी के सत्रह साल बाद आपने पाकिस्तान को पूरी तरह छोड़ दिया? फिर कभी नहीं गए वहाँ? बडबड़ाहट में उत्तर दिया– कश्मीर में हज़रतबल में मोहम्मद साहब का बाल चोरी हुआ था न? बस उसी कारण दरबार छोड़ना पड़ा। नहीं, कभी वापस नहीं गया। उसके पास पासपोर्ट नहीं था। फिर लौटने के बाद ही इंडिया–पाकिस्तान की लड़ाई हो गई, चौंसठ दिनों तक दोनों बंगाल के बीच जो ट्रेनें चल रही थी, वे भी बंद हो गईं।" जनवरी, सन् चौंसठ के दिन थे जब हजरतबल के दंगे हुए। नोआखाली के दंगे सभी को याद थे फिर तीन साल बाद बरिसाल के दंगे। खुलना के दंगो से सब घबरा रहे थे। पिताजी की राय अलग थी। कहते थे कि मियाँ लोगों का काम उनके बिना चलने वाला नहीं। माँ का अनुभव अलग था। उनके बाप–भाईयों को बीस कमरों की हवेली आम के बगीचे घोड़ा–गाड़ी सब छोड़कर भागना पड़ा था, पिता इसीलिए उन्हें कायर कहते थे–

सत्ताएँ दंगा करवा कर भी निरपेक्ष बनी रहती है। इलजाम रहता है धार्मिक उन्माद पर हिंदू मुसलमान पर।

कुलभूषण को याद है कि हज़रतबल के दंगों के समय कुशिया में कड़क ठंड पड़ रही थी। तीन जनवरी को ईस्ट पाकिस्तान में जगह–जगह कश्मीर के हज़रतबल में रखे हुए मुहम्मद साहब का बाल खो जाने के शोक में 'कश्मीर दिवस' मनाया जा रहा था। कुलभूषण रिक्शा से जा रहा था। एक लंबे–चौड़े आदमी ने रिक्शा वाले को थप्पड़ लगा दिया। पैसा कमाने चले हो? रिक्शा तोड़ देंगे।

अनिल मुखर्जी बताते हैं कि खेल के भीतर खेल चला करता है। उनका सवाल है कि आज तक क्यों कोई बंगाली मुसलमान खिलाड़ी पाकिस्तान

की टीम में टेस्ट मैच नहीं खेल पाया? उधर के पाकिस्तान के लोग बंगालियों को अपनी टीम में शामिल करने लायक नहीं समझ रहे थे। इतना ही नहीं पश्चिम पाकिस्तान बंगालियों को चावल खाने वाले नाटे, पिलपिले समझते रहे, बांग्ला भाषा को घटिया माना जाता रहा। कुलभूषण कहता है कि पाकिस्तान वाले बांग्ला भाषा को हटाकर उर्दू लाना चाहते थे। जहाँ सत्ता द्वारा भेदभाव किया जा रहा हो एक बड़े वर्ग की उपेक्षा हो, वहाँ एक खास तरह का तनाव पनपता ही है। यही तनाव बाद में तूफान बनकर उभरा जब मुक्तिवाहिनी ने मोर्चा संभाल लिया। परिणामस्वरूप विस्थापन, निर्वासन का भारी कष्ट मासूम लोगों को सहना पड़ा।

उपन्यास में दर्ज है– "प्रशांत को क्या मालूम कि देश और काम छिन जाना क्या होता है? बिना एक तिनके के सहारे जीना क्या होता है?"

गांधी की हर बात को ससम्मान सुना जा रहा था। वह तख्त पर रखी एक लकड़ी की कुर्सी पर ऊँचे बैठे बोल रहे थे। उनकी आवाज़ लोगों के दिल में उतर रही थी वे कह रहे थे– "तुम मुसलमान हो तो मुस्लिम लोग की तरफ़ मत देखो। तुम हिंदू हो तो हिंदू नेताओं की ओर मत देखो कि वे लोग तुम्हारी तकलीफ मिटा सकते हैं। वे लोग तुम्हारी रोज की जरूरतों के बारे में क्या जानते है? सिर्फ तुम जानते हो कि किस चीज से तकलीफ है। तुम ही उसकी छोटी–छोटी बातें समझ सकते हो।"

(कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए पृ.स.–49)

कुशिया के लालन शाह फ़कीर के बारे में बताया गया कि वह न हिंदू था, न मुसलमान। सभी उसकी मज़ार पर मत्था टेकते थे। "अब जैसा डर किसी के दिल में था ही नहीं। हिंदू अपने तरीके से रहता, मुसलमान अपने तरीके से किसी ने सोचा ही नहीं था कि दूसरे को इस देश से निकालकर हम अकेले रहेंगे।" श्यामा धोबी कुलभूषण से पूछना चाहता है कि ईस्ट बंगाल अब ईस्ट पाकिस्तान बन गया है तो क्या? "तुम इस धरती को पराया क्यों समझने लगे हो?" तब मुसलमानों पर हिंदुओं का भरोसा था। मन के अंदर के सैकड़ों साल पुराने शक का क्या किया जा सकता है जो खत्म होने में ही नहीं आता। कोई वारदात मौका बेमौका घट जाती है तो आने वाले सौ दो सौ साल के लिए उस शक को मजबूत करने के लिए काफी होती है।

श्यामा कुलभूषण का मित्र है। यदि यह पता चले कि श्यामा जन्म से मुसलमान है तो क्या वह उससे मेलजोल रख पाएगा? धार्मिक उन्माद और विस्थापन पर यह एक बढ़िया उपन्यास है।

दो साल पहले सोवियत साहित्य के बड़े कथाकार मैक्सिम गोर्की की जन्म शताब्दी मनाई गई (150 वर्ष) तब कालजयी उपन्यास की रचना को 112 वर्ष हो गए थे। 'माँ' उपन्यास को सोवियत साहित्य का बुनियादी उपन्यास माना गया क्योंकि वह पूरे विश्व की मेंहनतकश तथा स्वतंत्रता चाहने वाली जनता के लिए प्रेरक उपन्यास रहा। पासेस की माँ जिसे अयमानित किया गया, ने चिल्लाकर कहा था "तुम जितना अत्याचार करोगे, हमारी नफरत उतनी ही बढ़ेगी।" प्रेमचंद गोर्की को पसंद करते थे और हिंदी के प्रगतिवादी लेखक संघ के अध्यक्ष थे प्रगतिवादी विचारधारा से प्रभावित हिंदी के उपन्यासों और कहानियों में कारखानों, फैक्ट्रियों में काम करने वाले मजदूर वर्ग की एकता, संगठनात्मकता पर बल दिया गया ताकि वे मालिकों के शोषण, अन्याय, जुल्म के विरुद्ध खड़े हो सकें।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मूल्यों में गिरावट आती रही सच्चाई को झूठ की पताका में छपाए जाने का खेल खेला जाने लगा। जयनंदन का 2020 में आया उपन्यास 'रहमतों की बारिश' पतनशीलता को लेकर रचा गया है। जब ट्रेड यूनियन लीडर मजदूर की शोषण मुक्ति की जगह अपनी सुविधाओं के लिए, दूरी बनाए रखने के लिए मालिकों के साथ मिलकर मजदूरों से पर्दादारी बनाए रखते हुए शोषण चक्र टूटने नहीं देते। यूनियन लीडर तमाम तरह के छल प्रपंच करते हुए गुंडागर्दी तक करते हैं और मालिकों के दलाल बन कर शोषण चक्र को मजबूत करते हैं।

'रहमतों की बारिश' उपन्यास का आरंभ 'विधाता स्टील परिसर' में विभिन्न प्लांटों की दर्जनों चिमनियों

के शहर के नागरिकों पर विषाक्त असर से होता है। "ढेर सारे अदृश्य बारीक धूल–कण हवा के बहाव के साथ कभी यहाँ, कभी वहाँ धरती की शरण में चले आते हैं।" जिसका कुप्रभाव नागरिकों की सेहत पर पड़ता है, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को भी धत्ता बता दिया जाता है। मानवाधिकार कार्यकर्ता जनहित याचिका ही दर्ज कर सकते हैं। जिन्हें डर है कि भोपाल गैस कांड जैसा कोई कांड हो जाए। परंतु यूनियन लीडर नारायण का रवैया अक्खड़ और हिटलरी है। जिससे वर्करों की बड़ी संख्या निराश और उदास है। उसका जनाधार नहीं है परंतु प्रबंधन की उस पर पूरी कृपा है। यह मजदूरों पर चिल्लाता है परंतु प्रबंधन का वफादार है उसे जन्मजात शातिर अपराधी और चंट स्वभाव का बताया गया है। कंपनी को उसका होना लाभप्रद लग रहा है क्योंकि इससे मजदूरों की तरफ से उठने वाली उनके हिसाब से अनर्गल माँगों को दबाया जा सकता है। मजदूर वर्ग की उचित माँग भी उन्हें अनुचित ही लगती है। दिल में बसी मुनाफाखोरी लगातार शोषण की राह पर आगे धकेलती है। भोपाल गैस कांड हमारे सामने है जहाँ मनुष्य के जीवन की परवाह भी नहीं की गई। अवधेश नारायण से मैनेजमेंट भी ऊब गई थी और विकल्प चाहती थी। ब्रजेश्वर तिवारी को जब प्रबंधन से आशीर्वाद और आश्वासन मिल गया वह अपने कुछ साथियों को लेकर मैदान में उतरा। जोखिम और खतरा तो था ही यूनियन नेता बनने पर क्या–क्या हासिल होना है, हासिल करना है पर नज़र टिकी थी। हस्ताक्षर अभियान चलाया गेट मीटिंग कर ललकारा, पर मजदूरों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई तो समझ में आ गया कि प्रबंधन से मदद मिल रही है और ए.एन.सिंह गया समझो ब्रजेश्वर का मजदूरों से हँसकर मिलना भी मदद कर गया। मैनेजमेंट उसकी 'जी हजूरी' पर प्रसन्न थी, उस पर रहमतों की बारिश हो गई छोटा क्वार्टर बड़े क्वार्टर में बदल गया। कुछ आश्वासन भी झोली में आ गए। बॉडीगार्ड मिल गए।

कंपनी वर्करों को वॉलेंटरी रिटायरमेंट के लिए कह रही है परंतु उनकी विवशताएँ हैं। बच्चे अभी बेरोजगार हैं। तब धमकाया गया कि सरप्लस पूल में डाल दिया जाएगा। इंसेटिव, बोनस, एन्युअल इंक्रीमेंट सब बंद। वर्कर यूनियन लीडर ब्रजेश्वर के पास पहुँचे अपनी मजबूरी बताने। आगे से ब्रजेश्वर ने कहा कि यूनियन का भी एक दायरा है, एक लिमिट तक ही दबाव बनाया जा सकता है। वर्कर संकेत समझ गए कि कुछ होने– जाने का नहीं है।

अजीत, ब्रजेश्वर का साथी, चाहता है कि यूनियन अगर छोटे–मोटे मसले पर असमर्थता जाहिर करती रहेगी तो हो चुका, यूनियन मैनेजमेंट का लंगोट बनकर न रह जाए।

अजीत को बताया जाता है कि संगठन लीडर की कुर्सी ही ऐसी है, उस पर जो भी बैठेगा, अवधेश नारायण ही बन जाएगा, नहीं भी बनना चाहेगा तो उसे प्रबधंन बना देगा। इन पंक्तियों के व्यापक अर्थ हैं जो किसी भी लोकतांत्रिक देश की किसी भी राजनीतिक कुर्सी की तरफ संकेत करते हैं कि व्यवस्था कितनो को अपने रंग में रंग देती है।

उपन्यास में शिखर सेन भी यूनियन के नाम पर मौज की जिंदगी जीने वालों की बाबत कहता है कि साल में दो–तीन बार दिल्ली, हैदराबाद, बंगलौर, अहमदाबाद आदि शहरों का हवाई ट्रिप मिल जाता है ऊपर वाले ने चाहा तो एकाध ट्रिप यूरोप जाने का भी मिल जाएगा।

उपन्यास में भूमंडलीकरण के दुष्परिणामों पर पर्याप्त संकेत है, क्योंकि भूमंडलीकरण के बाद हजारों कारखाने बंद हुए। कई सरकारी उपक्रमों पर ताले लटक गए। ब्रजेश्वर की पतनशीलता बरकरार रही, रिश्वतखोरो में उसका नाम शुमार हो गया।

जयनंदन ने संगठन की बारीकियों का अच्छा चित्रण किया है। यह उपन्यास उनके चार दशकों के अनुभव का भोगा हुआ यथार्थ है। उन्होंने कर्मचारियों की दुविधा, झेले हुए अन्याय को सृजन कर्म में ढाल दिया है।

लक्ष्मी शर्मा उपन्यास के क्षेत्र में एक सशक्त भाषा और चित्रण क्षमता के साथ सामने आती हैं।

कपड़ों के रंगो की तरह शब्द चुनती हैं और सही जगह टंकित करती हैं। उनका 2020 में ही प्रकाशित उपन्यास 'स्वयं का अंतिम उतार' अपने भाषिक सौंदर्य के लिए भी याद किया जाएगा। भाषा रचना का आधार होती है और यह ऐसे ही नहीं मिल जाती उसे कमाना पड़ता है, संगीत साधना, चित्रकला के माहिर जब नाम कमा लेते है तब हम उनके राग चित्रों की प्रशंसा तो करते है परंतु उसके पीछे उनकी साधना की तरफ उतना ध्यान नहीं देते लक्ष्मी शर्मा का उपन्यास पाठक से अघोषित तरीके से माँग रखता है कि आप कथा के उपन्यास में ढलने में भाषा के योगदान पर भी विचार करें।

स्वर्ग–नरक को लेकर पूर्वजों ने धारणा इसलिए भी कायम की होगी ताकि मनुष्य जाति जीवन व्यवहार में बेहतर से बेहतर करे और एक सुंदर, सद्भावना भरा समाज निर्मित हो सके। नरक से बचें, स्वर्ग के लिए प्रयत्नरत रहें। लक्ष्मी शर्मा के इस उपन्यास की कहानी सरल सी है। छिगन को हम एक निम्नवर्गीय परिवार से आता पाते हैं, बद्रीनाथ की यात्रा उसकी साध है। परंतु पैसा ऐसे लोगों की सबसे बड़ी विवशता है। वह एक चौकीदार की नौकरी ही तो कर रहा है। उसे यात्रा का अवसर मिल जाता है जब उस परिवार का धार्मिक पर्यटन का कार्यक्रम बनता है। जहाँ वह नौकरी कर रहा है। पालतू कुत्ता भी साथ जाने वाला है तो उसका ध्यान रखने वाला कोई तो चाहिए।

कथाकार का यात्रा का जैसा चित्रण है, पाठक भी उस यात्रा का सहभागी हो जाता है। अश्क जी का उपन्यास 'पत्थर अल पत्थर' जब छपा था तब सवाल उठा था कि यह उपन्यास है या यात्रा संस्मरण। विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि पाठक ही तय करेंगे कि उन्हें उपन्यास पढ़ने का लुत्फ मिल रहा है या यात्रा संस्मरण पढ़ने का कृति तो एक ही है 'स्वर्ग का अंतिम उतार' उपन्यास भी यात्रा संस्मरण और उपन्यास का ढांचा एक साथ प्रस्तुत कर रहा है। एक उपन्यास जिसे यात्रा संस्मरण की तरह भी पढ़ा जा सकता है। जिस यात्रा में साहब, मेमसाहब, बेटी और बेटा का साथ बस ड्राइवर और उसका सहायक भी शामिल है। छिगन चौकीदार और कुत्ता गूगल तो है ही। लक्ष्मी शर्मा कथा में वर्ग विभाजन, रुचियों, सीमाओं और सोच को इस तरह व्यक्त करती है कि आस्था और विश्वास अपनी पूरी रंगत में मौजूद रहते हैं। छिगन का गाँव, हरिद्वार, ऋषिकेश के पहाड़ और नदियाँ भी जीवंत हो उठती हैं। भाषा सौष्ठव के लिए निम्न पंक्तियाँ उद्धृत हैं– रात की बारिश और बरफ रात को ही बिदा ले गई है। जानकी चट्टी के पर्वतों पर बिछी बर्फ से गलबहियाँ किए उतरती धूप कुछ ज्यादा ही साफ और उजली है। उसने ज़रा सा पीला उबटन पास बहती जमना की श्यामल वर्णा देह पर भी मल दिया है जिससे वो भी निखरी–निथरी हो गई है। (पृ. सं–94)

रचनाकार ने उपन्यास में भारतीय सामाजिक संरचना में स्त्री व्यथा को जाहिर करने की वाजिब गुजाइश ढूँढ ली है। जो जरूरी भी है। एक तरफ नजर आती है राखी मेमसाब, जो धन–वैभव से संपन्न होने पर भी पुरुष सत्तात्मक दबाव झेल रही है। दूसरी तरफ छिगन की पत्नी राजूड़ी है जो आर्थिक अभाव रहते हुए भी उस तरह से असुरक्षित नहीं है।

वर्ग चेतना की गहरी समझ के कारण लक्ष्मी शर्मा इनसान के भीतर तक की सूक्ष्म पड़ताल कर जाती है। यात्रा के दौरान जब सभी जानकी पहुँचने ही वाले हैं तब बस में तकनीकी खराबी नोटिस होती है। विवशता जन्य स्थिति में एक आम से गेस्ट हाउस में ठहरना होता है जिसे सामान्य गृहस्थ चला रहे हैं उनकी सुशील बेटी कंचन से छिगन की मेमसाहब की मुलाकात होती है। वह कंचन के साथ दयालुता से पेश आती है। यह दयालुता का भाव बेवजह नहीं है। उस लड़की में उन्हें कम खर्च में एक सेविका नज़र आने लगी थी।

यात्रा के साथ छिगन की स्मृति यात्रा भी है। कथा रचना में अपने मुख्य पात्रों को हाशिये पर नहीं छोड़ देती।

तीर्थ यात्रा के दिव्य अलौकिक संसार में न ले जाकर वह कथा के आयाम अपनी धरती पर

ही रखती है। जरूरत पड़ने पर भाषा का तेवर बदलना, जीवन शैली को अभिव्यक्त करना, मार्मिक दृश्यों की पहचान और रोचकता उपन्यास को सशक्त बनाने वाले अन्य तत्व हैं। जिसमें हमारा समाज नजर आता है।

राकेश कुमार सिंह का उपन्यास 'मिशन होलोकास्ट'– एक खोए देश की दास्तान एक अलग जमीन पर रचा गया उपन्यास है। हिंदी में विज्ञान आधारित उपन्यासों की संख्या अधिक नहीं है। अंतरिक्ष अभियान पर और भी कम। आज के क्षेत्र में ऊर्जा के संसाधनों पर नियंत्रण आवश्यक समझा जा रहा है। 'मिशन होलोकास्ट' उपन्यास ऊर्ज़ा के प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण पाने के लक्ष्यार्थ एक जरूरी सत्यता की खोज की गाथा बनती है जो लुप्त हो चुकी है। उपन्यास का आरंभ ही इन्हीं पंक्तियों से होता है– "आक्टोविया सफल हो गया था।' आक्टोविया की दूरगामी योजना थी। पृथ्वी के समस्त अविकसित भूखंडों को एक–एक कर हड़प लेने की योजना। 'स्वतंत्र देश या प्रभुसत्ता–संपन्न राष्ट्र होने के भ्रम में रहनेवाले तमाम देशों को आक्टोविया का उपनिवेश बना डालने की योजना।"

होलोकास्ट नाम से हमें 1941 से 1945 तक का दूसरा विश्वयुद्ध याद आता है। नाजी जर्मनी द्वारा साठ लाख यहूदी लोगों का नरसंहार किया था। यहूदी लोगों को जड़ से खत्म करने की योजना थी। सत्ता विस्तार एवं सत्ता लिप्सा का इससे क्रूर अध्य्याय कोई नहीं होगा। सत्तालोलुपता कुछ नहीं देखती, कुछ नहीं समझना चाहती। उसे चाहिए तो बस अधिकार और विस्तार। उपन्यास में अरबेरिया की आजादी का श्रेय वहाँ के सत्ता लोलुप घाघ राजनीतिज्ञ को मिला। तत्कालीन नामोश की आर्थिक स्थिति जर्जर हो चुकी थी। युद्ध व्यय कमजोर करते जा रहे थे परिणामस्वरूप नामोश को अपना उपनिवेश आरबेरिया खोना पड़ा। हालात ऐसे बदले कि आरबेरिया की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा पुनः उपनिवेशी शासन का इच्छुक हो गया।

कदाचित अमानवीय समय में मनुष्य को मनुष्यत्व की पुकार जरूरी लगती है। परंतु यहाँ गुलाम बनाने के लुके–छिपे तरीकों पर उपन्यासकार की निगाह है। उपन्यास में हंटर कह रहा है कि आरबेरिया के आर्थिक और शिक्षण संस्थाओं में कुछ आरबेरियन थे। जिनका मानस उनके समर्थन हेतु रूढ़बद्ध हो चुका था। उनकी निष्ठा आक्टोविया के प्रति रही उनमें उनकी कुल्हाड़ी का डंडा बने रहने के अतिरिक्त कोई योग्यता नहीं थी, जो उन्हें मानव उपाधियों और अकादमिक डिग्रियों से सजाकर आरबेरिया भेज दिया गया।

वर्चस्ववादी शक्तियाँ ममता जैसे मूल्यों का भी मशीनीकरण करना चाहती है। डोरा को हंटर शतरंज का एक मोहरा मात्र बनाना, समझना चाहता है। बिसात उनकी है।

वह (डोरा) अपने बच्चे यूलान की ठीक से परवरिश कर बड़ा करना चाहती है। ग्रीन उसे मात्र एजेंट समझकर 'जस्ट किल यूलान' का आदेश देता है। परंतु डोरा मातृत्व को अमूल्य समझती है जो किसी भी प्रलोभन से परे है। कहती है– "मातृत्व देशकाल में परे अखंड विश्व की नागरिकता पाना है।" मातृत्व की वैश्विक सदस्य बनने के बाद वह अपने नवजात शिशु की सुरक्षा और पोषण के प्रति प्रतिबद्ध है।

डोरा के नैसर्गिक ममत्व के जज्बे के प्रत्युत्तर में कहा गया कि यह बीमार है और मानसिक रूप से क्लांत है। डोरा का जवाब सही है कि हंटर खुद पहले भी बीमार था और अंत तक लाइलाज हो चुका है। शक्ति का विस्तार और साम्राज्य का मोह भी एक बड़ी बीमारी है। प्रसाद जी की एक कृति में कथन है– राजचक्र सबको पीसता है।.... मेरा नीड़ कहाँ है? ध्रुवदेवी ने कहा– यह तो स्वर्ण पिंजर है। डोरा उस स्वर्ण पिंजर से अब मुक्त होना चाहती है।

उपन्यास में कालयात्री ने जोकि एक यंत्र मानव है, अपने यान को एक जनशून्य रेतीले प्रदेश में छिपा दिया। जहाँ वह आया, वहाँ भयंकर मार–काट मची थी। हर दिशा से चीखें, कराह, पुकार और अट्टहास उठ रहे थे। कालयात्री को भारतवर्ष की तलाश थी। उसे कहा गया– आग, राख और लहू.... इस खौफनाक तूफान में भारतवर्ष की तलाश, तुम–तुम पागल हो?

कालयात्री को भारतीय मनुष्यों के श्रेष्ठ नमूने ढूँढने थे। ऐसे भारतीय दोपाए, जो ज्ञान–विज्ञान, शिक्षा, कला–संस्कृति, व्यापार, वाणिज्य किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट हों, बुद्धिजीवी हो, सर्जकों ने कालयात्री को भारत संबंधी गहन शोध का सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम उपयोग किया था। परंतु यथार्थ उसकी सूचनाओं के अनुसार नहीं था। उसकी जिज्ञासा शांत नहीं होती। भूखंड पर नर्क जैसी हालत पाकर प्रश्न उठता है। कहाँ थी वह स्वर्गादपि गरियसी? जाने माने कथाकार अशोक अग्रवाल का उपन्यास 'वायदा माफ़ गवाह' भी 2020 में छपकर आया। उपन्यास पहली बार 1975 में छपा था। यह उसका पाँचवा संस्करण है। लगभग पचास साल बाद इसका पुनः पाठ संस्करण छपा है। अशोक अग्रवाल के सामने संकोच भी रहा कि यदि उन्होंने यही उपन्यास आज लिखा होता तो क्या यह इसी रूप में होता? "भाषा का उन्मुक्त आवेग– शब्दों के पास ठहरने की जैसे फुर्सत ही न हो शिल्प की अनगढ़ता और तराश और भी बहुत कुछ।"

'वायदा माफ़ गवाह' उपन्यास में वाचक को जिस संस्थान में नौकरी मिली, वह 'मानव संदेश' नाम की पत्रिका प्रकाशन कर रहा है। वाचक को पहले ही बता दिया गया कि संस्था एक आदर्श संस्था है। संस्था की नींव भारतीय संस्कृति और उच्च नैतिक मापदंडों पर टिकी है। शर्मा जी का हर वाक्य हमारे लिए वेदवाक्य होता है। बातें अच्छी थी। परंतु प्रधान का अधिनायकवादी रवैया जल्दी ही वाचक पर जाहिर होने लगा था। किसी भी उपसंपादक को संस्थान में जरा भी स्वतंत्रता प्राप्त न थी। सभी कुछ प्रधान की इच्छा–अनिच्छा पर निर्भर करता था। यहाँ तक कि नौकरी भी। कब किसी को अपना पद छोडकर बाहर का रास्ता देखना पड़े, कोई नहीं कह सकता प्रधान की इच्छा के विरुद्ध हिलना–डुलना तक मना था। वाचक जब महानगरीय व्यवस्था के कारण आधा घंटा लेट हो गया था तब उसे प्रधान के सख्त निर्देश की बात याद आई कि हर व्यक्ति को दस बजने में पाँच मिनट पहले कुर्सी पर जमा होना चाहिए। अमर को यातायात की परेशानी बताने पर लंबी नसीहत सुननी पड़ी। विजया मैडम को विवशता में बच्ची को अपने साथ दफ्तर लाना पड़ा। प्रधान ने पहले ही उसे परेशान कर रखा था। हर कॉलम को दस–दस बार लिखकर देने पर भी संतुष्ट नहीं हो रहा था। उसकी रातों की नींद हराम हो चुकी थी। बच्ची को अपने साथ दफ्तर लाने पर आपत्ति सुननी पड़ी और फिर नौकरी से हटाए जाने का नोटिस। विजय का पत्ता साफ हो जाने पर दफ़्तर में सुनने को मिला कि विवाहित महिलाएँ प्रधान को कम ही संतुष्ट कर पाती हैं।

संस्थान में आदर्श सिर्फ दिखावा भर है। 'वायदा माफ़ गवाह' में मूल्य खंडित हो रहे हैं। पतनशीलता बढ़ती चली जा रही है। पतनशीलता एक क्षेत्र में नहीं आती परंतु हमारा मन हैं जो चाहता कि शिक्षा का क्षेत्र, चिकित्सा का क्षेत्र और पत्रकारिता पतनशीलता से बचा रहे जबकि ऐसा हुआ नहीं। उपन्यासकार ने इस तरफ वाजिब संकेत भी किया है प्रिंट मीडिया में जो अंधेरा उस समय दिखाई देता था, वह आज और भी सधन हो चला है।... "पत्रकारिता सिर्फ़ सत्ताधारियों की चापलूसी और जनविरोधी नीतियों का प्रचारतंत्र मात्र होकर रह गई है।" मिस जायसवाल वर्मा को कहा करती हैं। "इस हरामी को कुत्ता कहकर भी कुत्तों का अपमान करना है। वर्मा प्रधान के आगे–पीछे घूमने वाला शख्स है।" प्रधान अपने बारे में अमर से कहता है– मैं इतना क्रूर नहीं हूँ जितना दिखता हूँ। वह कर्मचारियों को दबा कर रखता है परंतु लोगों से ब्लैक मेल भी करता है। ऐसे व्यक्ति के साथ निर्वाह करने में इस तरह की परेशानी तो होती है, परंतु नौकरी के कारण भूलना पड़ता है। और फिर एक दिन अमर को भी नौकरी से हाथ धोने पड़ते हैं। उपन्यास प्रिंट मीडिया के शोषण करने वालों के विरुद्ध है। भाषा शानदार है।

भूमिका द्विवेदी का उपन्यास 'स्मैक' एक चौबीस साल की लड़की रूबी के जीवन के इर्द–गिर्द रचा–बसा है। उपन्यासकार को एक चरित्र के रूप में वह रोती हुई एयरपोर्ट पर मिली थी। वह इंडोनेशिया छोड़ कर भारत आई थी और फिर

दिल्ली–मुंबई की होकर रह गई। निःसंदेह वह सुंदर थी लेकिन अधूरे प्रेम की पीड़ा से आहत थी। स्मैक की दुनिया की काली कोठरी ने उसे एक दुर्धटनावश आहत किया था। काजल की कोठरी में जाने की तरह एक लीक काजल की लग गई थी, जिसने झुंझला दिया। एक बारगी अस्त–व्यस्त कर दिया।

रूबी सुलेमान के सुरीले गीतों पर फिदा थी। फिर सुलेमान की तरफ खिंचती चली गई। सुलेमान भी प्रेम में आगे बढ़ रहा था परंतु रूबी के एकाएक उसके पास मुंबई आ जाने पर अपनी हकीकत देखकर चकरा गया। अनुभवी तो था ही पहले सितारा नामक लड़की के साथ रहा था परंतु अलग होना पड़ा फिर जोया से भी रिश्ता रहा। मुंबई में संघर्ष ही कर रहा था। रूबी पर उसने अपनी विवशता जाहिर भी कर दी कि वह बेकार है, इतना भी नहीं कमा पा रहा कि खुद के लिए एक छत और दो रोटी कमा पाए। परंतु रूबी मुहब्बत में डूबी रही। उपन्यास सुलेमान के बहाने फिल्मी दुनिया की चमक–दमक के पीछे की असलियत भी जाहिर कर रहा है। स्मैक पर निम्न पंक्तियाँ खास हैं– "पहले के ज़माने में कच्चा सोना और पकाया हुआ सोना", दोनों सोने के टुकड़े ईंटो या ढेली की शक्ल में विदेशी बने हुए सामान घड़ियाँ, इलैक्ट्रिकल चीजें, बेहतरीन किस्म के रेशम, स्मैक कुछ कीमती चीजें चोरी–छुपे हिंदुस्तान लाई जाती थी और अमीरों के बीच मुँहमाँगी कीमत पर बेची जाती थी। अब जमाना बदला हुआ था। फिर भी स्मैक का बाज़ार आज भी गर्म था। (पृ.सं–91)

रेनू बहल का उपन्यास 'मेरे होने में क्या बुराई है, भी 2020 में ही छप कर आया। उपन्यास का नाम ही जिज्ञासा पैदा करने वाला है। यह अस्तित्व से ही इनकार करने वालों के लिए चुनौती देने वाला है। हिंदी कथा में पिछले दिनों थर्डजेंडर को आधार बना कर कुछ उल्लेखनीय काम हुआ है। चित्रा मुद्गल का उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स 203 नाला सोपारा' भी इसी जमीन पर लिखा गया और लिंगदोषी समाज की समस्या मानवीय दृष्टिकोण से उठाने के कारण चर्चित रहा। मेरे होने में क्या बुराई है। उपन्यास भी थर्डजेंडर के प्रति समाज के दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत बताने वाला उपन्यास है। 'तमन्ना किए बग़ैर' शीर्षक भूमिका में रेनू बहल ने दुनिया बनाने वाले की खूबसूरत कायनात की चर्चा करते हुए सवाल किया है कि उसी के बनाए इनसान को हम कैसे नकार सकते हैं। उससे नफ़रत करने का हक हमें किसने दिया? यह कैसा समाज है जो एक अपाहिज के प्रति हमदर्दी तो कर सकता है परंतु एक हिजड़े के प्रति हमदर्दी का भाव नहीं रह जाता।

घर की बड़ी बेटी के जन्म के बाद मन्नतों मुरादों से पाए बेटे का नाम शेखर रखा गया। सात साल की उम्र में जिस लड़के के साथ दूर दराज के बड़ी उम्र के मामू ने निम्नतर हरकत की हो, उस मासूम बच्चे को पहले तो पता ही नहीं चला कि क्या हो गया है उसके साथ फिर यह धमकी कि यदि उसने किसी को बताया तो उसकी अम्मा को मार दिया जाएगा। उसके लिए कितना आतंककारी और सहमा सा बनने पर विवश कर सकता है, इसका अंदाजा लगाना भी कठिन होगा। शेखर के लिए ये जबरदस्त बेचैनी के दिन थे। जीवन में एक और बदलाव आया वह था उसके नाचने का हुनर। डांस टीचर ने उसे पैदाइशी आर्टिस्ट माना। यह उसकी रूह की खुराक थी जो पिता को पसंद नहीं थी। आठवीं तक आते–आते चाल–ढाल बात करने के अंदाज में अंतर आ गया। डांस बार में काम करते हुए जिन लड़कियों से मुलाकात हुई, पता चला कि उनका जीना मरने से कठिन है। सताई हुई लड़की की मजबूरी देह व्यापार तक ले जाती है। वहीं मुलाकात हुई सितारा से जो उसे उस बस्ती तक ले गई, जहाँ मर्द के जिस्म में औरत मिली जिसे हिजड़ा कहा जाता है। शेखर अब तक मर्द–औरत का ढोंग करते–करते तंग आ चुका था। "मेरे अंदर की औरत चीख–चीख कर आजाद होना चाहती थी।" कॉलेज जाने की जगह सीधा सितारा की तरफ गया। जिसकी एक अपनी कहानी थी। जब देह में बदलाव आने लगे थे, पिता ने अपनी जिंदगी से दूर चले जाने को कहा।

शेखर ने सितारा से कहा कि उसे अब आजादी चाहिए, पूर्ण औरत होने की।

उसे शेखर की जगह 'शिखर' का नाम मिला।

उपन्यास में हिजड़ों का दर्द बयान है। बताया गया कि बहुत कम हिजड़े हैं जो बुढ़ापे की दहलीज तक पहुँचते हैं। अक्सर हिजड़े गुरवत, डिप्रेशन, लाइलाज मर्ज, नशे के आदि या फिर खुदकुशी का शिकार होकर जवानी में ही दम तोड़ देते हैं। सितारा भी चुपचाप दुनिया से चली गई, जिसकी आत्महत्या विचलित करती है। रेनू बहल का यह उपन्यास थर्डजेंडर के लिए समाज को दिल के दरवाजे खोलने को प्रेरित करता है।

अभिलास अवस्थी का उपन्यास 'पीपल पर घोंसले नहीं होते' घोषित रूप से कोरोना पर दुनिया का पहला उपन्यास है। इस महामारी के कारण लॉकडाउन, कर्फ्यू हम सब ने झेला है। महामारी ने पूरा जीवनचक्र अस्त–व्यस्त–त्रस्त कर डाला, भौतिकता के स्तर पर मौतें, रोजी–रोटी का संकट, बड़े पैमाने पर बेरोजगारी, अर्थ व्यवस्था की भारी उथल–पुथल के कारण जो क्षति हुई है उनसे गहरे जख्म बने हैं।

उपन्यास का आरंभ तीन मित्रों के सपरिवार गहरी मित्रता, स्नेह संबंधों की परिपक्वता से होता है। ऐसे प्रगाढ़ संबंध अपनी संपूर्ण निर्मलता, बेबाकी, सत्यता में इक्कीसवीं सदी के इस दूसरे दशक में कठिनता से ही मिलते हैं। इनमें दामोदर कोठारी हैं जो नई दिल्ली के पास के इलाके में एक शानदार बंगले के मालिक हैं, विनम्र ओर संस्कारवान व्यक्ति तो हैं ही कोठारी स्टेशनर एंड पब्लिशर्स के मालिक हैं जिनकी पूरी दिल्ली में सत्रह फ्रेंचाइजी हैं। रघुपति सरन सेना में हैं, जिनकी एकमात्र बेटी श्रद्धा सरन है। रघुपति के बाहर रहने पर उसका दायित्व विनय पंडित के परिवार पर ही रहता है विजय पंडित रिपोर्टर थे, फिर धर्मयुग जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका के उप संपादक हो गए। तीनों परिवार तीन दशकों से दूध में मिश्री की तरह घुले–मिले रहे।

विजय के बेटे मास मीडिया में पढ़ाई की ताकि टी.वी एंकर बन सके। दामोदर का बेटा मनु कोठारी घर की सुविधानुसार अमरीका जाकर चार्टर्ड एकाउंटेंसी और बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई के लिए प्रस्तुत है।

श्रद्धा सरन मनु के लिए उसके विदा होने से पहले 'काला गुलाब' और धर्मवीर भारती का प्रेमपरक उपन्यास 'गुनाहों का देवता' लेकर प्रस्तुत हैं। मनु किताब भूल जाता है जिसके पहले पन्ने पर लिखा है।

अपने मनु को।

इसलिए कि तुम अमेरिका से जल्दी भारत आओ और मेरे जीवन में भी।

सदैव तुम्हारी

श्रद्धा सरन

वाचक विजय पंडित धर्मवीर भारती से प्रभावित हैं और 'गुनाहों का देवता' उपन्यास को प्रेम की पवित्रता पर सबसे अच्छा उपन्यास मानते हैं।

संपादक पत्रकार विजय से प्रेम की यह सुगंध छुपी न रह सकी।

यह प्रेम का मसला अजीब है। जो थोड़ा परे होते हैं। उन्हें प्रेम करते जीव अच्छे और सुंदर लगते हैं। वे सफलता की कामना भी करते हैं परंतु जो इस स्नेह के अधिक निकट होते हैं उदार होते हुए भी अनुदार हो जाते हैं।

कथाकार रमेश उपाध्याय ने कहा है कि प्रेम कहानी केवल प्रेम कहानी नहीं होती। वह संपूर्ण जीवन और जगत की कहानी होती है। वह जीवन और जगत को प्रेममय बनाकर बेहतर और सुंदर बनाने के उदेश्य से लिखी जाने वाली कहानी होती है।

विजय ने दामोदर से कहा था कि बच्चों के अंदर संवेदनशीलता के विकास की यही उम्र है। उन्हें समाज और रिश्तों के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए साहित्य संगीत और सभी ललित कलाओं की ओर मोड़ने की जरूरत है।

दामोदर कोठारी को प्रेम संबंधों की खबर मिल चुकी थी उनकी पत्नी ने श्रद्धा को घर बुला कर कह दिया कि वे उसके पापा के तीन दशकों से मित्र और पुराने पड़ोसी हैं। वे नहीं चाहेगें कि उनके संबंध खराब हों। उससे मनु के सारे गिफ्ट और खत उन्हें देने को भी कह दिया।

प्रेम की डगर पर कदम बढ़ाना केवल श्रद्धा की तरफ से नहीं था मनु भी आगे बढ़ चुका था जिसने उसे पत्र लिखा था कि वह उसकी पूजा को स्वीकार कर ले उसका जीवन सँवर जाएगा।

अब दामोदर चाहते थे कि वे दोनों पाँच–छह साल एक–दूसरे से दूर रहें ताकि सब कुछ भूल जाएँ।

विजय पंडित ने श्रद्धा के चेहरे पर प्रेम की सच्चाई का लावण्य देख लिया था और उसके पावन–निश्छल प्रेम का समर्थक बनता चला गया।

अभिलास साहित्यिक सांस्कृतिक वातावरण बनाए रखते हैं। धर्मवीर भारती से वह प्रभावित हैं ही श्रद्धा और मनु जैसे पात्रों से प्रसाद जी की कामायनी की याद दिलाते हैं। वह अध्ययन कक्ष जहाँ श्रद्धा और मनु अध्ययन करते हैं का नाम 'मेघदूतम कक्ष' है, जहाँ दीवारों पर मंटो, भारती, निर्मल वर्मा के फोटो लगे हैं। श्रद्धा का सवाल समाज के लिए चुनौतीपूर्ण है– "प्रेम करना कब तक अपराध माना जाता रहेगा।" समाज की विभिन्नताएँ, वर्गीकरण, जात–पात इनसे कितना ऊपर है प्रेम। ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ उपहार है प्रेम।

उपन्यास में नए तकनीक का उपयोग प्रेम की मजबूती के लिए हुआ। 'मेघदूतम' में श्रद्धा लैपटॉप पकड़े स्काइप पर मनु से भावुक होकर बात कर रही है। फोन, व्हाट्सऐप मैसेंजर द्वारा बातचीत चलती रही।

फिर कोरोना महामारी विस्तार पकड़ने लगी। मनु छह साल बाद भारत लौट रहा था परंतु कोरोना वायरस के कारण विदेश से आने वाले सभी यात्रियों को टेस्टिंग के लिए रोक लिया गया। घर के लोगों को परेशान होना ही था। चीफ मेडिकल आफिसर ने सूचना दी कि मनु कोठारी कोरोना पोजीटिव पाया गया। दामोदर कोठारी को लगा कि जीवन की रात ही हो गई। श्रद्धा जो तब तक मेडिकल की पढ़ाई कर चुकी थी उसे कोरोना मरीजों के एक वार्ड का इंचार्ज बना दिया था? उसने बताया कि भारत में बीमारी फैल चुकी है। मम्मी को मास्क लगा कर रहने के लिए कहा।

सभी कुछ बदल चुका था। संपादक विजय पंडित ने दफ्तर में स्टाफ को मास्क पहनने और रोज सैनिटाइज करने की हिदायत जारी की।

औपन्यासिक युक्ति से मनु उसी अस्पताल में पहुँच गया। जहाँ श्रद्धा बीमार मरीजों की देखभाल कर रही थी। कोठारी दंपति ने छह साल से जिन दो प्रेमियों को अलग करने की साजिश रची थी वे पुनः एक हो गए। दुनिया, धन, रुतबा, अहंकार कुछ भी बाधा नहीं था।

अभिलास अवस्थी, जो एक साहित्यिक, सांस्कृतिक चेतना संपन्न कथाकार हैं, उपन्यास में प्रेम और महामारी के घातक रूप का अच्छे ढंग से चित्रण कर पाए हैं।

अभिलास अवस्थी की तरह राजकमल भी पत्रकारिता के अनुभव से संपन्न है। उनका उपन्यास 'पोखर पार' भारतीय समाज की एक बड़ी बिडंबना जातिगत भेदभाव पर आधारित है, कितने ही लोगों को आज भी अपनी अस्मिता, जातिगत भेदभाव और अपनी पहचान के लिए संघर्ष करना पड़ता है। आज भी एक दलित सांस्कृतिक संकट को महसूस करता है जब उससे उसके काम की जगह जाति का प्रश्न किया जाता है।

उपन्यास में शोभन शास्त्री अब चालीस की उम्र पार कर चुका है परंतु कभी हौसला नहीं कर पाया कि अपने नाम के साथ सरनेम जोड़ कर पहचान करवाए। यह हौसला उसके बेटे प्रथम में था जिसने दसवीं की परीक्षा का फार्म भरते समय अपने नाम के साथ सरनेम जोड़ कर परिवार की दुविधा में फिर हलचल पैदा कर दी। पिता सरनेम लिखना ग़लत समझते हैं। उन्हें यह समाज में वैमनस्य की जड़ लगता है। इस परिवार ने रिजर्वेशन का लाभ नहीं लिया है। यह चाहती है कि बच्चे जब अपनी लियाकत से आगे बढ़ रहे हैं तो वर्गवाद का शिकार क्यों बने? उपन्यास में पिता शोभन और माँ रश्मि दोनों अपनी नौकरी के तंत्र और माहौल से परेशान हैं। शोभन को मजदूरी कम मिल रही है। रश्मि को तिरस्कार भी झेलना पड़ता

है। हालात ये हैं कि बाजार धीरे–धीरे गलियों में घुस गया है।

उपन्यास सकारात्मक है, जातिगत पहचान की धारा के विरुद्ध है। मानवीय संस्कारों के साथ जीने की कोशिश है।

प्रेम की भाषा अबूझ होती है। किंतु भाव एकदम स्पष्ट। प्रेम की परिस्थिति अत्यंत मार्मिक होती है और स्थिति स्वाभाविक। इसलिए उसकी अवस्था का वर्णन शब्दों में गूढ़ प्रतीत होता है। परंतु उसका दर्शन एकदम सहज, एकदम सरल, प्रेमपरक मनोभाव राजकुमारी रूपांबिका के हैं, जो उपन्यास राजकुमारी रूपांबिका से उद्धृत हैं। उपन्यास अनिल कुमार द्वारा रचित है और 2020 में ही प्रकाशित हुआ है। उपन्यास नारीवादी कहा जा सकता है परंतु इसके व्यापक मानवीय सरोकार है। भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि भी उपन्यास में मौजूद है। प्रेम को मनुष्य की आत्मा का प्रकाश दिखाया गया है। अनिल ओड़िशा की सांस्कृतिक मनोभूमि से भी गहरे जुड़े हैं। क्योंकि हमारी भारत भूमि सुंदर और वैविध्यपूर्ण है सन् 2020 में रचे गए (प्रकाशित) उपन्यासों में भी मानवीय जीवन की सौंदर्य चेतना और विविधता का दर्शन होता है। रचनाकारों ने यथार्थ की जमीन को नहीं छोड़ा। संसार की निरंतरता में विश्वास जाहिर किया है। हालाँकि दूसरे अवरोधों की अवस्था को खारिज नहीं किया जा सकता है फिर भी जीवन ज्योति जलती रही है। कोरोना के संकट के बावजूद।

– 444–ए, राजा गार्डन, पो. ओ बस्ती बाबा खेल, जालंधर–144020

❑❑❑

18

हिंदी कहानी साहित्य

प्रो. अवध किशोर प्रसाद

भारतीय साहित्य– वेदों, उपनिषदों, संस्कृत एवं बौध्द जातकों में कहानियों का जो सूत्र संचालित हुआ वह मध्य युग में वासनात्मक प्रेम से संपृक्त होता हुआ आधुनिक युग में विषय विविधता, गंभीरता, कलात्मकता एवं शिल्प विधान की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध एवं विशिष्ट बन गया है। इसकी समृद्धि एवं इसके वैशिष्ट्य में सहस्राधिक प्रतिभाओं एवं उनकी महत्वपूर्ण कृतियों ने योगदान दिया है। कहानी का संबंध जीवन से होता है और चूँकि कहानीकार समाज की उपज होता है, इसलिए कहानियों में सामाजिक परिवेश में मानव जीवन के बदलते रूपों, मूल्यों एवं आदर्शों की अभिव्यक्ति होती है। कहानीकार जो महसूसता और भोगता है उसे ही अपनी कहानियों में अभिव्यक्त करता चलता है। कहानियों के सर्वेक्षण से उनमें होनेवाले परिवर्तन, परिवर्धन का सहज ही अवलोकन किया जा सकता है। और इसके वर्षवार अनुशीलन से अनेक तथ्यों का उद्घाटन भी होता है। वर्ष 2020 की कहानियों का अध्ययन, परिशीलन इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर किया जाना हमारा अभीष्ट है। व्यापक फलक पर लिखी एवं प्रकाशित होनेवाली कहानियों को किसी सीमा में बाँध कर सर्वेक्षण किया जाना यद्यपि दुर्लभ है, तथापि थोड़े में इनका मूल्यांकन किया जा सकता है, किया जा रहा है।

समीक्ष्य वर्ष 2020 में वरिष्ठ कथाकार नरेंद्र नाग देव का कहानी संग्रह 'हॉउस ऑफ़ लस्ट' अमन प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुआ है। इसमें दस कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की इन कहानियों के संबंध में समीक्षक गोविंद सेन ने कहा है– "नरेंद्र नाग देव की कहानियों का कथ्य और शिल्प अनूठा है। फंतासी, बिंब, रूपक और प्रतीक इनकी कहानियों के आवश्यक तत्व हैं। इन तथ्यों से कहानी की सघनता, प्रभावशीलता और गहराई बढ़ जाती है। शीर्षकनामा संकलन की पहली कहानी 'हॉउस ऑफ़ लस्ट' में आध्यात्मिक ज्ञान से भरपूर कथानायक अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित आध्यात्मिक संस्था 'नचिकेता' की ओर से ज्यूरिख की आध्यात्मिक संस्था 'डिवाईन लिविंग' के वार्षिक सम्मलेन में व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया जाता है। वहाँ उसका संपर्क ज्यूरिख की मशहूर वेश्या मारिया से होता है। वह उसके व्याख्यान को सुनकर प्रभावित होती है और उसे हॉउस ऑफ़ लस्ट में आमंत्रित करती है। मारिया का सौंदर्य एवं हॉउस ऑफ़ लस्ट की रंगीनियों के चकाचौंध में वह अपना संयम खो देता है। किंतु मारिया उसकी चेतना को जागृत करती है। मारिया स्वयं तो अपना परिष्कार करती ही है, वह कथानायक के उद्धार की भूमिका का निर्वाह भी करती है। कहानी में स्थितियों, घटनाओं एवं आध्यात्मिक परिवेश का बड़ा ही लोमहर्षक चित्रण

किया गया है। 'अंकल का बायोडाटा' एक असफल प्रतिभाशाली अंकल की असफलता, संताप एवं अंतर्वेदना की कहानी है। इसमें अंकल के रिसर्च पेपर के आधार पर कथानायक कोचर प्रसिद्धि को प्राप्त करता है और अंकल गुमनामी की ज़िंदगी जीते हुआ वेदना का दंश झेलता है। 'लोटस टेम्पल 2' रिश्तों के बीच अधिकार के लिए टकराहट की कहानी है। पिता की मृत्यु के बाद उसके फूल को गंगा में विसर्जित करने के बाद माँ और दोनों बेटे लोटस टेम्पल में बैठते हैं। इनके साथ ताऊ भी होते हैं, जो पिता की एक एकड़ जमीन पर ऐसे ही टेम्पल बना देने का परामर्श देतें हैं। किंतु वहाँ टेम्पल तो नहीं बन पाता है, ज़मीन और टेम्पल की भागीदारी को लेकर उनके बीच पहले तो वाद–विवाद होता है, बाद में उनके बीच घमासान मच जाता है। माँ और दोनों बेटों के बीच की कार्यवाही कहानी का मुख्य एवं महत्वपूर्ण अंग है। 'रौशन लाल का राशन कार्ड' एक दिलचस्प कहानी है, जिसमें राशन कार्ड के न होने के कारण एक जीवित व्यक्ति अस्तित्व विहीन हो गया है किंतु फटे हुए राशन कार्ड के तीन टुकड़ों के जुड़ जाने के बाद एक अस्तित्व विहीन व्यक्ति जीवित सिद्ध हो जाता है। व्यवस्था में व्याप्त विसंगति को व्यक्त करती यह एक व्यंग्यात्मक कहानी है। 'एकहूँ गुण नाहीं' अपराधबोध की कहानी है। इसमें कथानायक को प्रसिद्ध चित्रकारों द्वारा बनाए गए चित्रों की नक़ल करने में महारत हासिल है, और इसी गुण के कारण वह एक बड़े चित्रकार के चित्र को 25 लाख में बेचने में सफल तो होता है, किंतु बाद में वह अपराधबोध से ग्रसित हो जाता है। कथाकार ने उसके अपराधबोध की अभिव्यक्ति को बड़ी ही कुशलता के साथ व्यक्त किया है। 'फ्रेश' शीर्षक कहानी में भी अपराधबोध की भावना की अभिव्यक्ति हुई है। इसमें कथानायक, जो एक भारतीय इंजीनियर है, के द्वारा अपने संरक्षक एवं आश्रयदाता ललित भाई से छल किए जाने का वर्णन किया गया है। 'सौदा मंजूर' एक विश्व प्रसिद्ध धावक की मर्मस्पर्शी कहानी है। अपनी अदूरदर्शिता के कारण उसे जीवन के आखिरी दिनों में अपने मैडल को बेचना पड़ता है। कथाकार ने धावक की दयनीय स्थिति का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। 'सही तारीख' संकलन की सर्वोत्कृष्ट कहानी है। दो बुजुर्ग हम–टहल धनंजय बाबू और शकुंतला देवी हर सुबह एक मोड़ पर मिलते हैं, पार्क में टहलते हैं फिर उसी मोड़ पर अलग हो जाते हैं। पार्क की पीली बेंच से बस स्टैंड और अंततः घर की छत तक शकुंतला देवी का टहलना सीमित हो जाता है। धनंजय बाबू का विश्वास धीरे–धीरे पार्क, बस स्टैंड और घर की छत के नष्ट होने के क्रम में शकुंतला देवी के अवसान की सही तारीख घर की छत के ढहने के दिन पर आकर टिक जाती है। स्मृतियों के ठहराव पर आधारित अपने–पराए एवं परिस्थितयों को लेकर विमर्श करती यह एक अच्छी कहानी है। 'ठुमरी नहीं बजी' एक प्रतीकात्मक कहानी है। व्यावसायिक छल–प्रपंच एवं बाजारवाद के विकास के कारण वर्तमान समय में कला, संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों का ह्रास हो गया है। कथानायक अपने ही कला गुरु, जिसे वह दादा कहता है, से छल करता है। उसके घर को बेचकर वहाँ शौपिंग सेंटर के निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय हो जाता है। 'एक हजार अंगुली' एक उत्कृष्ट कहानी है। इसमें अंगुलीमाल के हत्यारे बनने एवं बुद्ध के संपर्क में आकर उसके हृदय परिवर्तन की संपूर्ण घटना का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

नरेंद्र नाग देव एक मँजे हुए कथाकार है। इनकी कहानियों का थीम, प्लॉट और कथावस्तु का विन्यास सुलझा हुआ और सुनियोजित है। भाषा सरल, सुष्ठु और प्रांजल है। कहानियों में पठनीयता है। पाठक अंत तक बँधा रहता है।

सेतु प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित 'कविता, पेंटिंग, पेड़ कुछ नहीं' वरिष्ठ कथाकार कैलाश वनवासी का छठा कहानी संग्रह है। इसमें दस कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, पर्यावरण आदि व्यवस्था में व्यक्त विसंगतियों का चित्रण हुआ है। भूमंडलीकरण के दौर में विकसित होते बाजारवाद एवं तत्परिणामस्वरूप मनुष्य के जीवन में घटित घटनाओं को कथाकार ने बड़ी ही साफ़गोई के साथ प्रस्तुत किया है।

संकलन की पहली कहानी 'बड़ी खबर' में यह स्पष्ट किया गया है कि बैंक की गहमा–गहमी में टीवी पर आग उगलती ख़बरों के बीच पिता के साथ बैंक आए दो बच्चों का सारी परिस्थितयों से बेखबर, खेलना सबसे बड़ी खबर है। 'वाई ब्रेंट जगतारा' शीर्षक कहानी में यह स्पष्ट किया गया है कि उभरते हुए औद्योगिकीकरण के दौर में ग्रामीण कृषकों को बहला–फुसला कर एवं प्रलोभन देकर सस्ते दामों में उनकी ज़मीनें खरीद ली जाती हैं, और वहाँ कारखाना तो खुल जाता है, किंतु उन्हें न तो उचित मुआवजा दिया जाता है और न ही नौकरी। 'झाँकी' शीर्षक कहानी में कथाकार ने एक ओर राठी इंस्टीटयूट की भव्यता का वर्णन किया है, तो दूसरी ओर निर्माण कार्य में लगे मजदूरों की विपन्नावस्था का वर्णन किया है। कथाकार का चिंतन "इस आलीशान भवन में इन मजदूरों के बच्चे पढ़ भी पाएँगें या नहीं" यथार्थ है। रोजगारोन्मुखी महँगी शिक्षा साधारण तबके के लोगों के लिए आकाश कुसुम ही तो है।

शीर्षकनामा 'कविता, पेंटिंग, पेड़ कुछ भी नहीं' में एक गूलर के हरे–भरे पेड़ के कटने के माध्यम से पर्यावरण की समस्या की ओर संकेत किया गया है। 'चक दे इंडिया' सांप्रदायिकता और जातिवाद की भित्ति पर खड़ी अधूरे प्रेम की कहानी है। इसमें राशि और आसिफ एक दूसरे से प्रेम करते हैं, किंतु सांप्रदायिकता की दीवार उन्हें मिलने से रोक देती है। 'अंजाम ए मोहब्बत मालुम है लेकिन.....' में जातिगत भेदभाव की दकियानूसी विचारधारा का शिकार नम्रता जोशी और देवीलाल यादव नामक दो प्रेमी युगल को समाज की प्रताड़ना का शिकार होना पड़ता है और उनका प्रेम पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाता है। 'रोज का एक दिन' एक चिंतन प्रधान कहानी है, जिसमें आधुनिक भूमंडलीकरण के दौर में शिक्षित युवा–युवतियों के समक्ष उत्पन्न रोजगार की समस्या पर चिंता व्यक्त की गई है। अद्भुत, आकर्षक और मात्र एक शब्द के शीर्षक वाली कहानी 'नो' प्राइवेट बैंक में शोषित जूनियर बैंक कर्मी प्रभा की कहानी है, जो बैंक मैनेजर की ज्यादती का शिकार होने के कारण नौकरी से त्यागपत्र देने के लिए बाध्य होती है। 'विकास की पतंग' शीर्षक कहानी में विकास नामक छटनीग्रस्त सीनियर इंजीनियर के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि मंदी का प्रभाव सामान्य लोगों पर पड़ता है। पूँजीपतियों की पतंग तो आसमान में लहराती ही रहती है। संकलन की अंतिम 'झूलना झूले मोरे ललना' एक व्यंग्यात्मक कहानी है। इसमें साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय कॉलेज के प्राध्यापक नवीन भाई समाज में जागरूकता लाना चाहते हैं। कैलाश बनवासी की कहानियों में सामाजिक समस्याओं का विवरण होता है। वे समस्याओं की तह तक जाते हैं, और पाठकों को उनसे रूबरू करवाते हैं।

गद्य में भी प्रकृति चित्रण का चमत्कार भरने में सिद्धहस्त पंकज सुबीर का 'प्रेम' छठा कहानी संग्रह है, जो वर्ष 2020 में शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित हुआ है। इसमें तेईस कहानियाँ संकलित हैं, जिनमें प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। "मिलन अंत है मधुर प्रेम का और विरह जीवन है; विरह प्रेम की शाश्वत गति है, और सुषुप्ति मिलन है", (पथिक : रामनरेश त्रिपाठी), इसी मान्यता को स्वीकार करते हुए पंकज सुबीर ने संकलन की अधिकांश कहानियों में 'प्रेम की शाश्वत गति विरह' को अभिव्यंजित किया है। इसलिए प्रेमी–प्रेमिका एक दूसरे से दूर रहते हुए भी प्रेम की अखंड उज्ज्वल ज्योति जलाए रहते हैं। चाहे वह 'रंगून क्रीपर' के लता और निर्मल हों, 'एक रात' की वीणा और सुनील हों, 'राहों पर नजर रखना' के मंजरी और संभव हों, 'उदास शाम' की नेहा और तरुण अथवा 'मेरा गीत अमर कर दो' के गीता और साहिल हों। सभी प्रेम की मार्मिकता, अर्थवत्ता और आदर्शोन्मुखता को स्थापित करते हैं। संकलन की इन कहानियों में निश्छल प्रेम की मार्मिकता है। ये प्रेमी युगल प्रेम की मार्मिकता को समझते–महसूसते हैं, तभी तो 'मैं बेला ही हूँ मास्साब' की बेला कहती है– "स्त्री अपने जीवन का प्रथम प्रेम कभी नहीं भूलती है... स्त्री के लिए प्रेम उसके जीवन का पूरा इतिहास होता है।...

किंतु प्रेम की फूटती किरण कहीं लंबी प्रतीक्षा के बाद भी मिलन की परिणति को प्राप्त करती है। 'क्षितिज की राह पर कहीं वह नीड़' की देवेंद्र

पटेल और विभा, 'खंडित ताजमहल' की वारुणी और सीमा, 'नसीम–ए–सुबह' की सुधाकर और नसीम, प्रेम के बाल्यकाल के फूटते अंकुर को लंबे अरसे के बाद भी परिणति तक ले जाते हैं। 'गुलमोहर' शीर्षक कहानी में प्रेम की परिभाषा, प्रेम की प्रासंगिकता एवं सार्थकता को अभिव्यंजित किया गया है। गुलमोहर को प्रतीक बनाकर प्रेम को परिभाषित किया गया है।

संकलन की सभी कहानियों में प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। कहीं मिलन का सुख है। तो कहीं विरह की मर्मांतक पीड़ा, तो कहीं अहर्निश प्रतीक्षा। कहानियों का प्रतिपाद्य प्रेम है, इसलिए पुस्तक का शीर्षक सार्थक है।

समीक्ष्य वर्ष में शिवना प्रकाशन, सीहोर से पंकज सुबीर का एक और कहानी संग्रह 'रिश्ते' का प्रकाशन हुआ है। इसमें चौबीस कहानियाँ संकलित हैं। जंगलवासी आदिम मानवों के बीच रिश्तों की पहचान कब और कैसे बनी यह कल्पनातीत भले हो, किंतु आज मनुष्यों के बीच रिश्ते ही रिश्ते हैं। ये रिश्ते अक्सर बनते, बिगड़ते और विकसित होते हैं। किंतु रिश्तों का रिश्ता होना तभी सार्थक होता है, जब रिश्तों के बीच प्रेम की रस सरिता प्रवाहित होती है। संकलन की कहानियों में मानवीय रिश्तों की पड़ताल की गई है।

संकलन की पहली कहानी 'कोई था....' में सुनंदा को रिश्तों का मर्म समझ में आ जाता है, जब उसे ज्ञात होता है कि उसका पति हरीश प्रतिमाह तीन हजार रुपए उस बूढ़ी औरत को दे आता है, जिसका बेटा बस यात्रा के दौरान हरीश की मौत को अपने सर ले लेता है। 'खास दोस्त' का कुंवर राजेश रिश्तों की अहमियत को समझ कर ही रूठना भूलकर दोस्तों के साथ मंडप पर चलकर भोज में शरीक होता है। नारायण दास की आपबीती को सुनकर राजेश बिना किसी हीले हवाले के भोजन कर लेता है। 'प्रेम चतुर्दशी' रिश्ते की पहचान करानेवाली एक मार्मिक कहानी है। इसमें वैलेंटाइन डे पर अपनी दादी और बाद में दादा के साथ चुहलबाजी करती पोती सुरीली द्वारा दादा–दादी के बीच के दांपत्य प्रेम को पुख्ता किया जाता है। सुरीली अपने दादू से दादी के लिए यह कहलवाकर दम लेती है कि 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ'। दादू की कविता और उसके पाठ का ढंग अद्भुत है। 'पितांबरा' में मानवीय रिश्ते की अभिव्यक्ति हुई है। औरत के लिए उसका मायका उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण अंश होता है। मायका से संबंधित सारे रिश्तों की उसके जीवन में अहम् भूमिका होती है। 'अम्मा का घर' शीर्षक कहानी में ऐसे ही रिश्तों की अभिव्यक्ति हुई है। 'गीता की मम्मी' कहानी में पति के मुँह से गीता की मम्मी जैसे संबोधन को बार–बार सुनकर नीला शंकित होती है, किंतु जब वह सत्तर वर्षीय गीता की मम्मी से मिलती है, तो उसका शक श्रद्धा में बदल जाता है। कुछ रिश्ते धर्म और जाति की परवाह किए बिना अचानक बन जाते हैं। 'फरिश्ता' ऐसी ही कहानी है, जिसमें भोपाल में 1984 में यूनियन कार्बाइड नामक फैक्ट्री में गैस रिसाव के दिन एक हिंदू लड़का अपनी जान की परवाह किए बिना एक मुस्लिम परिवार को सुरक्षा प्रदान करता है और मुस्लिम महिला हिंदू लड़के को अनायास ही अपने मृतक पुत्र फरिश्ता की संज्ञा देकर गले से लगा लेती है। 'लौ से लौ जलती है' भी मानवीय रिश्ते की कहानी है। इस कहानी में एक पुलिस अधीक्षक मिट्टी के दीए बेचनेवाली एक बेसहारा बुढ़िया के पोते को पढ़ा–लिखाकर पुलिस अफसर बनाता है, और एक दीपावली की रात घर आए उस पुलिस अफसर को एक बुझा हुआ दीप जलाकर दूसरों की सहायता करने की सीख देता है। 'पिंड में ब्रह्मांड और ब्रह्मांड में पिंड' की कहावत को चरितार्थ करते हुए संकलन की कहानी 'बुआ', में ऐसा ही चरित्र है, जो संसार के संपूर्ण रिश्तों की जीती जागती तस्वीर है। उसमें समस्त मानवीय रिश्ते, यहाँ तक कि जीवों के प्रति प्रेम की झलक मिलती है। बुआ की यही प्रासंगिकता थी कि वह किसी की बुआ नहीं होने के बावजूद पूरे इछावर का कस्बा उसे बुआ कहकर पुकारता था। 'नारिकेल समाकारा दृश्यंते ही सुह्रद जनाः 'की उक्ति को चरितार्थ करती 'रूपगर्विता' शीर्षक कहानी की कलेक्टर श्रीमती सुवासिनी देशमुख यद्यपि एक कठोर अनुशासन प्रिय रूपगर्विता नारी है, फिर भी, उसके

भीतर ममता, कोमलता और संवेदनशीलता का भाव भरा हुआ है। वह अपने अधीनस्थों के साथ कठोरता का व्यवहार करती है किंतु, उसके भीतर मानवीय संवेदना भी है। तभी तो अपने अर्दली सुनील के पिता के प्रोविडेंट फंड के पैसे के भुगतान के लिए कड़ाई से आदेश देती है। साथ ही वह सुनील के प्रति वात्सल्य का भाव भी प्रकट करती है।

भारतीय संस्कृति में पर्व–त्योहारों का प्राचीन काल से ही प्रचलन, प्रावधान एवं महत्व रहा है। जिसमें रक्षाबंधन भी एक महत्वपूर्ण त्योहार है। यह भाई–बहन के अप्रतिम प्यार का त्योहार है। संकलन में रक्षाबंधन से संबंधित अनेक कहानियाँ हैं। 'बिलौटी', 'नेह पत्र', 'उस मोड़ से लौटकर' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। 'बिलौटी' में अपनी बहन नहीं होने के कारण सुधीर अपनी दोस्त मनीष की बहन सुधा से राखी बँधवा कर प्रसन्न होता है। 'नेह पत्र' की मीनी पत्र के माध्यम से रक्षाबंधन की खुशियों का बयान अपने छोटे भाई गोलू से करती है। 'उस मोड़ से लौटकर' में रक्षाबंधन के दिन अपनी विकलांग बहन को उसके पति के साथ खुश देखकर कथानायक प्रसन्न होता है। 'एक रुकी हुई कहानी' रक्षाबंधन पर भाई–बहन की धमाचौकड़ी, उनके प्रेम और प्यार की रोमांचक कहानी है। 'वहाँ, जहाँ शायद जमीन है' शीर्षक कहानी में अरुणा के चिंतन के माध्यम से बचपन की यादों के बीच गाँव के प्रति पुराने रिश्तों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उसी प्रकार 'राम जाने' की मालती तेईस–चौबीस वर्षों के बाद अपने पुराने शहर की पुरानी स्मृतियों में खो जाती है। शर्मा और सुजाता दंपति के घर आकर उसे बेहद प्रसन्नता होती है।

'गोल–गोल आँखों वाला जोगी' एक चिंतन प्रधान कहानी है। इसमें कथाकार ने प्रेम करनेवालों की पीड़ा, प्रेम की राह पर चलनेवालों की कठिनाइयों एवं उसके दुखद परिणामों पर गहराई से चिंतन किया है– "कितने और गोल–गोल आँखों वाले लड़के को जोगी बनाएगा यह प्रेम?" 'वैशाख का एक दिन' पारिवारिक रिश्तों की अभिव्यक्ति करती एक मार्मिक कहानी है। कथाकार ने जीवन की भागदौड़ के बीच पनपते, बढ़ते, विकसते रिश्तों के स्वरूप का विश्लेषण किया है। 'ऋतु बदली' में कामिनी और अभिषेक के बीच के प्रेम संबंधों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। 'मेरे रश्के कमर' और 'तुझको मुझको जीवन अमृत' कहानियों में बचपन में दोस्तों के साथ बिताए गए होली के सुखद क्षणों की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हुई है। संकलन की अन्य कहानियाँ– 'गाड़ी बुला रही है', और 'परी आ गई', 'तुम भी तो वही हो ना', आदि में भी रिश्तों की अहमियत का चित्रण किया गया है।

संकलन की कहानियों की भाषा सरल काव्यमयी एवं लचकदार है। पंकज सुबीर की कहानियों में प्रकृति अपनी पूरी सुषमा, सौंदर्य और मनोरमता के साथ रची–बसी रहती है।

शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित 'जलधार' प्रसिद्ध कथाकार उषाकिरण खान का कहानी संग्रह है। इसमें बारह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की पहली कहानी 'स्वास्तिक' भाई–बहन के प्रेम को केंद्र में रखकर लिखी गई है। इस कहानी में कथाकार ने भारतीय जनजीवन में प्रचलित पर्व त्योहारों, मुख्यरूप से रक्षाबंधन के महत्व को प्रतिपादित किया है। यह एक पारिवारिक कहानी है। इसमें परिवार में होनेवाले निश्चल प्रेम–प्यार और सम्मान का मनोहारी विवरण किया गया है।

विवरणात्मकता की शुरुआत और संवेदनात्मकता का अंत लिए दूसरी कहानी 'छुअन' एक मार्मिक कहानी है। जिसमें पाठक की जिज्ञासा अंत तक बनी रहती है। पीढ़ी–दर–पीढ़ी घटित घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में कहानी के प्रमुख पात्र प्रसिद्ध कवि आलोचक और साहित्य के यशस्वी अध्यापक द्वारा 'लहर' को सहलाते हुए कहना– 'कभी–कभी इनकी सुधि भी ले लेना भैया', कहानी को रोमांचक बना देता है। 'गली में' राजनीति के परिप्रेक्ष्य में लिखी गई कहानी है। इसमें निरंजन भैया के एक साधारण आदमी से मंत्री बनने के सफरनामा का विवरण प्रस्तुत किया गया है। कहानी में जीतू द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर झंडियों के बनाए जाने एवं उन्हें रिक्शा में लगाकर स्वतंत्रता दिवस की याद को ताजा करने के उत्साह का वर्णन अद्भुत और रोमांचक है।

'अनजाना पहचाना सा' एक रहस्यमयी कहानी है। नेहा और रुकमा जिस घर को ढूँढने और जिन लोगों से मिलने के निमित्त भीषण गर्मी में त्रस्त–पस्त होकर शहर की खाक छानती हैं, उन्हें पाकर भी अपना परिचय नहीं देती हैं और सिर्फ बातचीत कर लौट आती हैं। कथाकार इस कहानी में क्या कहना चाहती है, स्पष्ट नहीं होता है 'उसके बिना' व्यक्ति विश्लेषण की कहानी है। एक वैवाहिक समारोह को केंद्र में रखकर लिखी गई इस कहानी में कथाकार ने वृद्ध विधुर ढवकन के जीवन की घटनाओं का वर्णन किया है। पत्नी के अभाव में उसके जीवन का सारा स्वाद फीका है। कल्पना की उड़ान भरती कथाकार ने कहानी में वैवाहिक रस्मों–रिवाज एवं पारिवारिक सौहार्द का बड़ा ही यथार्थपरक वर्णन किया हे। 'उजास' एक प्रेम कहानी है। बचपन से साथ–साथ रहने और अनुराग की प्रेम के बावजूद शांता अनुराग के प्रति प्रेम की कदर्थना कर विनय को अपना जीवन साथी बना लेती है। इस कहानी में कथाकार ने अनुराग के निश्छल, निष्कलुष प्रेम की अभिव्यक्ति की है। 'हँसी–हँसी पनवा खियाँवले बेइमान' ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखी गई एक रोचक कहानी है। भारत के प्राचीन गाँव में जितनी भी घटनाएँ घट सकती थी, इस लंबी कहानी में उन सबका विस्तार से विवरण हुआ है कहानी का संपूर्ण कथानक, कथानायक मुन्ना बाबू, जो गाँव का एक संपन्न किसान और मुखिया है, के चरित्र के इर्द–गिर्द घूमता है। मुन्ना बाबू के पारिवारिक सदस्यों की क्रियाकलापों के माध्यम से एक संपन्न किसान के जीवन, उसकी पारिवारिक स्थिति, गाँव की विभिन्न जातियों, बल्कि उच्च और निम्न वर्ग के बीच के संघर्षो का चित्रण किया गया है।

'सूर्योदय' शीर्षक कहानी में नारीगत मनोभावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। बाँझपन एवं निःसंतानता स्त्री के लिए एक दर्द भरी स्थिति होती है। इस कहानी में मोहन कंठ की पत्नी के विवाह के सोलह साल बीत जाने के बाद भी जब उसके आँचल की गाँठ नहीं खुली, तो उसे अपनी निःसंतानता खलने लगी। किंतु कहानी के अंत में मोहन कंठ के खून–स्वरूप बच्चे को जन्म देकर मृत्यु का वरण करनेवाली जलेसरी की पत्नी के बच्चे को अपनाकर जैसे वह इस कुंठा से मुक्त हो जाती है। कहानी में घटनाओं का तारतम्य सुव्यवस्थित है। कहानी का अंत कहानी को मार्मिक बना देता है और शीर्षक को सार्थक।

'तुम ही भारत हो' कथा वाचिका रेणु का स्वागत आलाप है, जिसमें वह किसी अवनी को केंद्र में रखकर सारी घटनाओं का वर्णन करती है। कहानी का मुख्य प्रतिपाद्य घर के कायदे कानून को तोड़कर गौना होने के पूर्व नव–दंपति सीमा और राणा को मिलाना है। सीमा कथावाचिका की छोटी बहन है वह उन दोनों को मिला तो देती है, किंतु सीमा का गर्भवती हो जाना मुसीबत का पहाड़ बनकर उपस्थित हो जाता है। किंतु सीमा और अवनी के समवेत प्रयास से समस्या का समाधान हो जाता है। 'तुम बिनु अनुखन विकल मुरारी' अनावश्यक लंबी कहानी है। इसमें रागिनी की एक तरह से जीवन गाथा को उसी के आत्मकथ्य के रूप में व्यक्त किया गया है। 'तुम एक नदी हो' एक लंबी विवरणात्मक कहानी है। संकलन की अंतिम कहानी 'नौनिहाल' में कथाकार ने कथानायक मास्टर राधाकांत सिंह के चरित्र चित्रण के माध्यम से देश में होनेवाली क्रांतिकारी घटनाओं एवं समय परिवर्तन के साथ जन जागरण को रेखांकित किया है।

संकलन की कहानियों के अवगाहन से यह ज्ञात होता है इनमें भारतीय जन जीवन में घटने वाली घटनाओं, पर्व–त्योहारों एवं मानवीय संबंधों की झाँकी प्रस्तुत की गई है। संबंध के विस्तृत दायरे में पीढ़ी–दर–पीढ़ी का समावेश हुआ है। इससे कहानियों में पात्रों की बहुलता एवं घटनाओं का घटाटोप छाया है।

अनुपमा साहित्य सदन से प्रकाशित 'पचास के पार' राजा सिंह का कहानी संग्रह है इसमें चौदह कहानियाँ संकलित हैं। राजा सिंह एक संवेदनशील कथाकार हैं। इनकी कहानियों में पीड़ित, उपेक्षित और बदनाम लोगों से संबंधित तथ्यों एवं जटिल यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। संकलन की पहली कहानी 'छत्रछाया' में सामंतवादी युग की अवशिष्ट चेतना का प्रतीक ठाकुर बलदेव राज को

केंद्र में रखकर ठेकेदारी की परेशानियों एवं मानसिक तनाव का वर्णन बड़ी ही स्वाभाविकता के साथ किया गया है। सपना का प्रभावशाली व्यक्तित्व कहानी में अपना विशेष महत्व रखता है। वह समाज में व्याप्त विसंगतियों के विरुद्ध संघर्ष करती है, और हर परिस्थिति में अपने पति का साथ देती है। 'घरेलू पति' शीर्षक कहानी में आधुनिक समाज की स्थितियों का चित्रण किया गया है। 'मिस चक्रव्यूह' एक गरीब दलित युवती पुनीता की यौन शोषण एवं शारीरिक उत्पीड़न की कहानी है। दलित विमर्श की यह अच्छी कहानी है। शीर्षकनामा कहानी 'पचास के पार' में कथाकार ने पचास वर्ष के ऊपर के उम्र वाले व्यक्तियों की मानसिकता और उनके मनोविज्ञान का बड़ा ही सुंदर चित्रण किया है। पचास पार करने के बाद, मनुष्य की मानसिकता में स्वाभाविक रूप से परिवर्तन होने लगता है। कथाकार ने इस परिवर्तन को रेखांकित किया है। 'सादे गुलाब' शीर्षक कहानी में नारी मन की पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है। इसमें मेहविश खान के जीवन संघर्ष, उसकी उदासी– खामोशी तथा अंतर्वेदना को कथाकार ने व्यक्त किया है। मेहविश के जीवन में परिवर्तन एवं उसकी मानसिकता में बदलाव लाने के लिए उसका पति रमन उसकी गोद में आठ–नौ वर्ष का एक बालक डाल देता है। 'एक हमसफर' शीर्षक कहानी में सरकार द्वारा चलाए जाने वाले 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' के सच को उजागर किया गया है। सरकार के इस अभियान के बावजूद समाज में बेटियाँ कदम–कदम पर छली जाती हैं। कथानायिका तरन्नुम की कठिनाइयों का निवारण नहीं होता है। इसकी स्थिति दारुण है जो सोचने को बाध्य करती है। 'प्रारंभ' शीर्षक कहानी में महानगरों की झुग्गी–झोपड़ियों में दुख–दर्द और संघर्ष भरी जिंदगी जीनेवाले परिवारों की स्थितियों का चित्रण किया गया है। सपना के मन–मस्तिष्क में स्कूल छाया रहता है। वह स्कूल जाना तो चाहती है, पर जा नहीं सकती है। 'प्रेमांत' शीर्षक कहानी में प्रेम, मोहब्बत, विछोह का वर्णन करते हुए कथाकार ने पात्रों की मानसिकता का चित्रण किया है। 'गिरगिट का जाले' में भोले–भाले युवकों को गुमराह किए जाने का उल्लेख है। जागीर सिंह इस कृत्य को अंजाम देता है।

'काली आँखें घुँघराले बाल' संकलन की कहानियों में समाज के यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। कहानियों के कथ्य में विविधता है। इनमें समाज के ज्वलंत मुद्दों को उठाया गया है, साथ ही उनके समाधान का मार्ग भी ढूँढा गया है।

अनुपमा तिवाड़ी का पहला कहानी संग्रह है यह शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित हुआ है इसमें तेरह कहानियाँ संकलित हैं।

टाइवान तुर्गनेव के कथन – "एक लेखक का यथार्थ जीवन से सीधा संपर्क होना चाहिए, अर्थात् जीते–जागते लोगों से", के हवाले से भूमिका लेखक डॉ. सत्यनारायण ने कहा है– "अनुपमा तिवाड़ी अपने समय और समाज के प्रति सचेत कहानीकार हैं। इनकी कहानियाँ के पात्र समाज में दबे, कुचले हुए हाशिए के लोग हैं।" संकलन की कहानियाँ इस कथन की सत्यता को प्रमाणित करती हैं।

संकलन की पहली कहानी 'एक थी कविता' में लड़कियों की जिस्मफरोशी के व्यापार का विवरण किया गया हे। कविता उस मुल्क की लड़की है, जहाँ उस जैसी लड़कियों की जिस्मफरोशी के सहारे लोगों का जीवन चलता है। कविता की एक लाख में नथ तुड़वाई जाती है। अन्य लड़कियों का भी इस्तेमाल होता है। जो लड़की आवाज उठाती है, उसकी आवाज दबा दी जाती है। इसमें औरतें ही दलाली का कार्य करती हैं। कविता इस अत्याचार से उठकर अपने लिए नए रास्ते की तलाश में निकल जाती है, यह पत्र लिखकर– "हमें मत ढूँढना, हम अपनी जिंदगी खुद जिएँगे"। 'तारा' शीर्षक कहानी में संततियों द्वारा अपने वृद्ध पिता की उपेक्षा को रेखांकित किया गया है। फतेह सिंह की पत्नी की मृत्यु के बाद उसके बेटे उसे अपने साथ रखने से इनकार कर देते हैं। अंत में उसे रिक्शा चालक बनकर जीवन जीने, और रात में आसमानी छत के नीचे फुटपाथ पर तारों को देखते उनसे बातें करते रात बिताने पर बाध्य होना पड़ता है। माता–पिता अपनी संतानों पर अपनी महत्वाकांक्षा को थोप कर उसके जीवन को गर्त में

डाल देते हैं। 'महत्वाकांक्षा अधूरी–पूरी' ऐसी ही कहानी है, जिसमें पिता अपनी पुत्री नम्रता को उसकी इच्छा के विपरीत उसे डॉक्टर बनाना चाहता है। जबकि नर्मता आर्ट पढ़ना चाहती है। उसका दाखिला कोचिंग में करा तो दिया जाता है, किंतु नीट में उसका सेलेक्शन नहीं होता है। माता–पिता की थोपी गई इच्छा का वह विरोध तो नहीं कर सकती है, परंतु सुमित को, जो उसके नीट का साथी था और प्रेमी भी, मिल कर अपने जीवन का अंत कर देती है। 'फैसला' शिक्षा जगत में व्याप्त विसंगतियों, व्यभिचारों एवं भष्टाचार का पर्दाफाश करनेवाली कहानी है। इसमें सरकारी स्कूलों में व्याप्त भ्रष्टाचार का विवरण हुआ है, जहाँ छात्र–छात्राओं की उपस्थिति मात्र रजिस्टर में दर्ज होती है। साल दर साल बिना स्कूल गए उनका प्रमोशन अगली कक्षा में होता रहता है, तथा मिड–डे मील का रजिस्टर ही बच्चों के नाम का भोजन खाता है। इतना ही नहीं अधिकारी छात्राओं के साथ व्यभिचार करने से भी नहीं चूकते हैं।

'टोपरी' अपने घरों की उबाऊ जिंदगी से थक हारकर भागे हुए वैसे बच्चों की कहानी है, जो रलेवे प्लेटफार्म पर आसमान के नीचे सड़कों पर या चिल्ड्रेन होम में दर्द भरी जिंदगी जीते हैं। इस कहानी में अपने माता–पिता स्कूल और टयूशन मास्टर के अत्याचारों से ऊबकर घर से भागे हुए दस वर्षीय मुन्ना के जीवन क्रम के माध्यम से फुटपाथ पर रेलवे स्टेशन और चिल्ड्रन होम में होनेवाली गतिविधियों का बड़ा ही सटीक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

'सफेदपोश' कहानी में कागज पर चलने वाली संस्थाओं में व्याप्त घपलेबाजी का बड़ा ही सटीक चित्रण हुआ है। संपूर्ण कहानी में एक–एक तथ्य का जैसे आँखों देखा चित्र उपस्थित किया गया है, कथानायक का चिंतन– "यह कैसा समय है कि अब चोर को चोरी करने में शर्म नहीं आती है, और ईमानदार को चोर को चोर कहने में शर्म आ रही है...." कितना सटीक है। बाल श्रम के बड़े–बड़े कानून बनाए गए हैं। उल्लंघन करनेवालों के लिए कड़ी सजा के प्रावधान निर्धारित किए गए हैं। किंतु देश में बाल श्रम जस का तस वर्तमान है। 'एक मई' बाल श्रमिकों के शोषण की कहानी है। इसमें मेट फनी समेत नौ बच्चों को काम करने के लिए दो हजार रुपए प्रतिमाह देने के वायदे पर अजमेर ले जाता है, किंतु न तो वह उन्हें समुचित भोजन देता है और ना ही दो हजार रुपए। 'एक मई' में अंतर्निहित लक्ष्यार्थ के मद्देनजर कहानी का शीर्षक 'एक मई' सटीक और सार्थक है। शीर्षकनामा 'भूरी आँखें घुँघराले बाल' अधूरे प्रेम और खंडित मातृत्व की मार्मिक कहानी है। गाँव की लड़की राजुल गोविंद नामक लड़के से प्रेम कर बैठती है और गर्भवती हो जाती है। गोविंद अपने मामा के साथ शहर चला जाता है। जब राजुल का गर्भ पाँच महीने का हो जाता है, तब उसकी माँ व्याकुल हो जाती है। एक संस्था के माध्यम से उसके बच्चे को जन्म देने के बाद किसी को गोद दे दिया जाता है। बरसों बाद एक रेलवे स्टेशन पर वैसी ही भूरी आँखे घुँघराले बाल वाले लड़के को देखकर राजुल सम्मोहित हो जाती है। उसे लगता है यह उसी का गोद दिया हुआ बेटा है, क्योंकि ऐसी ही भूरी आँखें और घुँघराले बाल उसके प्रेमी गोविंद के थे, वह हाथ बढ़ाती है, पर बच्चे तक नहीं पहुँच पाती है। 'बड़े सरकार' देश में फैले छद्मवेशी बाबाओं, धर्मगुरुओं और मठाधीशों की काली करतूतों को उजागर करती कहानी है। इसमें बेटी की समस्या, लोगों के अंधविश्वास, सच्चे दरबार का लोमहर्षक चित्र एवं बड़े सरकार की तामझाम का बड़ा ही सुंदर विवरण किया गया है। साथ ही उनके खुलते हुए रहस्य का भी उद्घाटन हुआ है। 'किराएदार' शीर्षक कहानी में एक किराएदार की हैसियत एवं पड़ोसियों का उसके प्रति व्यवहार का सटीक वर्णन, सीता और उमेश दंपति के चिंतन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। 'ओ लड़की, तू कहाँ है' शीर्षक कहानी में ट्रेन में सफर करती किसी लावारिस लड़की के प्रति यात्रियों की लोलुपता, हीन मानसिकता एवं रेलवे पुलिस की लचर व्यवस्था को उजागर किया गया है। भारतीय संस्कृति में जहाँ नारी चरित्र में देवी की महिमामयी गरिमा का आरोप किया गया है, वही उसमें अनेक विसंगति पूर्ण चरित्रों– छल–प्रपंच, झूठ–फरेब, डायन–जोगिन का आरोप

किया जाता रहा है। संकलन की 'गुट्टन चाची' शीर्षक कहानी की गुट्टन चाची दूसरी कोटि की नारी पात्र है, जिसमें नारी की समस्त हीन भावनाओं का समावेश है। सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार व्याप्त रहता है। इसमें ऊपर से नीचे तक के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की मिलीभगत रहती है। जो इसमें भागीदार नहीं होता है, उसे स्थानांतरण का दंश झेलना पड़ता है। 'मिट्टी–मिट्टी का फर्क' ऐसी ही कहानी है। इसमें देवेंद्र को घूस नहीं देने के कारण टोंक ट्रांसफर एवं दुर्गा मैडम को गलत वाउचर पर हस्ताक्षर नहीं करने के कारण स्थानांतरण का दंश झेलना पड़ता है। यह एक यथार्थपरक कहानी है।

संकलन की कहानियों में नारी पात्रों की अधिकता है। ये नारी पात्र, जिनके जीवन के इर्द–गिर्द कहानी की कथावस्तु घूमती है, समाज की जीवंत इकाइयाँ हैं। भाषा में प्रवाह है। राजस्थानी शब्दों की छौंक से भाषा प्रांजल हो गई है।

डॉ. हंसा दीप का कहानी संग्रह 'प्रवास के आसपास' शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित हुआ है। इसमें पंद्रह कहानियाँ संकलित हैं। संग्रह की पहली कहानी 'हरा पत्ता पीला पत्ता' में सेवानिवृत्त कार्डियोलॉजिस्ट डॉक्टर एडम मिलर के चिंतन, कार्यकलाप एवं आचरण के माध्यम से समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया गया है, कि जहाँ बुढ़ापा शैशव का साहचर्य पाकर एक नई ऊर्जा से भर जाता है, वहीं शैशव को और अधिक खिलने और विकसित होने का अवसर मिलता है। 'एक मर्द एक औरत' शीर्षक कहानी में एक ओर समाज में व्याप्त दूषित मानसिकता का चित्रण हुआ है, तो दूसरी और रिश्तों की पवित्रता को भी दिखलाया गया है। समाज में दोनों प्रकार की भावनाएँ व्याप्त रहती हैं। कथाकार ने इस कहानी में इसी सच को उजागर किया है। 'वह सुबह कुछ और थी' एक सामान्य दिन के अच्छे अनुभव को व्यक्त करती कहानी है। शैशव काल में भी बच्चों में अहम् का भाव होता है। बच्चे अपने रुतबे को प्रदर्शित करने के बाल सुलभ चातुर्य का प्रयोग करते हैं। 'रुतबा' शीर्षक कहानी में इसी सच को उजागर किया गया है। यह एक बाल मनोविज्ञान की कहानी है। 'भिड़ंत' वैसी नारी के संघर्ष की कहानी है, जो अपनी परेशानियों के साथ–साथ समाज की रूढ़िवादी प्रवृत्तियों से त्रस्त–पस्त रहती है। कथानायिका डॉक्टर स्वाति कैंसर जैसी बीमारी से पीड़ित माँ के लिए चिंतित रहती है। दूसरी ओर समाज के तथाकथित रूढ़िवादी लोगों से संघर्ष करती अपनी योजना में सफल होती है एवं अपने लक्ष्य की प्राप्ति करती है। 'रोपित होता पल' सकारात्मक सोच की कहानी है। इसमें यह व्यक्त किया गया है कि छोटा सा पल किस तरह मनुष्य के दृष्टिकोण को बदल देता है कि उसके अंदर की सारी गलत धारणाओं का अंत हो जाता है, और उसमें कुछ नया एवं सकारात्मक कार्य करने की प्रेरणा जागृत हो जाती है। 'फालतू कोना' शीर्षक कहानी में अस्पतालों में रोगियों के साथ होनेवाले अमानवीय व्यवहार, व्यावसायिकता एवं व्यापार जैसे घिनौने रूप का वर्णन हुआ है। वहाँ रोगी इलाज का निमित्त नहीं, बल्कि लाभ का साधन होता है।

'अपने मोर्चे पर' शीर्षक कहानी में कथाकार ने नारीवादी आंदोलनों के खोखलेपन को उजागर किया है, तथा यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि संघर्ष के दौरान हर बार नारी ही प्रताड़ित नहीं होती है, कभी–कभी पुरुष भी प्रताड़ित होता है। 'एक खेल अटकलों का' सोसायटी में रहनेवाले विभिन्न वर्गों के लोगों के जीवन की गतिविधियों, उनके कार्यकलापों एवं चिंतन की प्रस्तुति हुई है। 'मुझसे कहकर जाते' मानवीय मनोवृतियों को चित्रित करती मनोवैज्ञानिक कहानी है। इसमें एक स्त्री के मनोगत भावों का चित्रण किया गया है।

संकलन की अन्य कहानियाँ– 'बड़ों की दुनिया', 'अंततोगत्वा', 'मधुमक्खियाँ', 'उसकी औकात' आदि भी अच्छी कहानियाँ हैं। इसमें सामाजिक गतिविधियों, मानव मूल्यों आदि का चित्रण हुआ है। डॉ. हंसा दीप प्रवासी भारतीय हैं, किंतु प्रवास की धरती पर रची गई इनकी कहानियों में भारतीय मिट्टी की सोंधी गंध बसी है।

शिवना प्रकाशन, सीहोर से सुधा ओम ढींगरा के संपादन में 'अम्लघात' कहानी संग्रह का प्रकाशन

हुआ है। इसमें बीस कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों का प्रतिपाद्य अम्लघात से पीड़ित युवक–युवतियों की दर्द भरी दास्तान का विवरण करना है। अम्लघात प्रतिशोध का एक साधन है। प्रेम में असफलता, ईर्ष्या–द्वेष एवं अन्य कारणों से मनुष्य अपना प्रतिशोध लेने के लिए दूसरे पर अम्लघात करता है। इसका मूल उद्देश्य चेहरे में विकृति पैदा करना होता है।

संकलन की उषा किरण खान की पहली कहानी 'आओ री सखी, सब मंगल गाओ री' अम्लघात की मार्मिक कहानी है। इसमें स्कूल जाती लड़कियों से छेड़खानी करनेवाले लड़कों के दल के बंटी नामक लड़के को जब रेखा पीट देती है, तो वह रेखा पर तेजाब छिड़क देता है। चूँकि तेजाब मुरगन नामक लड़के की दुकान से खरीदा जाता है, वह अपराधबोध की भावना से ग्रस्त रहता है। मूरगन रेखा से शादी कर उसके जीवन में आशा की किरण बनकर अपने अपराधबोध की भावना से मुक्त होना चाहता है। कादंबरी मेहरा की 'मेरा दिल मेरा चेहरा' में कंचन के जीवन की दर्द भरी गाथा का चित्रण है। कंचन अपनी ही ताई शीला की ईर्ष्या का शिकार होती है। शीला गुंडों के द्वारा उस पर तेजाब छिड़कवाती है, किंतु पिता और भाई की मदद से उसका पूरी तरह से इलाज होता है, और वह फिर से जीना सीख लेती है। गीताश्री की 'उनकी महफिल से हम उठ तो आए' कहानी में पितृसत्तात्मक मानसिकता से ग्रसित एक व्यक्ति अपनी पत्नी चरखी पर अत्याचार करता है। जब वह तंग आकर उससे तलाक लेना चाहती है, तो उसका पति उस पर तेजाब छिड़ककर भाग जाता है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में रिसर्च करने आया छपरा का लड़का उसके प्रति पहले सहानुभूति व्यक्त करता है। फिर प्यार और अंत में शादी कर लेता है। कहानी का विकास क्रम बेजोड़ और अंत बड़ा ही रोमांचक है। आकांक्षा पारे काशिव की 'पिघली हुई लड़की' शीर्षक कहानी के केंद्र में राखी और रति दो सहेलियाँ हैं। जब रति एक लड़के के प्रेम एवं शादी के प्रस्ताव को ठुकरा कर उसे थप्पड़ मार देती है, तो वह लड़का प्रतिशोध स्वरूप उस पर तेजाब छिड़क देता है। राखी उस लड़के का नाम नहीं बताती है फिर भी रति में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है। अपराधबोध से ग्रसित राखी के हृदय का बोझ हल्का हो जाता है। रजनी मोरवाल की कहानी 'बलेड़ी औरत' में कॉलेज की लड़की द्वारा लड़के के प्रेम को ठुकरा दिए जाने पर लड़का उस पर तेजाब छिड़क देता है, कहानी की संरचना अच्छी है। अंत में कथाकार ने समाज के यथार्थ को कविता की कुछ पंक्तियों द्वारा व्यक्त किया है।

'अंधेरे' विवेक रिझावन की कथा वाचन शैली में लिखी गई एक मनोरंजक कहानी है। इसमें कथावाचक की तरह पाठक की भी जिज्ञासा बनी रहती है, कि कॉलोनी में किस मृत जानवर की दुर्गंध फैली हुई है। कहानी का अंत विस्मयकारी है। यह दुर्गंध कथावाचक की पत्नी के मृत शरीर का था, जिसे किसी ने तेजाब से जलाकर वहाँ फेंक दिया था और स्वयं भाग गया था।

अम्लघात का शिकार प्रेम को ठुकरा देने वाली लड़की होती है। किंतु अरुण अरनव खरे की कहानी 'कितना सहोगी आनंदिता' में दोस्त के प्रति उत्पन्न ईर्ष्या भाव के कारण उसकी प्रेमिका को अम्लघात का दंश झेलना पड़ता है। हर्ष बाला शर्मा की कहानी 'और चाँद काला हो गया' में भी बदले की भावना से शैलेश की प्रेमिका रुही पर उसे छेड़ने वाले फोरमेन के द्वारा तेजाब छिड़का जाता है।

रेनू यादव की कहानी 'मुँह झौंसी' अम्लघात पीड़िता रूपा के चरित्रांकन के माध्यम से कथाकार ने भारत के प्राचीन गाँव और गाँव में रहनेवाली स्त्रियों के दर्दनाक जीवन का चित्रण किया है। इस लंबी कहानी में नारी जीवन की परवशता, घर के अपने ही रिश्तेदारों द्वारा यौन शोषण, शौच से लेकर अपनी अस्मिता की सुरक्षा जैसी समस्याओं का विवरण किया है। किंतु दूसरी ओर कथाकार ने कथानायिका रूपा उर्फ अम्लघात पीड़िता मुँह झौंसी के शंखनाद के स्वर से नारी संघर्ष एवं नारी आत्मोत्थान का सटीक वर्णन भी किया है। डॉ. निरूपमा राय की 'अग्नि स्नान' शीर्षक कहानी में प्रणय निवेदन को ठुकराने पर एसिड अटैक की

घटना घटती है। विशाल सुरभि के समक्ष प्रेम विवाह का प्रस्ताव रखता है, जिसे वह समीर से प्रेम करने की बात कहकर अस्वीकार कर देती है। फलस्वरूप विशाल समीर पर एसिड वॉर कर देता है। सुरभि फिर भी समीर को प्यार करती है। इस कहानी में आत्मिक प्रेम, मानसिक अंतद्र्वंद्व, विश्वासघात आदि भावों की अभिव्यक्ति हुई है। 'मुझे माफ करो' राधेश्याम भारतीय की एक सकारात्मक सोच की कहानी है। इसमें लड़की द्वारा प्रणय निवेदन ठुकरा दिया जाने पर लड़का दूसरे लड़के को पैसे देकर उस लड़की पर तेजाब डालने का उपक्रम करता है। किंतु वह लड़का ऐसा नहीं कर के उसके पैसे भी लौटा देता है और उसके प्यार को वासना की संज्ञा देकर उसका तिरस्कार भी करता है। 'परी हो तुम' रुचिका अरुण शर्मा की एक मार्मिक कहानी है। इसमें राहुल के आत्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। राहुल अपनी प्रेमिका प्रियंका की एसिड अटैक से क्षत–विक्षत शरीर से नहीं, उसकी आत्मा से प्यार करता है। वह प्रियंका का इलाज अमरीका ले जाकर करवाता है। उसे सौंदर्य प्रतियोगिता में विजयिनी करवाता है। रेणु वर्मा की 'छीटें की चीखें' में पति केशव सिर्फ शक के कारण ही गुंडों द्वारा अपनी पत्नी नंदिता पर तेजाब छिड़कवाता है, जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। किंतु बाद में वह अपराधबोध से ग्रसित होने की स्थिति में फाँसी लगाकर मृत्यु को वरण करता है। पूनम मनु की कहानी 'खंडित' में अवेचतन मन की अवधारणा की अभिव्यक्ति हुई है। अपनी सहेली नंदिता पर होनेवाले एसिड अटैक की घटना को रितु भूल नहीं पाती है, और नींद से उठकर नंदू–नंदू चिल्लाने लगती है, जिससे सभी परेशान रहते हैं। सत्यार्थ शर्मा कीर्ति की 'सफर अभी जारी है' आत्मकथात्मक शैली में लिखित एक रोचक कहानी है। इसमें भारतीय जीवन के यथार्थवादी सत्य एवं मानवीय संवेदना को बारीकी एवं स्वाभाविकता के साथ व्यक्त किया गया है। डॉ. लता अग्रवाल की 'रिसन' कहानी में एक पति की बेरहमी, बेदर्दी और पागलपन का बड़ा ही हृदय विदारक विवरण हुआ है। पति हृतेश अपनी ही पत्नी पर तेजाब डालकर भाग जाता है, फिर कभी नहीं आता है, चूँकि पुत्री राम्या के समक्ष वह पत्नी पर ऐसिड डालता है, इसलिए राम्या को मर्द जाति से ही घृणा हो जाती है, वह बड़ी होकर इंजीनियर बन जाती है, किंतु माँ के बार–बार के आग्रह के बाद भी वह शादी से इनकार करती है।

आनंद कृष्ण की 'फ्रीज' आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई कहानी है, जिसमें एक व्यक्ति के मानसिक अंतद्र्वंद्व की अभिव्यक्ति हुई है। 'एक शब्द औषधि करें... एक शब्द करे घाव' ज्योति जैन की दोस्ती की मिसाल कायम करती एक मर्मस्पर्शी कहानी है। संकलन की सारी कहानियाँ संवेदनशील हैं और पाठकों में संवेदना जगाती हैं। अम्लघात पीड़ित पात्र अपने भीतर की जज्बाती शक्ति को खोता नहीं है, बल्कि कठिनाइयों से जूझता है। संघर्ष करता है और फिर से उठकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति करता है।

शिवना प्रकाशन, सीहोर से सुधा ओम ढींगरा के संपादन में एक और कहानी संग्रह 'वैश्विक प्रेम कहानियाँ' प्रकाशित हुआ है। इसमें भारत सहित विश्व ने नौ देशों के सत्ताईस कथाकारों की सत्ताईस कहानियाँ संकलित हैं। विश्व के इन नौ देशों में फैले प्रवासी भारतीयों की प्रेम कहानियों को संकलित करने के पीछे अपने उद्देश्य को संपादिका ने विस्तृत एवं सारगर्भित भूमिका लिखकर स्पष्ट किया है। जैसा कि पुस्तक का शीर्षक है, इसमें प्रेम संबंधी कहानियाँ ही संकलित हैं। इस संबंध में संपादिका ने लिखा है– "मेरा पूरा प्रयास रहा है प्रेम, प्यार, इश्क, मोहब्बत और प्रीत के इत्र की खुशबू इस पुस्तक से आए और इस पुस्तक को पढ़नेवाले आप खुशबू से सराबोर हो जाएँ"। संकलन की कहानियों के अवगाहन से यह सच उभरकर सामने आता है कि ये प्रेम प्यार के इत्र की खुशबू से सराबोर है। चाहे पुष्पा सक्सेना की 'चाहत की आहट' की अमरीकन लड़की एवं मेक्सिको के गिटार वादक अथवा अनिल प्रभा कुमार की 'मौन राग' के वृद्ध दंपति सतनाम और रंजीत हो, अथवा आशा मोर की 'तुम्हारा इंतजार करूँगी' की डॉ. अशोक और शर्मिला हो। सब के सब अटूट प्रेम बंधन में बँधे प्रेमी और प्रेमिकाएँ हैं। संकलन

की सारी कहानियों में किसी न किसी रूप में प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। कहीं दांपत्य प्रेम, कहीं जवानी की दहलीज पर पाँव रखते युवा प्रेम, तो कहीं प्रेम पात्र की आर्निश प्रतीक्षा में पनपता, विकसता प्यार, पंकज सुबीर की 'महुआ घटवारिन', सुधा ओम ढींगरा की 'यह पत्र उस तक पहुँचा देना', गीताश्री की 'हँकपड़वा' जैसी किस्सागोई की शैली में विवरणात्मक कहानियों में भी प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। संकलन की कहानियों में प्रेमी प्रेमीकाओं के निर्मल प्रेम का मार्मिक वर्णन तो हुआ ही है, इनमें जिस देश के कथाकार की कहानियाँ हैं या जिस देश की धरती पर के प्रेम पात्रों के प्रेम का वर्णन हुआ है, उस देश की सभ्यता संस्कृति, परंपरा, रीति–रिवाज एवं उस देश के महत्वपूर्ण दर्शनीय एवं सार्वजनिक स्थलों का मनोमुग्धकारी वर्णन हुआ है, इनका चित्रात्मक बिंब पाठकों को उन स्थानों की सैर करवा देता है। इन कहानियों में उन देशों की बोलचाल की भाषा के शब्दों का बहुल प्रयोग हुआ है। देश काल की सीमा में बँधी कहानियाँ बड़ी ही दिलचस्प और मनभावन हैं।

'अनुरक्त विरक्त' उदभावना प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित कांति शुक्ला का पहला कहानी संग्रह है। इसमें पंद्रह कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों के संबंध में अरुण अरनव खरे लिखते हैं– "सभी कहानियों में बुदेलखंड की सामाजिक, राजनीतिक रीतियाँ– कुरीतियाँ, विडंबनाएँ, बाहुबली ठाकुरों की विलासित, यौन कुंठा, प्रेम की प्रवृत्तियाँ, कठिनाइयाँ, उलझन और जटिलताएँ, संघर्ष, यातना, समर्पण, घुटन–टूटन, विद्रोह एवं विकृति के मनोभाव सहज और प्रभावी रूप से व्यक्त हुए हैं।" संकलन की पहली 'संकल्प विकल्प' एक उपेक्षित लड़की की कहानी है बचपन से ही उपेक्षित कथानायिका सोना को ससुराल में भी उपेक्षा ही मिलती है। विवाह के बरसों बाद गोद न भर पाना उसकी विडंबना बन जाती है, जिससे उसका जीवन जीना दूभर हो जाता है। ऐसी स्थिति में जेठ द्वारा सहानुभूति का प्रदर्शन उसके लिए विकल्प लेकर आता है। शीर्षकनामा दूसरी कहानी 'अनुरक्त विरक्त' बुंदेल फागों के गायक धडबोले ढीमर की दर्द भरी कहानी है। उसकी गायकी सुदूरवर्ती गाँवों तक में भी फैली थी, किंतु अपने भोंदू पुत्र की दुश्चिंता के कारण उसका पतन हो जाश्रा है। कहानी का अप्रत्याशित अंत पाठक को स्तंभित कर देता है। 'अखिर कब तक' अंतरजातीय विवाह की कहानी है। मिश्राइन की लड़की विवाह के बाद जब ससुराल आती है और वहाँ उस पर अत्याचार होता है, तो वह उसके विरुद्ध उठ खड़ी होती है और इसका मुकाबला करती है। 'करमन की गति न्यारी' शीर्षक कहानी में सट्टेबाजी के व्यसन के कारण सेठ से कंगाल हो जानेवाले गोपाल दास और उसकी पत्नी के जीवन संघर्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। 'जीवन तेरे कितने रूप' में विधवा जीवन की विडंबनाओं का चित्रण हुआ है। इसमें छोटी अम्मा के वैधव्य जीवन की परेशानियों का चित्रण हुआ है। 'डोर मोह की टूटे ना' में भी तीन विधवाओं की व्यथा कथा का विवरण हुआ है। 'संभावना शेष' शीर्षक कहानी में अपने पुत्र के कारण पिता दुखी तो होता है, किंतु वह अपने जीने के लिए नए रास्ते की तलाश कर लेता है। कभी–कभी ऐसा होता है कि बेटी को ससुराल भेज कर माता–पिता उसके प्रति बेखबर हो जाते हैं, तब बेटी मायके वाले की गलतियों का एहसास दिलाकर उन्हें सचेत करती है। 'बदले संदर्भ' ऐसी ही कहानी है। इसमें एक बेटी मायके की उपेक्षा कर उन्हें अपनी भूल का अहसास कराती है। संकलन की अन्य कहानियाँ भी अच्छी है। संकलन की कहानियों की भाषा परिष्कृत एवं प्रौढ़ है। बुंदेलखंडी शब्दों की छौंक से भाषा रुचिकर हो गई है।

शिवना प्रकाशन, सीहोर से वर्ष 2020 में ज्योति जैन का तीसरा कहानी संग्रह 'नजरबट्टू' प्रकाशित हुआ है इसमें बीस कहानियाँ संकलित है। ज्योति जैन अपने ढंग की कथाकार हैं। इनकी कहानियों के थीम, थॉट एवं अभिव्यंजना शिल्प अपने तरह की है, जिससे वह आज की कहानी लेखन की विविधता के दौर में अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं, संकलन की शीर्षकनामा पहली कहानी 'नजरबट्टू' भारतीय समाज में व्याप्त नजर लगने और नजर उतारने की प्रचलित प्रक्रिया को अभिव्यक्त करती अद्भुत कहानी है। 'शिरीन' एक दिलचस्प

कहानी है। 'स्नोफॉल' की सुषमा के वर्णन के क्रम में स्नोफॉल में भी एक पहाड़ी फूल का आड़ नहीं होना कथाकार को प्रभावित करता हैं एक अकेली पहाड़ी औरत की जीवटता के आधार पर उसके नाम शिरीन पर फूल का नामकरण शिरीन बड़ा ही कौतुक पूर्ण है। 'भाभी की चूड़ियाँ' एक मर्मस्पर्शी मनोवैज्ञानिक कहानी है। भाभी की चूड़ियों भरे हाथ की जिस जीवटता एवं श्रमशीलता की बदौलत सुधीर अफसर बनता है, जब उसकी ईमानदारी और कर्मण्यता को चुनौती देते छुटभैये उसे निकम्मे –पन के उपहार स्वरूप चूड़ियाँ भेंट करता है, तो वह बिखर जाता है। जिन चूड़ियों का वह सम्मान करता था, उसे अकर्मण्यता का प्रतीक बनाना सुधीर के लिए असहनीय हो जाता है, 'मानवी' नारी गत भावों के विश्लेषण की कहानी है। अपने देश की नारियों को देवी का दर्जा प्रदान किया गया है। उसे धरती की तरह सहनशील, देवी की तरह क्षमाशील माना गया है। किंतु जब मानसी को उसके पति की बेहयायी का समाना करना पड़ता है, तो वह अपनी माँ की समझाइस को नकार कर अपने पति अजय को छोड़ देने का फैसला ले लेती है। 'गतांक से आगे' शीर्षक कहानी में यह दिखलाया गया है कि पुरुष वर्चस्ववादी समाज में औरत को औरत होने का खामियाजा झेलना पड़ता है, तभी तो सब प्रकार से बीस रहने के बावजूद रोशनी के बदले बॉस के साथ यूएस जाने के लिए सुधाकर का चुनाव होता है। शक की छोटी सी चिंगारी दांपत्य जीवन के महल को क्षणभर में ध्वस्त कर देती है। 'नीला आसमान' शीर्षक कहानी में शक के कारण रिया और रोहित के लंबे दांपत्य जीवन के धराशाई होने का उल्लेख किया गया है। 'संझा दीप' एक मर्मस्पर्शी कहानी है। "संस्कार किसी खानदान की बपौती नहीं होती है" का भाव मन में आते ही राहुल की माँ मिसेज माथुर अनाथ आश्रम में पली–बढ़ी और राहुल की कोचिंग में काम करनेवाली उजाला को अपनी पुत्रवधू के रूप में स्वीकार कर लेती है। 'री–यूनियन' चिंतन प्रधान पारिवारिक कहानी है। छाया, अक्षय और अमृता के चिंतन के माध्यम से कथाकार ने मानव मनोवृतियों का अनुपम विश्लेषण किया है। कहानी की शुरुआत, मध्य और अंत अद्‌भुत है। कहा जाता है कि प्यार में अंधी एक हिंदू लड़की अपना धर्म छोड़ सकती है, किंतु एक मुसलमान लड़का ऐसा नहीं कर सकता है। किंतु 'जुड़े गाँठ पड़ जाए' शीर्षक कहानी की हिंदू लड़की अनुभा मुस्लिम जुबेर के प्यार में पड़ी माता–पिता की स्वीकृति के बाद भी अपने धर्म परिवर्तन की जुबेर के प्रस्ताव को ठुकरा कर उसका साथ छोड़ देती है। आधुनिक विकासवादी युग में औरतें आत्मनिर्भर होकर अकेले भी रह सकती हैं, और समाज के सम्मान के साथ जी सकती हैं। 'अकेले हैं.... क्या गम है' शीर्षक कहानी में कीर्ति दी के चरित्र चित्रण के माध्यम से इस सत्य को उजागर किया गया है। उसी तरह 'सिंगल' शीर्षक कहानी की विधवा रानी, कुमारी शुभी और तलाकशुदा रितु एकाकी जीवन यापन करती हैं। 'वाशिंग वास' एक संवेदनशील कहानी है। इसमें आत्मरक्षार्थ सुप्रिया पाइप साफ करने आए ऑफिस के आदमी पर एसिड डालती है। वह सुप्रिया को अकेली जान कर उस पर गलत मंशा से झपट पड़ता है। कहानी की अंतिम पंक्तियाँ कहानी के प्रतिपाद्य को स्पष्ट करती हैं। ईश्वर एक राह बंद करता है तो दूसरी दिखाता है। बस देखने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। जो पुरुषार्थी होते हैं उनके पास मंजिल स्वयं चली आती है, इस सत्य तथ्य को प्रमाणित करती है। 'अनलॉक जिंदगी' शीर्षक कहानी, जिसमें एमबीए करने के बाद नौकरी के लिए प्रयासरत सोहम को उसके परिश्रम से प्रभावित होकर अपनी कंपनी में देवनारायण जी नौकरी दे देते हैं। 'माचिस की तीली' एक बड़े परिवार के सदस्यों के बीच फैली अफवाह की कहानी है। कहानी में बुआ द्‌वारा फैलाए अफवाह कि रिया का किसी दूसरे धर्म के लड़के के साथ चक्कर चल रहा है, बाद में झूठा सिद्‌ध होता है। 'खुशबू वर्सेस खुशबू' सुखी दांपत्य एवं स्नेहिल मातृत्व की अनोखी कहानी है। 'एक शब्द औषधि करें....' तेजाबी कहानी है। तेजाब की तरह पाठकों पर प्रभाव डालती है। उषा और संध्या की अटूट दोस्ती को ईर्ष्यालु छात्र के द्‌वारा संध्या पर तेजाब डालने एवं दोनों की कायम रहती दोस्ती को इस कहानी में व्यक्त किया गया है।

अंतिम 'गाड़ी बुला रही है' शीर्षक कहानी में वैधव्य प्राप्त किरण अपने देवर के कानों में पिघले शीशे जैसे शब्द "अकेली जान कहाँ भटकेगी, ये सोचकर भैया के बाद घर में रखा था, पर यहाँ तो भटकने का ही शौक है, तो क्या करें?" सुनकर मुंबई में अकेले रहने का निर्णय लेती है। यह एक आत्मनिर्भर नारी की कहानी है। संकलन की सारी कहानियाँ सामाजिक धरातल पर जीने वाले सामान्य लोगों की कहानियाँ हैं। इन कहानियों के पात्र आम आदमी हैं। नारियाँ आत्मनिर्भर और स्वाबलंबी हैं, इसलिए स्वाभिमानी हैं।

अमन प्रकाशन, कानपुर से वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय का कहानी संग्रह 'भीड़ का कोई चेहरा नहीं होता' प्रकाशित हुआ है। यह इनका तेरहवाँ कहानी संग्रह है। इसमें पंद्रह कहानियाँ संकलित हैं। गोविंद उपाध्याय लंबे समय से कहानियाँ लिख रहे हैं इसलिए इनकी कहानियों में समाज के बदलते हुए मानव मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है। यह कहानियाँ रोचक होने के साथ–साथ स्थायी प्रभाव डालती हैं। यद्यपि कथाकार का अभीष्ट प्रेम कहानियाँ लिखना नहीं है, तथापि संकलन की कुछ कहानियों में प्रेम की मार्मिकता का वर्णन हुआ है। किंतु जैसा कि कथाकार ने कहा है, यह मात्र प्रेम कहानियाँ ही नहीं हैं, बल्कि इनमें समय के साथ–साथ प्रेम में आए बदलावों को भी रेखांकित किया गया है। 'दो कदम साथ–साथ', 'इंतहा', 'धुंध छुटने बाद', 'यह बहुत पुरानी बात है', 'हवा बदल चुकी', आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं, शीर्षकनामा अंतिम कहानी 'भीड़ का चेहरा नहीं होता' में बदलते मानवीय मूल्यों का चित्रण किया गया है। युगीन संदर्भ में भीड़ तंत्र का कोई मूल्य नहीं रह गया है। वर्तमान समय को रेखांकित करती यह एक उत्कृष्ट कहानी है।

'कफस' अंशु प्रधान का पहला कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन शिवना प्रकाशन, सीहोर से हुआ है। इसमें सत्रह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की कहानियों में जीवन जगत के यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है इसमें स्त्री की समस्याओं, उनके संघर्ष और जीवन के घात–प्रतिघातों को विभिन्न पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। कहानियों की भाषा सरल किंतु सारगर्भित है पाठक अंत तक बँधा रहता है।

कहानियों की उपलब्धता का दूसरा स्रोत पत्र–पत्रिकाएँ हैं। देशभर में प्रकाशित बहुसंख्यक पत्र–पत्रिकाओं में बड़ी संख्या में कहानियों का प्रकाशन हुआ है। कुछ का विवरणात्मक विश्लेषण प्रस्तुत है।

'सूसंभाव्य' भागलपुर, बिहार से दयानंद जायसवाल के संपादन में प्रकाशित साहित्यिक त्रैमासिकी है। इसके फरवरी–मार्च 2020 अंक में पाँच कहानियाँ संकलित हैं। पहली 'मिहिर मेघा' हरि प्रकाश राठी की शुद्ध साहित्यिक कहानी है, जिसमें सूर्य और मेघ के आपसी वाग्युद्ध के माध्यम से कथाकार ने दोनों के क्रिया–व्यापार से प्रकृति में होनेवाले परिवर्तनों को बड़े ही व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। दूसरी, पद्मा मिश्रा की 'अपना वतन' शीर्षक कहानी में भारत से काम की तलाश में बगदाद आए आदमियों की वतन के प्रति संवेदनशीलता का वर्णन किया गया है। तीसरी, गोविंद सेन की 'कुत्सित मंसा' शीर्षक विवरणात्मक कहानी में विद्यालय में चपरासी का काम करने वाली चंपा और भैंस के दूध की बिक्री का व्यापर करनेवाले मदन के बीच के अवैध संबंध एवं चंपा की पुत्री के प्रति मदन की कुत्सित क्रियाकलापों को उजागर किया गया है। चौथी, अजीत कुमार की 'आत्म चेतना' प्रतीकात्मक कहानी है। इसमें कथाकार ने प्राकृतिक उपादानों– पवन, आकाश, संध्या आदि के वार्तालाप के माध्यम से मनु के काल से लेकर आधुनिक समय में होनेवाले विश्व के परिवर्तनों का विवरण प्रस्तुत किया है। आधुनिक नवोन्मेशी युग में अनेक संत्रासों में से नव दंपति में अवोर्सन की प्रवृत्ति एक महत्वपूर्ण संत्रास है। नव दंपति प्रायः रास–रंग और ऐश–मौज की गलतफहमी में पड़ कर अवोर्सन करा कर जीवन को दुखमय बना लेते है। उन्हें यह ज्ञात नहीं होता है कि उम्र की एक सीमा के अंदर ही स्त्रियों में गर्भाधान की क्षमता रहती है। राजेंद्र राकेश की 'नागफ़ाँस' कहानी में इसी तथ्य को बेला और राधा के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।

'सूसंभाव्य' के जुलाई–सितंबर अंक में भी पाँच कहानियाँ संकलित हैं। दिलीप कुमार सिंह की 'बैधा' एक विवरणात्मक कहानी है। ग्रामीण परिवेश की इस कहानी में पात्रों की गहमागहमी के बीच ग्रामीण छल–छंद की राजनीति, अंधविश्वास एवं मनुष्य की स्वार्थीवृत्ति की अभिव्यक्ति हुई है।

'एक दीप धरम का' सुभद्रा मिश्रा की चरित्र विश्लेषणात्मक कहानी है, जिसमें दीपावली की भव्य रात्रि में अपने चौखट पर एक दीप जलाकर बैठी धैर्य, सहनशीलता, क्षमा और आस्था की प्रतिमूर्ति धरम नाम की बूढ़ी औरत के जीवन को उजागर किया गया है। दीपावली की भव्यता के बीच धरम का जलाया गया दीप नगर की भव्यता में प्राण डाल देता है। 'ध्रुवस्वामिनी' अरुण कुमार सिन्हा की ऐतिहासिक कहानी है। इसमें इतिहास प्रसिद्ध नारी पात्र ध्रुवस्वामिनी की संपूर्ण जीवनी को कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह कहानी साहित्य में इतिहास और इतिहास में साहित्य होने की अर्थवत्ता सिद्ध करती है। मनोरंजन सहाय सक्सेना की 'जिंदगी– रेल की समानांतर पटरी' एक मार्मिक प्रेम कहानी है। दो प्रेमी रंजीत और सुप्रिया एक दूसरे के प्रेम में पगे जीवन पर्यंत एकाकी जिंदगी जीते प्रेम के दीप जलाए रहते हैं। वे कभी मिलकर एक नहीं हो पाते हैं, जैसे रेल की दो पटरियाँ साथ–साथ तो चलती है, पर कभी आपस में मिल नहीं सकती हैं। अक्तूबर–दिसंबर अंक में चार कहानियाँ हैं। नीरजा हेमेंद्र की 'लड़की की जात' शीर्षक कहानी में लड़कियों को लड़की समझकर उपेक्षित करने की सामाजिक एवं पारिवारिक धारणा का विरोध करते हुए लड़कियों के आत्मनिर्भर होने की वकालत की गई है। जयंत की 'मनहूस साया' अंधविश्वास की कहानी है। इसमें विवाह के बाद घर आई बहू को घर में आई विपत्तियों का कारण मानकर मनहूस साया घोषित कर दिया जाता है, एवं स्वस्थ बच्चे को जन्म देकर उसकी मृत्यु पर सब राहत की साँस लेते हैं, कि 'मनहूस साया' चला गया। राम नगीना मौर्य की 'फुटपाथ पर जिंदगी' बड़ी ही दिलचस्प कहानी है। इसमें दिल्ली से लखनऊ तक की सड़क यात्रा के क्रम में फुटपाथ पर काम करनेवालों की दिनचर्या का दिलचस्प विवरण प्रस्तुत किया गया है। 'रुका न पंछी पिंजरे में' डॉ. चुम्मन प्रसाद श्रीवास्तव की कोरोना से उत्पन्न परिस्थितियों का विवरण करती मर्मस्पर्शी कहानी है। शहर से घर लौटते मजदूरों के साथ कोरोना अटैक संबंधी जितनी भी परिस्थितियाँ हो सकती है, कथाकार ने धनेसर के माध्यम से उन सब का यथातथ्य वर्णन किया है।

हंस जन चेतना का कथा मासिक है। वर्ष भर के बारह अंकों में पचास–साठ कहानियाँ प्रकाशित होती हैं। 'हंस' में प्रकाशित वर्ष 2020 की कुछ कहानियों का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत है। कृष्ण बिहारी की 'सेन चाइल्ड' एक अद्भुत कहानी है, इसमें सेन चाइल्ड राजकिशोर मेहता को केंद्र में रखकर एक उदंड विद्यार्थी की कारगुजारियों, प्रवृत्तियों, शिक्षा व्यवस्था की अस्पष्ट नीतियों, विद्यालय प्रबंधन एवं विद्यालय के शिक्षकों की मजबूरियों का बड़ा ही सटीक चित्रण किया गया है। रानू मुखर्जी की 'सुनी नहीं जाती हर आहट' पुरुष और नारी की मानसिकता का चित्रण करती अच्छी कहानी है। जब नारी अपनी स्वतंत्रता कायम करना चाहती है तो पुरुष का अहं टुकड़े–टुकड़े हो जाता है। वह अपनी पुरुषवादी सत्ता को हर हालत में बरकरार रखना चाहता है। दोनों में टकराहट होती है, किंतु दृढ चरित्र वाली संघर्षशील नारी का आत्मविश्वास जीत जाता है। नारी सशक्तिकरण की यह एक अच्छी कहानी है।

'उल्लू का पट्ठा' रवि राय की संवाद शैली में लिखित, एक मनोरंजक कहानी है। बारह वर्ष पूर्व कॉलेज से छात्र–छात्राओं का एक दल मनाली टूर पर जाता है। टूर में घटित घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में टूर पर जानेवाले लड़के राम नगीना राम और लड़की जसविंदर कौर के बीच फोन पर हुई बातचीत को आधार बनाकर संपूर्ण कहानी की रचना हुई है। यह मार्मिक कहानी है पाठक की जिज्ञासा अंत तक बनी रहती है। कहानी में रहस्य, रोमांच, जिज्ञासा, कौतूहल सब कुछ है। अपने ढंग की यह एक अनोखी कहानी है। 'दुखां दी कटोरी सुखां द छल्ला' रूपा सिंह की देश विभाजन के पश्चात पंजाब दंगे पर आधारित कहानी है।

नरेंद्र नागदेव वरिष्ठ कथाकार हैं। हंस इनकी मार्मिक कहानियों का कायल है। हर वर्ष इनकी अनेक कहानियाँ हंस में प्रकाशित होती हैं। 2020 में भी इनकी 'सीधे–साधे सुकून' शीर्षक कहानी प्रकाशित हुई है। अतीत और वर्तमान के चिंतन के बीच यह एक कल्पना प्रधान कहानी है। कथाकार ने अतीत की कल्पना पर वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में एक अव्यक्त प्रेम की कहानी गढ़ी है, जिसमें वह नायक भी है और कथावाचक भी। अश्विनी कुमार दुबे की 'मृत्यु बोध' एक मानसिक मनोरोगी की कहानी है। कहानी में एक अवकाश प्राप्त कलेक्टर की यही त्रासदी है कि वह अपने पद के अहं के कारण अपने को सामान्य नागरिक नहीं समझकर समाज से कटा हुआ रहता है, जबकि वह किसी रोग से ग्रस्त नहीं है, अपने को रुग्ण समझता है, और बात–बात पर अपनी मृत्यु हो जाने का संशय प्रकट करता हैं। कथाकार ने उस रिटायर्ड कलेक्टर की मानसिकता के चित्रण के माध्यम से एक अवकाश प्राप्त व्यक्ति, जो अपने पद की केचुली को उतारकर फेंक नहीं सकता है, की मानसिकता का बड़ा ही सटीक विवरण प्रस्तुत किया है। 'बीमारी से निजात' गोपाल नारायण आवटे की एक मानसिक मनोरोगी की कहानी है, जो रोगियों का इलाज करते–करते स्वयं मनोरोगी हो जाता है। तबस्सुम फातिमा की 'जिंदगी की तरफ' एक चिंतन प्रधान कहानी है। छोटे कस्बे से बड़े शहर दिल्ली आए दो जवान दिलों– खुशबू और नदीम की सोच के माध्यम से उनके सपने और जिंदगी के मकसद को बयान किया गया है। किसी की टूटती बिखरती और फिर पटरी पर आती हुई जिंदगी की दर्पण से सामना कराती हुई यह काहनी हौसला प्रदान करती है। पवन के श्रीवास्तव की 'कोठे पर कोरोना' शीर्षक कहानी में कोरोना काल की दिल्ली की स्थितियों का आसिफ नामक रिक्शा चालक के समक्ष उत्पन्न परिस्थितियों के माध्यम से किया गया है। दिल्ली शहर में फैले सन्नाटे, आसिफ की मजबूरी और कोठे पर भी कोरोना के प्रभाव को कथाकार ने यथा तथ्य वर्णन किया है। काम नहीं मिलने के कारण रिक्शा मालिक के बढ़ते भाड़े नहीं चुका सकने की मजबूरी एवं निराश्रयता की स्थिति में आसिफ का कोठे पर जाना, और रितु जैसी कोठेवाली से संपर्क साधना कहानी की महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। इसमें कोरोना की समस्या की भयावहता को बड़ी खूबी के साथ व्यक्त किया गया है। पंकज सुबीर की 'इलोई! इलोई!' लामा सबारब्तानी किस्सागोई की शैली में लिखी गई एक कालजयी रचना है, जो अतीत के वर्णन एवं इतिहास के शोध का समन्वय है। इतिहास का वर्णन इस कहानी की किस्सागोई को नक्काशीदार बनाता है। इस कहानी का मुख्य पात्र नब्बे वर्षीय नानी है, जो ऐसी नारी विमर्श का प्रतिनिधित्व करती है, जो ममता, त्याग और संघर्ष का प्रतीक है। इस कहानी में अतीत आँखों के सामने नाच उठता है और वर्तमान कौतूहल जगाता है। इस कहानी में समाज, इतिहास, नारी विमर्श, मनोविज्ञान, इनसानी जिस्म के भीतर से झाँकता हैवान आदि समस्त तत्वों का समन्वय हुआ है। 'दरार' जातिवाद को लक्ष्य करके लिखी गई जयप्रकाश कर्दम की एक अच्छी कहानी है। राहुल कुमार सिंह की 'जगन्मिथ्या' शीर्षक कहानी में अम्मा को केंद्र में रखकर आधुनिक युग में मनुष्य की भागदौड़ बनती जा रही जिंदगी का विवरण प्रस्तुत किया गया है। थीम और थॉट विहीन कहानी की भाषा में प्रवाह है। भाषा के प्रवाह में भागते हुए पाठक को अंत में हाथ कुछ नहीं आता है। मनुष्य की कुंठा को लेकर लिखी गई सर्वेश्वर प्रसाद सिंह की 'मुखौटा' एक अच्छी कहानी है। इनमें कथाकार ने मनुष्य के मुखौटे ओढ़े हुए विभिन्न रूपों का वर्णन किया है। मनुष्य के चेहरे पर मुखौटा होता है, मनुष्य को जो दिखाई देता है वह वास्तव में होता नहीं है, जो होता है वह दिखता नहीं है। हर मनुष्य के भीतर स्त्री की देह को भोगने की इच्छा होती है। इस कहानी में कथावाचक एवं लक्ष्मी की दोस्ती के माध्यम से कथाकार ने प्रेमानुभूति का बड़े ही रोचक ढंग से विश्लेषण किया है। 'कांधे पर घंटाघर' मनीष वैद्य की कहानी है। इसमें घंटाघर को केंद्र में रखकर घटनाओं को बड़ी ही संजीदगी के साथ बुना गया है। कहानी में बशीर मियां की मानसिकता की बड़ी सुंदर विवेचना हुई है। उसका कथन– 'घंटाघर पर बहुत गिद्ध मंडरा रहे हैं', एवं "आज

रात जब सारा शहर सो रहा होगा तब मैं घंटाघर को कंधे पर उठाकर ले जाऊँगा", उसकी मानसिक स्थिति का संकेत करता है, तथा कहानी के शीर्षक की सार्थकता भी सिद्ध करता है। आबिद सुरती की 'अधर्म युद्ध' शीर्षक कहानी में धर्म की अद्भुत व्याख्या की गई है। यह व्यक्ति और समाज को भ्रमित करनेवाले पंडितों, मौला, पादरियों एवं धर्म गुरुओं के पतन की कथा है। कथाकार ने धर्म के मूल को तिरोहित करते हुए इसका अपना अर्थ निकालने वालों पर व्यंग्य किया है। कहानी के अंत में एक सूफी से यह कहलवाना कि "सारे धर्म दफन हो चुके हैं अब तेरे बंदे आजाद है" यथार्थ सत्य है। अवधेश प्रीत की 'ब्रेकअप' कॉलेज में पढ़नेवाले युवक–युवतियों के बीच पनपते प्यार की अनिर्णीत कहानी है। अवधेश प्रीत एक किस्सागो है। बस, कहते जाना। कहानी की संरचना सुगठित है, पर अंत पाठक को विस्मित कर देता है। शिख और अमन जैसे पात्रों के असफल प्रेम संबंध के बहाने कथाकार ने यह कहने की कोशिश की है कि प्रेम एकाधिकार का नाम नहीं है; प्रेम सिर्फ अपनी इच्छा को दूसरे पर थोपने का नाम नहीं, बल्कि प्रेम एक दूसरे को समझने और एक दूसरे की भावनाओं की कद्र करने का नाम है। युगीन संदर्भ में यह कहानी प्रासंगिक है। प्रमोद द्विवेदी का 'साहब का पेशाब घर' एक व्यंग्य कहानी है। ऑफिस में साहब के लिए एक अलग पेशाब घर के बनने के कारण, बनाए जाने की प्रक्रिया, ऑफिस के कर्मचारियों की प्रतिक्रिया तथा उसके परिणाम की बड़ी ही व्यंग्यात्मक लहजे में अभिव्यक्ति हुई है। तथ्यों के प्रस्तुतीकरण में विशिष्ट प्रकार के हास्य का पुट है। कहानी का शब्द संयोजन अद्भुत है। 'माँ का कमरा' जयश्री राय की एक संवेदनात्मक कहानी है। कहानी में कल्पना की उड़ान है। पूरी कहानी में नारीगत संवेदना की अभिव्यक्ति हुई है। अमरेंद्र नाथ वर्मा की 'नील बदन' एक कलात्मक कहानी है इसमें चरित्रों का गठन एवं कथा विन्यास कलात्मक ढंग से हुआ है कहानी में जिज्ञासा भाव बना रहता है। स्क्रीन रीडर हरीश के घर में अकस्मात दो स्त्रियों के आगमन से उत्पन्न परिस्थितियों का कथाकार ने बड़ी ही कलात्मकता के साथ वर्णन किया है। प्रकृति करगेती की 'कैकई, कंडक्टर और बस हो चली बुढ़िया' अपने ढंग की अनोखी कहानी है, स्त्री विमर्श से इधर अत्यंत शांतिपूर्ण एवं स्वाभाविक तरीके से 'बस हो चली बुढ़िया' के चरित्र में कथाकार ने वास्तविक स्त्री विमर्श का मुद्दा समाहित किया है।

हंस की इन कुछ कहानियों के अतिरिक्त भी बहुत सी कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं, जिनमें गुलाम गौस अंसारी की 'जहन्नुमी औरतें' और अनद्य शर्मा की 'हिज्र के दोनों और खड़ा है एक पेड़ हरा', हेमंत कुमार की प्रश्न वहीं अटका है', तरुण भटनागर की 'जख्में कुढ़न', नरेश कौशिक की 'रब्बी', आदि भी अच्छी कहानियाँ हैं।

पंकज सुबीर के संपादन में शिवना प्रकाशन, सीहोर मध्य प्रदेश से विभोम स्वर का प्रकाशन होता है, यह वैश्विक चिंतन की अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका है। इस में देश एवं विदेश की धरती पर बसे भारतीय प्रवासी कथाकारों की बहुसंख्यक कहानियों का प्रकाशन होता है।

अप्रैल–जून, 2020 अंक में ग्यारह कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। सीनी वाली शर्मा की 'गिरेबां' मनोविश्लेषणात्मक पारिवारिक कहानी है। एक बहू जब सास की भूमिका में होती है और उसकी भी बहू जब उसे अकेली छोड़कर शहर को चली जाती है, तब उसे अपनी भूल का एहसास होता है। उसे समझ में आता है कि क्या होता है अकेली होने का दर्द। इस कहानी में इसी सच का उद्घाटन हुआ है। वृद्धावस्था की एकाकी जीवन की अनुभूतियों की बड़ी ही सुंदर व्याख्या हुई है। 'एल पीला उदास आदमी' हर्ष बाला शर्मा की व्यवस्था पर व्यंग्य करती अच्छी कहानी है, इसमें पीलू मास्टर के माध्यम से कथाकार ने शिक्षा जगत में व्याप्त अराजकता एवं भ्रष्टाचार तथा स्वप्न भंग होने की स्थिति में एक आदमी की मानसिकता का बड़ा ही सटीक वर्णन किया है। डॉ. सुमन सिंह की 'और शिलाखंड पिघलने लगा' प्रेम त्याग और सफल दांपत्य की कहानी है। इसमें यशोधरा और प्रदीप सर के अनोखे प्यार की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। रेखा राजवंशी की 'फेयरवेल' ऐडवर्ड की

इच्छा मृत्यु की घोषणा पर मनाई जानेवाली फेयरवेल पार्टी का विवरण प्रस्तुत करती एक मनोरंजक कहानी है। डॉ. कुसुम की 'अकेलापन' जीवन की व्यावहारिकता का उद्‌घाटन करती दिलचस्प कहानी है। भारतीय समाज में नारी हमेशा से दोयम दर्जे में रही उस पर पुरुष का वर्चस्व रहा। इसी कारण समाज और परिवार में बेटे और बेटियों के बीच अंतर बना रहा। ममता शर्मा की कहानी 'माँ तुम मदर इंडिया क्यों नहीं बन गई' में इसी सत्य का उद्‌घाटन हुआ है। कहानी में एक पुत्री अपने और भाई के प्रति माँ के दोहरे चरित्र को उजागर करती है। विवेक रिझावन की 'पोस्टमार्टम' एक रहस्य और रोमांच भरी कहानी है। इसमें अपनी पत्नी नंदिनी की मृत्यु पर उसके पोस्टमार्टम की रिपोर्ट को पढ़कर सुनाते हुए उसके पति ने कहा– "इसकी हत्या हुई है। वह भी पच्चीस–छब्बीस वर्ष पहले।" इस कहानी में यह स्पष्ट किया गया है कि जन्म लेती हर पुत्री की तत्काल हत्या होती है, क्योंकि परिवार बेटी के जन्म पर दुख मनाता है। 'चाऊमीन' मुरारी गुप्ता की प्रेम कहानी है। ब्लिंकहॉट रेस्तरां के टेबल पर चौमिन का मजा लेते माइक्रोसॉफ्ट की एक प्रोजेक्ट पर काम करने वाली काव्य और रोहन के बीच होनेवाले वार्तालाप पर कहानी के कथानक का संपूर्ण चक्र घूमता है। इन दोनों के बीच पनपते और फिर अंत को प्राप्त होते अधूरे प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। अभिषेक मेवाड़ा की 'उसका युद्‌ध' इनकी पहली कहानी है। इस संवेदनशील कहानी में कथाकार ने एक आश्रय विहीन लड़के के दुखी जीवन और उसकी दर्दनाक मौत पर अपनी संवेदना व्यक्त की है इस अंक में अन्य कहानियाँ भी संकलित हैं जो अच्छी हैं।

विभोम स्वर के जुलाई–सितंबर अंक में दस कहानियाँ है। गीताश्री की 'उनकी महफिल से हम उठ तो आए' प्रेम कहानी है। मनीष वैद्‌य की 'धरती पर इंद्रधनुष' दो रंगकर्मी की प्रेम कहानी है। रंगों की दुनिया में एक लड़की के संपर्क में एक लड़का आता है जो रंगों से खिलवाड़ करता सम्मान और शोहरत प्राप्त करता है। यह एक कलात्मक कहानी है। 'कैसे बताऊँ बिटिया को....' उषा राजे सक्सेना की एक विवरणात्मक कहानी है, इसमें एक मनोचिकित्सक की मनोरोगियों की इलाज संबंधी अनुभूतियों का वर्णन हुआ है। अरुण सब्बरवाल की 'इंग्लिश रोज' एक अद्‌भुत प्रेम कहानी है। प्रेम, प्रेम की कोई ऋतु नहीं होती है। प्रेम होता है। शरीरी प्रेम अस्थायी होता है, वैसा प्रेम शरीर तक ही सीमित रहता है। शरीरी सौंदर्य मिटते ही ऐसा प्रेम स्खलित हो जाता है, किंतु आत्मिक प्रेम का संबंध शरीरी सौंदर्य से नहीं होता है, वह तो शाश्वत है। चिरंतन इस कहानी में दोनों प्रकार के प्रेम का उल्लेख हुआ है। 'शहर' मनोज शर्मा की रोमांचक कहानी है। यह गाँव से शहर आए दीनानाथ नामक सत्तर वर्षीय बुजुर्ग की कहानी है जो अपने भतीजे के पास आया है। पर वह अपने भतीजे का घर भूल कर भटक जाता है। उसकी भटकन के माध्यम से कथाकार शहर की बहुमंजिली अवस्थिति एवं शहरी जीवन की व्यस्तता का वर्णन करता है। 'इलाज' प्रियंका की पहली कहानी है। इसमें कोमा में पड़े पिता के इलाज की समस्याओं के विवरण के माध्यम से कथाकार ने आज की संततियों की स्वार्थी वृत्ति का सटीक वर्णन किया है। इस अंक में अन्य कहानियाँ हैं जो मार्मिक हैं।

विभोम स्वर की अक्तूबर–दिसंबर में भी दस कहानियाँ संकलित हैं। प्रज्ञा की 'मौसमों की करवट' लंबी विवरणात्मक कहानी है। इसमें संजू की चार सहेलियों रश्मि, रेनू, आशा और सीमा के सान्निध्य में संजू के जीवन में घटित दर्दनाक घटनाओं का चित्रण किया गया है। 'टी सेट' उषा किरण की नारी सशक्तिकरण की एक अच्छी कहानी है। हवा का झोंका 'जिंदगी इतनी भी मुश्किल नहीं' उसके कानों में कहकर उसके आत्मविश्वास को प्रदीप्त कर जाता है। मार्टिन जॉन की 'ढलती शाम का हमसफर' एक कृतज्ञ सुए टिया की कहानी है, जो पिंजड़े का द्‌वार खुल जाने पर बाहर तो निकल जाता है, किंतु एकाकी जीवन जीनेवाले वृद्‌ध और उसकी वृद्‌धा पत्नी के एहसानों को याद कर उनके पास लौट आता है। 'शहर भीतर गाँव, गाँव भीतर शहर' डॉ. विनीता राहुरीकर की एक संवेदनात्मक कहानी है। कथानायिका सुमित्रा के आत्म विस्मृत चिंतन एवं क्रिया व्यापार को केंद्र

में रखकर रची गई इस कहानी में बढ़ते हुए शहरीकरण और तत्परिणामस्वरूप गाँव एवं उसके आसपास की खेत खलिहान के विलुप्त होने की दर्दनाक स्थिति का चित्रण हुआ है। मीना पाठक की 'व्यस्त चौराहे' मानवीय संवेदना से ओतप्रोत एक अच्छी कहानी है। इस कहानी में एक व्यस्त चौराहे पर बैठी एक पागल अम्मा के प्रति पास के कार्यालय में कार्यरत आरोही के मन में संवेदना का भाव जगता है, और वह अपनी समाजसेवी सहेली दिव्या के माध्यम से उसे अस्पताल और अस्पताल से आश्रम पहुँचा देती है। आरोही की संवेदनशीलता की बड़ी ही मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। 'ममता की कशिश' ममता त्यागी की एक मर्मस्पर्शी कहानी है। इसमें एक नारी के स्वाभिमान एवं माँ की ममता का चित्रण नीतू के जीवन क्रम के हवाले से किया गया है। अंक में 'परदेस के पड़ोसी' वह उस्मान को जानता है, नियर अबाउट डेथ आदि अच्छी कहानियाँ है।

आधारशिला के गिरिराज किशोर विशेषांक मार्च 2020 में गिरिराज किशोर की प्रसिद्ध कहानी 'तरकस' के साथ पाँच कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। तरकस राजनीति प्रेरित कहानी है। स्वप्निल श्रीवास्तव की 'जगतपुर की कथा' लंबी विवरणात्मक कहानी है, इसमें एक गाँव की रियासत में परिवर्तित होने तथा उस रियासत के राजा दुर्ग विजय सिंह की जिंदगीनामा एवं बंजारों की बस्ती वालों से उनकी बेटी करीना को चुरा ले आने के फलस्वरुप उत्पन्न संघर्ष एवं उनसे राजा के सुलहनामें का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। एक व्यक्ति के जीवन की दीर्घ यात्रा का समेकित विवरण प्रस्तुत करती दिनेश पाठक की 'ढलती शाम में' एक मार्मिक कहानी है। इसमें दमयंती मैडम की भागदौड़ की जिंदगी का विवरण प्रस्तुत करते हुए कथाकार ने एक सामान्य मनुष्य के संपूर्ण जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है। 'परदेस की पतझड़' अरुणा सभरवाल की कहानी है, इसमें भाषा की समस्या से ग्रस्त अंकलजी को जया नाम की लड़की सक्षम बनाती है। कमलेश भारती की 'अपडेट' विपक्ष की राजनीति के परिप्रेक्ष्य में लिखी गई एक दिलचस्प कहानी है। एक छोटी–सी घटना को तिल का ताड़ बनाकर विपक्ष सरकार को घेरने का उपक्रम करता है। इसमें विपक्ष के साथ–साथ मीडिया की भूमिका का भी दिलचस्प विवरण प्रस्तुत किया गया है, जो हास्यास्पद भी है, और दिलचस्प भी।

वागर्थ के सितंबर, 2020 के अंक में अनेक कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। इसमें सदियों से सुरक्षित बैगा जनजाति की एक लड़की को केंद्र में रखकर उर्मिला शुक्ल की लिखी गई कहानी 'ताल वनों के साए में' प्रकाशित हुई है। इस कहानी में आदिवासी स्त्रियों के शोषण का चित्र खींचा गया है। इस 21वीं सदी में भी जबकि कितनी रूढ़ियाँ टूटीं, कितने बदलाव आए, यह जनजाति शोषण मुक्त नहीं हो सकी है।

वनिता नारी केंद्रित कथा मासिकी है। इसमें महिला कथाकारों की कहानियाँ ही प्रमुखता से प्रकाशित होती हैं। इसकी 2020 के अंकों में कहानियों का प्रकाशन हुआ है। संगीता माथुर की 'फ्रेंड रिक्वेस्ट', पल्लवी फंदीर की 'अभिसारिका', गीता सिंह की 'माँ और मोह', टिंकी वर्मा की 'ऑलराउंडर', पूनम पाठक की 'मोस्ट वांटेड लव' दीप्ति मित्तल की 'शुक्रिया जिंदगी', दीपा पांडे की 'मासूम सवाल', मेघा राठी की 'चमेली का करवाचौथ', माधुरी गुप्ता की 'नई पीढ़ी', आभा श्रीवास्तव की 'उस रात की बात', प्रकाश श्रीवास्तव की 'नई रोशनी' आदि के नाम उल्लेख्य हैं।

इन पत्रिकाओं के अतिरिक्त देशभर से अनेक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ है, जिनमें कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। आजकल, मधुमती, कथा बिंब, किस्सा आदि के नाम उल्लेख्य हैं।

वर्ष 2020 की कहानियों के सम्यक सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष की कहानियों में गुणात्मक वृद्धि हुई है। प्रेमचंद ने कहा है– "सबसे उत्तम कहानी वह होती है, जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो"। प्रेमचंद के इस कथन के आलोक में जब समीक्ष्य वर्ष की उपलब्ध कहानियों पर दृष्टिपात करते हैं तो, यह पाते हैं कि आज जो कहानियाँ लिखी जा रही हैं, उनका आधार प्रायः मनोवैज्ञानिक

सत्य है। मुख्यतः महिला कथाकारों की कहानियों में यह तत्व बहुतायत के साथ देखने को मिलता है।

एक समय कहानी विधा में विमर्श की धूम मची थी– दलित विमर्श, नारी विमर्श, सेक्स विमर्श। जब विमर्श की बात आती है तो राजेंद्र यादव की याद आ जाना स्वाभाविक है। उन्होंने हंस के माध्यम से इन विमर्शों, मुख्य रूप से दलित विमर्श की वकालत की। उन्होंने दलित विमर्श को पुख्ता आधार दिया। प्रेमचंद ने जिन दलितों, पिछड़ों एवं उपेक्षितों के लिए पंथ का संधान किया, उठकर जीने और शोषण के विरुद्ध संघर्ष का मंत्र दिया, राजेंद्र यादव ने उनके लिए राजमार्ग का निर्माण किया, और आज ये मुख्यधारा में मिल गए हैं। समीक्ष्य वर्ष में ऐसा कोई आंदोलन नहीं चला, तथापि दलित विमर्श की कुछ कहानियाँ अवश्य लिखी गईं। उषा किरण खान की 'हँसी–हँसी पनवा खिल ओउले केइमनवा', कमलेश भारती की 'अपडेट' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं।

समीक्ष्य वर्ष में जीवन–जगत में घटित घटनाओं को केंद्र में रखकर कहानियाँ लिखी गई हैं। कोरोना वर्तमान समय की सबसे बड़ी त्रासदी है। कोरोना वायरस की विश्वव्यापी लहर ने करोड़ों जानों को लील लिया है, और लीलती जा रही है। इस विभीषिका को केंद्र में रखकर बहुसंख्यक कहानियाँ लिखी गई हैं। डॉ. चुम्मन प्रसाद श्रीवास्तव की 'रुका न पंछी पिंजरे में', पवन के श्रीवास्तव की 'कोठे पर कोरेंटिन' आदि में कोरोना की विभीषिका का वर्णन हुआ हे।

प्रेम मानव की आदिम भूख है। आदिकाल से ही मानव इस अनिवार्य भूख को विभिन्न तरीकों से मिटाने का उपक्रम करता रहा है, तत्परिणाम स्वरूप साहित्य और मुख्यतः कहानियों में भी प्रेम की अभिव्यक्ति होती रही है। किंतु वर्ष 2020 की खासियत यह है कि प्रवासी भारतीय कथाकार सुधा ओम ढींगरा ने विश्व मंच पर विराजमान भारतीय कथाकारों की प्रेम कहानियों को एक प्लेटफार्म पर लाकर खड़ा कर दिया। इसके साथ पंकज सुबीर ने अपनी 'प्रेम' कहानियों को 'रिश्ते' की डोर में बाँधकर उजागर किया है। अम्लघात विश्वमानवता के लिए एक भयंकर संत्रास है। इस पर छुटपुट रूप सें कहानियों का प्रणयन होता रहा है। वर्ष 2020 में इस संत्रास को अभिव्यक्त करती कहानियों को एक स्थल पर प्रस्तुत कर सुधा ओम ढींगरा ने एक महत्व का कार्य किया है। शिक्षा एवं संचार माध्यमों के विकास ने जहाँ जीवन के अन्य क्षेत्रों को प्रभावित किया है वहीं साहित्य और मुख्य रूप से कहानी विधा को भी प्रभावित किया है। तदविषयक रचित कहानियों की लंबी श्रृंखला है।

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी कालजयी कहानियों की रचना हुई है। पंकज सुबीर की 'इलोई! इलोई! लामा सभारक्तानी', नरेंद्र नागदेव की 'हाउस ऑफ लस्ट', कृष्ण बिहारी की 'सेन चाइल्ड' मनोरंजन सहाय सक्सेना की 'जिंदगी– रेल की समानांतर पटरी', डॉ. विनीता राहुरीकर की 'शहर के भीतर गाँव, गाँव के भीतर शहर' आदि वर्ष की कालजयी कहानियाँ हैं। विवेच्य वर्ष 2020 में बड़ी संख्या में विदेशी एवं हिंदीतर भारतीय भाषाओं की कहानियों का हिंदी अनुवाद हुआ है। अनुवाद की प्रक्रिया से साहित्य की विधा में श्रीवृद्धि होती है। मधुमती, हंस, सुसंभाव्य, दैनिक हिंदुस्तान आदि पत्रिकाएँ अनुवाद कार्य में सतत संलग्न हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वर्ष 2020 की कहानियों का पाट बड़ा ही विस्तृत है। यह वादों के विवाद और विमर्शों के अवसाद से मुक्त, प्रेम एवं रिश्तों की सीधी पगडंडी पर चल रही है, जहाँ इसके समक्ष समतल मैदान, उर्वरा भूमि, जिसके आसपास उठती बहुमंजिली अट्टालिकाएँ हैं, तो बारिश में भीगती कृषक किशोरियों का मधुर संगीत भी है।

– द्वारा कुमार राकेश, ग्रीन फील्ड स्कूल, ब्लॉक ए–2, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली–110029

❑❑❑

19

हिंदी कविता

कृष्ण कुमार 'कनक'

सृष्टि के आदि में जिस समय सृजन का नवांकुर पल्लवित हो रहा होगा, तब सर्वप्रथम जो ध्वनि ध्वनित हुई होगी, निःसंदेह रसपूरित ही रही होगी/यानी कि रससिक्तता का प्रादुर्भाव सृष्टि के आदि में ही हो गया होगा/अर्थात् ध्वनियाँ (परः सन्निकर्षः संहिता) संहित होकर शब्द में रूपांतरण के साथ ही अर्थ के रहस्य के संयोग (हलोऽन्तरा संयोगः) से कृत–कृत्य होकर विचरण हेतु आतुर हुई होंगी/तब वह रागात्मक प्रतिध्वनि सहज ही मानवाकार हो गई होगी/या फिर यूँ कहें कि काव्याकार हो उठी होगी/कहने का सहज अभिप्राय यह है कि पहले काव्य आया या मनुष्य तो मैं तो यही कहूँगा कि मानव और काव्य दोनों की उत्पत्ति सगे सहोदर के रूप में ही हुई है।

अनंत काल से मानव का सहचर रहा काव्य प्रथमतया बाल्मीकि जी की क्रौंच वेदना से निःसृत मात्र है, यह कहना मात्र काव्य के अनहद नाद व अनुभूति जन्य आनंद की पराकाष्ठा एवं वैभव के मर्म को संकुचित कर देने जैसा प्रतीत होता है। मैं स्वयं भले ही लयबद्ध व छंदयुक्त काव्य का प्रबल समर्थक हूँ किंतु केवल छंदों का ज्ञाता होना ही कवि होने की कसौटी है तो मैं इस तथ्य के प्रति भी कट्टर नहीं हूँ/तब नीरज जी की पंक्ति का स्मरण आता है–

जब भाव अधर तक आए।
बिन कहे न मन रह पाए।
बस वह कविता बन जाए।

काव्य के संदर्भ में भरतमुनि, आचार्य मम्मट, दण्डी, विश्वनाथ, भास, भारवि, कालिदास से लेकर पाश्चात्य कवि बर्डसबर्थ, मिल्टन, कीट्स व पंत, प्रसाद, निराला, महोदवी, बच्चन, नीरज आदि काव्य मर्मज्ञ विद्वानों की परिभाषाओं में भी यही सार पाता हूँ कि काव्य हृदय के अकह भावों की शाब्दिक व रसमय अभिव्यंजना है। काव्य ही वह माध्यम है जो मानव के प्रति पल का साथी है। हर्ष, विषाद, प्रलाप, आह्लाद, आनंद उत्साह आदि विविध मनोभावों की व्यंजना का प्रस्तावक है। मानव हेतु प्रत्येक क्षण जीवनदायिनी शक्ति है और प्राण के उदात्त उद्वेलन का संपोषक भी/बंधन भी और मुक्ति भी/पीर का शरीर भी और अधीर का धीर भी/वह काव्य ही तो है जिसे दिनकर की उर्वशी जीत लेना चाहती है और पुरुरवा हार जाना चाहता है। कालिदास का यक्ष जिसे अपना मेघ मान बैठा है और शकुंतला उसे अपनी दुष्यंती मुद्रिका/वह भी तो काव्य ही है जो ठाकुर को.....

योजिन के योजी मन मौजिन के महाराज
जालिम दमाद हैं अदानिया ससुर के।

कहने की हिम्मत प्रदान करता है और कुम्भनदास को साहस भी तो काव्य ने ही दिया है कि वे कह पाते हैं–

संतनि को कहा सीकरी सों काम।
आबत जात पनहियाँ टूटीं, बिसरि गयौ हरि नाम।

काव्य सुख–दुःख, हर्ष–विषाद, जय–पराजय, हानि–लाभ प्रत्येक स्थिति में मानव का साथी रहा है। दृगकोर से छलककर धूल को गीला करता जल प्रपात काव्य ही तो है। उदात्त भावों को द्रवीभूत कर उरःस्थ होता हृदय का गलित उत्कट भाव काव्य के पटल पर ही तो परिपूर्ण होता रहा है इसमें संदेह कहाँ! भले ही मैथिली शरण गुप्त ने भारत भारती में कहा हो–

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।

किंतु, मनोरंजन की कल्पना को काव्य से पृथक कर देना भी तो उचित नहीं! क्योंकि कोरे उपदेश भी तो जीवन नहीं हो सकते। तब मैं तो उपदेशात्मक मनोरंजन का ही पक्षपाती हो जाना चाहता हूँ। यद्यपि गुप्त जी का भाव भी यही है। नवरस की चासनी में भीगा हुआ काव्य का संसार अनंत काल से ही मानव जीवन की सार्थकता का आभास रहा है। कोरोना काल भी इस अनुभूति से अछूता नहीं रहा। इस कालखंड ने मानव जाति को सिखा दिया कि वह कुछ भी नहीं है। यानी कि राजा, रंक, फकीर कुछ भी नहीं। तो मात्र एक बुलबुला है, जिसमें किसी अदृश्य शक्ति (जिसे मानव, ईश्वर कहता है तथा विविध नामों से संबोधित करता रहा है) ने हवा भर रखी है। न जाने कब इसमें छेद हो जाए और फिर सब कुछ शून्य। ऐसे में भी काव्य ही तो था जिसने मानव जाति में जिजीविषा को जागृत रखा।

वर्ष 2020 का प्रारंभ तो पारंपरिक काव्य के साथ ही हुआ पर कोरोना पहले तो चुटकुलों के रूप में चढ़ा और बाद मे व्यंग्य बाण होकर गंभीर काव्य के परिधान पहनकर उपस्थित हो गया। 22 मार्च, 2020 को रविवार का सा आनंद देता जनता कर्फ्यू एक दिन बाद ही संपूर्ण लॉकडाउन में बदला तो मानो जीवन की गाड़ी ही पटरी से उतर गयी। जो गाँव में रहते थे वे तो फिर भी अपने खेतों पर समय गुजार पा रहे थे, किंतु जो नगरों में जीविकोपार्जन हेतु गए थे, उन्हें आजीविका के ही लाले पड़ गए। इस बीच कवियों को काव्य सृजन हेतु मजदूरों का पलायन, ढोंगी समाज–सेवियों की समाज सेवा, नेताओं का छुटभैयापन, और पुलिस का डंडा तथा स्वास्थ्य कर्मियों की निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा आदि कच्चे माल के रूप में खूब मिले किंतु उनकी रचनाओं को तालियों के उपहार न मिल सके। फिर भी सृजन का पथ अवरुद्ध न हुआ। कवियों को अब भी आशा थी कि– अँधेरा छँटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा और फिर होती भी क्यों न? यह सब हमारे कवि कुल के सिरमौर रहे, पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी ने जो कहा था। बस यही आशा सृजन के पथ को जीवंतता देती रही। इस घोर संकट की घड़ी में एंड्रॉइड फोन ने दूरियों को कम करने के उपागम भी प्रदान किए। वरिष्ठ व बुजुर्ग दोनों ही प्रकार के कवियों को फेसबुक लाइव आदि के माध्यम से पूरे देश ने जी भरकर सुना। स्फुट रचनाओं के साथ–साथ इस वर्ष कई कवियों की पुस्तकों का भी प्रकाशन संभव हुआ।

वर्ष 2020 में प्रकाशित कृतियों पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि इस वर्ष सर्वाधिक चार कृतियों का प्रकाशन; फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश निवासी साहित्य–भूषण डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी का है। जिनमें प्रथम कृति 'सनेह ब्रजवानी का' अग्रगण्य है। इस पुस्तक की भूमिका लिखने का अवसर मुझे मिला। अतः संपूर्ण कृति को अक्षरशः पढ़ चुका हूँ। ब्रजभाषा हिंदी की एक प्रमुख बोली होने के साथ–साथ हिंदी काव्य इतिहास के भक्तिकाल से रीतिकाल एवं भारतेंदु युग तक पूरे छह सौ वर्षों पर्यंत प्रमुख काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। यद्यपि वर्तमान समय में भी ब्रजभाषा में काव्य सृजन हो रहा है, किंतु अब वह प्रतिष्ठा खड़ी बोली हिंदी पा चुकी है। फिर भी जो कुछ ब्रजभाषा के नाम पर सृजित हो रहा है, उसमें डॉ. यायावर जी की कृति 'सनेह ब्रजवानी कौ' ही अग्रगण्य है। वास्तव में यह कृति सूरदास के समय से भ्रमर–गीत परंपरा के क्रम की ही एक कड़ी है। यद्यपि इस परंपरा में अनेक कवियों ने गोपी उद्धव संवाद के कथानक को इतना कल्पित किया है कि उस भाव की और अधिक कल्पना संभव प्रतीत नहीं होती तथापि डॉ. यायावर ने भ्रमर गीत प्रसंग को सवैया शैली में बाँधते हुए,

कृष्ण–उद्धव संवाद, उद्धव गोपी संवाद, कुविजा का कथन तथा कुछ स्फुट कवित्त व सवैया लिखे हैं। इन सभी छंदों की विशेषता यह है कि प्रत्येक छंद में किसी न किसी लोकोक्ति अथवा मुहावरे का प्रयोग अवश्य हुआ है किंतु विशेष बात यह है कि यह सब सायास न होकर अनायास हुआ है जिसने कृति को मनहर व संग्रहणीय बना दिया है यथा–

जाइकें दूरि दिखावत आँखिं, जा श्याम ने ऐसी करी मन मानी।
ताहू पै जोग कौ जहर पिवावत, बाबरे ऊधव की यह बानी।
कारौ जो है नख तें सिख लों, तासों औरू न बात कहू अनुमानी।
ठीक कही ब्रज के सब लोगनि, कारे कौ काटौ न माँगतु पानी।

उपरोक्त कृति डॉ. यायावर की 31वीं कृति है। भाषा का माधुर्य व मनहर शब्दावली, कथन की वक्रता, प्रतीकों की सहजता, एवं रससिक्त भावा–भिव्यक्ति कृति को दिव्य, भव्य व अलौकिक सिद्ध करने में सफल हुई है।

वर्ष 2020 में ही प्रकाशित डॉ. यायावर जी का दोहा संग्रह 'शाम पढे अवसाद' प्रकाशित हुआ है। इस दोहा सप्तशती में जीवन के जटिल यथार्थ बोध, नीतिपरकता, कवियों एवं रचनाकारों के गौरवपूर्ण चरित्र व स्वाभिमान, ऋतु वर्णन तथा राष्ट्रीय चेतना व भारत के महान व्यक्तित्व आदि पर शत्शताधिक दोहों का संकलन किया गया है। मानव जीवन के जटिल यथार्थ को दर्शाते हुए कवि राजनीतिक धूर्ततावाद, चरित्रिक ह्रास, आत्म निर्वासन, रिश्तों में घुली स्वार्थपरकता, बाजारीकरण व वैश्वीकरण में विलुप्त होती मानवीय संवेदनाएँ, मूल्यहीन होता हमारा समाज व निःस्वार्थ भाव से मानव सेवा के भाव से कोसों दूर भागता मानव एवं रोबोट होता जा रहा वर्तमान समाज आदि को दोहा रूपी 'बामन–विराट' में बाँधने का सफल पुरुषार्थ कर रहा है यथा–

आँख सुपर बाजार में रखे सड़क पर पाँव।
दफ्तर में हम खूब चले निज सपनों का गाँव।।
चेहरे पर चेहरे कई उसपर पर्दे सात।
नेता जी ने मुकुर को समझा दी औकात।।

कवियों के स्वाभिमान का वर्णन करते हुए डॉ. यायावर लिखते हैं–

जिसने तुझको पा लिया, छोड़ दिया संसार।
क्या अकबर क्या सीकरी, क्या दिल्ली दरबार।

फागुन की मकरंदी मधुरता लिए हुए अंतर्मन को प्रफुल्लित करता एक दोहा इस प्रकार भी है–

फागुन अब रचने लगा, सम्मोहक संबंध।
मौन अधर करने लगे, अधरों से अनुबंध।।

यहाँ हर ओर रस, लावण्य, माधुर्य का ही राज्य स्थापित है और कुछ भी नहीं। डॉ. यायावर जी की 33वीं काव्य कृति 'शिवोभूत्वा शिवम यजेत्' भी दोहा संग्रह है। प्रस्तुत संकलन में कवि की आध्यात्मिक चेतना व मौलिक अभिव्यक्ति का साक्षात्कार हुआ है इस संकलन में शिव वंदना में लिखे गए 701 दोहे हैं यथा–

मन में भस्मासुर बसे, मन में ही शिवसत्व।
मन में वैष्णव मोहिनी, मन में अमृत तत्व।।

अस्तु यह संपूर्ण कृति शिवत्व के विविध रूपों को चित्रित कर प्रस्तुत करने का माध्यम है। डॉ. यायावर की चौंतीसवीं पुस्तक भले ही काव्य कृति नहीं है किंतु काव्य के इतिहास में मील का पत्थर सिद्ध होगी। यह कृति 'नवगीत कोश' के नाम से प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत कृति में नवगीत के विविध पहलुओं पर विस्तृत व्याख्या तथा वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए चार सौ से अधिक नवगीत के सर्जकों के विषय में चर्चा तथा उनका परिचयात्मक विवरण तथा उनकी रचनाओं के अंश आदि को भी उद्धृत किया गया है। इस प्रकार डॉ. यायावर द्वारा हिंदी साहित्य को वर्ष 2020 में चार महत्वपूर्ण रत्न प्रदान किए गए हैं।

फिरोजाबाद नगर में प्रज्ञा हिंदी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट के प्रयासों के परिणामस्वरूप कोरोना की विपरीत परिस्थितियों में भी साहित्य सृजन का कार्य प्रगति पथ पर अग्रेषित रहा; फलस्वरूप कुछ अन्य काव्य कृतियाँ भी प्रकाशित हुईं जिनमें 'संबोधन तक आ पहुँचे' श्री प्रमोद बाबू दुबे 'आमोद' की अलौकिक काव्य धर्मा कृति है। ऋतुचक्र का आवर्तन, जीवन दर्शन, मूल्यों का संक्रमण, जीवन का कठोर

यथार्थ, समाज में व्याप्त विकृतियाँ, विसंगतियाँ, राजनीतिक विद्रूपता आदि सभी विषय उनकी संवेदना का अंग बनकर गीतों में ढले हैं यथा–

कल जो भ्रामक से लगते थे उनको आज नियामक देखा।
भोज–पत्र पर लिखा उपेक्षित हमने एक कथानक देखा।
सरिता सिमट नाव में बैठी,
गागर में सागर लहराया;
कंचन तपन आग से सहमा,
चोटों से डरकर घबराया;
विषधर के घर में अमृत का हमने कलश अचानक देखा।

प्रस्तुत संग्रह की ध्यातव्य विशेषता यह है कि ये बिंब प्रधान है; जोकि स्थिर, गतिशील ऐंद्रिक, सूक्ष्म, संश्लिष्ट, समाकलित, मिथकीय आदि अनेक प्रकार से दृष्टव्य हैं, यथा–

सपने ग्राहक बदहवास से घूम रहे बाजार।
दर्द महाजन बैठा–बैठा करता है व्यापार।

यहाँ प्रथम पंक्ति में भाव बिंब तथा द्वितीय पंक्ति में क्रिया बिंब है।

भारतीय मन की लोकधर्मी चेतना, ब्रज के रसवंत माधुर्य और कबीर की विरहिणी आत्मा को समन्वित करके यदि गीत का आकार दिया जाए तो वह गीत प्रमोद बाबू दुबे 'आमोद' का होगा। यह उनकी लोकधर्मी चेतना ही है जो उनसे कहलवाती है–

मेरे गाँव की गद्दर अमियाँ, और है निबुआ गुजराती।
मेरे गाँव से होकर जाना, ओरे बबुआ शहराती।

और यह उनकी कबीर की प्रतीक्षारत विरहिणी आत्मा है जो प्रियतम के पथ को अपलक निहारती है यथा–

वृंदावन सा मन बन जाता कभी–कभी अलबेला।
और उसी क्षण ये लगता है मैं तो यहाँ अकेला।
कुंभकार ने मुझे अधूरा गढ़कर फोड़ दिया।
एक अपरिचित वीराने में लाकर छोड़ दिया।

'संबोधन तक आ पहुँचे' कृति का शीर्षक गीत भले ही कोरोना काल से कई दशक पूर्व सृजित हुआ हो किंतु कोरोना काल में वह अपने संपूर्ण अर्थ अभिव्यक्ति के यथार्थ को प्राप्त हुआ है। गीत का एक अंश दृष्टव्य है–

पहले संज्ञा फिर सर्वनाम अब संबोधन तक आ पहुँचे।
बनकरके बिजली की रेखा तुम सम्मोहन तक आ पहुँचे।
****
चोंचों में उलझाए चोंचे;
तोते की आवाजें आईं।
पहले दो थीं फिर एक हुईं;
हम तुम दोनों की परछाई।
बंधन टूटे भुजपाशों के तुम अंतर्मन तक आ पहुँचे।

वर्ष 2020 में कवि कृष्ण कुमार 'कनक' की काव्य कृति 'उलझाता छविजाल तुम्हारा' उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की प्रकाशन अनुदान योजना के अंतर्गत प्रकाशित हुई। कवि एक ओर जहाँ भारतीय वीरों की महागाथा महाभारत के कृष्ण–विदुर संवाद के माध्यम से प्रस्तुत करता है वहीं–

तुम प्रकृति मैं पुरुष मिलकर चल करें कैवल्य साधन।
तुम करो चैतन्य मुझको मैं लुटाऊँ प्रेम का धन।
साँख्य गणना पूर्ण तब हो, प्राण को पा जाय ये तन।
प्राण तुझ बिन मैं अचेतन।

जैसी गीत पंक्तियों के माध्यम से साँख्य दर्शन की जटिल शब्दावली को प्रणय की औदात्य संवेदना से एकीकृत करके एक अभूतपूर्ण कार्य करता है। यहाँ तक कि वह प्रणय में पीड़ा देने वाले प्रणय–पात्र के प्रति आक्रोशित नहीं होता। यथा–

अधरों की मुस्कान छीनकर अपना महल बसाने वाले,
तेरा ये उपकार कि मेरा जीवन और सँवार दिया है।

संग्रह का गीतकार उपनिषद के मंत्र 'चरैवेति–चरैवेति' का विश्वासी है। वह निरंतर कर्मरत रहना चाहता है। यूँ तो कवि 'कनक' प्रणय और प्रकृति का चित्रण करने वाले गीतों में भी जीवन दर्शन को पिरोता चलता है, किंतु उसने कुछ गीत विशिष्ट जीवन दर्शन की संवेदना को अभिव्यक्ति देने के लिए ही लिखे हैं जैसे–

चाह से बढ़ती ललक फिर प्रेरणा,
कुछ परिश्रम और थोड़ी आस भी।
संकटों में धैर्य जिसका खो गया,
वह कभी भी बुद्‌ध हो सकता नहीं।
भावनाएँ शुद्‌ध हो जाएँ सभी,
पथ कभी अवरुद्‌ध हो सकता नहीं।

एवं

जो भी हो वह अच्छा ही हो, उस ईश्वर से कामना करो।
यह जीवन भी तो रण ही है, इस रण का तुम सामना करो।

आदि के माध्यम से कवि सकारात्मक चेतना के साथ जीवन जीने का पक्षधर है।

कवि के प्रणयबोध के गीतों की संख्या प्रस्तुत संकलन में सर्वाधिक है। जिन्हें पढकर ऐसा प्रतीत होता है कि किसी का टूटकर प्रेम करने की सच्ची अनुभूति कवि को हुई है। ऐसा लगता है मानो कवि का कनक हृदय वेदना की अग्नि में तपकर और अधिक कांतिमय हो गया है। यथा–

कसम से आज भी हम शर्त अक्षरशः निभाते हैं।

कली को देखते हैं और छूकर लौट आते हैं।

कनक की रचनाओं का बिंब विधान तथा प्रतीक विधान भी बहुआयामी है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि युवा कवि कृष्ण कुमार 'कनक' का गीत संग्रह गीत रसिकों को सात्विक आनंद प्रदान करने में पूर्णतः समर्थ है।

वर्ष 2020 में ही प्रकाशित कृति 'पथ में कैसा विश्राम पथिक' कवि कनक द्‌वारा संपादिक कृति है। इस कृति में डॉ. राम सेनही लाल शर्मा 'यायावर' जी द्‌वारा विगत चालीस वर्षों की काव्य यात्रा में सृजित कुछ चुनिंदा गीत हैं जोकि जीवन मूल्यों के संरक्षण, मानवीय संवेदना, राष्ट्रप्रेम व मातृभाषा हिंदी के गौरव को संरक्षित व संवर्धित करने वाले हैं जैसे–

जिसका मुकुट हिमालय सागर करे चरण–चुंबन।
चलो! चलें! उस मातृभूमि का कर लें अभिनंदन।

अथवा

हिंदी की जय बोलेंगे हम, तब होगा नव उत्थान सखे।

अथवा

हिंदी प्राणों की ऊष्मा है, तन से मन से स्वीकार करें।
हिंदी की जय–जयकार करें।।

अथवा

यों तो छोटी है पर चिड़िया, आतुर है सागर मंथन को।

आदि स्वाभिमान व मूल्यपरक गीतों के इस संकलन में कुल इकतालीस गीत तथा नवगीत संकलित हैं।

कनक द्‌वारा संपादित कृति 'पथ में कैसा विश्राम पथिक' कृति में डॉ. यायावर की तृतीय गीत कृति 'मेले में यायावर' में प्रकाशित गीत 'ऐसा हिंदुस्तान बनाएँ' भी संकलित है। विशेष बात यह है कि यह गीत आई.सी.एस.सी.ई. बोर्ड के कक्षा पाँच के हिंदी पाठ्‌यक्रम में पढ़ाया जाता है। उपर्युक्त गीत का एक अंश दृष्टव्य है–

जहाँ तृप्त आयत कुरान की हँसकर वेद मंत्र दुहराए।
आँगन पर बैठा गिरिजाघर 'गुरु वाणी' के सबद सुनाए।
'धम्मं शरंण गच्छामि' से गली–गली गुँजित हो जाएँ।
ऐसा हिंदुस्तान बनाएँ।

प्रस्तुत कृति के शीर्षक गीत की चर्चा के बिना तो निःसंदेह कृति का विवेचन कल्पना मात्र ही है अतः शीर्षक गीत का भी एक अंश देख लेते हैं–

ओझल हों सारे घाट–बाट बन्यायें उधर तरजतीं हों

पर्वत प्रचण्ड विकराल अग्नि पथ में आँधियाँ गरजतीं हों
चल, चल रे! चल अविराम पथिक! पथ में कैसा विश्राम पथिक?
****
आएँगे अनगिन लोभ मोह, हुँकार उठेंगी तृष्णायें
कानों में मधुरस घोलेंगी लालसा–भवन की कन्यायें
रहना तुझको निष्काम पथिक! पथ में कैसा विश्राम पथिक?

इस प्रकार यह कहना कदापि अतिशयोक्ति नहीं होगी कि प्रस्तुत कृति संपादित व अति सूक्ष्म ही सही किंतु भारतीय जीवन मूल्यों, संस्कृति व संस्कारों, आदर्श व नैतिकतापूर्ण संवेदना की संपोषक व संरक्षक कृति है।

कोरोना के संकट पर केंद्रित श्री संतोष कुमार सिंह की कृति 'कोरोना का संकट काल' वर्ष 2020 में प्रकाशित हुई है। मथुरा निवासी श्री संतोष जी की इस कृति में कोरोना काल की विविध परिस्थितियों पर मुक्तक छंद विधा की रचनाओं का संकलन किया गया है। ये सभी रचनाएँ मानवीय संवेदना तथा यथार्थ के धरातल पर सृजित हुई हैं यथा–

घायल सबका अंतस्थल है।
अभी न दिखता इसका हल है।
भूखा पेट, जेब है खाली,
चिंताओं से लथ–पथ कल है।

प्रस्तुत कृति में कृतिकार की मनोवेदना, मौलिक चिंतन विमर्श, आत्मानुभूति का उद्वेलन, नितांत निर्मूल हो चुकी चेतना का आह्लाद, नवोन्मेषी विप्लव आदि की सजीवता दृष्टिगत हुई है। यथा–

गुरुवर ने कक्षा में हमको, पर्यावरण का पाठ पढ़ाया।
जनसंख्या के बढ़ जाने से, बढ़े प्रदूषण यह समझाया।

इस प्रकार कृतिकार की चेतना धर्मी आत्मा का आलाप मुखरित होकर कृति के रूप में परिणित हुआ है। इसी वर्ष उनकी बाल गीत कृति 'रुपयों वाला पेड़' का भी प्रकाशन हुआ है।

कवि की समस्त रचनाओं में यथार्थवाद के ही दर्शन हुए हैं। वह भावों का स्नेहिल पुजारी है। उसकी मनोवेदना लगभग प्रत्येक रचना में मुखरित हुई है।

कन्नौज निवासी डॉ. शिव कुशवाह की संवेदनशील काव्य कृति 'दुनिया लौट आएगी' वर्ष 2020 में प्रकाशित हुई है। हिंदी साहित्य जगत में उभरते हुए कवियों में डॉ. शिव कुशवाह का नाम अग्रगण्य है। उम्मीदों से लवरेज डॉ. कुशवाह की कृति का शीर्षक 'दुनिया लौट आएगी' कोरोना काल में आवश्यक मानसिक व भावनात्मक औषधि की भाँति दृष्टिगत प्रतीत हुआ है। प्रस्तुत संकलन की रचनाएँ वर्तमान समय की नब्ज को टटोलती हैं, स्मृति की सरिता में किलोल क्रीड़ा करती हैं, वर्तमान की व्यथा के साथ अश्रुपात करती हैं और स्वर्णिम भविष्य के स्वप्न बुनती हैं और एक बार पुनः मानव प्रजाति को प्रलय के तांडव के पश्चात् नव सृजन की प्रेरणा देती हैं। 'बरगदी छाया से दूर' शीर्षक वाली रचना में 'बरगद' के बिंब के माध्यम से कवि ने सबल जन समुदाय के द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में अपनी जड़ें जमाए बैठे मठाधीषों की खोखली प्रतिष्ठा पर करारा प्रहार किया है। साथ ही कवि ने नए पौधों के आश्रय से नवीन विचारों, नई प्रवृत्तियों तथा नई दृष्टियों का स्वागत किया है तथा साहित्य जगत की विडंबनाओं को भी अपने कोप का भाजन बनाया है यथा–

पुराने बरगद
नहीं पनपने देते नए पौधे
जहाँ तक छाया रहती है
वहाँ नहीं उगने देते नई कलियाँ
उनकी आत्महंता जड़ें
सोख लेतीं हैं धरती की उर्वरा शक्ति
जहाँ कुछ उग आने की संभावना से इतर
उगने से पहले ही
सूख जातीं हैं नव कोंपलें

'एक आदमी' कविता आम आदमी की जीवन जीने की आकांक्षा और उसके संघर्ष को बड़ी ही सहजता से नदी और नाव के प्रतीकों के माध्यम से प्रकट करने में सफल हुई है। कवि समय की विद्रूपताओं को परखते हुए एक अजीब सी

छटपटाहट को दर्शाता है। 'बेरंग हो चुकी धरती पर' शीर्षक से कवि अपनी समय संबंधी निराशा को प्रकट तो करता है किंतु आशा की डोर नहीं छोड़ता। इस संदर्भ में एक काव्यांश दृष्टव्य है–

जाहिर हो चुका है
कि भाषा ने भी तोड़ दिया है अपना दम
कवि की कलम काँप जाती है बार–बार
कविता भी असमर्थ हो गयी है
चंद शब्दों की व्यथा कथा कहने में

कवि ने विविध शीर्षकों में आत्म विवेचन से परिपूर्ण रचनाओं में वर्तमान की अनंत मौलिक विद्रूपताओं, विसंगतियों, आत्मालाप की विभीषिका तथा दमनकारी व्यवहार से शून्य पड़ी संवेदनाओं को स्वर दिया है। तथा संकट के पश्चात जीवन रूपी ट्रेन के पुनः पटरी पर दौड़ने की आशा को बलवती किया है।

सुकोमल भावों के चितेरे कवि डॉ. अजिर बिहारी चौबे जोकि चरखारी महोबा निवासी हैं उनकी प्रथम काव्य कृति 'रेतीले कोने में हरी दूब सी आस' का प्रकाशन 2020 में हुआ। प्रस्तुत कृति में 136 पृष्ठों में कुल 111 रचनाएँ संकलित हैं। कहने की स्पष्टता तथा सहजता का एक उदाहरण–

कितने भोले प्रश्न तुम्हारे कितने मोमीले
सूख गयी भावों की नदिया तट भी रेतीले

****

जब–जब जागे तब–तब पाए सिरहाने गीले

इसी प्रकार 'माँ' पर लिखी एक रचना में डॉ. चौबे जी कहते हैं–

माँ तो बस माँ होती है
माँ जैसी दूसरी कहाँ होती है

वहीं राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में ऐसे भावों को स्वयं में समाहित किए हुए एक रचना रचनाकार की राष्ट्रभक्ति एवं पावन समर्पण की कहानी को उद्धृत करती दृष्टिगत हुई है–

काश तुम राह मुड़ गए होते
रास्ते फिर से जुड़ गए होते

इसी प्रकार किशोर और युवा हृदयों को गहराई तक प्रभावित करने वाली उनकी रचनाएँ पाठक को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करने वाली हैं। यथा–

दर्द बने गीत
अश्क बने गीत
अपने–बेगाने
बेगाने–अपने
जो देखे सपने बिखर गए
हम तो गए हार
तुम ही गए जीत

डॉ. चौबे जी की रचनाओं में गाँव से शहर आने का दर्द स्पष्ट छलका है। वे कहते हैं–

मुझे लौटा दो मेरा गाँव
वही अमराई फूल भरी
वही पगडंडी धूल भरी

इस प्रकार डॉ. अजिर बिहारी चौबे की रचनाओं में विविध विषयों का चित्रण हुआ है तथा इस संकलन में कवि ने गीत, मुक्तक, अतुकांत कविताओं, क्षणिका आदि के माध्यम से अपनी हृदयानुभूति को मुखरित किया है। प्रस्तुत कृति का कृतिकार सहज प्रेमी, राष्ट्रभक्त, अनुभूतियों आदि का सच्चा साधक हैं।

युवा कवि राजेश बघेल की कृति 'अगर तुम्हारा साथ मिले' सुंदर कलेवर में प्रकाशित हुई है। कवि की प्रथम कृति में काव्य की विविध विधाओं की शताधिक रचनाएँ संकलित हैं। ये रचनाएँ कवि के वातावरणीय अनुभव, आस–पास की परिस्थितियों तथा मौलिक उद्भावनाओं का साकार स्वरूप हैं। गाँव, शहर, आदि की अभिव्यंजनाओं को अभिव्यक्ति देता एक मुक्तक दृष्टव्य है–

चल बैठ किनारे पोखर के हम मित्रों से बतियाएँगे।
बातों बातों में पानी पर फिर से पत्थर तैराएँगे।
फागुन में मिलजुल कर फिर से
गलियों में रसिया गाएँगे।
चुपके–चुपके दादा जी का फिर से हुक्का सुलगाएँगे।

अवस्था के नए पड़ाव पर कवि पीछे मुड़कर देखता है तो उसे अनुभूति होती है कि भौतिकवाद व अर्थवाद के दौर में बहुत कुछ पाने की दौड़ में जो कुछ खोया है वह अब कभी पुनः प्राप्त न किया जा सकेगा। यथा–

सब कुछ है कुछ भी पास नहीं जाने कैसे समझाऊँ मैं।

बस कोई मुझको बतला दे वो बचपन कैसे पाऊँ मैं।

कवि मुक्त कंठ से अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है वह सामान्य जनमानस, किसान, मजदूर आदि की समस्त चेतना को स्वर देने तथा इन सभी के जीवन में पीड़ाओं के शूल बोने वाले धन कुबेरों, नगर सेठों, बाहुबलियों आदि के अनंत साम्राज्य की भर्त्सना में भी कवि का कंठ अवरुद्ध नहीं हुआ है।

जीवन की राहें हो जातीं अक्सर गंभीर किसानों की।

सेठों सरकारों के कारण बिगड़ी तस्वीर किसानों की।

युवा कवि राजेश बघेल की प्रथम कृति सहज व स्वाभाविक अनुभूतियों का नवोन्मेषी काव्य रूपांतरण है।

वर्ष 2020 की प्रकाशित कृतियों की शृंखला में हरदोई उत्तर प्रदेश निवासी श्री बृजनाथ श्रीवास्तव जी की नौवी काव्य कृति 'तलाश जारी है' नवगीत संग्रह के रूप में प्रकाशित हुई है। श्रीवास्तव जी प्रतिष्ठित नवगीतकार हैं। काली सड़कों से विचलित होकर कवि हृदय गाँव की अमराइयों की शीतल छाँव की ओर आकृष्ट है, यथा–

खो गए पगडंडियों के दिन
सलोने छाँव वाले
और मृग छौने सरीखे
मन कहाँ अब गाँव वाले

'तलाश जारी है' तो यह बात भी निश्चित है कि कुछ खोया होगा जिसकी तलाश में कवि ने न तो अपना प्रयास मध्यम किया है और न थकान की ही अनुभूति–

संसद से मंदिर तक चलती
राजभोग की धर्म कथाएँ
खाली पेटों को समझाते
सहज योग की नई कलाएँ

वर्तमान के मानव की व्यावहारिक संकीर्णता निर्ममता की हदें पार कर गई हैं। स्वार्थ सिद्धि हेतु मानव किसी भी हद तक जाने को तैयार है आम जन जीवन सामंती सोच से त्रस्त है। चारों ओर सिर्फ नाटकीय ढोंग बिखरा पड़ा है। खोए हुए मानवीय मूल्यों के लिए कवि की शब्द व्यंजनात्मक तलाश अब भी जारी है। वह सच के लिए व्यंग्यात्मक हो जाता है–

राम भजन को कोने में धर
राजनीति के ब्याहा
छद्म झूठ,
पाखण्डों के अब
मंतर पढ़ते स्वाहा

ऐसे ही विश्वकर्म की व्यापकता के उपागमों की समाविष्ट साधना के अपकर्श की पूर्णाहुति पर बाँटे जाने वाले महाप्रसाद की रहस्यमय मिठास भी काव्य व्यक्त हुई है। यथा–

आश्वासन अमरित में लिपटी
बँटी मिठाई है
बाहर बाहर बाँध रहे पुल
अंदर खाई है

कवि शब्द और अर्थ के इकहरेपन से आगे निकलकर सृजन का पथ सँजोता है। यही कारण है कि सीधे–साधे शब्दों को भी अर्थ विस्तार के कौशल से विस्तृत अर्थानुगामी बनाकर प्रस्तुत करने की कला में निपुण श्री बृजनाथ श्रीवास्तव जी यत्र–तत्र बिखरी पड़ी विद्रूपताओं और जन विपदाओं में विभाजित स्थितियों के प्रति द्रवीभूत हृदय के संपोषक हैं। वे चाहते हैं कि यह चित्र बदले और साधन विहीन जनमानस मानसिक परवशता से उभरे। वे एक स्थान पर लिखते हैं–

मथना है तो अपने को मथ
अंदर भी मथ बाहर भी मथ
कहाँ बिठाए देव असुर हैं
कहाँ सजाए किस किस के रथ

कवि का आत्ममंथन ही है जो अपने आस–पास सर्वत्र व्याप्त पारस्परिकता से जुड़ा समाज, सुखमय पारिवारिक जीवन एवं आत्मीय दायित्व की सुखद आकांक्षा को साकार देखता है–

चलो कुछ देर बैठें हम
चलो सँग चाय पी लें हम
मकड़ियों के लगे जाले

हटाकर साथ जी लें हम

इस प्रकार 'तलाश जारी है' कृति का कृतिकार एक सहज व स्वाभाविक कवि है। उसके हृदय में अनुभूतिजन्य प्रश्न उगते हैं और वह उन प्रश्नों के हल खोजने लग जाता है। बस यही तलाश आज भी और अब भी जारी है।

सहारनपुर, उत्तर प्रदेश निवासी डॉ. आर. पी. सारस्वत जी की नवगीत कृति वर्ष 2020 में प्रकाशित उत्कृष्ट काव्य कृतियों में से एक है। कृति का शीर्षक है 'तुम बिन'। शीर्षक पर प्रथमतया दृष्टिपात करने पर यह ज्ञात होता है कि यह कृति श्रृंगार की रचनाओं का संकलन होनी चाहिए। काफी हद तक यह विचार सत्य भी है किंतु कृतिकार का चिंतन इस कृति को बहुआयामी बनाता है। प्रस्तुत संकलन में कवि के मौलिक चिंतन व मानसिक उद्वेलन के प्रतिफल की परिणिति है। कवि की आध्यात्मिक चेतना ने संकुचित अर्थ की सीमाओं को नहीं स्वीकारा, यथा–

केवल यादों के बूते
जीवन नद पार नहीं होता
सपनों में
हँस लेने से
सच का प्रतिकार नहीं होता

कवि की श्रृंगारिक उदात्तता उसे अन्य से भिन्न बनाती है। इसी का परिणाम है कि वह यह कह पाने में सफल हुआ है–

चल न पाओगे सदा यूँ ही अकेले
कट न पाएगा सफर यूँ ही अकेले
राह में इक हमसफर तो चाहिए
जिंदगी कटती नहीं यूँ ही अकेले
मीत मेरे अब उदासी त्याग कर
साथ मेरे खिलखिलाओ तो कहो

अथवा

लोट आऊँगा
अधर से
तुम पुकारो तो सही
भावनाओं के नगर से
तुम उचारो तो सही

इस प्रकार कवि की उदात्त श्रृंगारिक चेतना उसे आध्यात्मिक चेतना के यथेष्ठ सोपान पर पल्लवन की गरिमा का अंतर्भूत औदात्त प्रणयन स्वीकारने का आधार बनाने में पूर्णतः सफल हुई है। जौजगीर, चाँपा, छत्तीसगढ निवासी रोहित चतुर्वेदी का सजल संग्रह भी वर्ष 2020 में ही प्रकाशित कृति है। इस कृति का शीर्षक 'दर्द का अनुवाद' ही अपने आप में आकर्षक बन पड़ा है। 'दर्द का अनुवाद' कृति में कृतिकार की एक सौ ग्यारह सजलें संकलित हैं। इनमें सामान्यतः सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्य संबंधी विषयों पर चिंतनपरक व आत्मविश्लेषणात्मक शैली में काव्य सृजन हुआ है। इन रचनाओं में देश प्रेम की भावना, प्रकृति प्रेम, भ्रष्टाचार, मानवतावाद, भ्रातृत्व भाव, राजनीति, सामान्य जनमानस के विरही मन का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही कवि की उपदेशात्मक शैली ने इन रचनाओं को मर्मस्पर्शी तथा उद्देश्य पूर्ण बना दिया है। कवि की दृष्टि से देखें तो कविता किसी पीड़ा का ही काव्य रूपांतरण है।

व्यापक भाव संवेदन तथा सिद्धांत कवि कर्म कौशल से समन्वित इस संग्रह की सजलें इस युवा कवि की प्रौढ़ लेखनी के वर्चस्व का प्रमाण हैं। ये रचनाएँ व्यक्ति और समाज के बहुआयामी दर्द का संवेदनशील अनुवाद हैं। जो पाठक को वर्तमान युगीन विसंगतियों के यथार्थ का बोध कराती हैं। कवि रोहित चतुर्वेदी अपनी रचनाओं में कथ्य के प्रतीकों के माध्यम से दृश्यपरक संकेतात्मक अभिव्यक्ति देने में सिद्धहस्त हैं। यथा–

मात्र सयानापन, चालाकी से ही काम नहीं बनते हैं
कुछ बातों में बच्चा रहना, बच्चों सी नादानी रखना

कवि सांकेतिक शैली में सटीक भाव प्रस्तुत करने में सक्षम हुआ है। मानवतावाद, अमूर्त कल्पनाशीलता आदि पर कवि ने अपने मौलिक चिंतन को एक पुष्ट आधार प्रदान किया है। यथा–

फट गए तो फट गए पन्ने सभी
दर्द की प्रस्तावना जीवित रहे

अथवा

रागिनी है प्रीति की समझो इसे
दर्द का अनुवाद लगती जिंदगी

अथवा

मैं शरद के चाँद सा हूँ चाँदनी हो तुम
पूर्णिमा का चू रहा अवदान आँखों से

आत्मानुभूति और स्वानुभूति की सुगंध से सुवासित, कहन की अनूठी व्यंजनात्मक शैली की श्रेष्ठता से अभिभूत प्रस्तुत कृति की रचनाएँ रचनाकार को भविष्य के भानु के रूप में स्थापित करने में सक्षम हैं। निःसंदेह ही 'दर्द का अनुवाद' कृति का कृतिकार एक सशक्त रचनाधर्मी काव्य सर्जक व लोकधर्मी मानवाकृत शब्द रूप सर्जक है।

डॉ. स्वदेश चरौरा की प्रथम काव्य कृति 'रिसते रिश्ते' दोहा संग्रह एक मर्मस्पर्शी काव्य संकलन है। दोहा छंद की उपादेयता एवं उत्कृष्टता को हृदयंगम करते हुए 'रिसते रिश्ते' की रचनाकार डॉ. स्वदेश चरौरा जी एक शिक्षाविद, छंद ज्ञान में सिद्धहस्त एवं साहित्यिक परिवेश में पली बढ़ी एक सैनिक की पत्नी हैं। यही कारण है कि उन्होंने, देशभक्ति, नवीन संज्ञानात्मक अवबोध, राजनीति भक्ति, नारी विमर्श, प्रकृति प्रेम, सामान्य जनजीवन में व्याप्त विद्रूपताओं एवं वर्तमान की अन्य सामाजिक व सांस्कृतिक ज्वलंत समस्याओं को केंद्र में रखकर दोहों का सृजन किया है। वे वेद व्यास जी के नारी विषयक तथ्य को दोहे में बाँधते हुए लिखती हैं–

नारी की इज्जत जहाँ, वो घर स्वर्ग समान।
नारी का अपमान गर, बनता नर्क जहान।।

हिंदी का अध्यापक होने के नाते एक व्यक्ति के हृदय में अपनी भाषा के प्रति स्नेह का भाव कैसा होना चाहिए इस संदर्भ में स्वदेश जी का एक दोहा दृष्टव्य है। यथा–

क, ख, ग की वर्तनी, देवनागरी बोल।
भाषा के बर्ताव में, ए, बी, सी मत घोल।।

कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध और सामाजिक बुराई के प्रति कवयित्री की आक्रोशित लेखनी कुछ इस प्रकार परिलक्षित हुई है–

गर्भवती चिल्ला रही, करो पिया उपकार।
बिटिया को मारूँ नहीं, मत कर मुझ पर वार।।

अर्थोपार्जन की दौड़ में दौड़ते वर्तमान युवा वर्ग के वृद्ध माता–पिता की वेदना को स्वर देते हुए स्वदेश चरौरा जी लिखतीं हैं–

नोटों की ताकत बढ़ी, मन पर छोड़े छाप।
जो नोटों में रम गया, बिसराए माँ–बाप।।

अथवा

फ्लैट कार की चाह में, लिप्त रहे दिन–रैन।
माँ घर भूखी ही रही, मिला न उसको चैन।

कवयित्री के प्रकृति संबंधी प्रेम का आलाप करता एक दोहा देखें–

नीम–पत्र से शत्रुता, रसगुल्ले से नेह।
एक सुवासित देह करे, एक करे मधुमेह।

इस प्रकार विविध विषयों पर बहुआयामी सृजन का मार्ग प्रशस्त करने वाली डॉ. स्वदेश चरौरा जी की कृति 'रिसते रिश्ते' साहित्य जगत की एक अमूल्य निधि है।

कुशीनगर, उत्तर प्रदेश निवासी गीतकार शैलेंद्र असीम की गीत कृति 'गीतों के मोर पंख' उनके 56 गीतों का संग्रह है। वे जीव विज्ञान विषय के प्रवक्ता हैं अतः उनकी कृतियों में यह झलक स्पष्ट देखी जा सकती है। यथा–

विश्व के हर खंड में अणु खंड में है तू समाहित
श्वास में प्रश्वास में है अनवरत तू ही प्रवाहित

पुस्तक में कृतिकार ने राष्ट्रभक्ति, पितृभक्ति, गुरुभक्ति के साथ ही प्रकृति प्रेम, लौकिक व अलौकिक प्रेम, विरह, सामाजिक वेदना, विकृति विसंगति आदि पर गीतों का सृजन किया है। कवि कहता है–

मॉटी का तिलक लगाऊँ मैं
चंदन का तिलक मिले न मिले

कवि की गहन संवेदनात्मक क्षमता का उद्धरण उसकी प्रत्येक रचना में दृष्टव्य हुआ है। कवि की बसंत आदि ऋतुओं पर सृजित गीत हृदय में असीम आनंद का संचार करते हैं। कवि कहता है–

इस जग की सारी सुंदरता
गीतों में अब ढल जाने दो
मैं कवि हूँ मेरी प्रथम प्रेयसी
कविता का सम्मान जुड़ा है

कवि सामान्य मानव की विवशता को स्वर देते हुए लिखता है–

द्वेष कपट अन्याय क्रूरता पग–पग कैसे हवन कँरू
रोज नया है एक जन्मता कितने रावण दहन करूँ

'गीतों के मोर पंख' कृति के शीर्षक गीत में कवि कहता है–

नदियों की अल्हड़ता देखो सागर का यौवन।
केश घने काले बादल से बिजली के कंगन।

कवि की सटीक एवं सारगर्भित प्रतीक शैली, स्वानुभूति का आत्मालाप, कथन की सहज सी अभिव्यंजना, मौलिक व यथार्थ अनुभूति की परख कवि को विशिष्ट श्रेणी में परिगणित करने योग्य बनाती है।

कुशीनगर, उत्तर प्रदेश निवासी कवि आकाश महेशपुरी जी की काव्य कृति 'ऐसी दीवार है' वर्तमान संदर्भों तथा परिस्थितियों का सजीव चित्रण करती एक उत्कृष्ट कृति है। वे लिखते हैं–

खेलता था कभी साथ मेरे वही
खोलता भी नहीं खिड़कियाँ आजकल

प्रस्तुत कृति में विविध रंगों तथा आयामों को समेटे हुए अंतर्निहित अनंत वेदना तथा यथार्थ की धरा पर पुष्पित होती 84 सुगंधित रचनाओं का संकलन है। कवि आकाश के काव्य कर्म का आकाश बड़ा ही विस्तृत है। एक ओर कवि गरीब खेतिहर मजदूर की वेदना कहता है तो दूसरी ओर वह नौकरशाही की अनियंत्रित कार्यशैली को अपनी रचना की विषयवस्तु बनाता है। कहीं वह राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत हो जाता है तो कहीं वह अपने विरही मन की वेदना का वाचक बन जाता है। तो कहीं वह सामाजिक विद्रूपताओं का शिल्पकार प्रतीत होता है। यथा–

नींद के मारे मैं दिन में गिर गया हूँ फर्श पर
शोर रातों का बहुत पागल बनाता है मुझे

कवि की दृष्टि प्रखर है वह महीन से महीन संवेदना को भी अपनी काव्य कला से चिरस्थायी बनाने में सक्षम है। कवि शिक्षक की महत्ता को वरेण्य स्वीकारते हुए लिखता है–

ये शिक्षक की ही महिमा है कि जग में राज करते हैं
अगर होती नहीं शिक्षा तो हम भी जानवर होते।

शिल्प एवं भाव दोनों ही दृष्टियों से यह कृति कृतिकार के काव्य बोध तथा कला कौशल का परिचायक सिद्ध हुई है।

कुशीनगर, उत्तर प्रदेश निवासी एक और श्रेष्ठ रचनाधर्मी कवि श्री नंद लाल सिंह 'कांतिपति' जी की दोहा कृति 'कांतिपति दोहावली' भी वर्ष 2020 में प्रकाशित हुई है। इस कृति में कृतिकार ने मानवीय संवेदना, मानवमूल्य, सांस्कृतिक चेतना, बाजारवाद, सामाजिक विकृति, राजनीतिक विद्रूपता, लौकिक व्यवहार का दोहरापन, आचरण की हीनता, मानवीय मर्यादा पर होता कुठाराघात, चारित्रिक पतन, राष्ट्र प्रेम, प्रकृति का मनोहारी मूल्यांकन, सहज प्रेम की मौलिक अनुभूति आदि विषयों पर कुल 1470 दोहों का सृजन किया है। मानवता के मौलिक धर्म की चर्चा करते हुए कांतिपति लिखते हैं–

मानव मानव का करे, मानव सा सम्मान।
जाति धर्म या देश क्या? हम सब एक समान।।
कल को पछताना पड़े, करो न ऐसे कर्म।
चाहे तुम जाओ कहीं, तजो न मानव धर्म।।

वर्तमान समय में मानवीय संवेदना तथा मूल्य को पहचानने के लिए मानव को सुशिक्षित होना आवश्यक है इस बात को अपने दोहे में ढालते हुए कवि लिखता है–

मानवता उत्थान का, दृढ निश्चय रख साथ।
एक लिए है फावड़ा, एक लेखनी हाथ।।

यह सामाजिक विडंबना है कि शिक्षित या अशिक्षित कोई भी हो अपनी कथनी और करनी में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते तब कवि कहता है–

कांति प्रथम पालन करें, तब फिर बाँटे ज्ञान।
कथनी–करनी एक हो, वह नर पाता मान।।

दूसरी सामाजिक विडंबना यह भी है कि आज भी समाज में लिंग भेद व्याप्त है। जहाँ एक ओर बेटियाँ आज आकाश चूम रहीं हैं वहीं समाज में आज भी उन्हें बराबरी का स्थान प्राप्त नहीं हो

पा रहा है तब ऐसे में दहेज अथवा मानसिक विकृति के प्रभाव के कारण बालिका भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध को निर्मूल सिद्ध करता एक दोहा दृष्टव्य है–

बेटी को ओछा समझ, दिया गर्भ में काल।
यह क्रम सारे विश्व को, कर देगा बेहाल।।

इस प्रकार कांतिपति की यह दोहा कृति विविध मौलिक व अनुभूतिपरक विषय विवेचन की मूर्तिमान पाठशाला है जो कि मानवीय मूल्य संरक्षण में सक्षम तथा सशक्त होकर मानवीय चेतना के पोषण हेतु सफल कृति है। ग्वालियर मध्य प्रदेश निवासी डॉ. रमेश कटारिया पारस की वर्ष 2020 में प्रकाशित कृति 'बहर में नहीं हूँ मैं' समकालीन अभिव्यक्ति की परिपक्व रचनाओं का संकलन है। रचना का शीर्षक काल्पनिक कदापि नहीं है क्योंकि बहर उर्दू का शब्द है जिसका हिंदी अर्थ होता है छंद विधान। वास्तव में ही रचनाकार की रचनाओं में छंद विधान अखरता है। भाव की दृष्टि से रचनाओं में किसी प्रकार की कोई कमी दृष्टव्य नहीं है यथा–

न अर्थ न भाव की पहचान है जिन्हें
सिर्फ 'वजन' जाँचते हैं उनसे बचके रहना।

कृतिकार की उपरोक्त पंक्तियों से मैं पूरी तरह सहमत हूँ क्योंकि वास्तव में जो ऐसा करते हैं वे कविता के पारखी हैं ही नहीं क्योंकि सच तो यह है कि जिस कवि की रचना बहर (छंद) में नहीं उसे तो कवि कहलाने का हक ही नहीं है। जैसा कि मैं पूर्व में ही कह चुका हूँ कि सृष्टि में जो कुछ भी है वह सब काव्य ही है किंतु काव्य के दो भेद हैं पद्य काव्य और गद्य काव्य, क्योंकि आचार्य विश्वनाथ कहते हैं कि 'वाक्य रसात्मकं काव्यम्' अर्थात् वह वाक्य जो रसपूरित है वह काव्य है। परंतु पद्य काव्य तब होगा जब वह लयात्मक हो, रसपूरित हो, गेय हो अथवा सहृदय के मन की वीणा को झंकृत कर दे। इस संदर्भ में लोग निराला जी के विचार को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं किंतु वास्तव में निराला जी छंद मुक्त काव्य के समर्थक नहीं बल्कि मुक्त छंद के समर्थक हैं अर्थात् छंद के बंधन से मुक्त किंतु लय से युक्त विचाराभिव्यक्ति ही कविता है इस मौलिक उद्भावना से परे लोगों ने अपनी सुविधा के लिए मुक्त छंद को छंद मुक्त कह दिया किंतु मेरी दृष्टि में लय भंग या लय रहित स्चना गद्य काव्य तो हो सकती है किंतु पद्य काव्य नहीं कही जा सकती अर्थात् कविता की श्रेणी में नहीं आ सकती क्योंकि भाव तो हर व्यक्ति के पास होते हैं और थोड़ा–बहुत तुकांत मिलाने की कला तो सबके पास होती है तो क्या हर व्यक्ति को कवि कह दें। फिर कवि का महत्व ही क्या रह जाएगा। यह बात भी सही है कि निराला के परवर्ती साहित्यकारों ने तो निराला के भाव को समझा और मुक्तछंद की परंपरा का निर्वहन किया किंतु वर्तमान के रचनाकार उसका अलग अर्थ निकालकर जो मन में आया वो लिख देते हैं ओर स्वयं को कवि कहलवाने में आनंदानुभूति करते हैं किंतु वे कवि तो हैं ही नहीं। व्यर्थ में ही कविता के नाम पर कूड़ा समाज के समक्ष परोसते रहते हैं। परंतु राजनीतिक चाटुकारिता ऐसे अकवियों को भी प्रतिष्ठित करती रही है। यथा–

कोई भी कचरा लाकर बेच दो यहाँ पर
भारत से बड़ा दुनिया में बाजार नहीं है

कवि स्वच्छ मन की कल्पना की परख का पक्षधर है अतः वह लिखता है–

मन के अंदर देखो 'परस'
तुमने सिर्फ बदन देखा है।

इस प्रकार भले ही कवि की रचनाओं में छंद विधान का परिपालन नहीं हुआ है तथापि वह उत्तम कोटि का रचनाकार है।

उत्तर प्रदेश के भदोही निवासी श्री हीरा लाल मिश्र की संपादित कृति वर्ष 2020 में 'कजली साहित्य का इतिहास' प्रकाशित हुई है। भले ही मधुकर जी की यह कृति उनकी मौलिक कृति नहीं किंतु हिंदी साहित्य में मील का पत्थर अवश्य है क्योंकि कजली साहित्य हमारी लोक परंपरा का साहित्य है जोकि वर्तमान में अन्य लोक साहित्यों की भाँति ही विलुप्ति की ओर है। ऐसे में हीरालाल मिश्र 'मधुकर' जी ने कजली साहित्य के इतिहास का वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए प्रमुख तथा महत्वपूर्ण कजली विधा की रचनाओं का एक अच्छा–खासा संकलन किया है। जिसके माध्यम

से हमारी अगली तकनीक युगीन पीढ़ी इस कृति के माध्यम से कजली नामक काव्य की लोक विधा से परिचित हो सकेगी। कजली संख्या–92 की प्रारंभिक दो पंक्तियाँ उदाहरणार्थ दृष्टव्य हैं–

किए अनादर माँ का मिले न मान बारे बलमू।
माँ की सेवा से होवे कल्यान बारे बलमू।।

उपर्युक्त कृति की सर्जना कर 'मधुकर जी' ने निःसंदेह हिंदी कविता जगत को कृत कृत्य किया है।

इसी शृंखला में वर्ष–2020 में ही आगरा के नामनेर निवासी कवि डॉ. रमेश आनंद की बाल साहित्य कृति 'बच्चों की दुनिया' प्रकाशित हुई है। इस कृति में सभी आयु वर्ग के बच्चों के लिए उपयोगी कविताओं का संकलन किया गया है। जिसके माध्यम से कवि की बाल चेतना दृष्टव्य हुई है। कवि का प्रकृति प्रेम, राष्ट्र प्रेम, एवं जीव मात्र के प्रति उसका स्नेहिल स्वभाव अपने नैतिक व मूल स्वरूप में परिणित हुआ है। कवि की चेतना उसे बाल मनोविज्ञान का विश्लेषण सिद्ध करने में सफल हुई है। जिस प्रकार एक बालक तितलियों के साथ स्वयं को एकाकार कर लेता है तथा अपने आपको उसी दुनिया का अंग बना लेता है उसी प्रकार 'बच्चों की दुनिया' रचना का कृतिकार भी बाल मन की चेतना के इतने करीब हो गया है कि वह स्वयं को एक बालक के समान ही एकाकार कर लेने वाला हो गया है। कवि की सचेष्ट अभिव्यक्ति ने उसकी रचनाओं को चिर काल के लिए अविस्मरणीय तथा रचना कर्म की सार्थकता के करीब पहुँचा दिया है। कवि की रचनाओं के कुछ अंश अवलोकनार्थ दृष्टव्य हैं।

नया इतिहास बनाना है।
बस पानी को बचाना है
पानी है अनमोल वस्तु
यही सबको समझाना है

अथवा

हाथ जोड़ विनती करें हम नन्हे फूल तुम्हारे।
बल, बुद्धि औ विद्या मिले, हों दूर दुर्गुण हमारे।

इस प्रकार कवि सहज, सरल तथा प्रभावकारी भाषा में बाल मन की संवेदना को छूने में सफल हुआ है साथ ही कवि भारत के गौरवशाली अतीत तथा स्वर्णिम भविष्य की कल्पना से भी परिचित कराने में सफल हुआ है। जौजगीर, छत्तीसगढ़ निवासी ईश्वरी प्रसाद यादव की वर्ष 2020 में प्रकाशित कृति 'हिंदी छंद–मंजूषा' हिंदी कविता में छंद ज्ञान के क्षेत्र में एक विशिष्ट उपलब्धि है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि छंदों की परिभाषा देने के साथ जो उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं वे सभी रचनाकार की मौलिक रचनाएँ हैं। हिंदी छंद शास्त्र के क्षेत्र में श्री जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' कृत 'छंद प्रभाकर' तथा रघुनाथ शास्त्री कृत 'हिंदी छंद प्रकाश'– ये दो ग्रंथ महत्वपूर्ण माने जाते हैं। ईश्वरी प्रसाद यादव की 'हिंदी छंद–मंजूषा' कुछ भिन्न है। इस कृति के सभी उदाहरण खड़ी बोली हिंदी के हैं। इस कृति में 200 पारंपारिक छंदों का विवरण, परिभाषाएँ गति, लय, पाद, ध्वनि, वर्ण, मात्रा, यति, गण, तुक आदि पर विशद व बारीक विवरण दिया गया है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं–

रगण अंत– *जहाँ भी रहें मुस्कुराते रहें।*
सुमन से खिलें खिलाखिलाते रहें।
बुरे स्वप्न सारे भुलाते रहें।
खुशी के सदा गीत गाते रहें।

सगण अंत– *सदा फर्ज अपना निभाकर चलें।*
जरा पुण्य भी हम कमाकर चलें।
पुराने सभी गम भुलाकर चलें।
नदी की तरह छलछलाकर चलें।

नगण अंत– *भरा पोखरों में विमल नील जल।*
खिले हैं जहाँ पर सजीले कमल।
चले आ रहे हैं उन्हें देखकर।
गगन से मगन हो रंगीले भ्रमर।

अविरल प्रवाहमयी व सहज भाषा के सुसंस्कारित कवि ईश्वरी प्रसाद यादव की कृति 'हिंदी छंद–मंजूषा' हिंदी के पारंपरिक छंदों को रचनाकार के मौलिक व प्रभावोत्पादक उदाहरणों के माध्यम से समझने तथा छंदों के सहज संज्ञानात्मक अवबोध को प्राप्त करने हेतु अत्युत्तम कृति है।

जबलपुर निवासी श्रीमान डॉ. अनिल कुमार कोरी जी का गीत संग्रह 'अंतस की आवाज' वर्ष

2020 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कवि की स्वानुभूति, मानवीय संवेदना, जिजीविषा, हृदयगत प्रेम, सामाजिक चेतना, मानवीय मूल्यों का संरक्षण, अनंत व्योमव्यापी प्रेमालाप, मनोहारी प्रकृति चित्रण आदि को कवि ने सहज एवं रसपूरित करके प्रस्तुत किया है। कवि के अंतस की चेतना गीतों का रूप लेकर उभरी है। गीतों में बिंबविधान सायास नहीं बल्कि अनायास समायोजित हुआ है। कलिकाल में जहाँ भौतिकता के गर्त में डूबा मानव सिर्फ धनोपार्जन की चेष्टा में बेचैन रहता है वहीं कवि अनिल कोरी सांसारिक, राजनीतिक तथा सामाजिक विद्रूपताओं में से अपने लिए आनंद के क्षण खोजने में सफल हुआ है। कवि की 'अंतस की आवाज' प्रत्येक सहृदय पाठक को अपनी सी लगने वाली है। कृति का कृतिकार संपूर्ण अर्थों में मनोयोग का पुजारी है।

जौजगीर, चाँपा, छत्तीसगढ निवासी वरिष्ठ साहित्यकार विजय राठौर जी की वर्ष 2020 में कुल चार कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। काव्य प्रतिभा के अप्रतिम धनी श्री राठौर की प्रथम कृति 'समकालीन दोहे' शीर्षक से प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत पुस्तक में कुल 831 दोहे हैं जिनमें समाज, राजनीति, पर्यावरण, धर्म, आध्यात्म, दर्शन आदि पर केंद्रित दोहे हैं। यथा–

फूल रूप को चाहिए, रुतवे के अनुकूल।
मगर प्रिये पर्याप्त हैं, अर्थी को दो फूल।

विजय राठौर की काव्य प्रतिभा का आकलन करने हेतु उनका एक दोहा ही पर्याप्त है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि दोहे की अंतर्भूत मर्यादा को समझते हुए रचनाकार की काव्यात्मक अभिव्यक्ति पूर्णतः पुष्ट है।

राठौर जी की दूसरी कृति 'कलम की नोक पर' प्रकाशित हुई है। यह कृति नई कविता के मानकों को पूरा करने वाली रचनाओं का संग्रह है। प्रस्तुत कृति में कृतिकार ने पारंपारिक बिंबो से भिन्न नवीन बिंबों को सृजित किया है। यथा–

कलम में हो
पैनी धार
तभी कर पाओगे
विसंगतियों पर
सटीक प्रहार

कवि का कलात्मक कौशल इतना तीक्ष्ण है कि वह अल्प शब्दावली में बहुआयामी अर्थधर्मा अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करने में सक्षम है। राठौर जी की तीसरी कृति 'धूप बहुत है छाया कम' नामक शीर्षक से प्रकाशित हुई है। इस कृति में नवीन विधा सजल विधा उर्दू की पारंपारिक विधा गजल का रूपांतरण नहीं है बल्कि यह स्वयं में हिंदी की नवीन विधा है जिसका कलेवर भले ही गजल से मेल खाता हो किंतु सजल का व्याकरण बिल्कुल भिन्न है। ध्यातव्य है कि वर्ष 2016 में इस नवीन विधा का जन्म मथुरा निवासी डॉ. अनिल गहलौत के हृदय में हुआ। साथ ही यह बात भी बताता चलूँ कि इस विधा के शुभारंभ से ही मैं भी इस अभियान का हिस्सा रहा हूँ अतः सजल विधा की बारीकियों तथा व्याकरण से मेरा सीधा साक्षात्कार है। चूँकि मैं विशुद्ध गीतकार हूँ अतः सजल पर कलम यदा–कदा ही चलती है किंतु यह भी स्मरणीय है कि सजल विधा चूँकि हिंदी की मौलिक व पारंपारिक छंद योजना से विकसित हुई है अतः इस विधा के प्रति मेरा असीम स्नेह है। सजल का व्याकरण एवं स्वरूप सदैव से ऐसा ही नहीं था जैसा कि आज है। यह निरंतर परिमार्जन का ही परिणाम है। एक बात और विशेष है कि इस विधा की प्रथम कृति डॉ. राम सनेहीलाल शर्मा 'यायावर' कृत 'तृषा का आचमन' है। इस कृति में भी काफी हद तक संशोधन और परिमार्जन हुआ है। शीघ्र ही 'तृषा का आचमन, का परिशोधित संस्करण भी हिंदी साहित्य के पटल पर विचरण हेतु तैयार है। विजय राठौर जी भी इस अभियान के प्रारंभिक सदस्यों में से एक हैं यही कारण है कि उनकी काव्य कलात्मक प्रतिभा ने सजल विधा को और अधिक सशक्त बनाया है। प्रस्तुत संग्रह 'धूप बहुत है छाया कम' नामक कृति में राठौर जी की 107 सजलें संकलित हैं। इन सजलों में मानवीय संवेदना, मौलिक नवाचार, आध्यात्म चिंतन, जीवन का यथार्थवाद, संकल्प की सिद्धि, राजनीतिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक चेतना आदि विषयों पर हिंदी की खड़ी बोली की प्रवाहमयी धारा की अंतर्मन

तक पहुँचकर उद्‌वेलन उत्पन्न करने वाली सजलें संकलित हैं। बानगी स्वरूप एक आदिक और एक पदिक देखें–

धूप बहुत है कम छाया है
दुनिया माया ही माया है
सबका जाना निश्चित ही है
कौन यहाँ रहने आया है

वर्ष 2020 में प्रकाशित विजय राठौर की चतुर्थ कृति 'छंदों की लहरों पर तैरती सजल' शीर्षक से प्रकाशित हुई है। इस कृति में कृतिकार ने हिंदी के पारंपारिक छंदों के समस्त व्याकरण को अंगीकार करते हुए सजलों का सृजन किया है। इस कृति में राठौर कृत कुल 54 पारंपरिक छंदों पर आधारित कुल 54 सजलें संकलित हैं। विशेष बात यह भी है कि मात्र छंद निर्वहन की चिंता में कवि ने कविता के तत्व के साथ कहीं भी समझौता नहीं किया है। अर्थात् काव्य के समस्त तत्व कृतिकार के रचना कर्म में सम्मिलित रहे हैं। यह कृति विजय राठौर जी के संपूर्ण काव्य के मूल्यांकन पर भारी है। निःसंदेह विजय राठौर जी की कृतियाँ इस कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में सृजन की अवधारणा के माध्यम से मानवीय संवेदना एवं जिजीविषा की उत्कट आकांक्षा का द्योतक हैं।

पटियाला, पंजाब निवासी कवयित्री प्रोमिला गौतम की वर्ष 2020 में प्रकाशित कृति 'मेरा दर्द मेरा साथी' मानवीय चेतना एवं मानस पटल पर सहज प्रेम, आकस्मिक विरह, सामाजिक विद्रूपता, सांस्कृतिक ह्रास, खंडित होते मानवीय मूल्य, सिसकती पीड़ा और अट्टाहास करते भ्रष्टाचार आदि विषयों पर केंद्रित रचनाओं का संकलन है। प्रस्तुत कृति में कवयित्री की काव्यात्मक प्रतिभा मुखरित होकर सम्मुख उपस्थित हुई है।

वर्ष 2020 में सर्वाधिक छह कृतियाँ मुरादाबाद निवासी डॉ. राकेश चक्र जी के नाम पर अंकित हुई हैं। इनमें पहली कृति का शीर्षक है 'मुक्त निर्झर' इस कृति में राकेश जी के कुछ गीत तथा मुक्तक संकलित हैं जोकि सामान्य जन जीवन, मानवीय संवेदना, आध्यात्म, दर्शन, राष्ट्रप्रेम, समाजवाद आदि विविध विषयों पर क्रेंदित हैं। कवि की अंतर्चेतना काव्य की घनीभूत संवेदना के रूप में परिणित हुई है। कवि की कवित्व चेतना का एक उत्कृष्ट नमूना है कृति 'मुक्त निर्झर'।

डॉ. राकेश चक्र की दूसरी कृति 'मेरी प्रिय ग़ज़लें' शीर्षक से प्रकाशित हुई है इस कृति में कृतिकार की हिंदी ग़ज़ल तथा गीतिकाओं का संकलन है। एक गीतिका के कुछ अंश देखें–

मुझमें रहते हैं करोड़ों लोग चुप कैसे रहूँ।
हर ग़ज़ल अब सल्तनत के नाम एक बयान है।

अथवा

तृप्ति के बाद की प्यास दो।
साधना के अमलतास दो।

चक्र जी की तीसरी कृति 'बुद्‌ध की तरह' प्रकाशित हुई है इस कृति की समस्त कविताओं में महात्मा बुद्‌ध के दर्शन का प्रभाव परिलक्षित हुआ है। वहीं अगली कृति 'श्रीमद्‌भगवतगीता दोहाभिव्यक्ति' में कवि ने श्रीमदभगवतगीता के सभी 700 श्लोकों को दोहों के रूप में अभिव्यक्त किया है। अगली कृति 'क्योंकि तुम ईश्वर हो' राकेश जी द्‌वारा रचित आध्यात्म आधारित कविताओं का संकलन है तथा 'पोस्टकार्ड, लिफाफा और दादाजी' शीर्षक से कवि की बाल कविताओं का संकलन किया गया है। यथा–

मैं चंपा हूँ मुझसे सीखो
सुंदर बनकर गढ़ना।
धीरे–धीरे मैं बढ़ जाती
वैसे आगे बढ़ना।

कवि बाल–मन से रामराज्य की कल्पना करते हुए कहता है–

राम राज्य यदि आ जाए तो
जग चंदन कानन होगा।
अंतर्मन में प्रेम बसे तो
घर–घर वृंदावन होगा।

इस प्रकार वर्ष 2020 में प्रकाशित पुस्तकों में मानव मन की विविध अनुभूतियों के अतिरिक्त धर्म, समाज, राजनीति आदि पर रचनाकारों ने समवेत स्वर में अपनी प्रतिभा के अनुकूल सृजन किया है।

यद्यपि कृति के प्रकाशन का तात्पर्य यह है कि वे रचनाएँ कुछ समय पूर्व सृजित हुई होंगी किंतु यह भी निश्चित है कि कोरोना काल में सृजन के आयामों में परिवर्तन तो अवश्य हुआ है।

देश काल व परिस्थितियों का प्रभाव मानव जीवन पर तो पड़ता ही है ऐसे में एक सर्जक के मूल व्यवहार में भी परिवर्तन होता है। जिसका प्रभाव बहुआयामी होकर नवीन रूप धारण कर लेता है। काव्य एक पथ है जिस पर यात्रा करता हुआ व्यक्ति हताशा के पलों को भी गुनगुनाते हुए काट लेता है। काव्य की यही क्षमता उसे जगत व्यवहार से भिन्न बनाती है। वर्षभर रचनाधर्मिता के स्वर जो मुझतक पहुँचे उन्हें मैंने लिपिबद्ध किया है शेष जो मेरी दृष्टि से अछूते रह गए उनके प्रति क्षमा प्रार्थी हूँ–

इत्यलम्

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अष्टाध्यायी, डॉ. नरेश झा, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी–2014

2. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रभात पेपर बैक–2020

3. सनेह ब्रजवानी कौ, डॉ.रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर', निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स–2020

4. शाम पढ़े अवसाद, डॉ. राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर', निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स–2020

5. शिवो भूत्वा शिवम यजेत्, डॉ. राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर', निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स–2020

6. संबोधन तक आ पहुँचे, प्रमोद बाबू दुबे 'आमोद', निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स–2020

7. गीत जो गये नहीं, पदमश्री गोपाल दास नीरज, डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली–2005

8. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, लोक भारती प्रकाशन, झाँसी–1969

9. उलझाता छविजाल तुम्हारा, कृष्ण कुमार 'कनक', निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स–2020

10. पथ में कैसा विश्राम पथिक, चयन–संपादन–कृष्ण कुमार 'कनक' निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स–2020

11. मेले में यायावर, डॉ. राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर', सुकीर्ति प्रकाशन, कैथल, हरियाणा–2007

12. कोरोना का संकटकाल, संतोष कुमार सिंह, जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार मथुरा–2020

13. रुपयों वाला पेड़, संतोष कुमार सिंह, साहित्य संगम प्रकाशन, मथुरा–2020

14. शब्द–प्रवाह, के. के. सिंह आमद 'साधूपुरी', बुद्धंशरणं गच्छामि प्रकाशन–2020

15. दुनिया लौट आएगी, डॉ. शिव कुशवाह, प्रलेक प्रकाशन–2020

16. रेतीले कोने में हरी दूव सी आस, डॉ. शिव कुशवाह, प्रलेक प्रकाशन–2020

17. अगर तुम्हारा साथ मिले, राजेश बघेल, पाल पब्लिसिंग हाउस, रोहिणी, दिल्ली–2020

18. तलाश जारी है, बृजनाथ श्रीवास्तव, श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली–2020

19. तुम बिन, डॉ. आर. पी. सारस्वत, समन्वय, साहित्य चेतना का दीप स्तंभ–2020

20. दर्द का अनुवाद, दिनेश रोहित चतुर्वेदी, राजश्री प्रकाशन, कासगंज–2020

21. रिसते रिश्ते, डॉ. स्वदेश चरौरा, सन्मति पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स–2020

22. गीतों के मोर पंख, शैलेंद्र 'असीम', जिज्ञासा प्रकाशन, गाजियाबाद–2020

23. ऐसी दीवार है, आकाश महेशपुरी, सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली–2020

24. कांतिपति दोहावली, नंदलाल सिंह 'कांतिपति', सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली–2020

25. बहर में नहीं हूँ मैं, डॉ. रमेश कटारिया 'पारस', ग्वालियर साहित्य कला परिषद्–2020

26. कजली साहित्य का इतिहास, हीरालाल मिश्र 'मधुकर' नारायण प्रकाशन, वाराणसी–2020

27. बच्चों की दुनिया, डॉ. रमेश आनंद, बाल साहित्य प्रकाशन, रायपुर, छत्तीसगढ़–2020

28. हिंदी छंद–मंजूषा, ईश्वरी प्रसाद यादव, इवैंश प्रकाशन, रायपुर, छत्तीसगढ़–2020

29. अंतस की आवाज, डॉ. अनिल कुमार कोरी, साहित्य प्रकाशन, जबलपुर–2020

30. दोहे समकालीन, विजय राठौर, बोधि प्रकाशन, जयपुर–2020

31. कलम की नोक पर, विजय राठौर, बौधि प्रकाशन, जयपुर–2020

32. धूप बहुत है छाया कम, विजय राठौर, बोधि प्रकाशन, जयपुर–2020

33. छंदों की लहरों पर तैरती सजल, विजय राठौर, बोधि प्रकाशन, जयपुर–2020

34. मेरा दर्द मेरा साथी, प्रोमिला गौतम, साहित्य कलश पब्लिकेशन–2020

35. मुक्त निर्झर, डॉ. राकेश चक्र, ओम पब्लिशिंग कंपनी–2020

36. मेरी प्रिय ग़ज़लें, डॉ. राकेश चक्र, ओम पब्लिशिंग कंपनी–2020

37. बुद्ध की तरह, डॉ. राकेश चक्र, केशव बुक्स, नई दिल्ली–2020

38. श्रीमद्भगवत गीता दोहाभिव्यक्ति, डॉ. राकेश चक्र, जी.एस. पब्लिशर्स–2020

39. क्योंकि तुम ईश्वर हो, डॉ. राकेश चक्र, केशव बुक्स, नई दिल्ली–2020

40. पोस्टकार्ड, लिफाफा और दादाजी, डॉ. राकेश चक्र, केशव बुक्स, नई दिल्ली–2020

– 'कनक–निकुँज' गुँदाऊ, मुरली नगर, लाइन पार, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश–283203

❑❑❑

20

हिंदी ग़ज़ल

डॉ. रोहिताश्व कुमार अस्थाना

गुजराती ग़ज़ल, पंजाबी ग़ज़ल, ब्रज ग़ज़ल, बांग्ला ग़ज़ल और सिंधी ग़ज़ल की भाँति ही हिंदी में सोची, समझी और कल्पना की गई ग़ज़ल को हिंदी का तत्सम शब्दावली अथवा दैनिक बोल–चाल की हिंदुस्तानी भाषा में कही, लिखी या रची गई ग़ज़ल को उसके भाषिक विशेषण से जोड़कर हिंदी ग़ज़ल का नाम देना मेरे मत से उचित ही है। आजकल हिंदी ग़ज़ल की लोकप्रियता का सबसे मुख्य प्रमाण यही है कि तमाम उर्दू ग़ज़लकारों की ग़ज़ल कृतियाँ हिंदी पाठकों के लिए हिंदी देवनागरी लिपि में प्रकाशित की जा रही हैं। यही नहीं हिंदी ग़ज़ल की लोकप्रियता से प्रभावित होकर कतिपय कविगण मसीहा बनने की महत्वाकांक्षा से इसे सजल अथवा हज़ल के नाम से भी लिख रहे हैं, पर मुझे लगता है कि इनमें हिंदी ग़ज़ल से इतर कुछ भी नया अथवा विशेष नहीं है।

पूर्ववर्ती वर्षों की भाँति इस वर्ष 2020 में भी विभिन्न प्रकाशनों से कवियों के एकल एवं संपादित संकलन प्रकाशित एवं चर्चित हुए हैं।

वर्ष के आरंभ में ही किताब गंज प्रकाशन, सवाई माधोपुर जिले के गंगापुर सिटी से चर्चित ग़ज़लकार डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति जी की 100 ग़ज़लों का संकलन 'संवेदनाओं के इंद्रधनुष' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इन ग़ज़लों में प्रेम के परंपरागत स्वरूप, गिरते हुए जीवन मूल्यों, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विसंगतियों, विकृतियों एवं विद्रुपताओं के बीच गरीबी, भूख और बेरोजगारी के दंश झेलते हुए आम आदमी की व्यथा–कथा को अभिव्यक्ति देने का सार्थक प्रयास किया गया है। आज भावनात्मक रूप से दुनिया जहान के तपते हुए रेगिस्तान में इन ग़ज़लों के कुछ प्रेम परक स्वर नखलिस्तान का अहसास करा जाते हैं। यथा– *गए बचपन के दिन, सोलह बहारें देख लीं उसने/ वो लड़की शोख, चंचल, चुलबुली है, तो गलत क्या है?* इसी प्रकार हमारे टूटते बिखरते रिश्तों पर भी कवि ने कुछ सार्थक व सटीक टिप्पणियाँ की हैं। माँ की महिमा के बारे में कवि का एक शेर उद्धरणीय है– *मेरी माँ मसीहा है, ऐसी मसीहा/ मेरे हर मरज़ की दवा जानती है?*

इसी संदर्भ में एक तथाकथित आज्ञाकारी बेटा अपनी माँ से प्रश्न कर बैठता है– *कलाई में तेरी जो था जगमगाता/ तेरे हाथ का माँ वो कंगन किधर है?*

पंरतु बुढ़ापे में माँ–बाप को रोता बिलखता असहाय छोड़ जाने वाला बेटा भी कवि की नज़रों से नहीं बच सका है। उसकी यह टिप्पणी उल्लेखनीय है– *रोता बिलखता छोड़ गया बाल देन को/ मत बोलिए कि बेटा बड़ा जहीन है?*

ऐसे में एक बेटे को चिंता मुक्त करते हुए माँ–बाप के आश्वस्ति के स्वर ज़रा देखिए– *मैं जिंदा हूँ अब तक न फ़िक्र कर बेटे/ तेरी शान मेरी बदौलत रहेगी।*

निष्कर्षतः कवि आजकल के तथाकथित बेटों को संदेश देते हुए कहता है– *बाप–माँ हैं फरिश्तों की सूरत/ बाप–माँ का बहुत ध्यान रखना?*

इसी प्रकार चुनाव और सियासत के बारे में कवि के कुछ शेर उद्धरणीय हैं– *कहाँ अच्छे दिन देखने को मिले हैं/ किसी ने फ़कत हमको नारा दिया है। अजब सा ख़ौफ़ रहता है। दशहरा और मुहर्रम में/ हमारे शहर में गंदी सियासत कौन करता है? इस बार भी भोली जनता को वादों से रिझाया जाएगा/ वादा करना और मुकरना नेताओं की लाचारी है?*

प्रजापति जी ने जीवन के कुछ स्फुट प्रसंगों पर भी अपने संदेश पाक शेर कहे हैं। यथा– *अपनाइए अंदाज हँसी के ठिठोल के/ पछताइए न आप कभी तीखा बोल के/ पैदा कर चलने की हिम्मत/ पत्थर भी भगवान लगेगा/ मालदारों के महलों को देगी गिरा/ इतनी ताकत गरीबों की आहों में है।*

इसी प्रकार शायर ने नक्सलवाद और आतंकवाद आदि के मूल में निराशा का स्वर देखा है। यथा– *जो कोई नाशाद रहेगा/ उसमें नक्सलवाद रहेगा?*

डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति में अच्छी और सलीकेदार ग़ज़लें कहने का हुनर विद्यमान है। उनकी विलक्षण कहन इन ग़ज़लों को नए इंद्रधनुषी रंग प्रदान करती हैं। उनके शब्दों में– *बहुत खून दिल का किया है तो मैंने/ ज़िगर के लहू से ग़ज़ल लिख रहा हूँ।*

इन्होंने अपनी ग़ज़लों के अंतिम शेर अथवा मक्तों में 'कुमार' उपनाम अथवा तख़ल्लुस का प्रयोग किया है। संकलित ग़ज़लों में कथ्य एवं शिल्प का अनूठा संगम हुआ है। निःसंदेह ये ग़ज़लें मर्मस्पर्शी और गागर में सागर भरने वाली हैं। पुस्तक पर वरिष्ठ ग़ज़लकार एवं हिंदी के पहले शोध अध्येता डॉ. रोहिताश्व अस्थाना की विस्तृत भूमिका सोने में सुगंध के समान है। निश्चय ही ग़ज़ल प्रेमियों के लिए कवि का यह अनुपम उपहार है।

वर्ष 2020 में ही सुप्रसिद्ध कवि डॉ. अश्वघोष जी की 100 उत्कृष्ट ग़ज़लों का संग्रह "बैठा हूँ तनहाई में" शीषर्क से मेधा बुक्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली–32 से आया है। हिंदी ग़ज़ल के कथ्य, शिल्प एवं भाषा सौंदर्य पर कवि की पक्की पकड़ है। उदाहरणार्थ उनकी एक ग़ज़ल का मतला दृष्टव्य है– *पहले मन की नब्ज टटोलो/ फिर तुम तन की खिड़की खोलो।* इस प्रकार उनकी छोटी बहर की ग़ज़लों का तग़ज्जुल पाठकों को प्रभावित करता है– यथा– *ये कैसा उजियारा जिसने/ पाल लिए हैं सिर्फ़ धुंधलके?* अथवा *जिंदगी के आसमानो में/ हम रहेंगे बस उड़ानों में*। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। इतनी उत्कृष्ट ग़ज़लों के लिए डॉ. अश्वघोष जी पाठकों के दिलों में सदैव रचे बसे रहेंगे।

इसी वर्ष गुफ्तगू पब्लिकेशंस, प्रयागराज से सुश्री अनामिका पांडेय उर्फ़ अना इलाहाबादी का ग़ज़ल संग्रह 'दीवान–ए–अना' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। जनाब तलब जौनपुरी की सुपुत्री होने के नाते शायरी की सौगात उन्हें उत्तराधिकार स्वरूप मिली है। संग्रह में छोटी एवं बड़ी बहरों की ग़ज़ल पढ़ने को मिलती हैं। हिंदी–उर्दू के मिल–जुले रंग में रची गई उनकी ग़ज़लों के दो शेर सर्वथा उद्धरणीय हैं– *भारत देश सलोना है जी/ यहाँ की मिट्टी सोना है जी।* और *जह्र को मन में लिए हुक्मरान आते हैं/ रकीब बनके मेरे मेहरबान आते हैं।* अना जी की इन ग़ज़लों में निहित बहुरंगी शब्दचित्र पाठकों को अनायास ही आकर्षित कर लेते हैं। वरिष्ठ कवि एवं शायर जनाब इब्राहीम 'अश्क' की भूमिका कृति के कलेवर में चार चाँद लगाने वाली है।

समीक्ष्य वर्ष में ही डॉ. राजगोपाल जी का ग़ज़ल संग्रह 'देख इधर भी ज़रा जिंदगी' प्रकाशित हुआ, जिसमें उनकी 81 विविध वर्णी ग़ज़लें संकलित हैं। आशा है हिंदी ग़ज़ल संसार में कृति का भरपूर स्वागत होगा।

इसी वर्ष प्रतिष्ठित ग़ज़लकार कन्हैया लाल 'आदाब' की स्तरीय ग़ज़लों का संकलन 'आईना –ए–आदाब' के नाम से राष्ट्रभाषा प्रेस, जीवनी मंडी, आगरा से प्रकाशित एवं चर्चित हुआ है। इन्हें ग़ज़ल की अच्छी समझ है। संकलन से उनके कुछ शेर उद्धृत करता हूँ। *गिला कैसा कोई ग़र बेखबर है/* अथवा *जो कर रहे थे जुल्म वो हकदार हो गए/जिन पर हुआ है जुल्म गुनहगार हो गए।* इनकी ग़ज़लें कथ्य एवं शिल्प पर खरी उतरने वाली हैं।

इसी क्रम में नवभारत प्रकाशन, दिल्ली 94 ने एन.वी.सिंह 'नादान' की 72 ग़ज़लों का संकलन 'शाखों में नमी कम' शीर्षक से 2020 में ही प्रकाशित किया गया है। उनकी ग़ज़लों के कई शेर तो पाठकों के दिलों में उतरकर घर कर जाने वाले है। उदाहरणार्थ– *चाहत का मेरी और कोई इम्तहाँ न हो/चर्चे में तेरे नाम का नामोनिशाँ न हो।* अथवा जानी दुश्मन से हम तो खबरदार थे। घर के दुश्मन से ही बेखबर हो गए? पुस्तक स्वागत योग्य है।

'बुझा चिराग हूँ' शीर्षक से इसी वर्ष हिंदी ग़ज़ल के सशक्त हस्ताक्षर एवं चिंतक दीक्षित दनकौरी के सुसंपादन में कालजयी शायरा शैलजा 'नरहरि' की 105 चयनित ग़ज़लों का संकलन ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली–2 से प्रकाशित हुआ है। इन ग़ज़लों में निहित जीवन के बहुरंगी शब्दचित्र शेरों के रूप में उद्धरणीय हैं– *हर खुशी में फरेब शामिल है/ टूटने दो इसे मेरा दिल है।* अथवा *था जरूरी उतार देना भी/थोड़े दिन ही लिवास थी दुनिया*। पुस्तक संग्रहणीय है।

हैदराबाद की साहित्यिक भावभूमि से गोविंद मिश्र की मानवीय संवेदनाओं एवं सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण हिंदुस्तानी बोलचाल की भाषा में कही गई ग़ज़लों का संकलन भी इसी वर्ष 'रेत की आँखें' शीर्षक से काची–गुड़ा से प्रकाशित हुआ है। बानगी के तौर पर कवि के एक दो शेर प्रस्तुत हैं– *हर बार मैने दीप जलाए हैं प्यार के/हर बार आँधियों का असर देखता हूँ मैं।* अथवा *बेचकर अपना जमीर आप जहाँ तक पहुँचे/हम कहाँ बेच के खुद को भी वहाँ तक पहुँचे*। पुस्तक निश्चय ही पाठकों को प्रभावित करेगी और उन्हें चिंतन के नए आयाम देगी।

समीक्ष्य वर्ष में ही युवा ग़ज़लकार नितिन 'नायाब' की पुष्ट ग़ज़लों का संकलन 'मक्तब–ए–इश्क' बोधि प्रकाशन, जयपुर ने प्रकाशित किया गया है। उन्होंने अपनी ग़ज़लों द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि श्रेष्ठ रचनाधर्मिता के लिए उम्र का कोई बंधंन नहीं होता। यहाँ हम उनके एक दो खूबसूरत शेर उदधृत कर रहे हैं– *उम्र से भारी फ़िक्रें ढोने वाले लोग/भरी जवानी खुद को बूढ़ा कर लेंगे'* अथवा *इश्क की चादर लाया हूँ और खास बात ये है इसमें/जितने पैर पसारो ये उतनी लंबी हो जाती है।* पुस्तक ग़ज़ल प्रेमियों के लिए एक विलक्षण उपहार है।

इसी प्रकार वरिष्ठ ग़ज़लकार एवं पेशे से सर्जन गणेश गायकवाड़जी की 112 ग़ज़लों का संकलन 'मेरी निगाह से देखो' ए जू क्रिएशन पब्लिशिंग, नई दिल्ली–75 से इस वर्ष प्रकाशित हुआ। इनकी ग़ज़लों के एक दो शेर उद्धृत करने का लोभ संवरण मैं नहीं कर पा रहा हूँ। ज़रा देखिए *दिल बहल जाए तुम्हारा ये भी आसान नहीं/ये मेरे शेर है तफ़रीह का सामान नहीं।* अथवा *दोस्ती प्यार, वफ़ा, इश्क, मोहब्बत, चाहत/दिल में हम कितने गुनहगार सम्हाले हुए हैं?* इन ग़ज़लों में कथ्य एवं शिल्प एक दूसरे के पूरक बन गए हैं। सुप्रसिद्ध शायर मरहूम राहत इंदौरी की भूमिका कृति के कलेवर में चार चाँद लगाने वाली है। निश्चय ही संकलित ग़ज़लें सुधी पाठकों के लिए उपयोगी हैं।

बोधि प्रकाशन, जयपुर से अनुपिंद्र सिंह अनूप की 80 ग़ज़लों का संकलन 'लोग पत्थर हो गए' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। सियासत पर उनकी एक टिप्पणी यहाँ दृष्टव्य है– *कुछ नहीं कीमत सरों की आपकी सरकार में/सर कटे ही सर कटे आते नज़र दरबार में।* संकेतों एवं प्रतीकों के माध्यम से अनूप जी अपनी बात कहने में सिद्धहस्त हैं। एक उदाहरण देखें– *लोग खुश थे देख काली बदलियाँ/किसने सोचा था गिरेंगी बिजलियाँ।* इसी

प्रकार जीवन के प्रति आश्वस्ति परक उनका एक शेर उल्लेखनीय है– *आँख दुनिया से मिलाकर उड़ जरा/ज़ार अपना आजमाकर उड़ जरा।* उनकी ग़ज़लों में निहित धारदार तेवर प्रशंसनीय हैं। कृति पढ़ने एवं सहेजने योग्य है।

इस वर्ष सदाशिव 'कौतुक' का नवीनतम ग़ज़ल संग्रह 'देखते ही देखते' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली–30 से आया है। जिसमें उनकी 75 ग़ज़लें संगृहीत हैं। कवि अत्यंत सहजता से अपनी ग़ज़लों को पाठकों तक पहुँचाने में समर्थ है। उदाहरणार्थ दो शेर देखें– *बात का कुछ ऐसा असर होना चाहिए/दिल मोहब्बत से तर–बतर होना चाहिए।* अथवा *जिससे तूने जिंदगी पाने की अरदास की है/उसी से मैंने तुझे पाने की अरदास की है।* अपनी इन ग़ज़लों में कवि ने शिल्प की अपेक्षा कथ्य पर अधिक ध्यान दिया है। फिर भी कृति पठनीय है।

इसी काल में सुचर्चित ग़ज़लकार डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज' की 120 ग़ज़लों का संकलन 'नई हवाएँ' शीर्षक से किताब गंज प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। नाज़ जी की हिंदी ग़ज़ल के व्याकरण पर अच्छी पकड़ है और इस विषय पर पूर्व में उनकी एक पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है। फ़िलहाल उनके दो शेर पढ़िए एवं सराहिए– *पुराने ज़ख्म पर अकसर खरोंचे मार लेते हैं/हम ऐसे भी तुझे ऐजिंदगी पुचकार लेते हैं।* अथवा *मेरी बस्ती के चिरागों को बुझाने वाले/थे सभी लोग वो सूरज के घराने वाले।* कवि की इन ग़ज़लों का रंग सुधी पाठकों के दिल पर से जल्द उतरने वाला नहीं है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है।

इसी वर्ष वरिष्ठ ग़ज़लकार धनसिंह खोना 'सुधाकर' जी की दो ग़ज़ल कृतियों 'एहसास की पर्वाज़' तथा 'क्या कहें' का लोकार्पण संपन्न हुआ जो क्रमशः वसंती प्रकाशन व जूली पब्लिकेशंस, नई दिल्ली–23 से प्रकाशित हुईं। दोनों कृतियों में कवि ने हिंदी ग़ज़ल के शिल्प पर बहुत सारी सैद्धांतिक एवं उपयोगी जानकारी दी है। वास्तव में सुधाकर जी ग़ज़ल के शिल्प के जादूगर ही हैं। संकलनों में प्रायः लंबी ग़ज़लें संकलित हैं, परंतु शिल्प का निर्वाह पूरी शिद्दत के साथ किया गया है। ये कृतियाँ हिंदी ग़ज़ल प्रेमियों के लिए स्वागत योग्य हैं।

वर्ष 2020 के जाते–जाते भाई गणेश गंभीर की ग़ज़लों का संकलन 'साफ गोई' शीर्षक से श्वेत वर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली–41 द्वारा किया गया है। इन ग़ज़लों में कवि द्वारा भोगे गए यथार्थ का स्पष्टवादिता के साथ प्रस्तुतीकरण हुआ है। सियासत के गिरगिटी रंग बेरोजगार युवा पीढ़ी के आक्रोश भ्रष्टाचार आदि को भी इन ग़ज़लों के माध्यम से रेखांकित किया गया है। उदाहरणार्थ कवि के एक दो शेर दृष्टव्य हैं– *जीवनी उसकी पढ़ी तो राज बिल्कुल खुल गया/एक रहबर काफिले का रहनुमा कैसे हुआ?* अथवा *चमकती सूरतों को खूब परखा/मिला पीतल, कहीं सोना नहीं था।* ये ग़ज़लें वास्तव में पाठकों के मन को मोह लेने वाली हैं।

इसी वर्ष सक्रिय लेखन के पर्याय रामेंद्र वर्मा की 72 स्तरीय ग़ज़लों का संकलन 'हम लघुत्तम हुए' किताब गंज प्रकाशन, गंगापुर सिटी से प्रकाशित एवं चर्चित हुआ। तत्सम हिंदी में रची गई इन ग़ज़लों में व्यंग्य के तीक्ष्ण तेवर भी यत्र–तत्र मिलते हैं। यथा– *अब समय आया है ऐसा राम ही रक्षा करें/वृद्ध माता औ' पिता से पुत्र वंदित हो गए।* अथवा *वे परामित हो के अपने घर गए/किंतु हमको हिंदू–मुस्लिम कर गए।*

इसी प्रकाशन ने वर्मा जी की दूसरी ग़ज़ल कृति 'वाणी पर प्रतिबंध है' भी इसी अवधि में प्रकाशित की है जिसमें उनकी छोटी बहरों वाली 80 ग़ज़लें संकलित हैं। भूमिका के रूप में वर्मा जी ने हिंदी ग़ज़ल के बारे में अपने महत्वपूर्ण विचार रखे हैं। इन ग़ज़लों में तत्सम शब्दावली का प्रयोग इन्हें सचमुच ही हिंदी ग़ज़ल की संज्ञा से सहज ही विभूषित कर देती है। उदाहरणार्थ– *यद्यपि संबंध पुराने हैं/फिर भी हम क्यों अनजाने हैं।* अथवा *बजे नाद अनहद सुनाई न दें/वो कण–कण में लेकिन दिखाई न दें।*

इन ग़ज़लों के निराले तेवर, कथ्य–कौशल, एवं शिल्प सौष्ठव प्रशंसनीय हैं। सुधी पाठकों के

लिए दोनों कृतियों की विस्तृत भूमिकाएँ अनिवार्यतः पठनीय एवं ग्रहणीय है। प्रस्तुत भूमिकाओं की पृष्ठभूमि में ग़ज़लों का आनंद लेना बेहतर होगा।

वरिष्ठ और स्तरीय ग़ज़लकार किशन स्वरूप जी के दो ग़ज़ल संग्रह भी इसी वर्ष उद्योग नगर प्रकाशन, गाजियावाद द्वारा 'आईना जब से ख़फ़ा है' और 'यादें हैं यादों का क्या' शीर्षक से प्रकाशित हुए हैं। इनमें संकलित ग़ज़लें समकालीन वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त विसंगतियों, विकृतियों एवं विद्रूपताओं को सहज शिष्ट ढंग से रेखांकित करती हैं।

पहले संग्रह की 96 ग़ज़लों में 'आईना' को लेकर अनेक शेर कहे गए हैं। मातृमहिमा को भी अनेक शेरों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। कवि के एक दो शेर प्रस्तुत संग्रह से उल्लेखनीय हैं– *हैं शहर की कोठियाँ तो सिर्फ़ रहने के लिए/और जीने के लिए कच्चा मकाँ अच्छा लगा।* अथवा *मुश्किल को मुसीबत को हराया है सफ़र में/है माँ की दुआओं का असर देख रहे हैं।*

दूसरे संकलन में कवि की अनुभव जन्य 95 ग़ज़लें संगृहीत हैं। माँ के स्वभाव का एक निराला स्वरूप कवि के इस शेर में देखिए– *मुझसे माँ नाराज हुई तो/खुद को उसने खूब सज़ा दी।* कवि का यह शेर भी बहुत ही चमत्कारिक अंदाज में कहा गया है– *बुढ़ापा साथ है और हम अकेले/जवानी छोड़ आए किस गली में?* इसी प्रकार पाठकों को जिंदगी के फ़लसफे से परिचित कराता हुआ प्रस्तुत शेर भी उद्धरणीय है– *अजब सा फ़लसफ़ा है जिंदगी हमको सिखाती जो/रहेगा साथ आखिर तक वो नेकी का पिटारा है।*

ग़ज़ल के व्याकरण पर किशन स्वरूप जी की अच्छी समझ है। प्रस्तुत ग़ज़लों में उर्दू के दैनिक बोलचाल के शब्दों का यत्र–तत्र उपयोग किया गया है। निःसंदेह उनके यह दोनों संकलन हिंदी ग़ज़ल की श्रीवृद्धि में सहायक होंगे।

वर्ष 2020 में ही ईश्वरी यादव ने अपनी शताधिक सजलें 'संकल्पों में धार चाहिए' शीर्षक से पुस्तक के रूप में प्रस्तुत की हैं, जो लोकोदय प्रकाशन, लखनऊ से प्रकाशित हुई है। पुस्तक से कवि के दो शेर दृष्टव्य हैं– *प्रश्न अपने तेवरों से ही तने हैं/और उत्तर हाशियों में अनमने हैं।* अथवा *अंधकार ने डेरा डाला/जुगनू कितना करे उजाला।* नुक्ता वाले उर्दू शब्दों के नीचे नुक्ता लगाने से परहेज़ करना ही सजल को ग़ज़ल से अलग करती है। मेरा सुझाव है कि ग़ज़ल ही रहने दें अथवा प्रयोग में नुक्तें वाले शब्दों से परहेज कर सकते हैं। नए प्रयोग के रूप में पुस्तक स्वागत योग्य है।

वर्ष 2020 में हिंदी ग़ज़ल के अनेक संपादित, संकलित एवं चयनित संकलन भी प्रकाशित एवं चर्चित हुए हैं। डॉ. भावना द्वारा संपादित 'इक्कीसवीं सदी की ग़ज़लें' नामक संकलन श्वेत वर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली–41 से आया है। प्रस्तुत संकलन में समकालीन 72 ग़ज़लकारों की 2–2 ग़ज़लें प्रकाशित की गई हैं। वस्तुतः ये ग़ज़लें अर्थों में इक्कीसवीं सदी का प्रतिनिधित्व करती हैं। डॉ. भावना जी के भी अब तक तीन स्वरचित ग़ज़ल संग्रह छप चुके हैं और ग़ज़ल विषयक इनके शास्त्रीय आलेख भी पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं, अतः उन्हें हिंदी ग़ज़ल की सही समझ और अच्छी पकड़ है। फिर भी यह आश्चर्य की बात है कि प्रस्तुत संकलन में कुछ चर्चित नाम छूट गए हैं। कुल मिलाकर यह संकलन ग़ज़ल प्रेमी पाठकों, कवियों, शोध छात्रों आदि के लिए समान रूप से उपयोगी, पठनीय एवं संग्रहणीय है। निश्चय ही प्रस्तुत संकलन के सुसंपादन एवं प्रस्तुतीकरण के लिए डॉ. भावना जी का प्रदेय उल्लेखनीय एवं स्मरणीय रहेगा।

इसी क्रम में हिंदी ग़ज़ल के वरिष्ठ कवि एवं चिंतक–समालोचक हरेराम समीप जी के संपादन में 'हिंदी ग़ज़ल की परंपरा' शीर्षक से 'किताब गंज प्रकाशन, गंगापुर सिटी (राजस्थान) ने एक पुस्तक प्रकाशित की है जो लोगों के बीच 'ए हैंड बुक ऑफ दी हिंदी ग़ज़ल' के नाम से चर्चित हो चुकी है। पुस्तक में कबीर से लेकर अमीर खुसरो, भारतेंदु हरिश्चंद्र, रुद्र काशिकेय, प्रसाद, निराला, बलबीर सिंह रंग, शमशेर बहादुर सिंह, त्रिलोचन शास्त्री रामावतार त्यागी जैसे 105 ग़ज़लकारों का विवरण प्रकाशित किया गया है। प्रत्येक कवि की ग़ज़लों

से 20–20 चुनिंदा शेर दो–दो पृष्ठों में संकलित किए गए हैं। पुस्तक की स्तरीय भूमिका में समीप जी ने हिंदी ग़ज़ल और उर्दू ग़ज़ल के अंतर को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया है। पुस्तक इन दिनों काफी लोकप्रिय है। जिसे हिंदी ग़ज़ल प्रेमियों एवं शोध छात्रों–विद्वानों द्वारा हाथों–हाथ लिया जा रहा है।

वर्ष 2020 में ही दिल्ली पुस्तक मेले के अवसर पर भावना प्रकाशन, पटपड़ गंज, नई दिल्ली ने हरेराम समीप जी की कृति 'समकालीन हिंदी ग़ज़लकारः एक अध्ययन' का चौथा खंड प्रकाशित किया है, जिसमें श्रीप्रताप सोमवंशी, डॉ. कुमारविनोद, याद रामशर्मा, विजय किशोर, मानव, अभिनव 'अरुण', अशोक आलोक, श्याम सखा 'श्याम' वीरेंद्र खरे अकेला, कुलदीप सलिल, पुरुषोत्तम यकीन, डॉ. महेंद्र अग्रवाल मयार स्नेही, डॉ. अजय जनमेजय आदि 35 ग़ज़लकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उदाहरण सहित अपने समालोचनात्मक आलेख प्रस्तुत करने का गुरुतर दायित्व समीप जी ने विद्वत्तापूर्ण ढंग से निभाया है। समीप जी के एतद्विषयक पूर्व प्रकाशित खंडों की भाँति ही प्रस्तुत चौथा खंड भी हिंदी ग़ज़ल की उपलब्धियों के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक दस्तावेज़ के रूप में जाना–माना एवं पहचाना जाएगा। ये चारों खंड किसी भी ग़ज़ल प्रेमी एवं हिंदी ग़ज़ल से जुड़े व्यक्ति के लिए एक पठनीय एवं संगृहणीय उपहार है। किसी भी पुस्तकालय की समृद्धि को प्रमाणित करने के लिए वहाँ इन चारों खंडों का होना अनिवार्य प्रतीत होता है।

इस वर्ष पत्र–पत्रिकाओं ने भी हिंदी ग़ज़ल के प्रचार–प्रसार में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई है। यद्यपि प्रतिष्ठित एवं व्यावसायिक पत्र–पत्रिकाओं में अब साहित्य नहीं मिलता। विज्ञापनों से पैसा बटोरने की प्रतिस्पर्धा में इन सबसे साहित्य के प्रकाशन पर विराम लगा दिया है। कदाचित इसलिए 'कादम्बिनी' सारिका नंदन जैसी पत्रिकाएँ बंद हो गई हैं। अब तो केवल अव्यावयायिक एवं लघुपत्र–पत्रिकाओं में ही साहित्य मिलता है।

इधर हिंदी और अंग्रेजी में संयुक्त रूप से प्रकाशित 'द गौड सन्स टाइम्स', पाक्षिक, दिल्ली–95, के। दिसंबर से 15 दिसंबर, 2020 अंक में साहित्य स्तंभ के अंतर्गत वरिष्ठ ग़ज़लकार बाल स्वरूप राही जी की ग़ज़लें प्रकाशित की गई हैं। उदाहरणार्थ दो शेर प्रस्तुत हैं– *आदमी से आदमी की दूरियाँ ऐसी बढ़ी/हाथ मिलना तक कठिन है, मिल कहाँ पाए हृदय है।* इसी प्रकार कोरोना काल को झेलते हुए राही जी कहते हैं– *ग़रक़यामत ये नहीं तो और होगी कौन सी/आदमी कब तक ये कोरोना सहेगा देखिए।*

दक्षिण भारत की साहित्यिक नगरी हैदराबाद से गोविंद अक्षय जी के संपादन में 'गोल कोंडा दर्पण' मासिक के अंकों में कुछ पुष्ट ग़ज़लें आई हैं। पत्रिका के सितंबर 2020 अंक में डॉ. अश्वघोष की छह, डॉ. कुँअरबेचैन की एक एवं कविता किरण की 3 ग़ज़लें प्रकाशित की गई हैं। डॉ. कुँअरबेचैन जी का एक मक्ता दृष्टव्य है– *आँखों में मेरी उसकी ही आँखों का है नशा/आँसू की शक्ल में हैं ये बूंदें शराब की।*

इसी पत्रिका के नवंबर 2020 अंक में डॉ. ब्रह्मजीत गौतम की 2, डॉ. किशन तिवारी की 4, और वहीद पाशाकादरी की 3 ग़ज़लें प्रकाशित हैं। ब्रहमजीत गौतम की ग़ज़लों में कोरोना का प्रभाव देखिए– *कोरोना से त्रस्त हो गए/घर में ही सब व्यस्त हो गए।* किशन तिवारी ने अपनी एक ग़ज़ल में सियासत पर क्या खूब टिप्पणी की है। जरा देखिए– *कल जो निगरानी शुदा बदमाश था इस शहर का/अब सियासत का सफल वह सरगना लगने लगा।*

वर्ष के अंतिम अर्थात् दिसंबर, 2020 अंक में 'गोल कोंडा दर्पण' में डॉ. केवलकृष्ण पाठक की दो, घमंडी लाल अग्रवाल की चार तथा अनिरुद्ध सिन्हा की चार ग़ज़लें छपी है। घमंडी लाल अग्रवाल जी सही फ़रमाते हैं– *नेक काम वाला पाता/आँसू का खत इस युग में।* इसी प्रकार हिंदी के सदाबहार ग़ज़लकार अनिरुद्ध सिन्हा का एक शेर उद्धरणीय बन पड़ा है– *ग़मों ने इतनी मुहब्बत से हमको*

पाला है/क़दम उठे न हमारे किसी खुशी की तरफ़।

इधर दैनिक 'अमर उजाला' कानपुर ने 29 दिसंबर, 2020 के अंक में 'शिलालेख' स्तंभ के अंतर्गत हिंदी उर्दू दोनों में लोकप्रिय ग़ज़लकार जनाब बशीर बद्र की एक ग़ज़ल छापी है। ग़ज़ल के दो शेर देखें– *कोई काँटा चुभा नहीं होता/दिल अगर फूल सा नहीं होता।* और *जी बहुत चाहता है सच बोलें/क्या करें हौसला नहीं होता।*

श्री मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति, इंदौर (म.प्र.) द्वारा संचालित मासिक पत्रिका 'वीणा' के जनवरी, 2020 अंक में हिंदी ग़ज़ल पर डॉ. ब्रह्म जीत गौतम का एक उपयोगी एवं शैल्पिक जानकारी से युक्त आलेख 'ग़ज़ल का अनुशासन और हिंदी ग़ज़ल' प्रकाशित किया गया है। इसी अंक में नवीन माथुर पंचोली, विनय मिश्र और डॉ. मधुर नज़्मी की ग़ज़लें भी छापी गई हैं। अपनी ग़ज़ल में डॉ. मधुरनज़्मी क्या खूब फरमाते हैं– *खेत से खलिहान तक लेकर गई दुश्वारियाँ/हो गई मुश्किल किसानों के लिए अब खेतियाँ।* और *एक वीरानी का मंज़र है चमन में आजकल/बागबाँ ने काट दीं सब फूल वाली टहनियाँ।*

'वीणा' के ही नवंबर, 2020 के अंक में डॉ. शिवओम अंबर से उत्कर्ष अग्निहोत्री की वार्ता के आधार पर एक महत्वपूर्ण साक्षात्कार 'हिंदी ग़ज़लः भाषा के भोज पत्र पर उदात्त चेतना का ऋक्मंत्र है' शीर्षक से प्रकाशित किया गया है। यह प्रेरक और पठनीय है। इसी अंक में कृष्ण सुकुमार अजीज अंसारी और सत्यशील राम त्रिपाठी की ग़ज़लें छपी हैं। यहाँ कृष्ण सुकुमार जी का एक मार्मिक शेर दृष्टव्य है–

वे क्या दिन थे जिन्हें ज़माना हो गया लेकिन/तेरे स्पर्श का लमहा थमा सा रह गया है कुछ? सत्यशील राम त्रिपाठी का भी एक शेर माँ के संदर्भ में अत्यंत ही प्रासांगिक बन गया है– *शहर जब से गया बेटा नहीं माँ चैन से सोई/थके बाबा थके बाबा के सिर में तेल मलना भूल जाती है।* हिंदी विद्यापीठ देवघर (झारखंड) की त्रैमासिक हिंदी विद्यापीठ पत्रिका के अप्रैल–सितंबर, 2020 अंक में वरिष्ठ कवि डॉ. अश्वघोष जी की चार पठनीय ग़ज़लें छापी गई हैं।

इसी क्रम में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा धर्मयुग पुरस्कार प्राप्त तथा हिंदी कविता को समर्पित त्रैमासिक पत्रिका 'अभिनव प्रयास' के इस वर्ष के चारों अंको में स्तरीय ग़ज़लें छापी गई हैं। पत्रिका का सुसंपादन एवं प्रकाशन हिंदी के प्रतिष्ठित युवा साहित्यकार एवं मंच मर्मज्ञ अशोक अंजुम जी कर रहे हैं। अलीगढ़ (उ.प्र) से नियमित प्रकाशित पत्रिका के जनवरी–मार्च 2020 अंक में विज्ञान व्रत, डॉ. महेंद्र अग्रवाल, डॉ. नलिनी विभानाज़ली, डॉ. अशोक गुल्शन, डॉ. शशि जोशी आदि की उत्तम ग़ज़ले देखने को मिलती हैं। यहाँ शशि जोशी का एक शेर उद्धरणीय है– *यहाँ जिंदा हैं रिश्ते/ये इक छोटा शहर है।*

प्रयोग के तौर पर अशोक अंजुम सहित दो अन्य कवियों की ब्रज ग़ज़लें भी छापी गई हैं। नई बहू का कटु–यथार्थ अशोक अंजुम के इन शेरों में देखिए– *बात–बात पर रहै उतारू लड़िबै कौ/चीख–चीख बादल फारै नई बहू/ हा–हा–ही–ही करै पलँग पै परे–परे/मोबाइल पै टैम गुजारै नई बहू।*

पत्रिका के अप्रैल–जून, 2020 के अंक में नितिन नायाब देवमणि पांडेय, किशन तिवारी देवी नागरानी, ए.एफ. नजर, डॉ. शमीम देव बंदी, सोनिया वर्मा आदि की ग़ज़लें छपी हैं। किशन तिवारी जी का एक शेर उनकी विवश आश्वस्तियों को तीव्रता से रेखांकित करता है– *अपनी अगली पीढ़ियाँ इस दौर के इतिहास को/जब लिखेंगी आँसुओं का ही बयाँ रह जाएगा।* अंक में डॉ. पवन कुमार की 6 ब्रज ग़ज़लें भी पठनीय हैं।

अभिनव प्रयास के ही जुलाई–सितंबर, 2020 अंक में डॉ. गणेश गायकवाड़, अश्वघोष, राजेंद्र वर्मा, केशवशरण, रमेश प्रसून आदि की ग़ज़लें मन को छूने वाली हैं। राजेंद्र वर्मा का यह शेर दृष्टव्य है– *आँख के तारों पे जब सर्वस्व न्यौछावर किया/हम स्वयं अपने ही घर में क्यों अजाने हो*

गए? इसी अंक मे उर्मिला माधव की सात ब्रज ग़ज़लें अपनी अलग मिठास और ब्रज भाषा के सौंदर्य को प्रस्तुत करती हैं।

समीक्ष्य वर्ष के अंतिम अंक (अक्तूबर–दिसंबर 2020 अंक) में डॉ. कुमार प्रजापति, डॉ. सोन रूपा विशाल, घमंडी लाल अग्रवाल 'नलिन' आदि की ग़ज़लें मन को प्रभावित करती हैं।

डॉ. उर्मिलेश जी की सुपत्री डॉ. सोन रूपा विशाल का आत्मकथ्य उनकी ग़ज़ल के एक शेर में देखिए– *मुक्त होती तो और कुछ होती/मैं नदी हूँ तो हूँ किनारों से।*

प्रस्तुत पत्रिका के हर अंक में डॉ. उर्मिलेश की ग़ज़लों के मिसरे पर आधारित पुरस्कार योजना के बहाने उनकी सुपुत्री के सोजन्य से तरही ग़ज़लों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इस अंक में ही सालिम थुजा अंसारी और रवि खंडेलवाल की ब्रज भाषा की चाशनी में पगी ब्रज ग़ज़लों का तो जवाब नहीं।

इस वर्ष 'आजकल' मासिक का अगस्त अंक एवं 'हरिगंधा' मासिक का दिसंबर अंक हिंदी ग़ज़ल विशेषांकों के रूप में प्रकाशित किए गए हैं, जो इन दिनों विशेष चर्चा में हैं।

सारांशतः प्रस्तुत वर्ष 2020 हिंदी ग़ज़ल साहित्य के लिए एक उपलब्धि परक वर्ष रहा है। मीडिया और मोबाइल के इस युग में भी यदि ग़ज़ल प्रेमी पाठक श्रेष्ठ ग़ज़ल कृतियों को खरीदकर पढ़ने की स्वस्थ मानसिकता बना सके तो इससे कवियों एवं प्रकाशकों को मिलकर काम करने की प्रेरणा मिलेगी।

– निकट बावन चुंगी चौराहा, 802, आलु थोक, उत्तरी हरदोई, उत्तर प्रदेश–241001

❑❑❑

21

हिंदी नाटक एवं रंगमंच

डॉ. अनुराग सिंह चौहान

हिंदी साहित्य के इतिहास में पुनर्जागरण काल नव सांस्कृतिक उत्थान व राष्ट्रीय जागरण के नवोन्मेष का प्रतिनिधि काल माना जाता है। सामाजिक एवं धार्मिक जागरूकता को सहेजे यह काल में राष्ट्रीय भावना का संचार पूरित करता प्रतीत हुआ। संक्रमण काल जन सामान्य में सांस्कृतिक व राष्ट्रीय चेतना के संवहन में नाट्य विद्या का गहन प्रभाव दृष्टिगत हुआ। आधुनिक काल में नाट्य विद्या के पल्लवन के पार्श्व में पुरातन भारतीय नाट्य परंपरा का उल्लेख पूर्ण प्रासंगिकता रखता है।

मैथिली भाषा में हिंदी के प्राचीनतम नाट्य स्वरूप जीवंत पाए जाते हैं। इनमें अपेक्षित नाट्य तत्वों का समाहार सहज लभ्य है। मैथिली भाषा में प्रणीत नाट्य परंपरा का प्रभाव ओड़िशा, असम, नेपाल आदि प्रांतों की भाषाओं पर लक्ष्य हुआ। हिंदी नाट्य साहित्य का प्रादुर्भाव ब्रजप्रदेश से 'रासलीला' विधा द्वारा उददीप्त हुआ। यह राम मंडलियों द्वारा मंचित किए गए। सत्रहवीं, अठाहरवीं शताब्दी में पद्यबद्ध नाटय रचना प्रारंभ हुई, इनमें क्रमशः रामायण महानाटक, समयसार नाटक, प्रबोध चंद्रोदय, हनुमन्नाटक उल्लेखनीय हैं। इन नाट्यों में नाटकीय तत्व अल्प एवं काव्य तत्वों की प्रमुखता रही है।

वस्तुतः संस्कृत की ह्रासोन्मुखी नाट्य परंपरा की छाया से ग्रस्त भारतेंदु पूर्व हिंदी नाट्य परंपरा में संतों की नैराश्य वाणी व गद्य का अभाव प्रमुख सतही अवरोधक रहे। मूलतः भारतेंदुकाल पूर्व राष्ट्रीय चिंतन परंपरा पतनोन्मुखी अवस्था में धूलि–धूसरित हो चली थी। इस का सर्वाधिक पतित रूप रीतिकाल में चरमोत्कर्ष पर था। इन नाट्य परंपराओं में प्रेरणा लुप्तप्रायः थी। यद्यपि सोलहवीं शताब्दी में रामलीला बिहार नाटक, जानकी रामचरित नाटक, आनंद रघुनंदन नाटक, प्रद्युम्न विजय नाटक का सृजन हुआ, तथापि क्षेमेश्वर, जयदेव आदि नाट्यकारों से प्रभावित नाट्य परंपरा के इन, नाटकों में अभिनेयता के गुण नगण्य पाए जाते हैं।

नाट्य परंपरा के इस खालीपन को भारतेंदु एवं भारतेंदु मंडल के नाट्यकारों ने वांछित आकांक्षाओं व आशाओं के जीवंत चित्रण से पूरित करना प्रारंभ किया। भारतेंदु ने तत्कालीन रंगमंच की आवश्यकताओं को आत्मानुभूत करते हुए पारसी रंगमंच कंपनियों के अर्थोपार्जन लालसा व सस्ते भौंडेपन को भाँपा।

इन्होंने अंग्रेजी, बांग्ला, संस्कृत आदि नाट्यों का अध्ययन कर जनमानस की रुचि को परिमार्जित किया। भारतेंदु के इस अवदान को गणपति चंद्रगुप्त के शब्दों में स्वर मिलता है, "यदि हम एक ऐसा नाटककार ढूँढें जिसने नाटक शास्त्र के गंभीर अध्ययन के आधार पर नाट्य कला पर सैद्धांतिक आलोचना लिखी हो, जिसने प्राचीन और नवीन, स्वदेशी और विदेशी नाटकों का अध्ययन व अनुवाद

किया हो, जिसने वैयक्तिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर अनेक पौराणिक, ऐतिहासिक और मौलिक नाटकों की रचना की हो और जिसने नाटकों की रचना ही नहीं, अपितु उन्हें रंगमंच पर खेलकर भी दिखाया हो– इन सब विशेषताओं से संपन्न नाटककार हिंदी में ही नहीं, समस्त विश्व–साहित्य में केवल दो–चार मिलेंगे और उन सबमें भारतेंदु का स्थान सबसे ऊँचा होगा।"[1]

भारतेंदु नाट्य 'नीलदेवी', 'सती–प्रताप' भारतीय संस्कृति के आदर्श प्रतिमान स्थापित करते दृश्य हुए। इस काल में सांस्कृतिक उन्नयन के प्रतिनिधि नाट्य क्रमशः प्रताप नारायण मिश्र का 'हठीहम्मीर', श्रीनिवासदास का 'संयोगिता स्वयंवर', भोजदेव उपाध्याय कृत 'सुलोचना सती', शालिग्राम कृत 'मोरध्वज' सांस्कृतिक जागरण का निर्वहन करते प्रतीत हुए। वहीं राष्ट्रप्रेम व सामाजिक समस्याओं के चितेरे नाट्य राधाकृष्ण दास का 'दुःखिनी बाला', प्रताप नारायण मिश्र का 'गो संकट', भारतेंदु 'भारत दुर्दशा' में अपनी छाप छोड़ते अपार संभावनाओं की पृष्ठभूमि निर्मित करते हैं। इस काल में नाट्य के तीन रूप क्रमशः मौलिक, अनूदित एवं रूपांतरित अस्तित्व में आए।

प्रमुखतः संस्कृत भाषा में सृजित पाखंड विडंबन, मुद्राराक्षस, धनंजय विजय, कर्पूर मंजरी आदि का हिंदी अनुवाद पाठक व दर्शकों को नाट्य केंद्रित करते हैं। इस काल के नाट्य सृजन में पूर्व संस्कृत नाट्य परंपरा शैली अंग भरत वाक्य, नांदी पाठ, विष्कंभक, अंकावतार का प्रयोग अनवरत हुआ। कालांतर में द्विवेदी युग में यह स्वरूप दरकता प्रतीत हुआ। मध्यवर्ग का अभ्युदय नाट्य का सहज लोक जीवन से संपर्कहीनता की ओर ले गया वहीं गांधीवादी जीवन दर्शन, सांस्कृतिक व राजनीतिक आंदोलनों ने इन्हें प्रभावित किया। द्विवेदी युगीन नाट्य परंपरा इतिवृत्तात्मक स्वरूप लिए हुए गतिमान हुई, जिसकी परिणति मौलिक उद्भावनाओं के हनन में सामने आई।

अनूदित नाट्य सृजन के बाहुल्य में मौलिक सृजन प्रसाद के आने तक धूमिल रहा। यह कालखंड ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रासंगिक है किंतु संख्यात्मक व कलात्मक दृष्टि से मौलिक नाट्य साहित्य नगण्य ही रहा। द्विवेदी युगीन नाट्यकारों यथा, माखनलाल चतुर्वेदी, सुदर्शन, बद्रीनाथ, भट्ट, मिश्रबंधु व गंगा प्रसाद श्रीवास्तव ने रंगमंच, कथावस्तु, संवाद, पात्र योजना की दृष्टि से सशक्त नाट्य सृजन किया। माखनलाल चतुर्वेदी कृत 'कृष्णार्जुन युद्ध', मिश्रबंधु कृत– 'नेत्रोन्मीलन', उग्र 'चार बेचारे', एवं माधवप्रसाद शुक्ल कृत 'महाभारत' उल्लेखनीय हैं।

हिंदी नाटकों का विकास भारतेंदु युग में पुष्पित हो प्रसाद काल में पल्लवित होने लगा। प्रसाद युगीन नाटक चारित्रिक अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण हो भारतीय नाट्य उद्देश्य रस संचार का पूर्ण परिपाक प्राप्त करते हैं। स्वयं प्रसाद ने समस्यात्मक, ऐतिहासिक, प्रतीकात्मक एवं गीति नाट्य सृजन किया यथा, कल्याणी–परिणय सज्जन, जनमेजय का नागयज्ञ व कामना निर्धारित कसौटियों पर खरे उतरते हैं। मूलतः प्रसाद युगीन नाटकों में भविष्योन्मुखी प्रेरणा एवं वर्तमान का समन्वित स्वरूप देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की उद्दाम अनुभूति के लिए उपस्थित होता है। प्रसाद ने नाट्य साहित्य द्वारा भारतीय इतिहास को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। उनके अवदान को इतिहासकार राखालदास संजोते हैं, "प्रसाद जी ने अनेक स्थलों पर हमारे इतिहास–ज्ञान में संशोधन किया है।"[2]

प्रसाद नाट्य साहित्य में उत्कृष्ट अभिनय की अपार संभावनाएँ हैं, वहीं सेठ गोविंददास, जगदीशचंद्र, उदयशंकर भट्ट ने ऐतिहासिक नाट्य सृजन में मील के पत्थर स्थापित किए। प्रसाद युग में उदयशंकर कृत 'अंबा', सागर विजय', गोविंदबल्लभ कृत 'वरमाला', अपनी सघन छवि प्रस्तुत करते प्रतीत होते हैं। इसी कालखंड के अवसान में शॉ व इब्सन से प्रभावित हो लक्ष्मीनारायण मिश्र व उपेंद्रनाथ अश्क सरीखे नाट्यकारों ने समस्या नाटकों का प्रादुर्भाव किया। उपेंद्रनाथ अश्क की लेखनी ने सामाजिक समस्याओं के चित्रण के चलते 'अलग–अलग रास्ते', 'स्वर्ग की झलक', 'उड़ान' व 'कैद' सरीखे नाटकों का सृजन किया।

सामाजिक रूढ़ियों में बँधी नारी, अर्थ संबंधों के बेबाक चित्रण, मध्य वर्ग की स्थूल समस्याओं

का सूक्ष्म चित्रण हिंदी नाट्य विधा को यथार्थ से साक्षात् करवाते हुए मंचन के निकट ले आया। जगदीश चंद्र माथुर कृत 'पहला राजा', 'शरदीया', 'कोणार्क', विष्णु प्रभाकर कृत 'डॉक्टर और समाधी', डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'अंधा कुआँ', 'तीन आँखों वाली मछली', 'मादा कैक्टस', 'दर्पण', 'सुंदर रस सूखा सरोवर' जीवन के विविध परिदृश्यों पर अपना अंकन करते प्रतीत होते हैं। वहीं मोहन राकेश के नाट्यकर्मों यथा, 'लहरों के राजहंस', 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे–अधूरे' ने सामाजिक विसंगतियों, जीवन के अधूरेपन व रिक्तता को मनोवैज्ञानिक ढाँचे में सहेजते हुए रंगमंचीय अर्हता व आधुनिक भाव वैशिष्ट्य को स्वर प्रदान किए हैं।

वस्तुतः इस कालखंड के समाज में पुरातन नैतिकता की अस्वीकार्यता एवं नवीन मूल्यों की स्वीकृति में हिचकिचाहट का द्वंद्व, अस्थिर संबंधों की विडंबनाओं पर प्रकाश डाला है। उन्मुक्त योग एवं निर्बाध स्वच्छंदता रंगमंचीय व शैल्पिक विधान के नवीन प्रतिमान निर्मित करते हैं। देवराज दिनेश कृत 'यशस्वी भोज', 'मानव प्रताप', रमेश बक्षी 'देवयानी का कहना है।' रामवृक्ष बेनीपुरी का 'अंबपाली' मंचीय उत्कृष्टता के अनन्य उदाहरण हैं। छायावादोत्तर काल के नाटककारों के मध्य पुरातन नाटककार गोविंद बल्लभ पंत, जगन्नाथ प्रसाद, हरिकृष्ण प्रेमी का सृजन यथार्थ की अपेक्षाकृत आदर्श की महत्ता प्रस्तुत करते हैं। हरिकृष्ण प्रेमी के नाट्य साहित्य में मध्यकालीन इतिहास जीवंत हो उठता है यथा, शशिगुप्त, कर्ण, संतोष कहाँ, हिंसा या अहिंसा वहीं उदयशंकर भट्ट का नाट्य साहित्य व्यंग्य, बौद्धिकता व यथार्थवाद में आदर्शवाद समेटे रंगमंच पर अभिव्यक्ति की संभावनाएँ टटोलता है यथा, नया समाज, शक–विजय आदि.....।

वहीं स्वातंत्र्योत्तर काल में पीढ़ीगत संघर्ष व परिवर्तित सामाजिक मूल्यों के आधुनिक बोध को चंद्रगुप्त विद्यालंकार ने 'न्याय की रात', नरेश मेहता कृत 'खंडित प्रतिमाएँ, 'सुबह के घंटे', मन्नू भंडारी कृत 'बिन दीवारों का घर' में अनुभूत किया गया। स्वतंत्रता पश्चात् अनेक हिंदी नाट्य–रंगमंचों की स्थापना हुई जिन्होंने अधनातुन रंग चेतना के आलोक में मौलिक नाट्य सृजन के नव चित्र उकेरे। 'कलंकी', 'शतुरमुर्ग', 'सूर्यमुख', 'त्रिशंकु' व 'आधे–अधूरे' सरीखे नाट्कों ने भारतीय समाज के प्रतिपल परिवर्तित परिदृश्य को संजोया। सामाजिक व राजनीतिक अंतर्विरोधों, जटिलताओं व विसंगतियों को नाट्यकारों ने नव शिल्प प्रयोगों में स्थान दिया।

जीवन के नव संदर्भ राजनीतिक, सामाजिक जीवन में पसरी यंत्रवत जीनव शैली, बिखरते व्यक्तित्व, छद्म संबंधों के शीतल अवसानों को रंगमंच ने प्रश्न रूप में जनमानस के सम्मुख प्रस्तुत किया। सर्वेश्वर दयाल कृत 'लड़ाई', मणिमधुकर 'रस गंधर्व', सुशील कुमार सिंह 'सिंहासन खाली है', सुरेंद्र वर्मा 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' बलराज पंडित 'पाँचवाँ सवार' एवं दया प्रकाश सिंह कृत 'कथा एक कंस की' सूक्ष्म विश्लेषण द्वारा पाठक वर्ग श्रोता/दर्शक वर्ग को रंगमंच से जोड़ते हैं।

हिंदी नाट्य परंपरा के आधुनिक नाट्यकारों ने भारतीय समाज में प्रचलित पौराणिक मिथकों को नाट्य में समाहित कर आधुनिक जीवन की विद्रूपताओं, विसंगतियों व विडंबनाओं को अतीत व वर्तमान के सामंजस्य द्वारा प्रस्तुत किया है यथा, गिरिराज किशोर का 'प्रजा ही रहने दो', रेवती शरण शर्मा कृत 'राजा बलि की नई कथा', शंकर शेष का 'खजुराहों का शिल्पी' एवं डॉ. विनय का 'एक प्रश्न और' सशक्त उदाहरण हैं।

जीवन का अर्थवान स्वरूप सहेजता हिंदी नाट्यकार अवसरवादिता के दंश से पीड़ित सिद्धांतहीन, नीति शून्य राजनीति से पीड़ित हो नाट्यकर्म में अपनी आवाज मुखर करते हैं, सर्वेश्वर दयाल 'अब गरीबी हटाओ', सुशील कुमार का 'नागपाश', मणिमधुकर का 'बुलबुल सराय', 'रमेश उपाध्याय का 'पेपरवेट' तत्कालीन राजनीतिक परिदृश्य का सूक्ष्मान्वेषण प्रस्तुत करते हैं। वहीं अजनबीपन, निराशा, अनिश्चय के मनोभावों को हिंदी रंगमंच पर गिरिराज किशोर कृत 'नरमेघ', मणि मधुकर का 'दुलारी बाई', कमलेश्वर का 'अधूरी आवाज़', अमृतराय कृत 'चिंदिया का झालर' व्यक्त करते हैं।

भारतीय नाट्यकारों ने अस्तित्ववादी जीवन दर्शन एवं तथाकथित खोखली आधुनिकता के स्थान पर आशावादी मानव मूल्यों की ओर सकारात्मक कदम बढ़ाए। नाट्य लेखन परंपरा अपने मूल परंपरागत स्वरूपों से इतर लोकनाट्य धर्मिता से परिपूर्ण लोकनाट्य में प्रवृत्त हुई। नौटंकी व ख्याल जैसी परंपराओं ने नाट्य का कलात्मक स्वरूप रंगमंच पर जीवंत किया। हबीब तनवीर कृत 'आगरा बाजार', मणिमधुकर कृत 'रंस गंधर्व' ने लोकनाट्य परंपरा को समृद्ध किया। वहीं नुक्कड़ नाट्कों ने धार्मिक, राजनीतिक व आर्थिक मुद्दों को चौराहों, मोहल्लों में नुक्कड़ शैली विधा में लोकप्रिय बनाया।

समस्या को नाट्य वस्तु में आस्वाद कर सहज भाव से अभिव्यक्त किया जाता है। नुक्कड़ नाट्य विधा नाट्यकर्मियों व दर्शकों के मध्य निकटस्थ आत्मीयता स्थापित करती है। मानव मन की इस अंतर्यात्रा की नाट्य परंपरा में काव्य नाट्यों ने काव्य के दृश्यत्व को प्रभावी बनाया। चंद्रशेखर कृत 'शिव धनुष', अज्ञेय कृत 'उत्तर प्रियदर्शी', वीरेंद्र नारायण कृत 'सूरदास' उल्लेखनीय हैं। आधुनिक नाट्य विधा में अनूदित रूपांतरित नाट्कों के सृजन ने भारतीय भाषाओं एवं विदेशी नाट्कों के भारतीय परिप्रेक्ष्य में सशक्त पकड़ बनाई है यथा, केशवचंद्र वर्मा कृत 'पंछी ऐसे आते हैं।' (मराठी)

अनिल मुखर्जी कृत 'जरासंध की कहानी', श्रीकृष्ण कुमार 'छाया नट' बांग्ला नाटक, कृष्ण बलदेव बैद कृत सेमुअल वैकेट कृत 'वेटिंगकार गोड़ो' आदि का रूपांतरण किया। वस्तुतः हिंदी रंगमंच सृजन की अपार संभावनाएँ टटोलते हुए नई तकनीकों व विदेशी नाट्य प्रस्तुतीकरण के अभीष्ट मापदंड स्थापित कर रहा है। कल्पनाशील रंगकर्मी यथाः इब्राहिम अलका, श्यामानंदन जालान, भानु भारती, देवेंद्र अंकुर, व बंशी कौल अभिनय की तमाम संभावनाओं का पूर्ण दोहन करते हुए देश व समाज की लोकजीवन के संदर्भ में नूतन परिभाषा गढ़ रहे हैं।

व्यक्ति और समाज की घुटन, खोखली आधुनिकता बोध को मुखर स्वर एकांकी नाट्य विधा में जीवंत हो उठा है। रामकुमार वर्मा कृत 'पृथ्वीराज की आँखें', 'चारुमित्रा', 'विभूति' और 'कौमुदी', जगदीश चंद्र माथुर कृत 'भोर का एकांकी', 'कबूतरखाना', वस्तुतः हिंदी नाट्य साहित्य रंगमंच पर देशी–विदेशी नाट्य साहित्य के प्रभाव पर अपना आकलन करता प्रतीत हो रहा है।

विभिन्न विधाओं यथाः, रेडियो रूपांतरित, ध्वनि नाट्य, रेडियो रूपक, फीचर आदि में विविधमुखी सृजन कर्म प्रयोग किए जा रहे हैं। परिवर्तित युगीन परिस्थितियों में नाट्य परंपरा में विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अमेच्योर रंगमंच व राष्ट्रीय रंगमंचों का सृजन अनवरत सृजनाधीन है। चलचित्रों, रेडियो रूपक एवं एकांकियों का वृहद कैनवास सृजन की अपार संभावनाएँ तलाशते प्रतीत हो रहे हैं। आधुनिक गीति नाट्य परंपरा जीवन के कटु सत्यों को मनुष्य की रागात्मक वृत्तियों के साथ रहस्यात्मक प्रकृति में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। धर्मवीर भारती का 'अंधा युग', रामधारी सिंह दिनकर का 'उर्वशी', गिरिजाकुमार माथुर का 'इंदुमती', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कृत 'पंचवटी–प्रसंग' आदि गीति नाट्य हिंदी रंगमंच पर अपना प्रभाव छोड़ते प्रतीत होते हैं।

वस्तुतः हिंदी रंगमंचों की स्थापना में अंग्रेजी साहित्य व अंग्रेज जाति की महत्वपूर्ण भूमिका रही। अंग्रेजों द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल में मद्रास, बंबई, पटना, कलकत्ता आदि शहरों में रंगशालाओं की स्थापना की गई। प्रथम रंगशाला 'प्ले हाउस' (1776 ई.) कलकत्ते में स्थापित हुई, तत्पश्चात् 'कलकत्ता थियेटर' (1777 ई.) की स्थापना हुई। मूलतः हिंदी रंगमंच का प्रारंभ 1853 ई. में माटगाँव (नेपाल) में मंचित 'विद्याविलाप' नाटक से माना जाता है। रंगमंच का नवोत्थान 1871 ई. में स्थापित 'अल्फ्रेड मंडली' ने आरंभ किया।

हिंदी में अव्यवसायिक रंगमंच का सृजन बनारस थियेटर (1868 ई.) व नेशनल थियेटर (1884 ई.) से माना जाता है। आर्य नाट्य सभा, हिंदी नाट्य समिति, श्री रामलीला नाटक मंडली (इलाहाबाद), कानपुर अकादमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट्स, एंबेसडर,

भारत नाट्य समिति, भारतीय कला मंदिर (कानपुर) एवं इंडियन पीपल थिएटर एसोसिएशन (इप्टा) के सृजन वर्ष 25 मई, 1943 से प्रगतिशील नाटक मंचन की भूमिका प्रशस्त हुई।

वहीं पृथ्वी थियेटर (1944 ई.) देश का प्रथम राष्ट्रीय हिंदी रंगमंच बनकर सामाजिक विषयों की जीवंत अभिव्यक्ति हेतु जाना गया। कालांतर में भारतीय रंगमंच की सृजन यात्रा के विकासशील परिप्रेक्ष्य में संगीत नाटक अकादमी द्वारा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (अप्रैल 1959) की स्थापना की गई। स्वतंत्रता के पश्चात् हिंदी रंगमंच ने व्यापक स्वरूप पाया। इस स्वरूप गठन में श्रीराम सेंटर (दिल्ली), मेघदूत, जननाट्य मंच, थिएटर यूनिट, अनामिका, प्रयोग, प्रतिध्वनि, नया थिएटर एवं देशांतर सरीखी संस्थाओं का अवदान श्रेयस्कर है।

नाट्य विधा की यह समृद्ध परंपरा सृजनात्मक मापदंडों के नवीन आयाम कोरोना काल में भी सहेजती प्रतीत हुई। यद्यपि रंगमंचीय गतिविधियाँ प्रायः बाधित रही परंतु सृजनकार ने अभिव्यक्ति व अनुभूति में तरल सामंजस्य बनाए रखा। वर्ष 2020 में पुनित बुक्स, नई दिल्ली से डॉ. गोपाल नारायण आवटे कृत नाट्य संग्रह 'मेरी धरती मेरा देश' पुलिस विभाग की सत्य घटना पर आधारित है। वस्तुतः पुलिस विभाग के व्यक्तित्व के तमाम पक्ष पूर्ण उघेड़बुन के साथ लेखनीबद्ध हुआ है।

पुलिस महकमा जहाँ प्रतिक्षण अनवरत समाज की सेवा में रत रहता है। वहीं दूसरी ओर इनका स्याह पक्ष मानव मन को अंदर तक भेद जाता है। संसार में सर्वाधिक सशक्त महकमा होने का गौरव इसे प्राप्त है। यह विभाग सत्य को झूठ साबित कर दे। अपराधी को दोषमुक्त और निरपराध को दोषी बना देना इनके अधिकार क्षेत्र में है। जिस व्यक्ति से दुश्मनी हो उसे कहीं भी उलझा दिया जाता है। इनकी क्रूरता व निष्ठुरता के शिकार प्रायः अनपढ़ निरीह ग्रामीण व्यक्ति होते हैं।

जाँच अनुसंधान के दौरान अभियुक्त से मारपीट, गंदगी खिखाना, अप्राकृतिक कृत्य एवं हत्या तक कर देना इनके अनैतिक क्रियाकलाप होते हैं। वहीं अन्य पक्ष में यह कर्त्तव्यनिष्ठा का जीवंत उदाहरण है दिन–रात, ठंड, बरसात, परिवार का सुख त्याग एक आम पुलिसकर्मी अपना व्यक्तित्व खोकर अपनी विवशता से जूझता प्रतीत होता है। वहीं 'आखिर कब तक' नाटक बौद्ध कथा पर आधारित है।

यह कई प्रश्नों के उत्तर खोजता हुआ मानव को अपने भीतर झाँकने का मार्ग भी दिखलाता है। वहीं राही प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा बलराम अग्रवाल कृत 'आधुनिक बाल नाटक' सामान्य जीवन की प्रेरक व रोचक घटनाओं से बाल मन को आकृष्ट करता है। ये नाटक जीवन के बहुमूल्य क्षणों को बाल मन में जीवंत व चिर स्थायी अंकन करने में प्रभावी रहे हैं। यथा, 'लुटेरे राम–नाम के', 'चमत्कारी छड़ी' आदि वहीं महात्मा गांधी के बचपन की सत्य घटनाओं पर आधारित नाटक 'पश्चाताप के आँसू', 'मोहनदास का साहस', 'मालिक, मजदूर और नेता', बाल मन में सहज नेतृत्व के बीज वपन करते हैं।

सुभाषचंद्र बोस पर आधारित बाल नाटक 'आजादी के दीवानें' भारतीय स्वतंत्रता के तमाम संघषों को उजागर करता है। पर्यावरण संरक्षण के संदेश प्रदान करते नाटक 'पेड़ बचेगा तभी बचेंगे', 'नीम बोलता है', 'पीपल बोलता है' आदि वृक्षों के सामान्य उपयोग व औषधीय गुणों से बाल मन का परिचय कराते हैं। आर.एस. विकल कृत 'ऊपर से नीचे' (राह प्रकाशन, नई दिल्ली) नाटक अपने विविध पात्रों यथा, शो मालिक, नगाड़े वाला, हारमोनियम वाला, ढोलक वाला, क्रांतिकारी, आजादी बेगम, शो मालकिन द्वारा आधुनिक नाट्य रंग कर्म प्रयोग का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह आम व्यक्ति के जीवन में घटित घटनाओं को सघनीभूत अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

नाटक मंचन में लिखे गए शब्द दर्शक को झकझोर देते हैं, "सावधान! यह नाटक आपके दाएँ–बाएँ, आगे–पीछे, कहीं से भी, कभी भी शुरू हो सकता है।"[3] यह नाटक हल्की–फुल्की टिप्पणियों द्वारा आमदर्शक से सहज रंगमंचीय संवाद स्थापित करता है। सरोज बुक्स, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित एवं डॉ. उषा यादव कृत 'सागर मंथन' नाट्य संग्रह में संकलित नाटक यथा, विश्वास का दीप,

अपना स्वर्ग, दूसरा सिद्धार्थ, जल ही निर्मल, होटल की शादी, अपना आसमान कुछ नहीं चाहिए आदि ने समाज से जुड़े तमाम संवेदनशील मुद्दों को एक सूत्र में आबद्ध किया है।

मानव मन में पसरे सन्नाटे को स्पर्श करता यह नाट्य संग्रह संवाद का मुखर मंच प्रदान करता है। अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अविनाश चंद्र मिश्र द्वारा सृजित नाटक 'जानत तुलसीदास' एवं मुक्ति पर्व क्रमशः मानवीय छटपटाहट के प्रखर केंद्र बनकर उभरे हैं। 'जानत तुलसीदास' नाट्यालेख किसी समसामयिक बोधवाली नाट्यकृति के आधार चरित्र के रूप में तुलसीदास के अंतर्मन की अभिव्यक्ति है। तुलसी निज अंतस में कर्मवीर श्रीराम को अराध्य रूप में स्वीकृति के साथ अपने कालखंड व समाज से लड़ने का सतत आवेग नाट्यपरक गतिशीलता में व्यक्त करते हैं।

कुल जीवन मूल्य गढ़ पाने के प्रयास नाटकीय युक्तियों से घिरे पूर्ण छटपटाहट लिए अभिव्यक्ति पाते हैं। वहीं 'मुक्तिपर्व' नाटक सामाचकेवा की पौराणिक कथा, नाट्यशास्त्र में वर्णित विभिन्न नाट्ययुक्तियों व मुद्राओं के समसामयिक बोधगम्य प्रयोग, मंच प्रदर्शन की परंपरागत शैलियों, लोकपर्व की जीवंत व्याख्या है। यह निजी शैली की कालजयी रचना है जो सृजन वैविध्य को समसामयिक निकष पर परखती है।

कोरोना काल में सृजन व अभिव्यक्ति के अवसर सीमित से हो गए। जिसका परिणाम अल्प सृजन व प्रकाश में परिणत हुआ। यद्यपि इस कालखंड में प्रकाशित नाटकों को आलेख में समाहित करने का श्रमसाध्य प्रयास किया गया है, तथापि किसी नाटक के अनुपलब्ध होने की स्थिति में शोधालेख में सम्मिलित न कर पाने हेतु क्षमाप्रार्थी हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा, चौदहवाँ संस्करण : 1994, पृष्ठ संख्या 562

2. हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा, चौदहवाँ संस्करण : 1994, पृष्ठ संख्या 577

3. ऊपर से नीचे, आर.एस. विकल राही प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 17, प्रथम संस्करण– 2020

– विभागाध्यक्ष (हिंदी) वेदांता स्नातकोत्तर महिला, महाविद्यालय, रींगस, सीकर, राजस्थान

❑❑❑

22

हिंदी निबंध एवं लेख

डॉ. विदुषी शर्मा

वर्ष 2020 हम सभी के समक्ष वैश्विक महामारी कोरोना के साथ उपस्थित हुआ। वर्ष भर में लॉकडाउन तथा कोरोना का संकट जारी रहा जो अब तक भी पूर्णतया समाप्त नहीं हुआ है। इसी के चलते जीवन मानो थम सा गया हो। हालाँकि अब कोरोना की वैक्सीन उपलब्ध हो चुकी है फिर भी अभी तक स्थिति सामान्य नहीं हो पाई है। इस कोरोना काल में दैनिक जीवन से संबंधित सभी गतिविधियाँ लगभग ना के बराबर ही संपादित हो पाईं। इसी के चलते साहित्यिक गतिविधियाँ भी उस गति से सफल नहीं हो पाईं जैसे आम तौर पर निष्पादित होती थीं। सभी विधाओं में साहित्य का सृजन तो हुआ परंतु लॉकडाउन के कारण उन सभी का प्रकाशन संभव नहीं हो पाया। इस लॉकडाउन में हिंदी भाषा तथा उससे संबंधित समसामयिक विषयों पर आयोजित देशभर में हुए वेबिनार तथा उन पर आधारित विभिन्न विषय विशेषज्ञों के विचारों का संकलन एवं प्रकाशन भी महत्वपूर्ण लेखों की ही श्रेणी में रखा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि ये विचार अनुभवी, विषय विशेषज्ञ, मूर्धन्य विद्वानों द्वारा प्रेषित किए गए हैं।

समकालीन साहित्य की तमाम पहलुओं के आकलन, अध्ययन व अनुशीलन के रूप में प्रकाशित कृतियों का इस रूप में सर्वेक्षण साहित्योन्नयन के लिए अपरिहार्य है। हालाँकि कोरोना महामारी के कारण वार्षिकी 2020 के लिए निबंध एवं लेख हेतु हमारे पास बहुत अधिक सामग्री एकत्रित नहीं हो पाई है। फिर भी जितनी सामग्री को हम संकलित कर पाए हैं उनके बारे में हम विस्तृत जानकारी, चर्चा आगे जारी रखेंगे।

अब हम वर्ष 2020 में प्रकाशित निबंधों और लेखों के विस्तृत विवरण पर आते हैं। यहाँ मैं अग्रिम क्षमा याचना करना चाहूँगी क्योंकि हर चीज की एक सीमा होती है। यदि किसी महत्वपूर्ण निबंध या लेख को मैं किसी भी कारणवश प्रस्तुत आलेख में सम्मिलित नहीं कर पाई हूँ या उसकी जानकारी मुझ तक किसी भी माध्यम से पहुँचना संभव नहीं हो पाया है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह आलेख या निबंध किसी भी दृष्टि से कम महत्वपूर्ण है। इसी के साथ मैं यह भी स्पष्ट करना चाहती हूँ कि इसका यह आशय कदापि नहीं है कि संक्षेप में चर्चित या उल्लिखित निबंध या लेख ही महत्वपूर्ण, प्रामाणिक, पठनीय, संग्रहणीय अथवा प्रशंसनीय या चर्चा के योग्य हैं। इन सभी ने यथा साध्य हिंदी वाङ्मय की धारा को निरंतरता, गति और शक्ति प्रदान करने में अपना यथासंभव

योगदान प्रदान किया है जिसका अभिवादन मैं करबद्ध रूप से करती हूँ।

इसीलिए जिन निबंध या आलेखों का वर्णन प्रस्तुत आलेख में नहीं हो पाया है इससे यह सिद्ध नहीं होता कि वह साहित्य का हिस्सा नहीं है या उनकी महत्ता कम है। निबंधों की शृंखला में सबसे पहले हम जिस संस्था की बात करते हैं वह है –पुस्तक न्यास। यह भारत की सबसे बड़ी संस्था है।

नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, विश्व पुस्तक मेले का वार्षिक आयोजन करता है, जो कि अफ्रीकी–एशियाई क्षेत्र में सबसे बड़ा पुस्तक कार्यक्रम है। वर्ष 2020 में शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' भी प्रगति मैदान स्थित विश्व पुस्तक मेले में पधारे। उन्होंने विशेष रूप से डिजाइन किए गए थीम मंडप 'गांधीः लेखकों के लेखक' तथा गांधी पर आधारित पुस्तकों की प्रदर्शनी की सराहना भी की। ये एक ऐसा स्थान है जहाँ आपको हर विधा से संबंधित पुस्तकें प्राप्त हो सकती हैं। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित निबंधों की शृंखला में जिन निबंधों की बात कर रहे हैं वह कालजयी हैं, सर्वकालिक हैं एवं समय–समय पर इनका पुनर्मुद्रण होता रहता है जो कि पाठकों की माँग पर भी निर्धारित होता है जैसे हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध निबंधकारों द्वारा लिखे हुए प्रसिद्ध निबंध एवं लेखों का संग्रह आदि का प्रकाशन समय–समय पर आधुनिकता का आवरण लिए किया जाता रहा है। वर्ष 2020 में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित कुछ महत्वपूर्ण निबंध एवं लेख संग्रहों का वर्णन निम्न प्रकार से है। 'अंडमान और निकोबार द्वीप समूह' बहादुर राम टम्टा द्वारा लिखित इस पुस्तक में लेखक ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों में भारत के अंश को उजागर किया है, जो महानगरीय सभ्यता की चकाचौंध से दूर प्रकृति की गोद में बसी आदिवासी जनजातियों के सरल जीवन और जिजीविषा की अदम्य छटपटाहट से जुड़ा है। चित्रा फुलोरिया द्वारा लिखित देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध भारत के छोटे राज्य उत्तराखंड के इतिहास, भूगोल, लोक, संस्कृति, खानपान, पर्यटन, प्रसिद्ध व्यक्तियों आदि के बारे में प्रामाणिक जानकारी देने वाला एक महत्वपूर्ण निबंध संग्रह है।

'अन्न–जल' नामक लेख संग्रह अरुण कुमार 'पानीबाबा' द्वारा लिखित एक रोचक संग्रह है। यह पुस्तक भारत के मौसम, क्षेत्र और जरूरतों के हिसाब से भारतीय व्यंजनों का परिचय, उनको बनाने के नुस्खे और उनके गुण–दोषों पर विमर्श करती है। 'भारत में जनसंचार की संवृद्धि और विकास' मूल रूप से जे. वी. विलानिलम द्वारा लिखित है जिसका अनुवाद हरीश जैन ने किया है। इस पुस्तक में भारत में तेजी से बदलते और उभरते जनसंचार का विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसमें जनसंचार के विभिन्न माध्यमों, रेडियो, टीवी, इंटरनेट, विज्ञापन आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। इसके बाद लेखक सुभाष शर्मा द्वारा लिखित 'भारत में मानवाधिकार' भारतीय संविधान में उल्लिखित मानवाधिकारों का विस्तार से वर्णन करने वाला एक संग्रह है। इसी शृंखला में श्यामाचरण दुबे द्वारा लिखित एवं वंदना मिश्र द्वारा अनुवादित लेख संग्रह 'भारतीय समाज' यह पुस्तक भारतीय समाज का एक प्रामाणिक दस्तावेज है। इस पुस्तक में विभिन्न स्रोतों द्वारा भारतीय समाज के भूत और भविष्य को निकट से देखने का प्रयास किया गया है।

इसके बाद साहित्य में 'विविध चेतना चेतन बोले अंतर्मन' डॉ रमाकांत आप्टे द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण पुस्तक है जो वान्या पब्लिकेशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित की गई है। 'हिंदी कौशल विकास' डॉ वेंकट चव्हाण, 'नाईक' द्वारा लिखित तथा 'हिंदी भाषा और साहित्य चिंतन' डॉ पांडुरंग चिलगर द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण संग्रह है यह भी वान्या पब्लिकेशंस की ही पुस्तक है। इसके बाद– 'बोलियों तथा भाषाओं का वैज्ञानिक अध्ययन', मराठवाड़ा के संदर्भ में जो मधुकर कोडिब राउत द्वारा लिखित है बोलियों तथा भाषाओं के अंतर को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण संग्रह कहा जा

सकता है। यह भी वान्या पब्लिकेशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित की गई है। 'मुक्ति पर्व' अविनाश चंद्र मिश्र द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण लेख संग्रह पर आधारित पुस्तक है जो कि अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद द्वारा प्रकाशित की गई है। 'रास्ते की तलाश में' असगर वजाहत द्वारा लिखित एक यात्रा वृत्तांत पर आधारित निबंध संग्रह है जो विभिन्न प्रकार की यात्राओं के बारे में बहुत ही सुंदर और रोचक वर्णन प्रस्तुत करता है। यह भी अंतिका प्रकाशन की ही प्रस्तुति है। डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय द्वारा संपादित पुस्तक 'गोरखबानी' जो राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित है इसमें गोरखनाथ के पदों का संपादन है जिसमें बड़े संपादकीय के साथ उसका भावार्थ भी दिया गया है।

'हिचकियाँ लेता स्वर्ग' निदा नवाज द्वारा लिखित डायरी रूपी लेख संग्रह है जो सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। 'गाँव मेरा देस' श्री भगवान सिंह द्वारा लिखित संस्मरणात्मक निबंधों का संग्रह है जो गाँव की पृष्ठभूमि पर आधारित है। 'ख्वाहिशें अपनी–अपनी' गरिमा संजय द्वारा लिखित एक अनोखा लेख संग्रह है जो वैयक्तिक वैभिन्नय को परिलक्षित करता है। इसके बाद यदि पत्र–पत्रिकाओं की बात करें तो 'गगनांचल', 'हंस', 'शोध दिशा', 'गर्भनाल', 'शोध प्रकल्प समसामयिकी', 'मुक्तांचल' आदि अनेक ऐसी पत्रिकाएँ हैं जो समसामयिक शोध पर आधारित लेखों का महत्वपूर्ण संग्रह कही जा सकती हैं तथा शोध और संदर्भ के क्षेत्र में इनका विशेष स्थान है। अनुसंधान पत्रिका प्रकाशक अनुसंधान समिति, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, संपादक प्रोफेसर धीरेंद्र वर्मा में महत्वपूर्ण समसामयिक लेखों का संग्रह प्राप्त होता है। डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय जो समकालीन हिंदी आलोचना के शीर्षस्थ आलोचकों में से हैं और साहित्य तथा संस्कृति के साथ–साथ ज्ञान–विज्ञान के विविध अनुशासनों के अधिकारी विद्वान हैं। 25 अक्तूबर, 2020 में कोलकाता से प्रकाशित समाचार पत्र में उनका समसामयिक लेख साहित्य और संस्कृति का अंतःसंबंध एक बहुत ही साहित्यिक महत्ता का लेख कहा जा सकता है। कोलकाता के ही समाचार पत्र में 'सन्मार्ग' में प्रकाशित किया गया डॉ कृपाशंकर चौबे का आलेख भी प्रासंगिक है।

इन दोनों ही विद्वानों के निरंतर समसामयिक विषयों पर लेख विभिन्न माध्यमों से प्रकाशित होते रहते हैं जो बहुत ही प्रासंगिक कहे जा सकते हैं। 22 नवंबर, 2020 को दैनिक नवभारत में प्रकाशित डॉ दयानंद तिवारी का आलेख 'साहित्य और समीक्षा' साहित्य सारथी के अंतर्गत प्रकाशित हुआ। पत्रिका 'हिंदी विवेक' का वह अंक जो माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह पर आधारित था, राजनीतिक महत्व को देखते हुए वह अंक भी समसामयिक लेखों के लिए संग्रहणीय है। अक्तूबर, 2020 में 'विप्र वाणी' पत्रिका में 'आत्म निर्भर भारत की संकल्पना और भारतीय भाषाएँ' नामक लेख डॉ करुणाशंकर उपाध्याय का बहुत ही महत्वपूर्ण आलेख है। 'अक्षरा–मासिक पत्रिका में जो यूजीसी द्वारा स्वीकृत है, दिसंबर, 2020 अंक के सभी लेख शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश द्वारा प्रकाशित 'महात्मा गांधी विचार और नवाचार' संपादक, प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार शर्मा जो गांधी जी के राष्ट्रीय भाषा संबंधी चिंतन पर आधारित है, राजभाषा हिंदी पर ही एक महत्वपूर्ण संग्रह है। इसके अतिरिक्त नई शिक्षा नीति पर आधारित समय–समय पर कोरोना काल में जो ऑनलाइन परिचर्चाएँ, गोष्ठियाँ, वेबिनार आदि आयोजित किए गए हैं उन पर आधारित महत्वपूर्ण व्याख्यानों, विचारों का संकलन भी महत्वपूर्ण धरोहर कही जा सकती है। देशभर में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 21 फरवरी, 2020 के उपलक्ष्य में विभिन्न संस्थाओं में जो भी कार्यक्रम आयोजित किए गए उनमें विद्वान, मर्मज्ञ विशेषज्ञों के विचार निश्चय ही भविष्य में महत्वपूर्ण लेखों का रूप ले सकते हैं।

डॉ. ऋषभदेव की पुस्तक 'साहित्य संस्कृति और भाषाः सवाल और सरोकार' भारत सरकार,

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रकाशित, एवं 'आधुनिक साहित्य पत्रिका' हर प्रकार के लेखकों का संगम है। 'यशस्वी भारत' मोहन भागवत द्वारा लिखित यह पुस्तक उनके व्याख्यानों का एक संग्रह है जो बहुत ही प्रासंगिक प्रतीत होता है। प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'विवेकानंद की आत्मकथा' लेखक शंकर द्वारा लिखित एक कालजयी लेख संग्रह है।

शब्द सीमा तथा विषय को देखते हुए अंततः इतना ही कहा जा सकता है कि इस कोरोना काल में भी प्रिंट मीडिया पर बहुत अधिक साहित्य उपलब्ध ना रहा हो परंतु सोशल मीडिया पर तथा विभिन्न प्रकार की विचार गोष्ठियों, संगोष्ठियों में और वेबीनारों के माध्यम से निरंतर ही समसामयिक विषयों एवं ज्वलंत समस्याओं पर, सामाजिक सरोकारों पर निरंतर चर्चाएँ तथा विमर्श होते रहे हैं जिनका संग्रह अपने आप में ही एक महत्वपूर्ण साहित्य बन पड़ा है। हम सभी की अपनी कुछ सीमाएँ होती हैं। इसीलिए मैं पुनः उन सभी साहित्यकारों से करबद्ध क्षमा याचना करती हूँ जिनका नाम या जिनकी कृति का नाम मैं इस आलेख में नहीं दे पाई हूँ। निश्चय ही वे इस साहित्य सरिता की बहुत महत्वपूर्ण धाराएँ हैं। इन सभी से मिलकर ही यह साहित्य सरिता निरंतर प्रवाहमान और गतिमान है।

– एल–108, ऋषि नगर, रानी बाग, दिल्ली–110034

❑❑❑

23

हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ

डॉ. सुनील कुमार तिवारी

कोरोना ने हमारी जिंदगी के प्रत्येक आयाम पर असर डाला है। कोरोना काल में हमारी सेहत के साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं के जीवन और अस्तित्व के समक्ष भी अभूतपूर्व संकट आ खड़ा हुआ। कई पत्रिकाओं की छपाई देर से हुई, कुछ का वितरण विलंब से हुआ। लॉकडाउन के कारण बिक्री भी गंभीर रूप से प्रभावित हुई। फलतः कई पत्रिकाओं के पैर लड़खड़ाए, कुछ मजबूरन अनियमित हुईं और कुछ अकाल काल कवलित हो गईं। इसी दौरान कई पत्रिकाओं ने आपदा को चुनौती के रूप में लिया और परिस्थितियों का न केवल डटकर मुकाबला किया, बल्कि अपने अंक संयोजन में अपार धैर्य, अप्रतिम योजनाबद्धता और सचेत चयन दृष्टि का परिचय दिया। यातना, संघर्ष और संशय के घटाटोप से भरे इस भयावह समय में अनेक प्रखर और संवेदनापूर्ण रचनाएँ छापीं।

हिंदी साहित्य को सक्रिय, सजग, चौकस और विविधता संपन्न बनाने में पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है। ये साहित्य के अलावा संस्कृति विमर्श की भी वाहक रही हैं। कुछ पत्रिकाएँ साहित्यिक प्रतिबद्धता के लिए जानी जाती हैं और कुछ पत्रिकाएँ नवलेखन के प्रति अपनी उदारता के लिए प्रसिद्ध रही हैं। वर्ष 2020 में हिंदी की पत्रिकाओं ने इसी तर्ज पर अपनी रचनात्मक उपस्थिति से अपने परिवेश को प्रभावित करने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी।

कई दशकों से साहित्य और विचार की महत् पत्रिका 'पहल' का अंक 122 'कहानी विशेषांक' के रूप में संयोजित हुआ और इस अंक ने हिंदी के समग्र परिदृश्य पर अत्यंत प्रभावी उपस्थिति दर्ज की। इस अंक में 3 लंबी कहानियाँ और 10 अन्य कहानियाँ संयोजित हैं। इनके अलावा युवा आलोचक शशि भूषण मिश्र का एक अत्यंत सुचिंतित, परिश्रमपूर्ण और विवेकसंगत आलेख 'कारोबारी विकास और विकास का कारोबार' इस अंक की उपलब्धि है। संपादक ज्ञानरंजन ने संपादकीय में चयनित कहानियों के संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण नोट दर्ज किया है, "कहानीकारों ने अपना सर्वोत्तम लिखकर हमें भेजा। ये कहानियाँ मात्र छिटपुट प्रयास नहीं हैं, बल्कि समय का संपूर्ण कथानक हैं। इसमें कई कहानियाँ ऐसी हैं, जिनमें उपन्यास के लक्षण हैं। वे एक संदिग्ध और हत्यारे संसार में प्रवेश करती हैं। उनमें प्रतिशोध, आलोचना, व्यंग्य है और औपन्यासिक ढाँचा है। ये कहानियाँ उपन्यास को छूकर लौटती हैं और समय के पार जाती हैं। हमें भरोसा है कि इन्हें 2020 में रेखांकित किया जाएगा।"

इस अंक में मनोज रूपड़ा की 'दहन', एस आर हरनोट की 'एक नदी तड़पती है' और गौरीनाथ की 'हिंदू' ये तीन लंबी कहानियाँ हैं। अन्य उल्लेखनीय कहानियों में सुभाष पंत की 'सीता हसीना के साथ एक संवाद', शंकर की 'एक बटा एक', मिथिलेश श्रीवास्तव की 'हत्याओं की कहानी

का कोई शीर्षक नहीं होता' का जिक्र जरूरी है। दरअसल, इस विशेषांक की विशेषता यह है कि यह समकालीन समस्याओं और चुनौतियों पर संवेदनापूर्ण ढंग से लिखी गई कहानियों का संग्रह है।

'परीकथा' के सितंबर–अक्तूबर, 2020 अंक में डॉ. शंभुनाथ की 'कोरोना समय की कविताएँ' प्रकाशित हैं। दुख और अवसाद में डूबकर लिखी गई इन कविताओं में जीवन के प्रति गहरा लगाव भी है। मैला आँचल और रेणु की कहानियों पर सूरज पालीवाल और कनक कुमारी प्रदेश के उपन्यास 'मधुरेश' और 'लंबी चुप्पी' के बाद ज्ञानरंजन की 'सजा' प्रकाशित पुस्तक उपस्थिति का अर्थ पर स्मृति शुक्ला ने आत्मीयता के साथ विस्तार से लिखा है। महेश दर्पण ने पहल की कहानी विशेषांक की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। परीकथा के इस अंक में पठनीय सामग्री भरपूर मात्रा में उपलब्ध है।

'हमारा समाज हमारा शोध' पंचलाइन के साथ वर्षों से मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित 'जनमीडिया' का जनवरी, 2020 अंक पत्रकारिता की हलचलों तथा समाज और राजनीति के विभिन्न मुददों की पड़ताल करता है। इस अंक में कश्मीर मुददा, टीवी चैनलों के सेल्फ सेंसरशिप, बीबीसी के शार्टवेब रेडियो सर्विस की बंदी, नागरिकता संशोधन विधेयक और हिंदी अखबारों को विषय बनाया गया है। शोध और विश्लेषणात्मक लेखों की वजह से यह अंक महत्वपूर्ण बन पड़ा है। सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित 'शीतलवाणी' का जुलाई–दिसंबर, 2020 का अंक उपयोगी बन पड़ा है। इस अंक में आचार्य किशोरी दास बाजपेयी, पंडित माखनलाल चतुर्वेदी, मंगलेश डबराल पर उत्कृष्ट स्मृति आलेख संकलित हैं। स्मृतिशेष इरफान खान के एक साक्षात्कार का पुनर्पाठ दिया गया है। बहुविश्रुत गीतकार बुद्धिनाथ मिश्र पर ओम निश्चल का आलेख उल्लेखनीय है।

जयप्रकाश कर्दम से दलित साहित्य पर विस्तृत बातचीत इस अंक की उपलब्धि है।

वर्ष 2020 में 'आधारशिला' ने विख्यात चित्रकार और महत् लेखक हरिपाल त्यागी के व्यक्तित्व–कृतित्व को आधार बनाकर अपना उल्लेखनीय विशेषांक छापा है। 200 से अधिक पृष्ठों में समाया यह विशेषांक कोरोना काल में हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता की एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। संपादक दिवाकर भट्ट 36 वर्षों से इस पत्रिका को अपने संकल्पों के बल पर चला रहे हैं। बिना किसी घराने वाला, शिविरबद्धता से कोसों दूर के एक कलाकार हरिपाल त्यागी पर विष्णु चंद्र शर्मा, विश्वनाथ त्रिपाठी, मलय, मधुरेश, विद्यासागर नौटियाल, हरिश्चंद्र पांडे, महेश दर्पण, विभूति नारायण राय, लीलाधर मंडलोई, सुधीर विद्यार्थी का लेखन अत्यंत पठनीय है। यह अंक मूल्यवान और सार्थक आयोजन के रूप में निश्चित रूप से संग्रहणीय है। हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित 'इरावती' हिंदी की साहित्यिक पत्रिकाओं में एक महत्वपूर्ण नाम है। दो साल के अंतराल के बाद 2020 में लॉकडाउन के दौरान इस पत्रिका का एक विशेषांक 80 के दशक में हिमाचल प्रदेश में सांस्कृतिक और साहित्यिक जागरण के अग्रदूत रहे हिमाचल कैडर के आईएएस अधिकारी और लेखक महाराजा कृष्ण काव पर केंद्रित है। इस विशेषांक में केशव, राजेंद्र राजन, तुलसी रमण, श्रीनिवास जोशी के संस्मरण बहुत आत्मीयतापूर्ण और रोचक बन पड़े हैं। हेमराज कौशिक द्वारा काव के उपन्यास 'आसमान नहीं गिरता' की विस्तृत समीक्षा अंक की महत्ता को प्रमाणित करती है तो कविता खंड में कवि काव की 10 महत् कविताओं और उनकी कुछ विशिष्ट कहानियों का पुनर्प्रकाशन इस अंक को धरोहर का रूप देने में सक्षम है।

'पाखी' अपनी साहित्यिक प्रतिबद्धता के लिए मशूहर रही है। इस पत्रिका के दिसंबर, 2020 के कवर पृष्ठ पर हिंदी में छायावाद, मुकुटधर पांडेय की इस विशिष्ट कृति का आवरण चित्र छपा देखकर मन प्रफुल्लित होता है, पर भीतर इससे संबद्ध भारत भारद्वराज के कॉलम 'सृजन संदर्भ' की टिप्पणी के अलावा और कुछ नहीं मिलता। छायावाद पर केंद्रित विशेषांक समझ कर पाठक प्रथमतः इसकी ओर आकर्षित होता है, पर भीतर छायावाद से संबंधित और कुछ हाथ नहीं लगता। इस अंक में मुशर्रफ आलम जॉकी की कहानी 'पानी की सतह' तथा खुर्शीद आलम की कहानी

'कब्र खोदने वाला' पठनीय है। हर बार की तरह खंड 4 के स्थायी स्तंभ को लेखकों ने अपनी रौ और रंगत में लिखा है।

'लमही' साहित्य–संस्कृति की मानक त्रैमासिक पत्रिका है। विशेषांकों के अपूर्व संयोजन के लिए इस पत्रिका की विशेष पहचान है। इसी क्रम में 'लमही' ने जनवरी–मार्च, 2020 का विशेषांक कथा समय–3 शीर्षक से प्रकाशित किया है। इसके पूर्व 'लमही' के कथा समय–1 और कथा समय–2 इन दो विशेषांकों ने हिंदी साहित्य के अमूल्य धरोहर के रूप में अपनी महत्ता प्रमाणित की है। कथा समय–1 में महिला कथाकारों पर केंद्रित सामग्री है, जबकि कथा समय–2 में 48 कथाकारों की कथा यात्रा का साक्ष्य प्रामाणिक विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। कथा समय–3 में 81 कहानीकारों के लेखन का विश्लेषण किया गया है। 72 लेखक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकित किए गए हैं तो 5 दलित और 4 आदिवासी कथाकारों की कहानियों की समीक्षा 'हाशिए का कथा संसार' शीर्षक के अंतर्गत सम्मिलित है। निश्चित रूप से यह तीनों अंक धरोहर की तरह संजोकर रखने के लिए ही नहीं, बल्कि हिंदी के अध्येताओं के लिए अत्यंत उपादेय बन पड़े हैं। पत्रिका की स्तरीयता और संपादकीय दृष्टि संपन्नता के लिए प्रधान संपादक विजय राय सचमुच बधाई के पात्र हैं। 'उद्भावना' 35 वर्षों से निरंतर प्रकाशित प्रगतिशील विचारों की महत्वपूर्ण पत्रिका है। पिछले वर्षों में पाब्लो नेरुदा और विष्णु खरे पर पत्रिका ने महत्वपूर्ण विशेषांक छापा है। 'उद्भावना' का सितंबर 2020 का अंक विविध पठनीय सामग्रियों से सुसंयोजित किया गया है।

राष्ट्रवाद, देशद्रोह, देशभक्ति, मुस्लिम समाज, अयोध्या संदर्भ, बाबरी मस्जिद से लेकर लॉकडाउन के कथानक और भारतीय मध्यवर्ग केंद्रित गंभीर विश्लेषण इस अंक में हैं। विष्णु खरे की द्वितीय पुण्यतिथि पर विशेष सामग्री संयोजित है। विभूति नारायण राय से संपादक अजेय कुमार की बातचीत हिंदू मुस्लिम रिश्ते और धर्मनिरपेक्षता के संदर्भ में उल्लेखनीय है। प्रस्तुत अंक में नूर जहीर की कहानी प्रभावशाली है। वरिष्ठ कवियों कुमार अंबुज और संजय कुंदन की बेहतरीन कविताएँ संवेदित करती हैं। कथाकार स्वयं प्रकाश की कहानियों का विश्लेषण राजेश जोशी और पल्लव ने पूरी आत्मीयता और अध्यवसाय से किया है। पुस्तक समीक्षा केवल खानापूर्ति नहीं, बल्कि कृति विश्लेषण के सार्थक यत्न की तरह नियोजित है।

'समकालीन भारतीय साहित्य' साहित्य अकादमी की प्रतिष्ठित द्वैमासिक पत्रिका है। इसमें साहित्य अकादमी द्वारा स्वीकार 24 भारतीय भाषाओं का साहित्य प्रकाशित होता है। अतिथि संपादक बलराम की संपादकीय दृष्टि और साहित्य अकादमी की नीतियों का संतुलन इस अंक में दृष्टव्य है। इस अंक में मलयालम, बांग्ला, हिंदी, तेलुगु, ओड़िया भाषा की रचनाएँ सम्मिलित हैं। गांधी और प्रेमचंद पर उल्लेखनीय सामग्री दी गई है। कवि आलोचक एवं साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का साक्षात्कार पठनीय है। स्मृति शेष के अंतर्गत गिरिराज किशोर पर राजेंद्र राव ने बड़ी आत्मीयता से लिखा है। प्रस्तुत अंक में शामिल पुस्तक समीक्षाएँ गंभीर गवेषणा और आलोचनात्मक विवेक का पता देती हैं। अंक पाठनीय अपेक्षाओं पर खरा उतरता है।

'बहुवचन' महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी की अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका है। पूर्व में अशोक वाजपेयी, विभूति नारायण राय, गिरीश्वर मिश्र के कुलपतित्वकाल में इस पत्रिका ने लगातार अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज की है। वर्तमान कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल के संरक्षकत्व में प्रकाशित पत्रिका का जनवरी–सितंबर, 2020 का संयुक्तांक हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रस्तुत अंक 'भारतीय साहित्य में कश्मीर' शीर्षक से 508 पृष्ठों में नियोजित है। पत्रिका के मुख्य आवरण पृष्ठ पर कश्मीर की अधिष्ठात्री कश्मीरा देवी का नयनाभिराम चित्र चित्रकार वीर जी सुंबली द्वारा चित्रित है, जिसमें कश्मीरा देवी पारंपरिक कश्मीरी वेशभूषा फिरन और स्थानीय आभूषणों से अलंकृत एक विशेष कश्मीरी शैली में उकेरे कमल पर आसीन हैं, जबकि अंतिम आवरण पृष्ठ पर भूषण कौल द्वारा चित्रित कश्मीर की अधिष्ठात्री

शारदा देवी का चित्तमोहक चित्र अंकित है। प्रस्तुत अंक में कश्मीर के इतिहास, दर्शन, कला, पुरातत्व, साहित्य, संगीत, स्थापत्य, भाषा, भूगोल पर प्रामाणिक सामग्री दी गई है। 'कश्मीरियत का सांस्कृतिक संदर्भ' जवाहरलाल कौल का अत्यंत गवेषणा पूर्ण विवेचन है, जिसमें कश्मीर के राजनीतिक महत्व से अधिक सांस्कृतिक और सामाजिक महत्ता का चित्रण किया गया है। 'भारतीय साहित्य में कश्मीर' इस खंड के अंतर्गत मलयालम, कन्नड, तमिल, तेलुगु, गुजराती, मराठी, पंजाबी, ओड़िया, बांग्ला साहित्य में चित्रित कश्मीर को बखूबी रखा गया है। 'फारसी साहित्य में कश्मीर' एक उम्दा लेख है, जिसमें गहरी शोध दृष्टि की झलक है। विनोबा भावे की 'मेरी कश्मीर यात्रा' और स्वामी विवेकानंद की 'कश्मीर यात्रा' ऐतिहासिक महत्व की पुनर्प्रस्तुतियाँ हैं। कश्मीर में ह्वेनसांग का 2 साल तक प्रवास रहा, 'देशांतर' खंड में ह्वेनसांग का 'कश्मीर पर मेहमान नज़र' शीर्षक लेख की महत् प्रस्तुति कुमार निर्मलेंदु द्वारा की गई है। आधुनिक कश्मीरी कविताएँ, आधुनिक कश्मीर की उर्दू कविताएँ, आधुनिक डोगरी कविताएँ, आधुनिक कश्मीर की हिंदी कविताएँ कश्मीर केंद्रित रचनात्मकता के आख्यान के रूप में प्रत्यक्ष हैं। आशीष कौल की 'वे अड़तालीस घंटे' कश्मीरी पंड़ितों की व्यथा कथा को सामने लाने में सक्षम कहानी है।

'धर्मयुग' के 20 दिसंबर, 1970 के अंक में छपी छत्रपाल की कहानी 'ललितादित्य के मार्तंड' पुनर्प्रकाशन एक विशिष्ट उपलब्धि है। इन चयनित कविताओं और कहानियों के सयोजन से इस अंक का रचनात्मक वैभव प्रगट हुआ है। 'कश्मीरी भाषा का भविष्य' महाराज कृष्ण मूसा भरत के इस विवेचनात्मक आलेख में उल्लिखित अमीन कामिल का वक्तव्य व्यथा जगाता है कि "घाटी के कुल ऐसे सौ, दो सौ या हजार लोग होंगे जो कश्मीरी भाषा पढ़ भी रहे हैं और लिख भी रहे हैं, यह भाषा हम तक सीमित है, इसका कुप्रभाव यह है कि मेरे लेखन की समीक्षा करने वाले ही कम हैं।" विमर्श खंड में कल पाँच आलेख सम्मिलित हैं जिनकी उत्कृष्टता के फलतः कश्मीर विमर्श को केंद्रीय विमर्श बनाने में मदद मिल सकती है। इस अंक में सम्मिलित वरिष्ठ कश्मीरी नाटककार पद्मश्री मोतीलाल क्यमू से अग्निशेखर की बातचीत और वरिष्ठ इतिहासकार पद्मश्री के एन पंडित से अमित कुमार विश्वास की बातचीत उल्लेखनीय है। कुल मिलाकर, यह अंक न केवल संग्रहणीय अंक बन पड़ा है, बल्कि हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता का एक मानक भी उपस्थित करता है।

इस प्रकार 2020 की हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता विपरीत स्थितियों के बावजूद भी अपनी संभावनाओं को पूरी क्षमता से स्थापित करने में सफल रहा है।

– डी ए–291, एस एफ एस फ्लैट्स, शीशमहल अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली–110088

❑❑❑

24

हिंदी पत्रकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी साहित्य

डॉ. सी. जय शंकर बाबु

हिंदी पत्रकारिता का यह 195वाँ वर्ष है। शीघ्र ही भारतीय पत्रकारिता भी ढाई सदियों के मील का पत्थर पार करने जा रही है। भाषाई पत्रकारिता के उदय के साथ ही भारतीय पत्रकारिता का ध्येय भी निर्धारित हो गया था। यह स्पष्ट है कि परतंत्रता में ही भारतीय पत्रकारिता का उदय हुआ था। परतंत्रता में स्वतंत्रता की परिकल्पना की गई थी। स्वाधीनता–संग्राम में अपनी भूमिका सुनिश्चित करने का लक्ष्य था पत्रकारिता का। 1826, मई 30 को साप्ताहिक 'उदंत मार्तंड' के प्रकाशन से हिंदी पत्रकारिता का श्रीगणेश हुआ। पं. जुगल किशोर शुक्ल की ध्येय–निष्ठा का परिणाम था, 'उदंत मार्तंड'। उन्होंने 'उदंत मार्तंड' के प्रकाशन के ध्येय के संबंध में स्पष्ट किया था– 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' और 'समाचार सेवामृते..'। हिंदुस्तान का हित ही पत्रकारिता की ध्येयनिष्ठा थी। वह समूचे राष्ट्र का हित साधने का लक्ष्य 'सर्वेजना सुखिनो भवंतु' की संकल्पना के ही अनुरूप है, जिसमें राष्ट्र के सभी लोगों के हित का लक्ष्य था। ऐसी मिशन भावना के साथ विकसित भारतीय पत्रकारिता क्या आज अपनी महत्ता खो रही है? पत्रकारिता की ध्येय–निष्ठा की वर्तमान में क्या स्थिति है? और ध्येय–निष्ठा पत्रकारिता का दौर अभी जारी है, या इसकी समाप्ति हो चुकी है? ऐसे सवाल आज सबसे बड़े बहस के मुद्दे हैं।

अंग्रेज़ शासकों ने अपने इस उपनिवेश(भारत) में पत्रकारिता को अपना ख़तरनाक शत्रु माना था, इसलिए उन्होंने पत्रकारिता की गतिविधियाँ शुरू होने नहीं दीं, जहाँ शुरू भी हुईं, वहाँ तुरंत पंजा मार दिया। भारत में अंग्रेज़ों के शासन के दौर में अंग्रेज़ी अख़बार प्रकाशित नहीं होने से भी रोका गया था। वर्ष 1766 में पहली बार विलियम बोल्ट्स ने कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) में काउंसिल हाउस के किवाड़ पर सार्वजनिक ध्यानार्थ एक सूचना चिपकायी थी जिसमें प्रेस की आवश्यकता तथा सबके हितार्थ सूचनाओं के प्रसार की इच्छा जाहिर की थी। अख़बार प्रकाशन के उद्देश्य के आरोप में निदेशकों की कचहरी ने बोल्ट्स को निंदित किया था और यूरोप चले जाने का आदेश दिया था। इससे स्पष्ट था, अंग्रेज़ों की सत्ता जनचेतना और जन–जन तक सरकार विरोधी सूचनाओं के प्रसार की विरोधी थी, इससे उनके विरोधी लहर की ताकत को देखते हुए बोल्ट्स पर शिकंजा कसा गया था। सत्ता के विरोध और चौकसी के बावजूद पत्रकारिता की शुरुआत हुई। और जन–जन

तक समाचार प्रसारित करने की आकांक्षा इतनी मज़बूत थी कि सत्ता पक्ष के तमाम प्रतिबंधों के बावजूद सूचना सरिता की धारा अपनी ताकत दिखाते हुए प्रतिबंध रूपी बाँधों की दीवारों को तोड़ते हुए जन–सागर तक पहुँच गई थी। सूचना को शक्ति का अजस्र स्रोत माना गया है। इसी वजह से अंग्रेज़ी सत्ता अपने बचाव के लिए समाचार प्रसार की गतिविधि पर हरहालत रोक लगाने के इरादों से ही हर तरह की चौकसी बरतने लगी थी। एक बार बाँध टूटने के बाद सूचना सरिता की धार इतनी तेज होती गई कि उसे रोक पाना असंभव था। प्रतिरोधी चेतना ने पत्रकारिता को जन्म दिया और उसके जीवित रहने और जीवंतता को भी सुनिश्चित किया। हाँ, उस पर भी अंग्रेज़ो ने अपने प्रयास न छोड़कर ज़ब्ती व नियंत्रण के कई कानून पारित कर दिए जिनमें 1799 में जारी सेंसरशिप अधिनियम, 1823 में जारी प्रेस अध्यादेश, 1878 का वर्नाकुलर प्रेस एक्ट, 1910 में जारी भारतीय प्रेस अधिनियम आदि शामिल हैं।

सूचना की शक्ति और सूचनाओं से उत्पन्न चेतना के परिणामों का आभास उक्त बातों से स्पष्ट होता है। जन–जन तक सूचना प्रसार के लिए जनसंचार प्रणालियों के विकास की गाथा नागरिक अधिकार चेतना के विकास की कहानी के रूप में रोचक है। व्यष्टि से समष्टि तक मानव समाज के विकास के साथ ही संचार का क्रमिक विकास हुआ। व्यापक भूभाग में बड़े समुदायों तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए विभिन्न तरीकों को अपनाया जाता था। आगे बड़ी तादाद में लोगों तक सूचना प्रसार के लिए विकसित प्रणाली जनसंचार की संज्ञा से अभिहित हुई। जनसंचार के साधन के रूप में पत्रकारिता का विकास मानव सभ्यता के विकास के मार्ग का एक मील का पत्थर था। वैज्ञानिक खोजों, आविष्कारों के क्रम में लेखन से मुद्रण तक की प्रगति से ही पत्रकारिता की परिकल्पना साकार हो पाई थी। चौदहवीं सदी में गूटन बर्ग द्वारा मुद्रण यंत्र के आविष्कार के बाद ही दुनिया में पत्रकारिता शुरू हो गई थी। ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के दौर में धर्म प्रचारार्थ मुद्रण यंत्र का आगमन हुआ। इन यंत्रों में शरुआत में पुस्तकों का प्रकाशन होता रहा। आगे कंपनी के ही जेम्स अगस्टस हिक्की ने 1780 में 'कलकत्ता जेनरल एडवर्टैज़र' ('हिक्की गज़ट' के नाम से ख्यात) के प्रकाशन के साथ भारतीय पत्रकारिता की नींव डाली थी। भारतीय पत्रकारिता की इन ढाई सदियों का अवलोकन करने पर अभूतपूर्व विकास व प्रगति हम देख पाते हैं। पत्रकारिता से मीडिया तक इस सेवा कार्य का विकास हुआ। पं. जुगल किशोर ने इसे 'समाचार सेवामृतम' कहा था। इलेक्ट्रॉनिक साधन रेडियो, टेलिविज़न के विकास होने तक समाचार प्रणाली तंत्र के लिए 'मीडिया' की संज्ञा प्रचलित होने लगी। आगे अंतर्जाल (इंटरनेट) के विकास के साथ ही वेब मीडिया का भी विकास हुआ। वैज्ञानिक प्रगति को यह श्रेय जाता है कि पत्रकारिता से मीडिया तक की यात्रा में मुद्रण यंत्र से अभूतपूर्व कंप्यूटर–इंटरनेट से जुड़े वेब माध्यम तक के विकास से जनसंचार में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। अंतर्जाल के सहारे हर किसी को अपने विचार दुनिया के कोने–कोने तक फैला पाने की सहूलियत हुई। अब हर कोई अपने आस–पास की घटनाओं की खबरें भी दुनिया भर फैला पाने के सहज सुलभ साधन के रूप में वेब माध्यम का प्रयोग कर सकता था। ऐसी गतिविधियों से नागरिक पत्रकारिता भी साकार हो पाई। सूचना प्रसार की इस अजस्र शक्ति के परिणाम से मूलभूत पत्रकारिता (मुद्रण माध्यम) के अस्तित्व के खतरे का अनुमान लगाया जा रहा था। फिलहाल विश्वसनीयता सिद्ध करने की अपनी क्षमता से पत्रकारिता ने अपना अस्तित्व सुनिश्चित किया है। पत्रकारिता या मीडिया के साथ आज कई विडंबनात्मक अवगुण जुड़ने के कारण यह सवाल उठता है कि क्या उसका यह अस्तित्व सार्थक है? पत्रकारिता के मूल्यबोध और प्रतिबद्धता की आज क्या स्थिति है? –ये सारी बातें चिंतनीय हैं।

पत्रकारिता के आरंभ और आरंभिक पत्रकारों के संबंध में विवेचन से यह बात स्पष्ट होती है कि भारतीय पत्रकारिता मिशन भावना के साथ विकसित हुई थी। भूमंडलीकृत दुनिया की व्यापारिक चेतना और उपभोक्तावादी माहौल उत्पन्न होने से पत्रकारिता के साथ धीरे–धीरे व्यापारिक, राजनीतिक स्वार्थ जुड़ गए। पुराने मूल्य यथा सेवा भावना, जन चेतना के लक्ष्य धीरे–धीरे गायब होने लगे। जनचेतना की ताकत का ग़लत इस्तेमाल शुरू हो गया। आज पत्रकारिता के बिक जाने के आरोप भी हर पल लगाए जा रहे हैं। इसी बात को लेकर विभिन्न पुस्तकों में गौरवपूर्ण अतीत और विडंबनात्मक समकालीन पत्रकारिता पर आलोचनात्मक चिंतन हम देख सकते हैं। आरंभिक दौर के समर्पित व कर्मठ पत्रकारों से हमें थाती के रूप में हस्तांरित मूल्यों की वर्तमान पत्रकारिता जगत में क्या स्थिति है, इस पर कई तरह के विमर्श इस बीच प्रकाशित कई कृतियों में देख सकते हैं।

पत्रकारिता की प्रासंगिकता व सार्थकता को सुनिश्चित करने में ऐसे बहस व विमर्शों की अपेक्षा होती है। ऐसी अपेक्षा की पूर्ति पत्रकारिता विषयक पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, विभिन्न पत्रिकाओं के पत्रकारिता विशेषांक आदि के माध्यम से होती रहती है। ऐसे प्रकाशनों में पत्रकारिता की बहुआयामी भूमिका पर विश्लेषण–विवेचन हम देख सकते हैं। प्रत्येक वर्ष प्रकाशित पत्रकारिता की कृतियों, प्रौद्योगिकी विषयक पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं का सामान्य सर्वेक्षण प्रस्तुत करना ही 'भाषा–वार्षिकी' के इस आलेख का मुख्य उद्देश्य है।

इन दिनों मीडिया विषयक जो पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, उनकी वस्तु–चेतना में बड़ी विविधता नज़र आती है। परंपरावादी लेखकों में अधिकांश पत्रकारिता की परंपरा से जुड़ी विशिष्टताओं पर अपनी बातें केंद्रित करते हैं जिनमें पत्रकारिता के परंपरागत मूल्य, पत्रकारों के योगदान, गौरवपूर्ण अतीत का विवेचन करते हैं। आधुनिकतावादी लेखक आधुनिक पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक व वेब माध्यमों, सामाजिक माध्यमों के आस–पास अपनी बात केंद्रित करते हैं, जिनमें इन तंत्रों का परिचय, विभिन्न भूमिकाओं में कार्य करने के लिए अपेक्षित चेतना व कुशलता के प्रशिक्षण की दृष्टि से भी विषय की प्रस्तुति करते हैं। आलोचनावादी लेखक पत्रकारिता की परंपरा के साथ वर्तमान की तुलना करते हुए पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की गतिविधियों, नीतियों, पक्षधरता आदि कई प्रत्यक्ष दर्शनीय तत्वों के अलावा अंदरूनी बातों को लेकर भी आलोचना, विमर्श को आगे बढ़ाते हैं। इनकी लेखनी से भी कहीं परंपरा का गौरव गान किसी हद तक होता है और समसामयिक मीडिया जगत की गति, मति, नीति, रीति का पर्दाफ़ाश कई रूपों में करने या इन पर अकादमिक बहस विमर्श के रूप में आगे बढ़ाने के कई प्रयास नज़र आते हैं। कुल मिलाकर विभिन्न प्रकार के लेखकों के द्वारा पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक तथा वेब माध्यमों का परिचय, उनमें विभिन्न भूमिकाओं के लिए अपेक्षित प्रशिक्षण, इतिहास, समीक्षा, आलोचना, विमर्श, बहस, प्रतिरोध आदि स्वर हम देख सकते हैं। इन कृतियों में परोसे गए अनुभव, विश्लेषण आदि मीडिया संबंधी विमर्श को विकसित करने में निश्चय ही प्रासंगिक व सार्थक हैं।

पत्रकारिता, जनसंचार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, वेब माध्यम, डिजिटल माध्यमों आदि से संबंधित कई पुस्तकों का हिंदी में हर वर्ष प्रकाशन हो रहा है। हिंदी में मीडिया शिक्षण–प्रशिक्षण, विमर्श, शोध–अध्ययन आदि में उपयोग के लिए ये निश्चय ही स्वागतयोग्य हैं। जनवरी, 2020 में केरल राज्य में कोरोना विषाणु का पहला मामला दर्ज हुआ। धीरे–धीरे मामले सर्वत्र बढ़ने लगे। कोरोना महामारी की रोकथाम के उपायों के क्रम में 25 मार्च, 2020 से तालाबंदी होने से आकस्मिक परिस्थिति उत्पन्न हुई थी। लॉकडाउन ने कई गतिविधियों पर रोक लगा दी। शायद इसी कारण विगत वर्षों की तुलना में वर्ष 2020 के दौरान हिंदी में प्रकाशित पत्रकारिता एवं नई

प्रौद्योगिकी साहित्य की मात्रा भी कम है। आलोच्य वर्ष में कई उप–विषयों की एक भी पुस्तक नज़र नहीं आई। जबकि पिछले वर्षों में पत्रकारिता संबंधी लगभग हर उप–विषय से संबंधित पुस्तकें प्रकाशित होती रही हैं। कुल मिलाकर वैश्विक महामारी का हर क्षेत्र पर प्रभाव रहा, प्रकाशन क्षेत्र इसका अपवाद नहीं है। घरवास के दौरान निश्चय ही लेखन को गति मिली, संभवतः अगले वर्ष इसके परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

वर्ष 2020 के दौरान हिंदी में प्रकाशित पत्रकारिता, मीडिया, नई प्रौद्योगिकी व नव माध्यम आदि से संबंधित प्रकाशनों के सर्वेक्षण के परिणाम इस आलेख के रूप में प्रस्तुत हैं। शोध अध्ययनों में उपयोगी सर्वेक्षण परंपरा को इस रूप में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग के तहत केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा 'भाषा–वार्षिकी' को संरक्षण मिलना स्वागत योग्य है। संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट सभी भारतीय भाषाओं में प्रकाशित सभी विधाओं की पुस्तकों का सर्वेक्षण 'वार्षिकी' में हर वर्ष प्रस्तुत किया जाता है। इसी क्रम में हिंदी पत्रकारिता और नई प्रौद्योगिकी साहित्य का भी अलग से सर्वेक्षण प्रस्तुत किया जा रहा है। वर्ष के दौरान हिंदी में प्रकाशित पत्रकारिता, मीडिया, नई प्रौद्योगिकी, नव माध्यमों आदि से संबंधित कृतियों के समग्र आकलन के प्रयास के रूप में आलेख प्रकाशित होते हैं।

आलेख की रूपरेखा व सीमाएँ

'हिंदी पत्रकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी साहित्य' पर केंद्रित इस सर्वेक्षणात्मक आलेख के दायरे में वर्ष 2020 के दौरान हिंदी में प्रकाशित जनसंचार, पत्रकारिता, मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सिनेमा और इन माध्यमों के विभिन्न आयामों से संबंधित विभिन्न पुस्तकों के अलावा नई प्रौद्योगिकी व नव माध्यम तथा इससे जुड़े विभिन्न पक्षों की पुस्तकों का आकलन शामिल है। आलेख का आकार, वस्तु विवेचन की सीमा को ध्यान में रखते हुए आलोच्य वर्ष के दौरान प्रकाशित सभी कृतियों की विस्तृत चर्चा या परिचय इसमें शामिल कर पाना संभव नहीं था; इसका कदापि यह आशय नहीं है कि संक्षेप में चर्चित या केवल नामोल्लेख की गई पुस्तकें प्रामाणिक या चर्चा के योग्य नहीं हैं, उन सभी पुस्तकों का विवेच्य विषय में हिंदी वाङ्मय धारा को सुसमृद्ध बनाने में उल्लेखनीय योगदान है, इसमें दो राय नहीं हैं। इस आलेख की प्रस्तुति में प्रयुक्त वर्गीकरण भी सर्वेक्षण की सुविधा के लिए परिकल्पित वर्गीकरण है। अतः संभव है कि विभिन्न वर्गों में आकलित पुस्तकों में संबंधित वर्गीकरण विषयक सामग्री के अलावा अन्य दृष्टियों से उपयोगी सामग्री भी हो, और इनके लेखन का आशय भी इन वर्गों से अलग भी हो सकता है। पुस्तकों की सामग्री, विषय–वस्तु को लेकर इन पंक्तियों के लेखक का कोई पूर्वाग्रह नहीं है। इस वार्षिक सर्वेक्षण की दृष्टि से आलेख की सीमा, विवेचन की सीमाओं के अंतर्गत ही पुस्तकों का संक्षिप्त आकलन या उल्लेख मात्र आगे प्रस्तुत किया जा रहा है। इस आलेख के लिए आबंटित पृष्ठों की संख्या की दृष्टि से यह सीमित आकलन किसी भी कृति की आलोचना या समीक्षा नहीं है, केवल सूचनात्मक, सामान्य विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण मात्र है।

सर्वेक्षण वर्ष के दौरान मीडिया विषयक पत्रिकाओं के कुछ विशेषांक भी सामने आते थे। इस वर्ष ऐसे कोई विशेषांक सामने नहीं आए हैं। मीडिया विषयक पत्रिकाओं में तथा कुछ अन्य पत्रिकाओं में संचार, पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, नई मीडिया आदि के विभिन्न आयामों से संबंधित आलेख प्रकाशित हुए हैं, इनका सामान्य आकलन इस सर्वेक्षण में शामिल है। दैनिक अख़बारों में भी आमतौर पर मीडिया–चिंतन, विमर्श, विश्लेषण, नई प्रौद्योगिकी, नव माध्यमों से संबंधित आलेख समय–समय पर विभिन्न स्तंभों के अंतर्गत प्रकाशित होते रहते हैं,

इलेक्ट्रॉनिक व वेब माध्यमों में भी ऐसी चर्चा–परिचर्चाएँ होती हैं, उनका आकलन या उल्लेख इस आलेख में शामिल नहीं है। कंप्यूटर विषयक सामान्य व विशिष्ट विषय विवेचन की कई कृतियाँ अलग–अलग प्रयासों से प्रकाशित होती रहती हैं, उनकी चर्चा भी इस आलेख में शामिल नहीं है। केवल मीडिया के दायरे में नई प्रौद्योगिकी व उससे संबंधित प्रकाशित पुस्तकों का आकलन शामिल गया गया है।

सर्वेक्षण की अवधि में प्रकाशित हिंदी पत्रकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी साहित्य

वर्ष 2020 में हिंदी में पत्रकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी संबंधी पुस्तकें विगत वर्षों की तुलना में कम संख्या में प्रकाशित हुई हैं। कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान लगातार कई सप्ताहों तक पूर्णबंदी लागू होने से मुद्रण कार्य का स्थगित रह जाना ही इसका कारण हो सकता है। इस वर्ष हिंदी में पत्रकारिता, मीडिया, नई प्रौद्योगिकी व नव माध्यम से संबंधित लगभग ढाई दर्ज़न पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इन कृतियों में मीडिया चिंतन, इतिहास, सैद्धांतिक और व्यावहारिक विश्लेषण, तकनीकी कुशलताएँ, आलोचना, शिक्षण–प्रशिक्षण, पत्रकारिता–कोश, निर्देशिकाएँ, शोध, पत्रकारों के व्यक्तित्व–कृतित्व पर केंद्रित कृतियाँ, जीवनीपरक, नव प्रौद्योगिकी, नव माध्यम संबंधी पुस्तकें आदि शामिल हैं।

सामयिक मीडिया विमर्श

मीडिया की स्थिति, गति, मति, नीति, प्रगति, अवनति, उसकी चालें आदि पर आज आए दिन चिंता–चिंतन बुद्धिजीवियों से लेकर आमजन तक भी हर किसी के बीच चर्चा का विषय है। पत्रकारिता से बढ़कर टीवी चैनलों और इन दोनों से बढ़कर वेब माध्यमों को लेकर सर्वत्र विचारमंथन होने लगा है। पीत पत्रकारिता से पेड न्यूज महामारी तक कई विडंबनाएँ इस व्यवस्था को घेर चुकी थीं। बात वहीं खत्म नहीं हुई, अख़बार के किसी पक्ष के हाथों में परोक्ष रूप से बिक जाने को लेकर बहसें चल रही हैं। पल–पल सनसनीखेज खबरें परोसनेवाले टीवी चैनलों पर बिल्कुल अपने मूल्यों को भूलने के आरोपों पर चर्चा–परिचर्चा, विचार–विश्लेषण भी हो रहे हैं। बड़े व्यापक असर के साथ हर किसी की मुट्ठी तक मोबाइल–इंटरनेट व विभिन्न अनुप्रयोगों (ऐप) के माध्यम से फैले वेब माध्यम को कुछ स्वार्थी ताकतें अपने दलों का इस्तेमाल कर गलत लोकप्रियता दर्शाते हुए जन भावना और जनमत को प्रभावित करने पर भी बड़ी बहस हम देख सकते हैं। इन तमाम स्थितियों पर भिन्न–भिन्न विचारधाराओं, विचार–दृष्टियों से चिंता–चिंतन का विमर्श हर पल बढ़ते दौर में मीडिया विमर्श पर लिखित पुस्तकों का प्रकाशन निश्चय ही बढ़ रहा है।

सर्वेक्षण वर्ष के दौरान मीडिया विमर्श की दृष्टि से विवेचनीय पुस्तकें कम ही प्रकाशित हुई हैं। केशव मोरे और वीरेंद्र जाधव की पुस्तक 'आधुनिक मीडिया विमर्श', डॉ. सौरभ मालवीय और लोकेंद्र सिंह के संपादन में 'राष्ट्रवाद और मीडिया', डॉ. श्रीलता विष्णु के संपादन में 'मीडिया और साहित्य : समकालीन संदर्भ' के शीर्षक से पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। मीडिया संबंधी मुद्दों, चिंतनीय बातों पर विचार इन कृतियों में किसी हद तक हम देख सकते हैं।

राष्ट्रवाद को लेकर सर्वत्र बहस के बीच डॉ. सौरभ मालवीय एवं लोकेंद्र सिंह के संपादन में प्रकाशित पुस्तक 'राष्ट्रवाद और मीडिया' बहुआयामी मीडिया विमर्श के एक आयाम को आगे बढ़ाने की कोशिश के रूप में सामने आई है। डॉ. आशीष जोशी ने इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखी है। राष्ट्रवाद वह विचारधारा है जो राष्ट्र को सर्वोपरि स्थान देता है, राष्ट्र के बाद ही राष्ट्र की जनता की बात आती है जो कि राष्ट्र का ही अभिन्न अंग है। इस विचारधारा के अनुसार राष्ट्र के अस्तित्व के साथ ही सभी का अस्तित्व जुड़ा होता है। राष्ट्र के अस्तित्व से जन गण मन की रक्षा सुनिश्चित होती है। राष्ट्र के अस्तित्व से सरकार और जनता का

अस्तित्व सुनिश्चित होता है, तभी मीडिया का भी सार्थक अस्तित्व होता है। उनके अनुसार राष्ट्र विरोधी विचारधारा या अन्य किसी विचारधारा से मीडिया दुनिया के सामने राष्ट्र का गलत चित्र ही पेश करता है जिससे राष्ट्रीय अस्मिता को ख़तरा है। राष्ट्र की अस्मिता सुनिश्चित करने की महती भूमिका निभाने के लिए राष्ट्रवादी पत्रकारों और राष्ट्रवादी मीडिया की आवश्यकता पर राष्ट्रवाद में बल दिया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रवाद और मीडिया के विभिन्न आयामों में चिंतन पर केंद्रित प्रो. संजय द्विवेदी, अमरेंद्र कुमार आर्य, डॉ. शशि प्रकाश राय, उमापति मिश्र, डॉ. मंजरी शुक्ला, शिवेंदु राय, अजीत पंवार, अखिलेश द्विवेदी, डॉ. सीमा वर्मा, डॉ. मयंक चतुर्वेदी, संतोष कुमार पाठक आदि के कुल 32 आलेखों को इस पुस्तक में शामिल किया गया है। राष्ट्रवाद के पक्ष व विपक्ष दोनों पर बहस को स्थान देकर सार्थक विमर्श के लिए प्रयास किया गया है।

डॉ. के. श्रीलता विष्णु के संपादन में प्रकाशित पुस्तक में 'मीडिया विमर्श का समकालीन संदर्भ' शीर्षक से गीताश्री के आलेख के अलावा मीडिया के विभिन्न पक्षों पर विभिन्न लेखकों द्वारा प्रस्तुत विस्तृत विमर्श को हम देख सकते हैं, जिसमें मीडिया और साहित्य के संबंध में प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, मीडिया के दायरे पर डॉ. श्रद्धा सिंह, मीडिया, समय, समाज और संस्कृति पर प्रो. प्रमोद कोवप्रत, भूमंडलीकरण, संचार माध्यम और हिंदी पर रीनी मरियम एब्रहाम, मीडिया विमर्श के समकालीन संदर्भ के परिप्रेक्ष्य समाज के विशेष संदर्भ में अजय जी. कामत, मीडिया के समकाल पर डॉ. के श्रीलता विष्णु का आलेख आदि शामिल हैं। इस पुस्तक में शामिल कुल 32 आलेखों में कुछ आलेख मीडिया के भाषिक पक्ष पर भी केंद्रित हैं और कुछ अन्य मुद्दों पर। नव माध्यमों के परिप्रेक्ष्य में भी इस पुस्तक में कुल 6 आलेख शामिल हैं, जिनकी चर्चा नई प्रौद्योगिकी विषयक विवेचन के अंतर्गत शामिल की गई है।

मीडिया विषयक शिक्षण–प्रशिक्षण में उपयोगी कृतियाँ

मीडिया– क्षेत्र के लिए प्रशिक्षित कुशल जनबल माँग को ध्यान में रखते हुए आज विभिन्न पाठ्यक्रमों का विकास हुआ है। कई विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, संस्थानों–संगठनों में स्नातक, स्नातकोत्तर सनद, प्रमाणपत्र स्तर के पाठ्यक्रमों का संचालन हो रहा है। इनके अलावा विभिन्न मीडिया प्रतिष्ठानों के अपने प्रशिक्षण केंद्रों का भी विकास हुआ है। पत्रकारिता विषयक अलग से कई विश्वविद्यालय भी संस्थापित हैं। इन सभी संस्थानों में छात्र व प्रशिक्षार्थी पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, नव माध्यम, दृश्य संचार, वेब माध्यमों से संबंधित आधुनिकतम प्रौद्योगिकी आधारित कुशलताएँ, विभिन्न भूमिकाओं के लिए अपेक्षित ज्ञान, स्फूर्ति और आत्मविश्वास हासिल कर पा रहे हैं। ऐसे छात्रों के लिए विभिन्न संस्थानों में शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यों के लिए कई पाठ्य–पुस्तकों, संदर्भ व सहायक ग्रंथों की अपेक्षा है। इस अपेक्षा की पूर्ति की दिशा में उपयोगी कई पुस्तकों का प्रकाशन हर वर्ष हो रहा है। पाठ्यक्रम में शामिल करने के उद्देश्यों से न लिखे जाने के बावजूद कई पुस्तकें पाठ्यक्रम के अनुरूप विषयों के साथ लिखी जाती हैं या छात्रोपयोगी शैली में लिखी जाती हैं। हिंदी में मीडिया शिक्षण–प्रशिक्षण परक स्तरीय पुस्तकों की माँग हमेशा बढ़ रही है।

सर्वेक्षण वर्ष के दौरान शिक्षणोपयोगी कृतियाँ लगभग एक दर्ज़न प्रकाशित हुई हैं। सभी पुस्तकें इसी उद्देश्य से भले ही न लिखी गई हों, मगर उनकी वस्तु–सामग्री अकादमिक दृष्टि से छात्रोपयोगी भी है। ऐसी तमाम पुस्तकों के अवलोकन के पश्चात् उनमें वर्णित विषय–वस्तु के आधार पर वर्गीकरण में पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, जनसंचार, प्रसारण मीडिया, मास मीडिया, सोशल मीडिया, सिनेमा, फिल्म एवं रंगमंच, विज्ञापन जगत, मीडिया के लिए सामग्री उत्पादन एवं सृजन कौशल आदि वर्गों की पुस्तकें हर

वर्ष प्रकाशित होती थी। इस वर्ष कोरोना महामारी से उत्पन्न परिस्थितियों की वजह से कुछ ही वर्गों की पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनका संक्षेप में आकलन यहाँ प्रस्तुत है –

जनसंचार, प्रसारण मीडिया, मास मीडिया– परिभाषा तिवारी की पुस्तक 'भारतीय मीडिया और जनसंचार' और बसंत कुमार चौधरी, संतोष कुमार की पुस्तक 'सूचना संचार के विविध आयाम', सुनील गौड़ के संपादन में 'जनसंचार समितियाँ, आयोग एवं मीडिया संस्थान' प्रकाशित हुई हैं। इनके अलावा हरियाणा ग्रंथ अकादमी की ओर से डॉ. प्रदीप कुमार की पुस्तक 'मीडिया लिटरेसी : दूसरी परंपरा' भी सामने आई है। ये पुस्तकें अपने शीर्षक के अनुरूप स्तरीय विषय विवेचन के साथ प्रकाशित हुई हैं।

'जनसंचार समितियाँ, आयोग एवं मीडिया संस्थान' सुनील गौड़ के द्वारा संपादित और संकलित पुस्तक है। कई संदर्भों में कई जनसंचार समितियों द्वारा अपनी भूमिका सुनिश्चित करने से मीडिया का अभूतपूर्व विकास हम देख पाए। मीडिया जगत के विभिन्न मुद्दों के लिए समाधान हेतु समय–समय पर विभिन्न आयोगों का गठन भी किया गया है। मीडिया जगत की समस्याओं के निपटान के अलावा मीडिया के मूल्यबद्ध आचरण, स्वनियमन को सुनिश्चित करना मीडिया तंत्र के इन घटकों का मुख्य उद्देश्य है। इनके अलावा कई संस्थाएँ भी सक्रिय हैं। पत्रकारिता को लोकतंत्र के चौथे खंभे के रूप में माना गया था। शासक और शासित के बीच प्रहरी की भूमिका मीडिया की ही मानी जाती है। इस आलोक में मीडिया का मूल्यबोध और मानक नैतिक आचरण ही मीडिया को प्रहरी भूमिका के लिए योग्य ठहरा सकता है।

सिनेमा, फिल्म एवं रंगमंच – सिनेमा, फिल्म विषयक पुस्तकें सर्वेक्षण वर्ष के दौरान लगभग एक दर्ज़न से अधिक प्रकाशित हुई हैं। इनमें विवेकानंद की पुस्तक 'साहित्य और सिनेमा रूपांतरण', डॉ. सौम्यरंजन की पुस्तक 'हिंदी सिनेमा साहित्य में अंतर्संबंधों की खोज', दिनेश चौधरी की पुस्तक 'लौट कर आता है ज़माना', नसरीन मुन्नी कबीर की कृति 'लता मंगेश्कर अपने खुद के शब्दों में', डॉ. सुरभि विप्लव की पुस्तक 'सिनेमा के विविध संदर्भ', डॉ. जे. जय कृष्णन की लेखनी से निस्सृत 'भारतीय जन–जीवन और हिंदी सिनेमा', डॉ. एम. फ़िरोज़ खान एवं डॉ. शिप्रा किरण की संपादित कृति 'सिनेमा की निगाह में थर्ड जेंडर' संशोधित संस्करण उल्लेखनीय हैं।

भारतीय सांस्कृतिक गरिमा को बढ़ाने में भारतीय ललित कलाओं की भी विशिष्ट भूमिका है। संगीत भी ललित कलाओं का अंग है। भारतीय शास्त्रीय परंपरा का संगीत समूची दुनिया में प्रसिद्ध है और संगीत को वैज्ञानिक ढंग से विकसित करने के साथ–साथ कई साधकों ने उस परंपरा व कला को जीवित रखा है। पीढ़ी–दर–पीढ़ी कलाकौशल हस्तांतरित होते रहने के बावजूद आधुनिक समाज में सीमित संख्या में ही लोग इन कलाओं में निष्णात हो पा रहे थे। मगर आज हम देख सकते हैं कि इस कला के संबंध में आधुनिक समाज में चेतना अक्षुण्ण है और अपार गौरव भी है। इस रूप में शास्त्रीय संगीत की चेतना बनाए रखने में मीडिया के संस्थानों ने अपने ढंग से योगदान दिया है। विभिन्न मीडिया संस्थानों का भारतीय संगीत को योगदान का विवेचन डॉ. राधिका शर्मा ने अपनी पुस्तक 'भारतीय संगीत को मीडिया और संस्थानों का योगदान' में किया है। एक समय ऐसा था, जब अमीर वर्ग तक ही शास्त्रीय संगीत की पहुँच थी जो गुरु परंपरा में संगीत सीखते थे। मीडिया और जनसंचार साधनों ने संगीत की चेतना सभी वर्गों तक फैलाकर इच्छुक व्यक्तियों को संगीत सीखने में विशिष्ट भूमिका हर कदम पर निभाई है। इन तथ्यों का विश्लेषण इस पुस्तक में हम देख सकते हैं।

क्षेत्रीय, आंचलिक पत्रकारिता विवेचन– यह ध्यातव्य है कि एक तरफ़ भूमंडलीकरण की परिघटना का प्रभाव भारत में फैलने लगा दूसरी

तरफ़ उदारीकरण, निजीकरण की नीतियाँ लागू हो जाने से व्यापारिक नीतियों के तहत उपभोक्तावाद की जड़ें भी फैलने लगीं। उपभोक्तावादी नीतियों के तहत मीडिया में क्षेत्रीय संस्करण के तहत कुछ अख़बारों में क्षेत्रीय समाचार के लिए अलग से टेब्लॉइड संस्करण भी शामिल होने लगे। अख़बारों में क्षेत्रीय समाचारों की बढ़त से क्षेत्रीय राजनीति को बल मिलने लगा, परिणामस्वरूप क्षेत्रीय दलों का भी विकास होता गया। डॉ. लीना की पुस्तक इन्हीं बातों के दायरों के आर–पार 'बिहार में 1970 के दशक में राजनीति और मीडिया' पर केंद्रित है। 1970 में देश में आपातकाल की स्थिति में संविधान प्रदत्त अभिव्यक्ति के अधिकार पर पानी फेर दिया गया था। ऐसी स्थिति में एक क्षेत्र में राजनीति और मीडिया का विवेचन आपातकाल के दौरान मीडिया की स्थिति का सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत होने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। डॉ. लीना की पुस्तक इसी दृष्टि से उल्लेखनीय है।

पत्रकारिता के इतिहास और परंपरा पर केंद्रित पुस्तकें

पत्रकारिता के इतिहास लेखन की दिशा में समय–समय पर कई प्रयास हुए हैं। एक बृहद् कार्य रामरतन भटनागर ने अपने शोधकार्य 'The Rise and Growth of Hindi Journalism' भारत की आज़ादी के पूर्व ही प्रस्तुत किया था। इस बृहद इतिहास में 1826 से 1945 तक की हिंदी पत्रकारिता का विस्तृत, अनुसंधानपरक विश्लेषण, विवेचन प्रस्तुत है। भटनागर जी ने अपनी इस पुस्तक में अपने पूर्व के जिन इतिहासकारों के नामों का उल्लेख किया है, उनमें बी. राधाकृष्ण दास, बी. बालमुकुंद गुप्त, गार्सा दा तासी, पं. रामचंद्र शुक्ल, डॉ. रमा शंकर शुक्ल रसाल, नंदकुमार देवशर्मा, पं. विष्णुदत्त शुक्ल, बी.एस. ठाकुर, सुशील कुमार पांडेय, कमलापति शास्त्री, पुरुषोत्तमदास टंडन, प्रेमनारायण टंडन आदि शामिल हैं। इतिहास लेखन की इस लंबी परंपरा के क्रम में सर्वेक्षण वर्ष के दौरान दो उल्लेखनीय इतिहास कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं, जो हिंदी पत्रकारिता पर केंद्रित हैं। हिंदी पत्रकारिता के इतिहास से संबंधित अधिकांश कृतियों की एक सबसे बड़ी कमी यह है कि इन कृतियों में अधिकांश हिंदी प्रदेशों से प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं का विवेचन ही हम देख सकते हैं। अधिकांश इतिहास पुस्तकों में दक्षिण भारत, पूर्वोत्तर व अन्य हिंदीतर राज्यों से प्रकाशित हिंदी की पत्र–पत्रिकाओं को नज़रंदाज किया गया है। यह बड़ी ऐतिहासिक उपलब्धि की उपेक्षा है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में भारत सरकार को हिंदी की प्रसार वृद्धि का दायित्व जो स्पष्ट किया गया है, उसके आलोक में कई संस्थाएँ गठित हुईं और हिंदी प्रचार–प्रसार के लिए कई प्रोत्साहन योजनाएँ लागू हो रही हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान की ओर से हिंदी की पत्रिकाओं के लिए हर वर्ष अनुदान दिए जा रहे हैं। इसके बावजूद सही मायने में हिंदीतर प्रदेशों की हिंदी पत्रकारिता का इतिहास अक्षरबद्ध नहीं हो रहा था। हिंदी पत्रकारिता के इतिहास विषयक रमेश जैन की संपादित पुस्तक में पहली बार दक्षिण भारत की हिंदी पत्रकारिता के संबंध में एकाध अध्याय जोड़कर विवेचन किया गया था। ऐसी कमी की पूर्ति की दिशा में इन पंक्तियों के लेखक ने विस्तृत अनुसंधान कार्य किया है जिसके अनुसार लगभग तीन सौ से अधिक पत्र–पत्रिकाओं के दक्षिण भारत से प्रकाशित होने के कई सबूत प्रस्तुत किए हैं जिसमें दक्षिण के पाँचों राज्यों और केंद्रशासित प्रदेश पुदुच्चेरी में हिंदी पत्रकारिता का विस्तृत विवेचन किया है।

हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र के सुपरिचित लेखक डॉ. अर्जुन तिवारी की लेखनी से 'हिंदी पत्रकारिता का बृहद इतिहास' सृजित हुआ है। 1826 में पं. युगल किशोर शुक्ल के संपादन में कोलकाता से प्रकाशित 'उदंत मार्तंड' के साथ ही हिंदी पत्रकारिता का बीजवपन हुआ था। साप्ताहिक 'उदंत मार्तंड' केवल 79 अंकों के प्रकाशन के बाद बंद हो गया। हिंदी में दैनिक

पत्र के लिए 1854 तक इंतज़ार करना पड़ा, जब श्यामसुंदर सेन ने दैनिक 'समाचार सुधावर्षण' का प्रकाशन शुरू किया था। इस बीच विभिन्न प्रयासों से इधर–उधर से कुछ और पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई थीं। आगे चलकर हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता के साथ–साथ समाचारपत्रों का भी विकास सुनिश्चित हुआ। हिंदी पत्रकारिता ने भारत में अग्रणी स्थान हासिल किया है। भारतीय हिंदी पत्रकारिता आज तक 195 वर्ष पूरे कर चुकी है। अर्जुन तिवारी की यह पुस्तक पहले लिखी गई सामग्री के साथ अद्यतन बनाई गई है, जिसमें पत्रकारिता का कुल 170 वर्षों का इतिहास है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में समाचारपत्रों के माध्यम से जनचेतना के आलोक में सार्थक रूप से काल विभाजन के साथ इतिहास का विवेचन इस कृति में किया गया है। यह इतिहास कृति अध्येताओं, अनुसंधाताओं तथा विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी है। इसी बीच चेतन अरविंद की एक पुस्तक 'हिंदी पत्रकारिता का इतिहास' भी सामने आई है।

मीडिया के परिप्रेक्ष्य में महिला, दलित, अल्पसंख्यक व सांप्रदायिक विमर्श

वर्तमान युग को आलोचकीय दृष्टि व अस्तित्ववादी विमर्शों के युग के रूप में मानते हैं। उत्तर–आधुनिक अस्तित्ववादी चेतनाओं के विकास के क्रम में आज दलित चेतना, स्त्री चेतना, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, सांप्रदायिक विमर्श आदि का विकास हुआ है। इन अस्तित्ववादी विमर्शों के परिप्रेक्ष्य में मीडिया उपेक्षित, हाशिए में रहने वालों पर विमर्श केंद्रित करता है। महिला को केंद्र में रखकर मीडिया की स्थिति पर हम चिंतन करेंगे तो मीडिया की स्त्री–दृष्टि, महिलाओं की समस्याओं के प्रति मीडिया का रुझान आदि बातें स्पष्ट होती हैं। इसी तरह विभिन्न विमर्शों की दृष्टि से मीडिया पर केंद्रित अध्ययनों की प्रासंगिकता है।

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में कई विदूषियों के नामों का हमें परिचय मिलता है। प्राचीन काल के समाज में नारी को शक्ति के रूप में, देवी–देवताओं की श्रेणी में पूजने की संस्कृति विकसित हुई थी। धीरे–धीरे आधुनिक काल तक पहुँचते–पहुँचते कई विडंबनात्मक परिस्थितियाँ पैदा हुईं। नारी का जीवन संघर्षपूर्ण हो गया। शिक्षा–दीक्षा के अवसर भी नहीं दिए गए, उन्हें चारदीवारी तक पर्दे के पीछे रखने और कई प्रकार से उनके प्रति अन्याय करने की स्थितियाँ उत्पन्न हुईं। नारी को उपभोग की वस्तु के रूप में देखने की अराजक रवैयों के बीच विडंबनात्मक सती प्रथा को भी हम देख पाए थे। नारी चेतना और नारी मुक्ति के प्रयास में आधुनिक काल में जो भी प्रयास हुए, उनमें मीडिया को भी सार्थक भूमिका का श्रेय दिया जाता है। पुरुष के अनुरूप नारी को समान अधिकारों की वक़ालत के साथ पत्रकारिता ने नारी चेतना में बड़ा योगदसन दिया है, इसमें संदेह नहीं है। आज यदि हर क्षेत्र में नारी के प्रवेश को, सफलता को देख पा रहे हैं, इसमें मीडिया के सक्रिय योगदान को भूला नहीं जा सकता है। स्त्री–मुक्ति के लिए स्त्री को सशक्त बनाने के लिए अनुकूल परिस्थितियों का सृजन महत्वपूर्ण है। नारी चेतना के विभिन्न प्रयासों से आज की महिला इतनी सशक्त है कि किसी भी क्षेत्र में वह अपनी छाप छोड़ते हुए सफलता में योग–दान दे रही है। जनमाध्यमों ने नारी चेतना और नारी सशक्तिकरण की दिशा में जो भूमिका निभाई है, उसका विवेचन अपनी पुस्तक 'महिला सशक्तिकरण में जनमाध्यमों की भूमिका' में डॉ. दयानंद उपाध्याय ने सफलतापूर्वक किया है।

आलोच्य वर्ष के दौरान दलित, अल्पसंख्यक व सांप्रदायिक व अन्य विमर्शों पर कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। केवल किन्नरों को लेकर 'सिनेमा की निगाह में थर्ड जेंडर' पुस्तक प्रकाशित हुई है।

मीडिया भाषाई विमर्श व भारतीय भाषाई पत्रकारिता

भाषा की बहुआयामी भूमिकाओं में संचार साधनों की भाषा के रूप में उसका विकास

निश्चय ही भाषिक विकास का संकेत है। विभिन्न संचार साधनों के माध्यम से भाषा का प्रसार व संवर्धन भी हो रहा है। पत्र–पत्रिकाओं ने भाषा के विकास की दिशा में कई रूपों में योगदान दिया है। भूमंडलीकरण के प्रभावों के आलोक में बाज़ारीकृत दुनिया में भाषा के बिगड़ते स्वरूप को लेकर विभिन्न जनमाध्यमों के जरिए कई चिंताएँ जाहिर की जा रही हैं। ये चिंताएँ इन माध्यमों में भाषा के बिगड़ते स्वरूप को लेकर भी हैं। मीडिया की भाषा को लेकर अकादमिक विमर्शों का विकास आज इसी दृष्टि से हुआ है। इसी क्रम में मीडिया भाषाई विमर्श पर केंद्रित पुस्तकें समय–समय पर प्रकाशित हो रही हैं। हिंदी के अलावा भारतीय भाषाओं में मीडिया की स्थिति, गति, प्रगति पर विवेचन, विश्लेषण भी समय–समय पर हिंदी में हो रहा है।

पत्रकारिता भाषा विमर्श की दृष्टि से सर्वेक्षण वर्ष के दौरान प्रकाशित मीडिया भाषा विषयक पुस्तकों में आदर्श प्रकाश सिंह की 'सही भाषा सरल संपादन' उल्लेखनीय है। हिंदी भारत के कई अंचलों में बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी प्रदेशों में सैकड़ों बोलियाँ प्रचलित हैं, जो उन अंचलों के लोगों की मातृभाषाएँ होने के नाते उनकी हिंदी पर बोलियों का प्रभाव देखा जा सकता है। दूसरी तरफ़ हिंदीतर प्रदेशों में आज तक कई दृष्टियों से हिंदी का प्रचलन बढ़ा है। अपनी–अपनी भाषा या बोली का प्रभाव आदि की वजह से हिंदी में कई ऐसे प्रयोग नज़र आते हैं, जिनके मानकीकरण के अभाव में एक मानक भाषा के विकास में गतिरोध पैदा होता है। दूसरी ओर तकनीकी, पारिभाषिक शब्दावली के मामले में अनुवाद के माध्यम से शब्द बोझिल और भाषा जटिल होती देखी जा सकती है। पत्रकारिता की भाषा निश्चित रूप से सरल और मानक होना अपेक्षित है। इन तमाम चुनौतियों का समाधान भाषिक विमर्श से ही संभव है। इस दृष्टि से सही भाषा और सरल संपादन की वकालत करने वाली यह पुस्तक स्वागत योग्य है।

मीडिया पर केंद्रित साहित्यिक रचनाएँ

'वाया मीडिया' (एक रोमिंग कॉरस्पॉन्डेंट की डायरी) गीताश्री का मीडियाकर्मी केंद्रित उपन्यास है जो 90 के दशक की महिला पत्रकारों की रोमांटिक दास्तान (खंड–1) के रूप में प्रकाशित हुआ है। मीडिया क्षेत्र पर केंद्रित कथा साहित्य के रूप में यह उपन्यास स्वागत योग्य है।

मीडिया समग्र, कोश और निर्देशिकाएँ

पत्रकारिता संबंधी कोशों, निर्देशिकाओं, मीडिया समग्रों, सर्वेक्षणात्मक आलेखों के नियमित प्रकाशन से क्रमिक विकास, इतिहास को समझने, शोध करने में बड़ी मदद मिल सकती है। ऐसे प्रयासों के क्रम में हर वर्ष केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से प्रकाशित 'वार्षिकी' एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है जिसमें आकलन वर्ष के दौरान हिंदी सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रकाशित साहित्य के सर्वेक्षण के अलावा हिंदी पत्रकारिता संबंधी सर्वेक्षणात्मक आलेखों का प्रकाशन नियमित रूप से हो रहा है। इसके अलावा कई शोध–पत्रिकाएँ भी इस दिशा में अपनी भूमिका निभा रही हैं। संग्रहालयों और पुरालेखों की भी विशिष्ट भूमिका होती है, जहाँ विभिन्न प्रकाशनों, शोध सामग्री को सुरक्षित करने का प्रयास किया जाता है, जिससे अनुसंधान कार्यों के लिए कई आधार मिल जाते हैं। भोपाल स्थित माधवराव सप्रे पत्रकारिता संग्रहालय के अलावा कई अन्य संग्रहालय भी इस दिशा में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

पत्रकारिता–शोध के लिए अपेक्षित मानव–संसाधनों के संपर्क सूत्र देने की दृष्टि से पत्रकार–निर्देशिकाएँ पूरक की भूमिका निभाती हैं। मुंबई से आफ़ताब आलम के संपादन में पत्रकारिता कोशों का प्रकाशन उल्लेखनीय प्रयास है। इनके संपादन में हर वर्ष कोशों के प्रकाशन की शृंखला में' पत्रकारिता कोश 2020' बृहद आकार में प्रकाशित हुआ है, जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर कई पत्रकारों के संपर्क सूत्र संकलित हैं।

आलम जी द्वारा पत्रकारों के कोश के प्रकाशन का यह 20वाँ वर्ष है। लगातार दो दशकों से नियमित रूप से पत्रकारिता कोश का प्रकाशन अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

पत्रकारों, मीडिया के दिग्गजों पर केंद्रित पुस्तकें

पत्रकारिता संबंधी संस्मरण और प्रमुख पत्रकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित पुस्तकें, पत्रकारों और मीडिया दिग्गजों की जीवनियाँ आदि भी हर वर्ष प्रकाशित हो रही हैं। इस वर्ष इस श्रेणी की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है।

हिंदी के सुविख्यात साहित्यकार कमलेश्वर ने साहित्यिक पत्रकारिता जगत में संपादक के दायित्व के अलावा प्रमुख समाचारपत्रों के संपादक व स्तंभकार के रूप में भी भूमिका निभाई थी। 'सारिका', 'गंगा', 'कथा यात्रा', 'श्री वर्षा', 'नई कहानियाँ' आदि साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादक के रूप में उन्होंने बड़ी लोकप्रियता हासिल की है। दूरदर्शन के कार्यकारी के रूप में रेडियो व दूरदर्शन के साथ उनका लंबा अनुभव रहा है। कमलेश्वर की पत्रकारिता पर शोध के रूप में डॉ. मनोज कुमार की पुस्तक 'कमलेश्वर और हिंदी पत्रकारिता' महत्वपूर्ण है। पत्रकार के रूप में कमलेश्वर के योगदान का कई आयामों में विश्लेषण इस पुस्तक में हम देख सकते हैं।

मीडिया विषयक पत्रिकाएँ/मीडिया पर केंद्रित विशेषांक

कोविड–19 की परिस्थितियों के आलोक में लॉकडाउन के कारण इस बार किसी पत्र–पत्रिका का मीडिया विशेषांक सामने नहीं आया। मीडिया संबंधी कुछ पत्रिकाओं के अंक भी निकल नहीं पाए थे। एकाध पत्रिकाओं में ही मीडिया विषयक विशेष आलेख शामिल हो पाए हैं।

'जनमीडिया' मीडिया शोध पर केंद्रित मासिक पत्रिका (संपादक अनिल चमड़िया) है। इसके अंकों में मीडिया के विभिन्न आयामों पर शोध आलेखों का नियमित प्रकाशन हो रहा है। 'जनमीडिया' के जनवरी 2020 के अंक में 'नागरिकता संशोधन कानून के लिए सरकार की मंजूरी पर हिंदी अख़बारों के शीर्षक' विषय पर मीडिया स्टडीज ग्रुप के अध्ययन के परिणाम प्रकाशित हैं। मार्च 2020 के अंक में अनिल चमड़िया के एक लेख 'संचार के सांप्रदायीकरण की प्रक्रिया और विस्तार' की पहली किस्त प्रकाशित हुई है। जुलाई 2020 के अंत में 'कोविड–19 लॉकडाउन का नौकरियों पर असरः भारतीय मीडिया उद्योग' विषय पर मीडिया स्टडीज ग्रुप का आलेख प्रकाशित हुआ। अगस्त 2020 के अंक में 'सत्ता और मीडिया का गठजोड़ एवं जनमत को गुमराह करने की भाषा' विषयक अध्ययन ऋषिकुमार सिंह ने प्रस्तुत किया है। सितंबर 2020 के अंक में 'जाति जेंडर संरचना और भाषाई स्वायत्तता के सवाल' विषय पर आशा सिंह का आलेख और 'भारत में प्रिंट मीडिया में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी कवरेज की प्रकृति और सीमा' विषय पर ब्लेसी मोहनदास, मनप्रीत कौर, हरप्रीत कौर के आलेख प्रकाशित हुए हैं। उसी अंक में 'उच्चतम न्यायालय में हिंदी पर विधि आयोग की सिफारिशें' विषय पर शोध संदर्भ का प्रकाशन हुआ है। नवंबर 2020 के अंक में भाषा का 'साहित्य और संस्कृति पर बाज़ारवादी मीडिया का प्रभाव' विषय पर अतुल भाई, वैभव, अनिल कुमार शुक्ला का अध्ययन हिंदी पत्रकारिता में 'भारत भ्राता' का योगदान प्रकाशित हुआ है। दिसंबर 2020 के अंक में मीडिया मे ंकिसानों का विरोध और कृषि संकट' विषय पर अभय कुमार का अध्ययन प्रकाशित हुआ है।

संचार व पत्रकारिता की शोध पत्रिका 'जनमीडिया' लगातार 8 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका में जनसंचार पत्रकारिता इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर केंद्रित शोध के परिणाम प्रकाशित होते है। विभिन्न आलेखों व शोध विश्लेषणों के रूप में पुस्तकें भी प्रकाशित होती हैं। हिंदी के माध्यम से मीडिया शोध की दिशा में 'जनमीडिया' महती भूमिका अदा कर रही है।

नई प्रौद्योगिकी और नव माध्यम संबंधी साहित्य

सूचना और संचार प्रौद्योगिकियाँ जिन्होंने डिजिटल व आभासी परिवेश का सृजन किया है और नव माध्यमों को जन्म दिया है, उनसे संबंधित प्रौद्योगिकियों को नई प्रौद्योगिकियों की संज्ञा भी दी जाती है।

नई प्रौद्योगिकियाँ मीडिया की गतिशीलता तथा प्रभावकारी उपस्थिति को बढ़ाने में प्रबल कारक साबित हुई हैं। मीडिया के साथ जुड़ी नई प्रौद्योगिकियों के परिप्रेक्ष्य में नव माध्यम साकार हो पाए हैं। नई प्रौद्योगिकियों का स्वरूप, अभिलक्षण, नव माध्यम सैद्धांतिकी, व्यावहारिकी आदि पर निरंतर विस्तृत विवेचन, विमर्श जारी है।

सूचना प्रौद्योगिकी के परिवेश में कार्यों में गति, विश्वसनीयता, गुणवत्ता, सुनिश्चितता, पहुँच आदि के बढ़ जाने से इनकी लोकप्रियता बढ़ी। मीडिया के हर क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकियों का जबरदस्त हस्तक्षेप है। इनके अलावा विश्वव्यापी जाल के सहारे पत्रकारिता ने एक नए रूप के विकास को साकार किया, जिसे आज कई संज्ञाएँ दी जाती हैं, यथा – इंटरनेट (अंतर्जाल) पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता, डिजिटल पत्रकारिता आदि। इन विषयों पर नियमित रूप से पुस्तकों का प्रकाशन भी हो रहा है। मीडिया संबंधी नई प्रौद्योगिकियों तथा नव माध्यमों से संबंधित हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों की चर्चा भी 'वार्षिकी' के सर्वेक्षणात्मक आलेखों में नियमित रूप से की जा रही है। उसी क्रम में वर्ष 2020 के दौरान प्रकाशित चंद पुस्तक की चर्चा यहाँ आगे प्रस्तुत है–

नई प्रौद्योगिकी के दायरे में चर्चा की जाने लायक पुस्तकें सर्वेक्षण वर्ष के दौरान सात–आठ प्रकाशित हुई हैं, विगत वर्ष की तुलना में इनकी मात्रा बढ़ चुकी है।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के विकास के परिप्रेक्ष्य में लगभग सभी क्षेत्रों में उसका भरपूर प्रयोग हो रहा है। आलोच्य वर्ष के दौरान 'सूचना प्रौद्योगिकी प्रबंधन' तथा 'सूचना प्रौद्योगिकी का वैश्विक परिदृश्य' के शीर्षक से दो पुस्तकें सामने आई हैं। दोनों पुस्तकों के लेखक डॉ. सर्वेश त्रिपाठी हैं। नव माध्यमों की पृष्ठभूमि में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ही है, जिसके बल पर अभूतपूर्व सूचना क्रांति उपस्थित हुई है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के सभी क्षेत्रों में प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में उसके प्रबंधन में कुशलता कई दृष्टियों से सूचना समाज के लिए संबल साबित हो सकती है। प्रौद्योगिकी प्रबंधन के विभिन्न आयामों के विश्लेषण की दृष्टि से 'सूचना प्रौद्योगिकी प्रबंधन' पुस्तक उपयोगी है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के परिप्रेक्ष्य में उसके वैश्विक परिदृश्य का अनुशीलन इस प्रौद्योगिकी के विकास के विभिन्न आयामों की जानकारी हासिल करने और विभिन्न क्षेत्रों में अपेक्षानुसार उसके उपयोग संबंधी चेतना उत्पन्न करने की दृष्टि से 'सूचना प्रौद्योगिकी का वैश्विक परिदृश्य' पुस्तक स्वागतयोग्य है।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के बड़े दिग्गज अमरीका से समूची दुनिया में अपनी गतिविधियाँ संचालित करने लगे हैं। भारत में भी इनफ़ोसिस, विप्रो जैसे दिग्गज पैदा हो गए हैं। इनके अलावा सहस्रों इस क्षेत्र में विकसित हो गए और इस क्षेत्र में अपनी सेवाएँ देते हुए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के विकास में अपना योगदान देते रहे हैं। नव माध्यम के विकास की दृष्टि से इस प्रौद्योगिकी की बड़ी भूमिका रही है। इनके प्रयोक्ताओं के विकास के साथ ही नव माध्यमों के प्रभाव क्षेत्र का व्यापक विस्तार हुआ।

'मीडिया और साहित्यः समकालीन संदर्भ' के शीर्षक से डॉ. के. श्रीलता विष्णु के संपादन में प्रकाशित पुस्तक में नव माध्यम और आभासी दुनिया संबंधी छह आलेख हैं। 'नई मीडिया की अवधारणा एवं सैद्धांतिक पहलू' शीर्षक से डॉ. सी. जय शंकर बाबु का आलेख शामिल है

जिसमें आलेख को नई मीडिया के मैनोलोविच और मार्टिन लिस्टर द्वारा प्रतिपादित तत्वों के आधार पर सैद्धांतिक बनाया गया है। शेष आलेख मुख्यतः आभासी दुनिया और सोशल मीडिया पर केंद्रित हैं। डॉ. पुनीत बिसारिया 'आभासी दुनिया और सोशल मीडिया' पर, 'सोशल मीडिया और हिंदी' पर डॉ. सुनील कुमार, 'आभासी दुनिया का समकालीन परिदृश्य' पर डॉ. राधामणि सी., 'हिंदी के परिप्रेक्ष्य में सोशल मीडिया' पर दिव्या वी.एल, 'उत्तराधुनिकता और सोशल मीडिया संबंध' पर उदयदीप्ति ए.एस. के आलेख प्रकाशित हैं। इन आलेखों में आभासी दुनिया का परिप्रेक्ष्य तथा सामाजिक माध्यमों पर विश्लेषण–विवेचन प्रस्तुत है।

पत्रकार की रिपोर्टिंग के सहारे अख़बार में छपकर ख़बरें जन–जन तक पहुँचती थीं। आगे रेडियो और टेलिविज़न चैनलों के विकास के क्रम में माध्यम के अभिलक्षणों के अनुरूप ख़बरे पेश होने लगीं। श्रव्य साधनों में ख़बरों को सुनने के अलावा ख़बरों की सुर्खियों में जो भी व्यक्ति हैं, उनकी आवाज़ भी श्रव्य साधनों के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रमों के बहाने सुनने का अवसर मिलता था। दृश्य–श्रव्य साधन के रूप में टेलिविज़न में ख़बरों की दृश्य प्रस्तुति के लिए वीडियोग्राफ़ी की जाती है और उसके सहारे दर्शक प्रत्यक्षदर्शी के जैसे अनुभव कर पाते हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी ने न केवल डिजिटल साधनों की पहुँच को बढ़ाया, नवीन प्रवृत्तियों को जगह दी। इनके माध्यम से दुनिया के किसी भी प्रदेश के लोग किसी से भी जुड़ सकें इसके लिए अनुकूल प्रणालियाँ विकसित हुईं। सामाजिक माध्यमों के रूप में फ़ेसबुक, यू–ट्यूब के अलावा इसी तरह की कई प्रणालियाँ विकसित हुई हैं। नई प्रौद्योगिकी इन प्रणालियों की जन्मदात्री है। इनकी लोकप्रियता बढ़ने के साथ–साथ इनके माध्यमों से पत्रकारिता की गतिविधियाँ जन–जन द्वारा कई रूपों में होने लगी। शीघ्रता, व्यापकता, आदान–प्रदान क्षमता, संवादात्मकता आदि सुविधाओं की वजह से ख़बरे डिजिटल माध्यमों में फैलने से कई तरह से बहस को जन्म देती हैं।

नव माध्यमों के विकास के क्रम में जन–जन तक इन माध्यमों को फैलाने में समाज (सोशल) माध्यमों की बड़ी भूमिका रही है। फ़ेसबुक, ट्विटर, गूगल प्लस, लिंक्डइन, ह्वाट्स ऐप, इंस्टाग्राम आदि में लोगों की हर पल सक्रियता से इन माध्यमों का समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ने लगा। वैसे में सभी परंपरागत माध्यमों से कई मामलों में भिन्न होने की वजह से परंपरागत मीडिया के कानून इन पर लागू न होने से कई देशों में समाज माध्यमों की स्वच्छंदता देखी गई। भारत में भी सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 बना था और इसके आधार पर कार्यान्वयन के लिए अपेक्षित नियंत्रण के लिए कोई नियम न बनने से काफ़ी स्वच्छंदता के आलोक में कई संदर्भों में इन माध्यमों से कई चुनौतियाँ पैदा होने लगी थीं। सरकार ने इन माध्यमों पर नियंत्रण कसने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यवर्ती दिशा निर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता नियम, 2021 के नाम से) नियमों को 25 फरवरी, 2021 को भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया है। सोशल मीडिया और ख़बरे जो फ़ेसबुक, यू–ट्यूब आदि के माध्यम से प्रसारित होती हैं, उनसे संबंधित कई आयामों पर आलोच्य वर्ष में पाँच पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं– शैलेंद्र तिवारी की 'डिजिटल मीडिया खबर', 'फ़ेसबुक' और 'यू–ट्यूब', डॉ. पवन मलिक द्वारा संपादित 'नागरिक पत्रकारिता', जी. पी. वर्मा द्वारा संपादित 'स्वच्छंद सोशल मीडियाः खतरे, कारण व निदान', नागेंद्र कुमार सिंह की पुस्तक 'सोशल मीडिया और जनजातीय संस्कृति', डॉ. कल्पना गवली द्वारा संपादित 'सोशल मीडिया और हिंदी'। इन सबमें शीर्षक के अनुरूप उक्त चर्चित दायरे में विषय प्रतिपादन और विश्लेषण है।

मीडिया स्टडीज ग्रुप द्वारा प्रकाशित 'जन मीडिया' मासिक पत्रिका के अंकों में नई प्रौद्योगिकी एवं नव माध्यमों से संबंधित सामग्री

नियमित रूप से प्रकाशित होती रही है। 'जनमीडिया' के मार्च 2020 के अंक में जूली पोसेत्ती का शोध 'डिजिटल तकनीक गलत व आधारहीन सूचनाओं से लैस ख़बरों की नई दुनिया' प्रकाशित हुआ है। नवंबर 2020 के अंक में 'कोरोना वायरस डिजिटल स्वास्थ्य पर समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण' विषय पर देबोरा लिपटनकिशो का आलेख प्रकाशित हुआ है।

आलोच्य वर्ष के दौरान नई प्रौद्योगिकी व नव माध्यम विषयक पुस्तकों का संख्यात्मक, गुणात्मक दृष्टि से विकास स्वागतयोग्य है। नई प्रौद्योगिकियाँ आज हर क्षेत्र की अनिवार्यताएँ बन रही हैं। इनके सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रदेयों, भूमिका और प्रयोग की दृष्टि से इनसे संबंधित विषय की पुस्तकों की हिंदी में माँग और आपूर्ति निरंतर बढ़ रही है। कुल मिलाकर वर्ष 2020 के दौरान नई प्रौद्योगिकी संबंधी लेखन–प्रकाशन संतोषजनक है।

– सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी–605014

❑❑❑

25

हिंदी बाल साहित्य

प्रो./डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल

हिंदी बाल साहित्य, भविष्य का अभिनव भारत निर्माण है। जहाँ तक 2020 में सृजित बाल साहित्य का प्रश्न है, उस पर कोरोना के ग्रहण की छाया अवश्य है, परंतु कोरोना का राहु इसे ग्रसने में असमर्थ रहा। अनेक बेविनारों, ई–पत्रिकाओं, विशेषांकों और ग्रंथों के माध्यम से इस संकटकाल में आशातीत कार्य हो सके हैं। आज की स्थिति में हिंदी बाल साहित्य अपने साहित्यिक–विधा के स्वरूप में शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था में पहुँच गया है। इसमें तमाम यशस्वी लेखकों और संस्थानों के नाम हैं। इसी संदर्भ में 2020 में प्रकाशित हिंदी की एक अत्यंत चर्चित एवं महत्वपूर्ण पत्रिका 'साक्षात्कार' (अंक 485–486/नवंबर–दिसंबर, 2020 (संयुक्तांक)। इसके संपादक डॉ. विकास दवे, देवपुत्रा (सुप्रसिद्ध बाल पत्रिका) भी संपादक रह चुके हैं। साक्षात्कार का यह 'बाल साहित्य विशेषांक' कुल तीन सौ चार पृष्ठों का है। पूरा एक ग्रंथ है। इसे इस वर्ष के प्रकाशनों की एक सर्वोत्कृष्ट कृति कहा जा सकता है। इस पर कुछ कहने के पूर्व में यह कहना चाहता हूँ कि इधर इस दिशा में कुछ गंभीर लेखकों ने भी इस पर ध्यान देना प्रारंभ कर दिया है। इसमें कुल इकसठ लेख हैं। इन लेखों में लगभग सभी विधाओं और प्रवृत्तियों के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मूल्यपरक संदर्भों पर भी प्रकाश डाला गया है। इसमें संपादक की यह टिप्पणी कि बाल साहित्य मानवसृजन का साहित्य है, अत्यंत वस्तुनिष्ठ एवं सारगर्भित बीजवाक्य है। इसका निहितार्थ बहुत व्यापक और दिशा निर्देशक है। इसके संपादक बधाई के पात्र हैं।

विशेषांक के प्रारंभ में सपादक द्वारा डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल से लिया गया साक्षात्कार बाल साहित्य की अनेक गुत्थियों को सुलझाता है। बाल साहित्य के अध्ययन की जड़ता को तोड़ता है। बाल साहित्य के लेखकों के मनोबल को बढ़ाता है। इसके अतिम कवर पृष्ठ पर दी गई नरेश सक्सेना की कविता बहुत कुछ कह डालती है। देखें–

कुछ बच्चे बहुत अच्छे होते हैं
वे गेंद और गुब्बारे नहीं माँगते
मिठाई नहीं माँगते, जिद नहीं करते
और मचलते तो हैं ही नहीं
बड़ों का कहना मानते हैं
वे छोटों का भी कहना मानते हैं
इतने अच्छे होते हैं
इतने अच्छे बच्चों की तलाश में रहते हैं हम
और मिलते ही उन्हें ले आते हैं घर
अक्सर
तीस रुपए और खाने पर

इस कविता की अंतिम पंक्ति में बहुत बड़ा संकेत निहित हैं। बच्चों को जहाँ होना चाहिए वे उस वक्त बालमजदूरी के लिए विवश होते हैं और तथाकथित सभ्य समाज उनका शोषण करता है। समाजकर्ता धर्ता लोगों को बालकों की इस परवशता

को समाप्त करने की दिशा में बहुत कार्य करने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता का कुछ प्रयास करने की दिशा पर इस साक्षात्कार में प्रकाश डाला गया है। इसलिए उसके कुछ पक्षों की चर्चा मैं आवश्यक समझता हूँ।

विकास दवे : आपकी दृष्टि में आदर्श बाल साहित्य कैसा होना चाहिए? उसकी गुणवत्ता का क्या मापदंड होना चाहिए?

गिरिराज शरण अग्रवाल : साहित्य हमारी भावनाओं को समृद्ध करता है, हमारी अनुभूतियों को बल देता है। अच्छा बाल साहित्य वही है, जो बच्चों को संदेनशील बनाए। अपने आसपास की प्रकृति, पर्यावरण, पेड़–पौधों, पक्षियों और अन्य प्राणियों के प्रति संवेदना जाग्रत करने वाला साहित्य ही सच्चा और अच्छा हो सकता है। हिंसा को उकसाने वाला साहित्य भी आज भरपूर लिखा जा रहा है। बच्चों को ऐसे साहित्य से दूर रखा जाए, यह आवश्यक है।

विकास दवेः प्रायः शिकायत की जाती है कि हिंदी में अच्छे बाल साहित्य का अभाव है, आप इस विषय में क्या सोचते है?

गिरिराज शरवण अग्रवाल : यह धारणा बड़ी भ्रामक है। कितने ही सिद्ध प्रसिद्ध साहित्यकारों ने बाल साहित्य की रचना की है। वे अब ऐसा नहीं सोचते कि बाल साहित्य की रचना से उनका स्तर कम हो जाएगा। कितने ही संस्थान और प्रकाशक आकर्षक और विविध रंगी बाल साहित्य प्रकाशित कर रहे हैं। मैं यह कह सकता हूँ कि बाल साहित्य का कायाकल्प हुआ है। पुस्तक मेंलों में बच्चों को पुस्तकें खरीदते और पढ़ते देखकर आपार सुख मिलता है। इतना अवश्य है कि ऐसी रंग–बिरंगी पुस्तकों के अधिक मूल्य के कारण अभिभावक अपनी जेब टटोलने लगते हैं।

विकास दवे : आपने शोध के क्षेत्र में भी बड़ा काम किया है। क्या आप मानते हैं कि शोध और आलोचना की दृष्टि से बाल साहित्य का क्षेत्र पिछड़ा हुआ है?

गिरिराज शरण अग्रवाल : पिछले दो दशकों में बाल साहित्य पर शोध का दायरा बहुत विस्तृत हुआ है। कितने ही बाल साहित्यकारों के साहित्य, बालमनोविज्ञान और बाल साहित्य की प्रवृत्तियों पर शोध की ओर छात्रों का रूझान बढ़ा है।

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि अब तक बाल साहित्य पर दो सौ से अधिक शोधछाओं को शोध–उपाधि प्राप्त हो चुकी है और सत्तर से अधिक आलोचना–पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस साक्षात्कार की कुछ अन्य बाते भी हैं–

–बच्चे देश की भावी पीढ़ी हैं। यदि बच्चों में संस्कार, नैतिक मूल्य विकसित हों तो इससे समाज एवं देश को लाभ मिलता है।

–बच्चे इतिहास से बहुत दूर हैं।

–साहित्य समाज का प्रतिबिंब है। जब–जब समाज में परिवर्तन होता है, तब–तब साहित्य में भी परिवर्तन होता है।

–आजकल बहुत अच्छा लिखा जा रहा है। नई पीढ़ी बहुत अच्छा साहित्य सृजन कर रही है। साहित्य–सृजन भी वक्त एवं परिस्थितियों के फलस्वरूप बदलता रहता है। कुछ चीजें गले नहीं उतरती परंतु बाकी सब ठीक है।

बाल साहित्य जगत में अपनी रसमयी, भावभरी, सरल सुबोध लेखनी से अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले प्रसिद्ध बाल साहित्यकार राजा चौरसिया द्वारा लिखित दो बाल एकांकी संग्रह जिनमें से प्रत्येक में दस–दस एकांकी हैं जो पढ़ने के ही नहीं खेलने के भी लायक हैं।

मन के लड्डू, 'आचार्य भगवत दुबे' प्रकाशक रुचिर संस्कार त्रिपुरी चौक गढ़ा गवलपुर, एक महत्वपूर्ण बाल साहित्य की कृति है।

'बात पते की' कहानी का प्रकाशन उषा पब्लिकेशंस, मीना की गली अलवर से हुआ है। इसमें अनेक प्रेरणास्पद कहानियाँ है।

'बगुले की चालबाजी' वरिष्ठ बाल कहानीकार बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान' की छब्बीस प्रेरणादायी रोचक बाल कहानियाँ हैं, जिनमें मनोरंजन भी है और बहुत कुछ सीखने की बातें भी। इसका प्रकाशन बाल सेवा संस्थान सुमेर सागर, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) से हुआ है।

'प्यारी धरती' हिंदी बाल साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकारों में से एक हैं, राजेंद्र निशेश। आपकी

सरस लेखनी से उपजी चौंसठ श्रेष्ठ बाल कविताओं का संकलन जिसमें विषयों की विविधता एवं रोचकता देखते ही बनती है।

'परीलोक का भ्रमण' डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न' बाल साहित्य में एक सुपरिचित समर्थ हस्ताक्षर हैं। आपकी बाल कहानियाँ बच्चों के लिए एक नए मनोरंजन भरे कंल्पना लोक की सृष्टि करता है। इस संग्रह में उनकी इक्कीस आनंदमयी बाल कहानियाँ हैं। इसका प्रकाशन संरचना प्रकाशन प्रयागराज से हुआ है।

'तेलशोधक कारखाने और पर्यावरण' ख्यात रचनाकार संतोष सिंह द्वारा बालों एवं किशोरों के लिए लिखित इस उपन्यास में तेलशोधक कारखानों विषयक ज्ञानवर्धक जानकारी उपलब्ध है। इसका प्रकाशन साहित्य संगम प्रकाशन मथुरा से हुआ है।

सुकीर्ति भटनागर बाल साहित्य जगत की एक ऐसी सुविख्यात रचनाकार हैं, जिनकी लेखनी बाल एवं किशोर बच्चों के लिए बाल साहित्य की विविध विधाओं में अनवरत सृजन करती रहती है। सरलता, सुबोधता एवं उद्देश्यपूर्णता आपकी रचनाओं का सहज गुण है। उड़ान पब्लिकेशंस मानसा द्वारा इनके दो बाल काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं– 1. बचपन रंगरंगीला, इसमें सत्ताईस मनभावन रंगभरे गीत हैं। 2. मधुर–मधुर हँसते रहना, इसमें अट्ठाईस खिलखिलाते, गुनगुनाते एवं गुदगुदाते गीत हैं।

इसी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित दो बाल उपन्यास–'छूना है आसमान', 'हाथ की सफाई'। 'छूना है आसमान'– बालकों में नई स्फूर्ति, सकारात्मकता, उत्साह और लगन जगाने वाला उपन्यास है। 'हाथ की सफाई' –यह रोचक एवं पारिवारिक कथानक के माध्यम से चोरी का रहस्य उजागर करता है।

'पोहे वाली दीदी'– सुकीर्ति भटनागर द्वारा रचित जीवन में सकारात्मक सोच विकसित करने वाली छह रोचक एवं मार्गदर्शक कहानियाँ हैं। इसका प्रकाशन, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर से हुआ है।

'एकलव्य'– कठिन एवं विपरीत परिस्थिति में भी अपने साहस, दृढ़ इच्छाशक्ति और लगन के कारण अपने लक्ष्य को पाने वाले बच्चे के प्रेरणास्पद, बोधप्रद एवं जुझारू जीवन की रोमांचक कथानक पर बुना एक विशेष उपन्यास है।

प्रेरक बाल कहानियाँ

विख्यात बाल साहित्यकार डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' द्वारा रचित रोचक बाल कहानियाँ जिसमें मनोरंजन के साथ ही पाठकों को सत्पथ की ओर प्रेरित भी करती हैं। इसका प्रकाशन आयुष बुक्स जयपुर से हुआ है।

बालमन के रोचक गीत

बाल साहित्यकार सुशील पांडेय द्वारा बाल मन की चपलता, चंचलता, जिज्ञासा, कल्पना और सामाजिक पक्ष को व्यक्त करने वाले कुल इक्कीस बाल गीतों का संग्रह है। इसका प्रकाशन, बी. पी. पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर से हुआ है।

कलरव

यह बाल गीतों का सुंदर पिटारा है। बाल काव्य की सरस कवयित्री आशारानी जैन 'आशु' द्वारा लिखित एवं श्री अंकित प्रकाशन द्वितीय ब्लाक, उदयपुर से प्रकाशित।

बाल रचनाकार डॉ. अजीत सिंह राठौर 'लुल्ल कानपुरी' द्वारा रचित एवं बाल साहित्य संबर्धन संस्थान, कानपुर से प्रकाशित है।

'रोचक बाल कहानियाँ'– डॉ. सत्यनारायण सत्य द्वारा ग्राम्य संस्कृति को रूपायित करती चौदह रोचक बालकहानियों का संग्रह है। इसका प्रकाशन बोधि प्रकाशन, जयपुर से हुआ है।

'मेरी माटी मेरा देश'– यह सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार एवं बालबाटिका के यशस्वी संपादक डॉ. भेरूँलाल गर्ग का आत्म संस्मरण है। इसका प्रकाशन दिल्ली पुस्तक सदन, शाहदरा दिल्ली से हुआ है।

'बिहार का हिंदी बाल साहित्य'– डॉ. दिनेश प्रसाद साह द्वारा बिहार के हिंदी बाल साहित्य पर ज्ञानवर्धक शोधग्रंथ संपन्न हुआ है। यह शब्द प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है।

'गाते अक्षर खुशियों के स्वर'– प्रसिद्ध बाल रचनाकार डॉ. राकेशचक्र द्वारा रचित वर्णमाला के एक–एक अक्षर से आरंभ रोचक बाल साहित्य

कविताएँ हैं। इसका प्रकाशन ज्ञान गीता प्रकाशन, दिल्ली से हुआ है।

'डस्टबीन में पेड़'– इंजी. आशा शर्मा द्वारा रचित कंप्यूटर बाजार, फास्टफूड, जैसे आधुनिक बाल जीवन पर केंद्रित पच्चीस रोचक और भावबोध रोचक और भावबोध कराने वाली कहानियाँ हैं। इसका प्रकाशन विकास प्रकाशन, बीकनेर से हुआ है।

'मज्जू की वापिसी'– इंजी. आशा शर्मा द्वारा आज के परिवेश में हमारे आसपास उपस्थित उपेक्षित पात्रों के साथ बुनी रोचक बाल कहानियाँ हैं। इसका प्रकाशन चित्रा प्रकाशन, कोलाररोड भोपाल से हुआ है।

'गाँव चलकर आ गया'– 'रेखा लोढ़ा स्मित'– बचपन की सुकोमल मनोभूमि पर संस्कारों के रंग सजाती ग्यारह रोचक बाल कहानियाँ हैं। इसका प्रकाशन बोधि प्रकाशन, जयपुर से हुआ है।

'सूरज की सर्दी'– डॉ. मंजरी शुक्ला की मनोरंजक तत्व से भरपूर आधुनिक भावभूमि पर रचित पंद्रह मनभावन बाल कहानियों का संग्रह इसका प्रकाशन, देवभूमि विचार मंच प्रकाशन, देहरादून से हुआ है।

'परीक्षा' – अश्विनी कुमार पाठक की बाल एवं किशोर मनोविज्ञान की धरती पर मनोरंजन और प्रबोधन से भरपूर तेरह बाल कहानियाँ हैं। यह पाथेय प्रकाशन, जबलुपर से प्रकाशित है।

'दादी दो बेसन के लड्डू' – नीलम राकेश की प्रकृति से संवाद करती पच्चीस बाल कहानियों का संग्रह है। प्रकृति सदैव ही साहित्य की प्रेरक रही है। बालमन हो तो प्रकृति में और भी गहरे रमता है।

'पुस्तक मित्र' –डॉ. विनीता शहुरीकर – बालमन को समसामायिक समस्याओं के प्रति सचेत करती, समाधान खोजती, संवाद करती हुई नौ मनभाती बाल कहानियाँ हैं। संदर्भ प्रकाशन, भोपाल।

'आई ओढ़ दुशाला' –रेखा लोढ़ा 'स्मित' – बचपन की वाटिका में हजारों रंग के भाव पुष्प होते हैं, उन्हीं में से कुछ महकते हुए भावों की इक्कीस बाल कविताओं में मनोरंजक ढंग से प्रस्तुति। बोधि प्रकाशन, जयपुर।

'जादुई चश्मे' – डॉ. मंजरी शुक्ला की रस, मनोरंजन और जीवनमूल्य सहित बालमन के नटखटपन को व्यक्त करती चौदह कहानियाँ हैं। इसका प्रकाशन सूरज पाकेट बुक्स, ठाणे से हुआ है।

'सूरज की सर्दी'– यह कहानी संग्रह भी डॉ. मंजरी शुक्ला का है। इसमें बालमन के विविध रंगों की पूरी जीवंतता से रचती हुई उनके स्वभाव को उकेरती हुई प्रंद्रह बाल कहानियाँ हैं। इसका प्रकाशन देवभूमि विचार मंच, देहरादून से हुआ है।

'जुगलबंदी'– श्री प्रदीप कुमार शुक्ल और डॉ. मंजरी शुक्ला का बाल साहित्य में अनूठा प्रयोग एक ही पुस्तक में बाल कथाएँ और उन्हीं पर दूसरे लेखक की बाल कविताएँ हैं। इसका प्रकाशन रश्मि प्रकाशन, लखनऊ से हुआ है।

'मंगल ग्रह के जुगनू'– श्री प्रबोध कुमार गोविल की संपूर्ण बहुरंगी और चित्रांकित पुष्ठों पर लिखी बाल कथा है। अंजली प्रकाशन, जयपुर से इसका प्रकाशन हुआ।

'खेलें घोड़ा–घोड़ा' – डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव की सदैव सी रोचक मनोरंजक चित्रमय चौबीस बाल कविताओं का संग्रह है। इसका प्रकाशन नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास, सहारनपुर से हुआ है।

सुप्रसिद्ध बाल साहित्य लेखिका संपादक एवं शोध प्रबंध लेखिका डॉ. शकुंतला की बाल साहित्य की आधुनिक दशा दिशा पर शोधपरक सामग्री से युक्त 'हिंदी बाल साहित्य के अनन्य साधक एवं बाल साहित्य आधुनिक परिदृश्य' एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इन दोनों का प्रकाशन नमन प्रकाशन से हुआ है।

हिंदी बाल साहित्य संसार के यशस्वी रचनाकार एवं संपादक डॉ. अग्रवाल द्वारा रचित कल्पना, यथार्थ, प्रेरणा, सूचना, जिज्ञासा, पीड़ा, चिंता, मनोरंजन, संस्कार, विज्ञान एवं प्रकृति चिंतन के भावों को रोचकता से अभिव्यक्त करते इक्यावन बाल गीतों का खजाना है।

'जंगलगीत' बाल साहित्यकार सुशील पांडेय द्वारा बालमन की चपलता, चंचलता, जिज्ञासा, कल्पना और खिलंदड़ेमन को व्यक्त करते इक्कीस

बाल गीतों का संग्रह है। बी.पी. पब्लिशर्स, कानपुर से इसका प्रकाशन हुआ है।

बालकवि की सरस कवयित्री आशारानी जैन 'आशु' द्वारा लिखित एवं अंकित प्रकाशन, उदयपुर से प्रकाशित– 'कलरव' (शिशुगीतों का सुंदर पिटारा) एवं मुंजल (चौंतीस बाल कविताएँ) अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बालरचनाकार डॉ. अजीत सिंह राठौर 'लुल्लकानपुरी' द्वारा रचित एवं बाल साहित्य संवर्धन संस्थान, कानपुर द्वारा दो महत्वपूर्ण प्रकाशन हुए हैं– 1. 'किट्टू बिट्टू की शैतानी'– इसमें बाल मनोविज्ञान की धरा पर उपजी सत्ताईस बाल कविताएँ हैं। 2. 'चुलमुल चूहा'–बालमन की उड़ानों कल्पना एवं अनुभूतियों से पगी सत्ताईस बाल कविताएँ हैं।

इन सभी रचनाओं के साथ विस्तार भय से मैं यहाँ केवल रचनाओं और उनके लेखकों का उल्लेख करने जा रहा हूँ।

'रोचक बाल कहानियाँ' (डॉ. सत्यनारायणसत्य, बोधि प्रकाशन, जयपुर); 'मेरी माटी मेरा देश' (डॉ. भेरू लाल गर्ग, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली), 'गाते अक्षर खुशियों के स्वर' (डॉ. राकेश चक्र, ज्ञानगीता प्रकाशन)।

'ज्ञानवर्धक रोचक कहानियाँ' (डॉ. बानो सरताज, प्रकाशन, जयपुर)। 'सैर चाँद की' (सुकीर्ति भटनागर, प्रकाशन, जयपुर)

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. राकेशचक्र की तीन पुस्तकें– 'मनोरंजक शिशुकविताएँ' (प्रकाशन, रतनपुरा जिला मऊ); 'गाते अक्षर खुशियों के स्वर' (ज्ञान गीता प्रकाशन, दिल्ली); 'चतुराई का पुरस्कार' (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली); 'विजय बागरी' विजय द्वारा संपादित एक सौ इकतीस कविताओं का वृहद संकलन)

पद्मा चौवगाँवर का अनदेखे रंग (सुदर्शनपुरा जयपुर से प्रकाशित) इसमें पद्मा जी की चौदह रोचक और मनोवैज्ञानिक धरातल पर स्थित महत्वपूर्ण बाल कहानियाँ हैं। सरल, सुबोध, सरल भाषा और भावपूर्ण चित्रण के साथ यह कृति अत्यंत सुंदर बन पाई है। 'आरी चिड़िया' (बोधि प्रकाशन, जयपुर) पद्मा जी की यह छब्बीस मनोरम बाल कविताओं का संग्रह है। इसमें सरलता और गेयता का ऐसा मणिकांचन संयोग है कि ये कविताएँ न केवल आपका मनोरजन करेंगी अपितु आपको आसानी से कंठस्थ भी हो जाएँगी। 'जंगल में मौज मस्ती'– यह आचार्य भगवत दुबे बाल साहित्य के सुप्रसिद्ध एवं अनुभवी रचनाकार हैं, उनकी दो कृतियाँ पाथेय प्रकाशन, जबलपुर से प्रकाशित हुई हैं– 1. 'छुपन छुपाई' बालमन को लुभाने वाली उनके कंठ में बस जाने वाली और हृदय को सरसाने वाली सत्रह बाल कविताओं का यह खजाना निश्चित ही आप बच्चों को बहुत भाएगा। 2. 'कोरोना बिकराल'– कोरोना काल की कठिनाइयों से सारा विश्व परिचित है बच्चों ने भी यह दुष्काल बड़ी विपरीतता में पर धैर्य से काटा है। कोरोना विषयक वृहद दोहावली के रूप में आचार्य जी ने इन अनुभवों को अंकित किया है।

'सुगंध लुटाते फूल' (नमन प्रकाशन, लखनऊ)– संत कुमार वाजपेयी संत जी द्वारा रचित विविध– विविध विषयों पर लिखी सत्ताईस बाल कविताओं का संपूर्ण बहुरंगी बाल कविता संग्रह है। यह एक सरस एवं सुबोध्य कविताओं का गुलदस्ता है 'ज्ञानवर्धक रोचक कहानियाँ' (साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर) –डॉ. वानो सरताज की कृति है। ये हिंदी बाल साहित्य के कुशल रचनाकार हैं। सामान्य कहानियों से अलग विशेष विषयों पर ज्ञान बढ़ाने वाली सुरुचिपूर्ण उनकी पाँच कहानियाँ इस संग्रह में हैं। 'कोरोना दोहा संग्रह' (पाथेय प्रकाशन, जबलपुर)– यह प्रसिद्ध बाल साहित्यकार अश्वनीकुमार पाठक द्वारा कोरोना विषय का विशेष एवं विस्तृत समावेश कर लिखे गए दो सौ दोहों का संग्रह है। 'स्वच्छ रहे परिवेश हमारा' (अविचल प्रकाशन हल्दवानी) –यह डॉ. आर.पी. सारस्वत द्वारा रचित बाल कविता संग्रह है। इसमें चौबीस संदेशपरक स्वच्छता का महत्व रेखांकित करती एवं अन्य रोचक बाल कविताएँ हैं। 'हिमाचल का बाल साहित्य' (डायमंड पाकेट बुक्स दिल्ली)– वरिष्ठ साहित्यकार पवन शर्मा ने इस पुस्तक में पर्याप्त शोध एवं परिश्रम पूर्वक हिमाचल क्षेत्र के बयालिस ऐसे बाल साहित्यकारों का परिचय एवं उनकी प्रतिनिधि रचनाएँ संजोई हैं जिनसे शेष भारत के पाठक प्रायः अल्प परिचित हैं। बाल

साहित्य शोध एवं अध्ययनकर्ताओं के लिए यह एक महत्वपूर्ण कृति है। 'डिजाइनर घोंसला' (अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन, वालाधाट म.प्र.) प्रसिद्ध बाल साहित्यकार शिखरचंद जैन की इक्कीस कहानियों का यह संग्रह बालमन को एक नई और सार्थक दिशा देने वाला है। इसमें लेखक की कल्पना है, मनोरंजन है लेकिन वैज्ञानिक यथार्थ भी है। एक ऐसा सृजन प्रयास जो लेखक को भीड़ से परे एक सामान्य योग्य स्थान प्रदान करता है। शिक्षक की प्रथम अमेरिका यात्रा (यतींद्र साहित्य सदन भीलवाड़ा, राजस्थान) बच्चों! अपने देश के अतिरिक्त भी संसार के अन्यान्य देशों को देखने की ललक संसार में प्रायः सभी को होती है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रस्तुत यात्रा वृत्तांत एक ऐसे ही विश्वभ्रमण की आकांक्षा रखने वाले शिक्षक काशीलाल शर्मा जी की पहली अमेरिका यात्रा का विस्तृत वर्णन है। जिसे पढ़कर हमारी अनेक अमरीका विषयक जिज्ञासाओं और धारणाओं का समाधान मिलता है।

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार श्री श्याम पलट पांडेय की (विजयाबुक्स प्रकाशन, दिल्ली) गीतों की दो महत्वपूर्ण कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं जिनमें प्रत्येक रचना बालमन को लुभाने वाली, बचपन को गाने वाली विविध–रंगों भावों को अभिव्यक्ति देती हैं। ये दो कृतियाँ हैं– 'सीटी बजाता हाथी आया'; 'पंख मुझे तुम अपने दे दो'। छप्पन रोटियाँ (प्रकाशक– अनुविंद पब्लिकेशन, उदयपुर) सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार श्री तरूण कुमार दाधीच द्वारा जिज्ञासा जगाती जीवन मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ाती बाल कहानियाँ हैं।

'सुबह का भूला'(नेम प्रकाशन डेह जिलानागौर) –सशक्त बाल साहित्यकार श्री पवन पहाड़िया द्वारा सृजित बच्चों के चरित्र निर्माण में योगदान देने वाली मनोरंजक ग्यारह बाल कहानियाँ हैं। 'तुम्हें सुनाऊँ एक कहानी' (इंडिया नेट बुक्स, नोएडा) डॉ. प्रभापंत की कृति है। डॉ. पंत बाल साहित्य की जानी मानी लेखिका हैं। प्रस्तुति कृति में आपकी दस बाल कहानियाँ संगृहीत हैं। 'परी हंसावली' (प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, दिल्ली) लोककथाएँ सदा से मनुष्यों को रिझाती रही हैं। ये हमें क्षेम विशेष की बोलचाल एवं संस्कृति से परिचय करवाती हैं। इस कृति में प्रभापंत ने कुमाँयुनी लोककथाएँ प्रस्तुत की हैं। 'प्रेरक बाल कहानियाँ' (जनचेतना शिक्षण संस्थान प्रकाशन, गाजियाबाद) डॉ. राकेश चक्र बाल साहित्य जगत के सुपरिचित व स्थापित रचनाकार हैं। प्रस्तुत सग्रह में आपकी उंतालीस रोचक एवं प्रेरक बाल कहानियाँ संगृहीत हैं। 'किलकारियाँ' (राष्ट्रभारती प्रकाशन, होशंगावाद, म.प्र.) प्रसिद्ध रचनाकार श्रीराम मीना द्वारा रचित कच्ची धूप, गुलाबीधूप नामक खंडों में बच्चों एवं किशोरों के लिए सुरुचिपूर्ण बाल कविताएँ हैं। 'युवान' (विनायक, प्रकाशन, इंदौर) प्रसिद्ध कलमकार डॉ. लीला धुलधोये की विविध विषयों पर बाल संवेदनात्मक सरस प्रस्तुति है। 'आओ सब स्कूल चलें हम' (ईशिका बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा) प्रस्तुत संग्रह में चंदर कोडरिया ने अंत्यत सुरुचिपूर्ण कविताएँ संगृहीत की हैं।

बाल साहित्य पर प्रकाशित इन कृतियों में भारतीय जीवन मूल्यों के सभी पक्षों पर प्रकाश पड़ता है। ये कृतियाँ बालमल को संस्कारित करने में अपनी अहम् भूमिका निभाती हैं। लगभग सभी बाल साहित्यकारों ने अपने मानवधर्म का परिचय दिया है। इस आलेख को तैयार करने में बाल साहित्य की सबसे अधिक प्रचारित एवं पत्रिका देवपुत्र के संपादक गोपाल माहेश्वरी और मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे का सराहनीय सहयोग रहा है। मैं अपने इन दोनों अनुजों की सामग्री उपलब्ध कराने के लिए साधुवाद देता हूँ।

– 56 अशोक नगर, अधारताल, जबलपुर, मध्य प्रदेश–482004

❑❑❑

26

हिंदी भाषाविज्ञान साहित्य

डॉ. गोविंद स्वरूप गुप्त

कोरोनावायरस के कारण साल 2020 काफी उथल–पुथल वाला रहा है किंतु साहित्यकारों की नजर में कोरोना काल अद्‌भुत अकाल्पनिक और सुखद रहा है। लॉकडाउन में जनमानस बुरी तरह प्रभावित होकर इसके समाप्त होने का बेसब्री से इंतजार करता रहा है। वहीं इसके विपरीत लाकॅडाउन में साहित्यकारों ने अपने को घरों में कैद कर लिया और उनकी लेखनी की धार सामान्य दिनों से तेज हो गई। जबकि कुछ लोगों का समय बिताए नहीं बीत रहा था लेकिन साहित्यकार के पास साहित्य सृजन में समय कब बीत गया पता ही नहीं चला। उसके लिए समय फिर भी कम पड़ गया। किसी ने कोरोना काल पर व्यंग्य लिखा और किसी ने कविता। मंचीय कार्यक्रम बंद हुए तो अधिकांश कवि, साहित्यकार, लेखक आनॅलाइन कार्यक्रम से जुड़ गए। उन्हें श्रोता समाज प्राप्त हो गया। जैसे शिक्षक को पढ़ाने के लिए एक विद्‌यार्थी चाहिए वैसे ही साहित्यकार को अपनी बात कहने या सुनाने के लिए श्रोता चाहिए। साहित्यकारों का सोचना यह था कि ऐसा समय फिर नहीं आएगा। लोग घर के अंदर रहकर प्रशासन का सहयोग करें इसी में सबकी भलाई है। फुर्सत के ऐसे पल बार–बार नहीं आते। सच्चाई यह है कि कोरोनावायरस ने जिंदगी के मायने बदल दिए। साहित्यकारों ने इसे पॉजिटिव लिया। आज की भौतिकवादी भागमभाग जिंदगी में कुछ समय आराम के लिए अपने आप मिल गया बस खैरियत यही रहे कि कोरोना से सुरक्षित रहें। कोरोना ने इतना वक्त दे दिया कि कोई नॉवेल लिख रहा है, कोई कविता लिख रहा है और कोई अपना आलेख तैयार कर रहा है। लेखक की एक समस्या जरूर रही कि लेखन कार्य पूरा होने के बाद वह छपे कहाँ, कैसे? कोरोना और लॉकडाउन में पत्र–पत्रिकाएँ अधिकतर प्रकाशित नहीं हो सकीं इसलिए तमाम साहित्य लेखक के पास लिखा रखा रहा या पूरा साहित्य ऑनलाइन अथवा सोशल मीडिया के माध्यम से ही लोगों तक पहुँचा। कोरोना महामारी ने देश और समाज को साफ–सफाई से रहने, प्रदूषण से बचने तथा सात्विक खानपान अपनाने की ओर ध्यान आकर्षित किया। लोगों की जीवन चर्या बदली है। कोरोना काल ने यह बता दिया है कि पैसा ही सब कुछ नहीं है। सीमित संसाधनों में भी सुकून से जीवन जिया जा सकता है। कविता, कहानी, उपन्यास आदि के द्‌वारा कोरोनावायरस साहित्य का विषय बन रहा है। श्रमिकों की समस्या, घर लौटते मजदूरों की व्यथा, व्यंग्य और कोरोना का आपातकाल जैसी विषय वस्तु इस समय रचनाओं का खास आकर्षण रहा। यथा–

उम्मीदों का आयोजन कर
डर का वितरण किया गया।
घुट–घुट कर मरने वालों की
आशा का तर्पण किया गया।

कोरोना काल में उपजी निराशा और नकारात्मकता के दौर से समाज को निकालने के लिए सकारात्मक लेखन आशा की एक नई किरण और मानसिक ऊर्जा प्रदान करनेवाला सिद्ध हुआ। इंदौर की भाषाई एकता की साहित्यिक संस्था हिंदी परिवार द्वारा साहित्यकार प्रताप सिंह सोढ़ी और सत्यनारायण भटनागर को हिंदी सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया। 84 वर्षीय सत्यनारायण भटनागर की 19 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रताप सिंह सोढ़ी ने अपने अन्य लेखन के साथ उर्दू, पंजाबी कृतियों का हिंदी अनुवाद भी किया है। वास्तव में भाषा, भाषाविज्ञान और साहित्यिक लेखन अन्योन्याश्रित हैं, एक दूसरे के पूरक हैं। अंतः साहित्य की विविध विधाओं को भी भाषा और भाषाविज्ञान से अलग नहीं किया जा सकता और जबकि कोरोना की छाया में सब कुछ थम सा गया था उस समय साहित्य की भाषा ने भाषाविज्ञान की ही एक शाखा भाषा मनोविज्ञान का सहारा लेकर समाज को सहारा दिया। इस दिशा में लखनऊ की भी साहित्यिक कलम चलती रही। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की संपादक व साहित्यकार डॉ. अमित दुबे ने कोरोना काल में किताबों की हैट्रिक लगाई। उनके कहानी संग्रह 'धनुक के रंग' के विमोचन के साथ कोरोना काल में उनकी तीसरी कृति पाठकों के बीच में आ गई। इससे पहले काव्य संग्रह 'कुछ तो बचा है' विमोचित हुई थी। वहीं आचार्य ओम नीरव का व्यक्तित्व एवं कृतित्वः 'नीरव लोक' (संपादन) भी प्रकाशित हुआ। इसके साथ ही नया साल आते–आते उनका उपन्यास 'एकांतवासी शत्रुघ्न' भी प्रकाशित हो गया। शत्रुघ्न का चरित्र अभी तक प्रायः अछूता रहा है। मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य ग्रंथ साकेत में उर्मिला के चरित्र को उभारा है। गद्य साहित्य में भगवान राम के छोटे भाई शत्रुघ्न के चरित्र पर उपन्यास प्रस्तुत कर लेखिका ने एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। डॉ. अमिता दुबे की अब तक 30 कृतियाँ पूर्ण हुई हैं। धनुक के रंग में कोरोना काल की 11 छवियाँ प्रस्तुत हैं। कोरोना की विसंगति हमारे जीवन की संगति किस प्रकार बन सकी इसकी अभिव्यक्ति 'धनुक के रंग' कहानी संग्रह में दिखाई देती है। 'कुछ तो बचा है' रचना कोरोना काल की एक बड़ी उपलब्धि है। 600 पृष्ठों की नीरव लोक पुस्तक साहित्य जगत के लिए बहुमूल्य सिद्ध होगी। कोरोना काल में जबकि सारी दुनिया घर में बैठे अपना मनोरंजन टीवी चैनलों के विविध रंगों के कार्यक्रमों से करती रही वहीं भारत जैसे धर्म प्राण आध्यात्मिक देश में रामायण और महाभारत जैसे सांस्कृतिक सीरियल पुनः प्रसारित किए गए ताकि जनता मनोरंजन के साथ भारतीय संस्कृति और समाज के प्राण तत्व राम और कृष्ण के जीवन एवं चरित्र से सद्शिक्षा, सद्भाव, सदाचरण सत आदर्श के साथ मानव जीवन दर्शन को ग्रहण कर सके। इसी क्रम में यदि रामचरितमानस पर ध्यान केंद्रित करें तो एक प्रश्न मन को उद्वेलित करता है कि चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के चारों पुत्रों में राम और लक्ष्मण वन में अपना शौर्य दिखा रहे थे, भरत नंदीग्राम में बनवासी वेश में थे तब शत्रुघ्न क्या कर रहे थे? कोरोना लॉकडाउन में पूर्ण बंद वास्तव में हम सबका एकांतवास ही था। जब हम परिवार के साथ रहते हुए भी एकाकी होते हैं, अपने–अपने एकांत को सामूहिक रूप से जीते हैं तभी एकांत वासी शत्रुघ्न का चरित्र उपन्यास का कथानक बनकर हमारे समक्ष प्रस्तुत हो जाता है। यही इस उपन्यास की मानसिक पृष्ठभूमि है।

साल 2020 में कोरोना संक्रमण ने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया। एक ओर जहाँ कविता कहानी, कवि लेखक के रचना कर्म के साथ ही किताबों की छपाई तथा वितरण पर भी प्रभाव पड़ा वहीं दूसरी ओर इस काल को साहित्य की दृष्टि से कहीं ना कहीं लाभप्रद ही माना गया। वेबदुनिया ने अपनी विशेष रिपोर्ट में देशभर के कवि लेखकों और प्रकाशकों से चर्चा करके यह जानने की कोशिश की कि 2020 में कैसा रहा उनका रचना

कर्म और वे इस संकट को किस दृष्टि से देखते, समझते हैं। विगत वर्ष पुस्तकों के प्रकाशन तथा रचनाकारों के पढ़ने–लिखने के अभ्यास, उनके मनोबल, आस्था एवं उनकी चेतना भी प्रभावित हुई, उसे आघात पहुँचा। कवि, लेखक और भारत भवन भोपाल के प्रशासनिक अधिकारी प्रेम शंकर शुक्ला प्रकाशन हाउस और छपाई कारखानों में काम करनेवाले एक पूरे वर्ग के प्रति संवेदनशील नजर आए। छपाई बंद रही। मशीन ऑपरेटर, बाइंडर, कटिंग करनेवाले, कवर बनानेवाले, प्रूफ रीडर, कंपोजर आदि लोग बेहद प्रभावित हुए। उन सभी का रोजगार मारा गया। जो किताबें छपी वह भी बहुत देरी से छप सकीं। वितरण में भी विलंब हुआ। अधिकतर किताबें मोबाइल और किंडल पर पढ़ी गईं। ऐसे में नई किताबें पढ़ने का सुख नहीं मिला।

कोरोना काल में प्रारंभ में सन्नाटा था। उत्तरार्ध में किताबें छपी किंतु जितनी छपनी चाहिए उतनी नहीं। कोरोना काल में ऑनलाइन किताबें बिकी भी खूब और पढ़ी भी गईं। सोशल मीडिया पर भी प्रचार–प्रसार का असर दिखाई दिया। यह डिजिटल युग है। ऑडियो बुक रिलीज हुए। साहित्य जगत में लाइव सेशन सेमिनार भी बहुत हुए। कोरोना काल से ही देखा जाए तो डिजिटल इंडिया की शुरुआत हो गई। लाइव का दौर कायम है। साहित्यिक मुद्दों पर सत्र आयोजित हुए। कई नए आइडिया पर सबने काम किया। स्त्री दर्पण नामक मंच में लेखिकाओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। कई सुप्त साहित्यिक मंच भी सक्रिय हो गए। कुछ नए मंच भी बने। प्रकाशन जगत में भी लाइव गोष्ठियों का आयोजन हुआ। सोशल मीडिया पर साहित्य छाया रहा। सब अपने घरों में बंद लाइव के जरिए जुड़े हुए थे। बड़े लेखकों को लाइव सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। युवाओं को भी मंच मिला, उन्हें सुना भी गया। सारी पीढ़ियाँ लाइव में सक्रिय थीं। घरों में बंद होकर लोग लॉकडाउन में पढ़ रहे थे, लिख रहे थे या अपनी अभिरुचि के अनुसार इस आपदा को जी रहे थे। इस भयावह चुप्पी में भी फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया पर संवाद होता रहा। किताबें और लेखनी सुकून खोजने का साधन बने।

इस विकट समय में भी हिंदी पाठकों की संख्या में वृद्धि ही हुई। कई कार्यक्रम अपनी उपयोगिता को लेकर विवादास्पद भी रहे लेकिन इससे हिंदी साहित्य के परिदृश्य को जीवंतता ही प्राप्त हुई। इसके सहारे बेचैनी, असुरक्षा, भय को काफी हद तक लोग भूलते रहे। जानकीपुल, हिंदी नामा, रचयिता, स्त्री काल, समन्वय, स्पेश, स्त्री दर्पण, जन सुलभ पुस्तकालय, आलोचना, चिंतन साहित्यिक संस्था, इन दिनों मेरी किताब, पोएट्री जंक्शन, आदि कई ऑनलाइन मंचों ने अपनी निरंतर सकारात्मक भागीदारी द्वारा इस समय को रेखांकित किया और नए पाठक जोड़े।

डिजिटल प्लेटफॉर्म का महत्व कोरोना काल के पहले भी था। यह प्रिंट मीडिया से अधिक ही था किंतु कोविड–19 के प्रभाव से यह और भी प्रत्यक्ष हो गया। एक तथ्य यह भी है कि हिंदी की लगभग सभी प्रिंट पत्रिकाओं की अपनी रनिंग वेबसाइट ब्लॉग्स सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स नहीं है यह उनकी प्राथमिकताओं में नहीं रहा। इससे एक पिछड़ापन भी दिखाई देता है। भारत में अभी भी ई–बुक, ऑडियो बुक से जुड़ी तकनीकी समस्याएँ हैं लेकिन साहित्य अगर साहित्य है तो वह कहीं पर भी आए टिका और बचा रहेगा। वह लोगों तक भले ना पहुँच पाए किंतु वे लोग जो वास्तव में उस तक पहुँचना चाहते हैं अंततः पहुँच ही जाएँगे। इस परिद्श्य में स्मार्टफोन इतना ताकतवर भी नहीं है कि वह प्रिंट मीडिया के महत्व को कम कर सके। यह प्रिंट के प्रचार–प्रसार को कम भी कर सकता है और बढ़ा भी सकता है। वास्तव में इसका उपयोग सही तरीके से सीखने की आवश्यकता हे।

इसी संदर्भ में ऑस्ट्रेलिया से प्रकाशित हिंदी ई–पत्रिका भाषा ज्ञान संवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह भाषा साहित्य संस्कृति और प्रौद्योगिकी की अंतरराष्ट्रीय ई–पत्रिका है। इसके संरक्षक एवं मुख्य सलाहकार प्रोफेसर कृष्ण कुमार गोस्वामी हैं। इसकी संपादक ममता बजाज,

कार्यपालक संपादक मुदिता जौहर हैं। इस ई–पत्रिका की भूमिका वर्ष 2020 में बन गई थी किंतु कोविड–19 की वजह से इसका प्रवेशांक जनवरी–मार्च, 2021 में प्रकाशित होगा। इस ई–पत्रिका के परामर्श मंडल में प्रोफेसर सुरेंद्र गंभीर (अमरीका), प्रोफेसर हरिमोहन शर्मा (दिल्ली), प्रोफेसर अमरनाथ (पश्चिम बंगाल), डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा), प्रोफेसर जगदीश शर्मा (नई दिल्ली), संपादक मंडल में प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार सिंह (मेघालय), डॉक्टर जयशंकर बाबू (पांडिचेरी), डॉक्टर ओम प्रकाश प्रजापति (हिमाचल प्रदेश), रमा द्विवेदी (तेलंगाना), श्रीमती सेतु वारियर (ऑस्ट्रेलिया) हैं। इस प्रवेशांक में यह स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि इस ई–पत्रिका में भाषा, भाषाविज्ञान, भाषा प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी के विविध पक्षों पर चर्चा होगी। हमारा भारत ज्ञान के क्षेत्र में एक विकसित देश है। यहाँ ज्ञान और साहित्य का विशाल भंडार है। दुर्भाग्य है कि हम अपनी विरासत को भूल गए हैं। इस भारतीय ज्ञान परंपरा को जग जाहिर करने की आवश्यकता है। साथ ही साहित्य की विभिन्न विधाओं, संस्कृति के विविध पहलुओं, हिंदी भाषा के प्रसार, विकास, विशिष्टताओं एवं आयामों पर भी चर्चा होनी चाहिए, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ इस त्रैमासिक ई–पत्रिका का शुभारंभ किया गया है।

इस प्रवेषांक में राष्ट्र, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीयता और राष्ट्रभाषा : हिंदी के विशेष संदर्भ में विषयक प्रोफेसर कृष्ण कुमार गोस्वामी का लेख प्रकाशित है। इस लेख में देश, राष्ट्र और इसका पर्याय माने जानेवाले अंग्रेजी शब्द नेशन के मौलिक अंतर पर प्रकाश डाला गया है। सारे संसार में जापान, ईरान, पोलैंड, रोमानिया आदि एक जातीय राष्ट्र हैं। कनाडा बेल्जियम आदि द्विजातीय राष्ट्र तथा भारत, ब्रिटेन, अमरीका, चीन, फ्रांस, जर्मनी आदि बहुजातीय राष्ट्र हैं। हर जाति की अपनी भाषा, समाज संस्कृति और साहित्य होता है। जिससे राष्ट्रीय संस्कृति का विकास होता है। राष्ट्र शब्द में तीन तत्व समाविष्ट हैं– भूमि या भूखंड, उसमें निवास करनेवाला मानव समुदाय और उस मानव समुदाय की संस्कृति। अपनी जन्मभूमि के प्रति अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति भी राष्ट्र की भावना को जन्म देती है। राष्ट्रवाद को कुछ विद्वान किसी समुदाय विशेष की आस्था मानते हैं जिसमें अपने समुदाय के इतिहास परंपरा संस्कृति, धर्म, भाषा और जातीयता की समानता के आधार पर अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने की भावना निहित रहती है। समय–समय पर अनेक प्रकार के राष्ट्रवाद का विकास हुआ जैसे यूरोप में ईसाई राष्ट्रवाद, सऊदी अरब, इराक, ईरान, पाकिस्तान आदि मुस्लिम देशों में इस्लामी राष्ट्रवाद, इजराइल में यहूदी राष्ट्रवाद। यह एक प्रकार से राष्ट्रवादी अराजकता थी। 21वीं सदी में बहुधर्मी, बहुभाषी और बहुजातीय भारत में यह हिंदू राष्ट्रवाद के रूप में आया। अंततः राष्ट्रवाद से अभिप्राय अपनी धर्म संस्कृति परंपरा की विशेषताओं की स्थापना से है। राष्ट्रीयता में एकता, प्रेम, सद्भाव, राष्ट्र प्रेम और संगठन की भावना प्रबल होती है। किसी भी राष्ट्र में जब कोई भाषा जीवंत, स्वायत्त, मानक, उन्नत और समृद्ध होकर समूचे राष्ट्र में संपर्क भाषा का कार्य करने लगती है तो वह राष्ट्रभाषा बन जाती है।

इसी ई–पत्रिका में डॉक्टर कमल किशोर गोयनका का लेख 'गांधी की पत्रकारिता का भारतीय मॉडल' प्रकाशित है। डॉ. अमरनाथ का लेख 'हिंदी जाति का संगीत और सिनेमा', डॉक्टर एम एल गुप्ता 'आदित्य' का लेख 'अध्यात्म व संस्कृति के लिए भाषाओं को बचाना होगा', शिखा पांडे का लेख 'अनुवाद में सांस्कृतिक मोड़', डॉ. रमा द्विवेदी का 'गीत गणित नहीं लग पाया है', डॉक्टर अनिल कुमार द्विवेदी की समीक्षा 'पोखीला अपहरण के 81 दिन' प्रकाशित हैं। इस त्रैमासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख यूनिकोड फोंट में ही bhashagyan 2020@gmail.com पर भेजने का निर्देश है। लेख 12 फोंट साइज में दिया जाना चाहिए। भाषा ज्ञान संवाद ई–पत्रिका का उद्देश्य हिंदी का विकास और प्रचार–प्रसार करना है।

प्रोफेसर कृष्ण कुमार गोस्वामी द्वारा अनूदित पुस्तक 'पासा पलट गया' सुविख्यात अंग्रेजी नाटककार जॉर्ज बर्नार्ड शा के नाटक एप्पल कार्ट का हिंदी रूपांतर विकल्प प्रकाशन से 2020 में प्रकाशित हुआ इसके अतिरिक्त 4 अन्य लेख भी

2020 में प्रकाशित हुए– 1. 'न्यायपालिका और हिंदी : अवरोध और चुनौतियाँ' विधि भारती के जनवरी–मार्च अंक 2020 में प्रकाशित हुआ। 2. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'भाषा चिंतन सांकल्य' जुलाई–सितंबर 2020 अंक में प्रकाशित हुआ, 3. भारतीय भाषाओं के प्रबल समर्थक पंडित दीनदयाल उपाध्याय 'पान्चजन्य' सितंबर, 2020 अंक में और 4. 'हिंदी के भाषिक और भौगोलिक संदर्भ' (संपादक घनश्याम शर्मा 2020), पुस्तक में पेरिस फ्रांस में पढ़े गए शोध पत्र संकलित हैं,

क – शिक्षा में माध्यम की भाषा मातृभाषा
ख – अन्य भाषा शिक्षण और विदेशों में हिंदी
ग – कम्प्यूटरीकृत भाषाविज्ञान और उसके अनुप्रयोग।

किताब घर, नई दिल्ली से 2020 में 7 किताबें हिंदी भाषाविज्ञान विषयक प्रकाशित हुईं– भोलानाथ तिवारी की पुस्तक 'भाषाविज्ञान प्रवेश एवं हिंदी भाषा', 'भाषाविज्ञान प्रवेश', रामविलास शर्मा की पुस्तक 'भाषा साहित्य और जातीयता', हीरालाल बछोटिया की तीन पुस्तकें– 'हिंदी भाषा प्रकृति, प्रयोग और शिक्षण', 'राजभाषा हिंदी और उसका विकास' तथा 'भाषा विमर्श', पुष्पिता अवस्थी की पुस्तक– 'भारतवंशी : भाषा एवं संस्कृति' प्रकाशित हुईं।

वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा संजय सिंह बघेल की पुस्तक 'हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास', रामप्रसाद किचलू की पुस्तक 'हिंदी संक्षिप्त लेखन', बैजनाथ सिंहल की पुस्तक 'शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि', भोलानाथ तिवारी की 'हिंदी भाषा की संरचना', कृपाशंकर सिंह और चतुर्भुज सहाय की पुस्तक 'आधुनिक भाषाविज्ञान', डॉ. राजमणि शर्मा की पुस्तक 'आधुनिक भाषाविज्ञान', भोलानाथ तिवारी की पुस्तक हिंदी भाषा का इतिहास, उमेश चंद्र शुक्ल की पुस्तक 'हिंदी व्याकरण', कामता प्रसाद गुरु की पुस्तक 'संक्षिप्त हिंदी व्याकरण' तथा 'हिंदी व्याकरण' दंगल झाल्टे की पुस्तक 'प्रयोजन मूलक हिंदी सिद्धांत और प्रयोग', विनोद गोदरे की पुस्तक 'प्रयोजनमूलक हिंदी', डॉक्टर एच परमेश्वरन की पुस्तक 'भारती व्याकरण प्रदीपिका', डॉ मधु धवन की दो पुस्तकें 'भाषांतरण कला' एवं 'परिचय' तथा 'विज्ञापन कला', राजकुमार की पुस्तक 'भाषा आद्यंत प्रविधि', डॉ. पूर्णिमा आर की पुस्तक 'विज्ञापन और हिंदी' प्रकाशित हुई। भाषाविज्ञान विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय की पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर श्रीमती उषा सिन्हा के लेख– 1. हिंदी के प्रतिष्ठापन के प्रति सजग भाषा चिंतक डॉ. राजेंद्र प्रसाद, 2. साहित्य की ज्योति शिखा प्रोफ़ेसर डॉ रमासिंह विषयक लेख अपरिहार्य पत्रिका में प्रकाशित हुए, 3. सुरभि समग्र पत्रिका के अक्तूबर 2020 के अंक में विपरीत परिस्थितियों के बढ़ते मानसिक दबाव के बीच साहित्यकारों का दायित्व व देश, 4. सुरभि समग्र की ही नवंबर 2020 के अंक में वैश्विक बाजारवाद में उभरती भाषाई चुनौतियाँ और हिंदी विषयक लेख प्रकाशित हुए। लखनऊ विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान विभाग की वर्तमान अध्यक्ष प्रोफेसर कविता रस्तोगी द्वारा निर्मित राजी – हिंदी शब्दकोश का प्रकाशन बिशन सिंह, महेंद्र पाल सिंह देहरादून (इंडिया) द्वारा 2020 में हुआ। कोविड–19 से प्रभावित परिस्थितियों के चलते भी अनेक प्रकाशक पुरानी पुस्तकों का नया संस्करण ही किसी प्रकार प्रकाशित कर पाए।

सृजन व संवाद में डूबा साहित्योत्सव 2020 आयोजन अपनी गुणवत्ता के कारण स्मरणीय रहेगा। साहित्य अकादमी का सालाना जलसा साहित्योत्सव अपनी सृजनात्मकता के लिए महत्वपूर्ण रहा। पूरे सप्ताह विचार, सम्मान, संस्मरण, सृजन, अनुवाद और ज्ञान वर्धन के सत्र आयोजित होते रहे। भारत में प्रकाशन की स्थिति पर आयोजित परिचर्चा के उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत के अध्यक्ष गोविंद प्रसाद शर्मा ने कहा कि पुस्तकों को आम जीवन से जोड़ने की चुनौती आज प्रमुख है। साहित्यिक पुस्तकों की घटती बिक्री भी चिंता का विषय है। विद्यालय स्तर पर बच्चों में साहित्य पढ़ने की रुचि विकसित करनी चाहिए। साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने कहा कि साहित्य अकादमी प्रतिवर्ष लगभग 200 नई पुस्तकों का प्रकाशन करती है। 300 पुस्तकों का पुनर्मुद्रण करती है। इस साहित्योत्सव में देशभर के नामी–गिरामी साहित्यकार, बच्चे एवं युवा लेखकों को भी अवसर दिया गया। बच्चों के लिए विभिन्न

साहित्यिक गतिविधियाँ आयोजित हुईं जिसमें कविता कहानी, लेखन प्रतियोगिता, चित्रकला, बाल कहानियाँ सुनाने जैसे कई आयोजन किए गए। भारतीय भाषाओं के अनुवाद को अधिक प्रकाशित करने पर बल दिया गया। यह चिंता भी व्यक्त की गई कि सोशल मीडिया के प्रति लोगों की बढ़ती रुचि के कारण लेखकों, कवियों ने दूसरों की रचनाएँ पढ़ना बंद कर दिया है साहित्योत्सव में नई फसल शीर्षक से अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मेलन भी आयोजित हुए। इसका उद्घाटन प्रख्यात कन्नड लेखक सिद्धलिंगिया ने किया। अनुवाद कला, सांस्कृतिक दायित्व तथा मीडिया और साहित्य, सूचना एवं संवेदना शीर्षक से दो चर्चाएँ आयोजित की गई। विद्वानों ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वही अनुवाद लंबे समय तक जीवित रहता है जो देश की भाषाई विविधता को अपने में समेटेगा। अनुवाद की प्राचीन परंपरा के कारण ही भारत आज एक राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए है। अनुवाद के लिए अंग्रेजी पर निर्भरता की बजाय भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद पर जोर दिया गया। साहित्य अकादमी द्वारा अनुवाद पर अवधेश कुमार सिंह के संपादन में प्रकाशित महत्वपूर्ण पुस्तक हिंदी अनुवाद विमर्श दो खंडों का विमोचन भी किया गया। इसी क्रम में सुकृता पाल कुमार की अध्यक्षता में गुजराती के आलोक गुप्ता, उर्दू के जानकी प्रसाद शर्मा, ओड़िया की प्रवासिनी महाकुड, हिंदी की रेखा सेठी ने अपनी–अपनी भाषाओं में अनुवाद के समय सांस्कृतिक विविधता के कारण आनेवाली कठिनाइयों की भी चर्चा की। सुकृता पाल कुमार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि वर्तमान में अनुवादों का चयन बाजार के दबाव में हो रहा है। यह स्वाभाविक प्रक्रिया नहीं है। अनुवाद की पूरी प्रक्रिया रस्सी पर संतुलन के समान है। अनुवाद में जरा सी चूक हो जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

कोरोना काल के चलते यू–टयूब शिक्षण प्रशिक्षण का अधिक प्रचार हुआ। इस कारण पुस्तक प्रकाशन के स्थान पर यू–टयूब से शिक्षण कोर्स तैयार करना अधिक व्यावहारिक रूप ले रहा है। हिंदी भाषा का उद्भव और विकास विषयक यू–टयूब कोर्स तैयार किया गया जिसमें भाषा की उत्पत्ति, भाषा के विविध रूप, भाषा परिवर्तन, भारतीय भाषा परिवारों आदि का सम्यक् विवेचन विश्लेषण करते हुए हिंदी भाषा के स्वरूप क्षेत्र और महत्व का यथा तथ्य विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह यू–टयूब कोर्स जेएनयू के डॉ. गंगा सहाय मीना ने तैयार किया। इससे 1903 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

साहित्य अकादमी के तत्वावधान में 31 दिसंबर, 2020 में उत्तर पूर्व एवं उत्तरी लेखक सम्मेलन का आयोजन हुआ। महामारी के बीच वेबिनार शृंखला में देश–विदेश के लोग जुड़े। माननीय उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू द्वारा भारतीय साहित्य की 10 महान कृतियों के चीनी तथा रूसी भाषा में अनुवाद की घोषणा महत्वपूर्ण कार्य योजना रही। उपराष्ट्रपति की यह घोषणा पूरी भी हुई। 2 दिसंबर, 2020 को उपराष्ट्रपति ने कहा कि अनुवाद से देश की विरासत विदेशों तक पहुँचेगी। साहित्य अकादमी की तरफ से वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत मैथिली भाषा में नारी चेतना कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वर्तमान में अमेजॉन डॉट इन पर हिंदी भाषाविज्ञान की कई किताबें आनॅलाइन हैं। कुछ पुरानी किताबों का नया संस्करण और कुछ नई किताबें प्रदर्शित हैं। नीरज पब्लिकेशन की 'एमएचडी–7 भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा' इग्नू पाठ्यक्रम पर आधारित है। डॉक्टर त्रिलोकी नाथ श्रीवास्तव की पुस्तक 'भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा' पेपर बैक में उपलब्ध है। सत्य काम वर्मा द्वारा अनूदित पुस्तक 'सैद्धांतिक भाषाविज्ञान इंट्रोडक्शन टू थ्योरेटिकल लिंग्विस्टिक्स' का हिंदी अनुवाद है। रघुवंश मणि पाठक की पुस्तक 'भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा तथा लिपि' प्रकाशित है। श्यामसुंदर दास की पुस्तक 'भाषाविज्ञान नया संस्करण' प्रकाशित है। डॉक्टर हरदेव बाहरी की पुस्तक 'हिंदी भाषा नया संस्करण' और कपिल देव द्विवेदी की पुस्तक 'भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र का नया संस्करण' प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त डॉक्टर विवेक शंकर की पुस्तक 'आधुनिक भाषाविज्ञान' राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी से प्रकाशित है। जगदीश चंद्र शास्त्री की पुस्तक 'हिंदी भाषाविज्ञान

एवं प्रयोग', शंभू प्रताप की पुस्तक 'भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा' प्रकाशित है। देवेंद्र नाथ शर्मा की पुस्तक 'भाषाविज्ञान की भूमिका' (नया संस्करण), साहित्य सरोवर एक्सपर्ट्स के द्वारा संपादित पुस्तक 'भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा का विकास, आचार्य किशोरी दास बाजपेई का 'भारतीय भाषाविज्ञान' (नया संस्करण), रमाशंकर पांडे की पुस्तक 'हिंदी भाषा शिक्षण और सामाजिक विज्ञान शिक्षण', सुभाष राठोर की पुस्तक 'हिंदी साहित्य तथा भाषाविज्ञान', कमल देव शर्मा की पुस्तक 'हिंदी भाषा और शिक्षण शास्त्र', डॉ. माया दुबे की पुस्तक 'शैली विज्ञान' और मुक्तिबोध की 'भाषा शैली', अस्मि प्रकाशन भोपाल से प्रकाशित है। डॉक्टर विनम्र सेन सिंह की पुस्तक 'भाषाविज्ञान तथा हिंदी भाषा', मुकेश अग्रवाल की पुस्तक 'भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा', महेंद्र नाथ दुबे की पुस्तक 'भाषा, भाषाविज्ञान और राजभाषा हिंदी', शुंभवदा पांडे की पुस्तक 'भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा के बढ़ते कदम', डॉक्टर गंगा साई प्रेमी की पुस्तक 'भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा', राम छबीला त्रिपाठी की पुस्तक 'भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा' डॉ. शीला मिश्रा की पुस्तक 'भाषाविज्ञान के सामान्य सिद्धांत एवं हिंदी भाषा का इतिहास', डॉ. केशव दत्त रुवाली की पुस्तक 'आधुनिक भाषाविज्ञान' आदि पुस्तकें प्रकाशित एवं विक्रय हेतु उपलब्ध हैं।

मार्च 2020 से कोरोना महामारी के खौफ के चलते जिंदगी भले ही सहमी रही हो पर रचना धर्मियों की कलम नहीं ठहरी। इस कार्य को और अधिक गंभीरता प्रदान की, प्रयागराज की हिंदुस्तानी अकादमी ने। अकादमी की तरफ से कुल 8 पुस्तकों का प्रकाशन कोरोना काल में हुआ। इसके साथ ही दो त्रैमासिक विशेषांक भी निकाले गए। हिंदुस्तानी अकादमी की प्रकाशन अधिकारी ज्योतिर्मयी श्रीवास्तव के अनुसार अप्रैल से नवंबर 2020 के बीच पुस्तकों का संपादन और प्रकाशन चलता रहा। डॉ. अर्चना पांडे की पुस्तक 'रक्षा अनुसंधान विकास क्षेत्रों में वैज्ञानिक लेखन', कबीर साहेब (उर्दू से हिंदी अनुवाद), 'हिंदुवी साहित्य का इतिहास', डॉक्टर उदय प्रताप सिंह की पुस्तक 'पर्यावरण और परिस्थितिकी', 'संस्कृति और समाज', 'विमर्श के आयाम', श्याम नारायण पांडे की पुस्तक 'भारतीय गौरव के उद्गाता अवधी' पहेली कोश का प्रकाशन किया गया, पाली पर लिखी गई डॉक्टर आनंद मंगल बाजपेई की पुस्तक 'मिलिंद प्रश्न विमर्श', डॉ अजय मालवीय की पुस्तक 'उर्दू में राम कथा', डॉक्टर आद्या प्रसाद सिंह की पुस्तक 'लोकगीत रामायण' तथा लक्ष्मी शंकर गुप्ता की पुस्तक 'सतसैया एवं ब्रजभाषा' विशेष उल्लेखनीय हैं। प्रयागराज के झूंसी में प्रभु राम पर लिखी गई कविता विदेशों तक पहुँच गई। अमरीका में 'राम काव्य पीयूष' संग्रह में यह रचना शामिल है।

अकादमी की तरफ से लोकनायक श्रीराम पर दो विशेषांक के प्रकाशन की योजना थी। पहला अंक आ चुका है दूसरा मुद्रण में है। पहले विशेषांक की सराहना उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी कर चुके हैं। अपने संदेश में उन्होंने लिखा है भारतीय संस्कृति के उन्नयन में रामराज्य शासन प्रणाली महत्वपूर्ण है। केंद्र व राज्य की वर्तमान सरकार रामराज्य की अवधारणा अंगीकार करते हुए सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास मंत्र पर कार्य कर रही है। वास्तव में भाषा, साहित्य और संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं। साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान और व्याकरण जैसा तकनीकी पक्ष तथा भाषाविज्ञान के अध्ययन में साहित्य का ललित पक्ष सदैव सहायक सिद्ध होता है।

— फ्लैट नं.—212, ब्लॉक—आई सिलवर लाइन अपार्टमेंट (बी.बी.डी.), फैजाबाद रोड, लखनऊ—226028

❑❑❑

27

हिंदी विज्ञान साहित्य

डॉ. शिवगोपाल मिश्र/डॉ. बलराम यादव

हिंदी में विज्ञान लेखन की दृष्टि से वर्ष 2020 'वैश्विक महामारी–कोविड–19' (कोरोना वाइरस) के कारण काफी उथल–पुथल वाला रहा। इस वैश्विक महामारी का प्रभाव विश्व की आर्थिक गतिविधियों से लेकर ज्ञान–विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास व विस्तार पर भी पड़ा।

वर्ष 2020 में प्रवर्तित 'नई शिक्षा नीति' में विज्ञान व तकनीकी शिक्षा व कौशल विकास पर अर्थात् विग डाटा, मशीन लर्निंग और आर्टीफिसियल इंटेलीजेंस को बढ़ावा देने पर जोर दिया जा रहा है।

हम सभी जानते हैं कि जिस स्तर पर विगत दो दशकों से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया गया, उससे जलवायु परिवर्तन, बढ़ता प्रदूषण और घटते संसाधन से हमारे सामने वैश्विक चुनौती आ खड़ी हुई है। शायद इसी का दुष्परिणाम है "वैश्विक महामारी कोविड–19 (कोरोना वाइरस)। इस समस्या से निपटने हेतु हमें भोजन, पानी, शुद्ध वायु, स्वच्छता एवं ऊर्जा के स्थायी विकल्प खोजने होंगे। इसमें हमें रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, कृषि विज्ञानों, जलवायु विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रों में नए–नए नवाचारी वैज्ञानिक, कुशल कारीगर व कामगारों की जरूरत होगी जिसकी पूर्ति हेतु नई शिक्षा नीति 2020 लाई गई।

पिछले दो दशकों में नए व पुराने विज्ञान लेखकों, विज्ञान संचारकों एवं वैज्ञानिकों ने हिंदी में स्वास्थ्य, अंतरिक्ष, पर्यावरण, ऊर्जा, वैज्ञानिकों की जीवनी एवं बाल विज्ञान साहित्य पर लेखनी चलाई थी, वह वर्ष 2020 में काफी धीमी रही। हाँ, पत्रिकाओं का प्रकाशन विगत वर्षों की भाँति होता रहा है और उनमें भी काफी वैज्ञानिक पत्रिकाएँ ऑनलाइन (इंटरनेट) पर ही उपलब्ध हो पाईं, हार्ड कापी के रूप में कम ही पत्रिकाएँ प्रकाश में आईं।

इस अवधि में 'विज्ञान परिषद् प्रयाग' अपनी मासिक पत्रिका 'विज्ञान' का प्रकाशन करता रहा है, हाँ यह भी त्रैमासिक, द्वैमासिक व मासिक के रूप में निकलती रहीं। कुछ सेमिनार, वैज्ञानिक गोष्ठियाँ व पुरस्कार वितरण भी होते रहे और ये विज्ञान लेखन के महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। कुछ वैज्ञानिकों व विज्ञान लेखकों की क्षति भी हुई है।

'वार्षिकी 2020' हेतु हम विज्ञान सर्वेक्षण को निम्नांकित खंडों में बाँट कर प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं–

प्रकाशित पुस्तकें–

पुस्तकें मानव विकास की झाँकी प्रस्तुत करती हैं। वे भविष्य व नवीन ज्ञान की ओर संकेत भी करती हैं। इक्कीसवीं सदी में आमलोगों का जीवन स्तर सुधरा, किंतु लोगों में पुस्तकें पढ़ने की रुचि कम हुई क्योंकि दृश्य व श्रव्य को एक साथ

प्रस्तुत करने वाले साधन इलेक्ट्रानिक मीडिया का विस्तार (जैसे–मोबाइल, इंटरनेट, ईमेल, यू–ट्यूब, ट्विटर, ईंस्ट्राग्राम आदि, पर काफी अध्ययन सामग्री दृश्य व श्रव्य रूप में उपलब्ध है जिसकी प्रामाणिकता में संदेह है। प्रामाणिकता के लिए पुस्तकों का अध्ययन आवश्यक होता है। इसलिए पुस्तकों का महत्व कम नहीं होता है। वैश्विक महामारी कोविड–19 के प्रसार से भले ही सब कार्य ठप हुए किंतु लोगों ने लिखना बंद नहीं किया। वर्ष 2020 में कुछ ही पुस्तकें प्रकाश में आईं।

1. 'दर्द : सिर से पाँव तक' लेखिका– डॉ. शांति चौधरी, प्रकाशक–विभा प्रकाशन, प्रयागराज–211031

प्राणी मात्र को दर्द की अनुभूति होती है जिसकी प्रतिक्रिया से यह असामान्य व्यवहार करने लगता है। प्रायः दर्द का कारण होता है अप्राकृतिक जीवन और व्यसन। प्रकृति से ज्यों मनुष्य दूर होता जा रहा है नई–नई व्याधियाँ उसे ग्रसित करती जा रही हैं इस मशीनी युग में यांत्रिक साधनों का अत्यधिक उपयोग व उपभोग मानव को प्रायः निष्क्रिय कर रहा है। निष्क्रियता शारीरिक, मानसिक पीड़ा का कारक बनती है।

आनंद के लिए तरसता प्राणी जब दर्द से कराहता है तो सहृदय व्यक्ति के अंदर सहज ही संवेदना संचरित हो जाती है। मानवीय प्रकृति है कि अपने का पर–पीड़न से विलगति हो पशु–पक्षी, जीव–जंतु को वह तड़पता देखना नहीं चाहता है। दर्द की असहाय अवस्था आदमी को रोमांचित कर देती है।

प्रस्तुत पुस्तक में दर्द के कुल 20 बिंदुओं को लिया गया है यथा–दर्द से जुड़े विभिन्न पहलू, क्यों होता है सिरदर्द, आँखों में दर्द का कारण एलर्जी, कान दर्द का कारण हो सकता है वैक्स, नाक में दर्द के विभिन्न कारण, दाँत दर्द, ट्रॉन्सिलाइटिस के कारण गले में दर्द, आखिर क्यों होता है छाती में दर्द, दिल में दर्द का कारण हृदय रोग.... और अंत में जोड़ों का दर्द आम पेरशानी मुख्य है।

मानव अंगों से जुड़ी पीड़ा के कितने संभावित कारण हो सकते हैं, उनके संबंध में सम्यक जानकारी इस पुस्तक में देने का प्रयास किया गया है। वर्तमान में दर्द के तंत्रीय और मानसिक दोनों पक्षों को शोधकार्यों से प्रकाश में लाया जा चुका है। इसके विभिन्न पहलुओं पर विचार करके 'मल्टी डिसिप्लिनरी पेन क्लिनिक' की स्थापना की गई है। दर्द तात्कालिक हो या दीर्घकालिक, इसका प्रारंभिक अवस्था में ही निदान होना आवश्यक है। पुस्तक पठनीय है।

2. 'विज्ञान की नई दिशाएँ' – डॉ. दीपक कोहली, प्रकाशक–रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण–2020, पृष्ठ 272

विज्ञान लेखक डॉ. दीपक कोहली द्वारा लिखित पुस्तक– 'विज्ञान की नई दिशाएँ' में विज्ञान, तकनीक व पर्यावरण संबंधी नवीनतम जानकारियाँ सरल, सुबोध एवं रोचक भाषा शैली में प्रस्तुत की गई हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न पक्षों पर केंद्रित महत्वपूर्ण विषयों पर यह पुस्तक सारगर्भित जानकारी देती है। पर्यावरण, ऊर्जा, बायोमेट्रिक्स, बायोनिक्स वायोप्लास्टिक्स, नैनोटेक्नोलॉजी, उपग्रह, ओजोन क्षरण, अपशिष्ट प्रबंधन सहित विभिन्न महत्वपूर्ण वनस्पतियों एवं पेड़–पौधों से संबंधित सामग्री इस पुस्तक में समाहित है।

3. 'एकेडमिक एडवेंचरिज्म ऑफ इन्नोवेटर'

लेखक–विज्ञान रत्न लक्ष्मण प्रसाद, प्रकाशक–डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम, एजूकेशन फाउंडेशन, अलीगढ़, प्रथम संस्करण–2020, पृ. 232

सुप्रसिद्ध नवाचारी एवं भारत में नवाचार आंदोलन के पुरोधा विज्ञानरत्न श्री लक्ष्मण प्रसाद जी के नवाचार विषयक आलेखों, व्याख्यानों, की संपादित प्रस्तुति है यह पुस्तक 'एकेडमिक एडवेंचरिज्म ऑफ क्रिएटिव आइडियाज इन्नोवेटिव आइडियाज फॉर डेवलपमेंट ऑफ टेक्नोलॉजी, इन्नोवेशन इन मैन्यूफैक्चरिंग फॉर ग्लोबल कॉम्पीटीटिवनेस, क्रियेटिविटी एंड इन्नोवेटिव आइडियाज, आइडिया ऑफ कॉम्पटीटिवनेस पीपुल, इन्नोवेशन सोसाइटी एंड डेवलप्ड इंडिया, इन्नोवेशंस द गेटवे टू इकॉनामिक डेवलपमेंट एंड सोशल ग्रोथ, रोल ऑफ टेक्नोलॉजी इन सोशल वर्क, सेल ऑफ सब्सिडी इन प्रमोटिंग सेल्फ इम्प्लायमेंट, इम्प्रूविंग क्वालिटी एंड प्रोडक्टिविटी थ्रू इन्नोवेशंस,

क्रिएटिविटी एंड इन्नोवेशन, बैंकिंग ऑफ इन्नोवेशन मूवमेंट 2010–2020 : एडिकेड ऑफ इन्नोवेशन, सोशल वर्क एजूकेशन एंड प्रेक्टिस, बैंक ऑफ आइडियाज एंड इन्नोवेशन, इन इन्नोवेटिव स्कूल ऑफ इंडिया, वोकेशनल रिहेबिलिओन ऑफ द ब्लाइंड इन इंडिया। अंत में 21वें अध्याय में डॉ. कलाम के संस्मरण का उल्लेख है। परिशिष्ट के अंतर्गत लेखक के द्वारा लिखी गई पुस्तकों, प्राप्त सम्मानों/पुरस्कारों आदि का विवरण दिया गया है।

इक्कीसवीं शताब्दी वास्तव में ज्ञान–विज्ञान की शताब्दी है। प्रतिदिन नवाचारों द्वारा नए–नए उत्पादों का जन्म होता है जो हमारे जीवन को सरल एवं सहज बनाने में सहायक होते हैं। लेखक का मानना है कि यदि बचपन से हम अपने विद्यार्थियों में वैज्ञानिक मनोवृत्ति विकसित करने का प्रयास करें तो अवश्य ही हमारे बच्चे अच्छे वैज्ञानिक, आविष्कारक एवं नवाचारी बनने में सफल होगें।

4. 'विज्ञान संचार और संचारक'

लेखक– मनीष मोहन गोरे, प्रकाशक– निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एन.वी.टी.) भारत, नई दिल्ली।

विज्ञान संचार या विज्ञान लोकप्रियकरण दरअसल लोगों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सूचना देने के अलावा उसके दृष्टिकोण को तर्कसंगत बनाने में सहायक होता है। वर्तमान युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है। सुबह उठने से लेकर रात सोने तक हमारे जीवन के प्रत्येक क्रिया कलापों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रयोग देखने को मिलता है।

प्रस्तुत पुस्तक विज्ञान संचार के मायने, उद्देश्यों और लक्ष्यों पर प्रकाश डालती है। साथ ही पुस्तक विज्ञान संचार की पृष्ठभूमि, वर्तमान स्थल, भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार के प्रयासों को रेखांकित करती है। पुस्तक में विज्ञान संचार की अवधारणा, विज्ञान नीतियों, भारत में विज्ञान संचार के अतीत और प्रमुख विज्ञान संचारकों के साथ बातचीत संबंधी विश्लेषण के आधार पर भविष्य की संभावना हेतु एक रोडमैप तैयार करने का प्रयास किया गया है।

निस्संदेह वर्तमान समय में संचार को प्रभावी एवं व्यापक बनाने में विज्ञान प्रौद्योगिकी सूचना और नवाचार की भूमिका को हम नकार नहीं सकते। देश के सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय विकास के लिए संचार आज एक महत्वपूर्ण उपादान बन गया है। शिक्षा, अनुसंधान, कृषि, पर्यावरण, स्वास्थ्य जैसे राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय महत्व के उद्देश्यों को पूरा करने की कल्पना किए बगैर असरदार संचार माध्यमों से पूरी नहीं की जा सकती है। युवाओं, महिलाओं, उद्यमियों, किसानों, जन–जातियों आदि जैसे समाज के सभी समुदायों को मुख्य धारा से जोड़ने और विकास प्रक्रिया का हिस्सा बनाने में भी संचार एक सबल माध्यम का कार्य करता है।

विज्ञान लेखक डॉ. मनीष मोहन गोरे ने बड़ी ही गहनता से विषय–वस्तु को प्रस्तुत किया है। विज्ञान पत्रकारिता और विज्ञान संचार के मुख्य अंतर को परिभाषित करते हुए विज्ञान संचार के विभिन्न माध्यमों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। भारतीय विज्ञान संचार के विभिन्न विशेष पड़ावों पर एक विहंगम दृष्टि डाली गई है। देश के प्रमुख विज्ञान संचारकों के वार्तालापों को समावेशित करने से पुस्तक की उपादेयता में वृद्धि हुई।

5. 'प्रो. (डॉ.) रामलखन सिंह (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)'

संकलन–शुकदेव प्रसाद, सह–संकलन– प्रो. (डॉ.) एस.एम.सिंह, प्रकाशक– श्री साई नाथ परास्नातक होम्योपैथी संस्थान, इलाहाबाद, पृ. 532

वन्य और वन्य जीवन विशेषज्ञ के रूप में डॉ. रामलखन सिंह प्रख्यात हैं। उन्होंने अपने लेखन की शुरुआत एक विज्ञान गल्पकार के रूप में की थी। आरंभ में उन्होंने विज्ञान कथाएँ लिखीं। इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'विज्ञान' मासिक में 6 विज्ञान कथाएँ प्रकाशित हैं– 'काले गोरे', 'धमकी', 'शहीद' (1965), 'सत्यम सुंदरम्', 'वैज्ञानिक की सनक' (1966) और 'मौत एक पेड़ की' (1970)।

1969 में भारतीय वन सेवा में जब उनका चयन हो गया तब उनके लेखन की दिशा परिवर्तित

हो गई और वे वन्य जीवन पर तत्कालिक पत्र–पत्रिकाओं में लिखने लगे। लेकिन उनकी लेखनी में उनका 'कलाकार' का मन यत्र–तत्र–सर्वत्र विद्यमान है। डॉ. रामलखन सिंह की वन्य जीवन पर चार प्रसिद्ध पुस्तकें प्रकाशित हैं– दो हिंदी और दो अंग्रेजी में। हिंदी में आपकी कृतियाँ–'दुधवा के बाघों का आनुवंशिक प्रदूषण'। इस पुस्तक की सारी कहानी तारा नामक बाघिन के इर्द–गिर्द घूमती है।

प्रस्तुत पुस्तक को 6 बिंदुओं "दुधवा राष्ट्रीय उद्यान (वन, वन्यजीव और वनवासी), दुधवा के बाघों का आनुवंशिक प्रदूषण, मुक्तिदान (कहानी संग्रह), मेरी विज्ञान कथाएँ, समाहार, संप्रति एवं परिशिष्ट में विभाजित किया गया है।"

प्रथम बिंदु 'दुधवा राष्ट्रीय उद्यान' को 10 भागों जैसे– दुधवा राष्ट्रीय उद्यान, सुहेली की बाघिन, दुधवा जोगी, सलूकापुर का बाघ, भारतीय गैंडे का विजन अभियान, दुधवा की पड़ोसी बाघिन, दुधवा के थारु, कटना की बाघिन, दुधवा का दीमक परिवार, दुधवा का पक्षी विहार आदि में विभाजित किया गया है। द्वितीय बिंदु 'दुधवा के बाघों का आनुवंशिक प्रदूषण' के अंदर "दुधवा का जंगल, दुधवा के वन्य जीव, दुधवा के आतंक की पहली झलक, दुधवा के लोग, दुधवा के मेंहमान, दुधवा में मानव भक्षण का दौर, आतंक की गूँज दिल्ली तक, दुधवा में खुशी का दौर, मानव भक्षण का नया दौर, मानव भक्षी बाघिन से साक्षात्कार, तारा मर कर जिंदा हो उठी। तारा प्रकरण के बाद, संलग्नक आदि मुख्य हैं।"

तीसरे बिंदु के अंतर्गत कहानी संग्रह 'मुक्तिदान' में 13 कहानियाँ हैं– जैसे उसका बेटा, मुक्तिदान, ठहराव, बर्फ कब पिघलेगी, मोरा दर्द न जाने कोय... कालापानी आदि मुख्य कहानियाँ हैं।

डॉ. रामलखन सिंह का कहना है कि दुधवा के वन्य जीवों की देखभाल में मैंने अपने जीवन के आठ वर्ष बिताए। इसी अवधि में लखीमपुर खीरी जिले के इस वन क्षेत्र को राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया और शताब्दी से भी पहले गंगा–जमुना के मैदान से विलुप्त हो गई एक सींग वाली गैंडा प्रजाति को ब्रह्मपुत्र (असाम) एवं राप्ती–नाराणी (नेपाल) की घाटियों से लाकर पुनर्वासित करने की जोखिम भरी योजना लागू की गई थी।

दुधवा राष्ट्रीय उद्यान लगभग पाँच सौ वर्ग किमी. वन क्षेत्र में उगे साल वन, मीलों लंबे घास के मैदान और विशालकाय तालाबों में प्राकृतिक रूप से रह रहे बाघ, तेंदुआ, हिरण, भालू, मगरमच्छ, ऊदविलाव और पक्षी परिवारों के अतिरिक्त इसकी सीमाओं में बसी थारू जनजाति के सुख–दुख में साथ–साथ बीते आठ वर्षों के खट्टे–मीठे अनुभवों को विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं और आकाशवाणी–दूरदर्शन के माध्यमों से व्यक्त किया गया है।

पुस्तक की छपाई आकर्षक एवं रंगीन चित्रों के साथ–साथ पठनीय एवं संग्रहणीय है।

6. 'मेंरी जीवन यात्रा–दर्शनानंद'

प्रकाशक–साहित्य संगम, गांधी मार्ग, प्रयागराज –211001, संस्करण–2020, पृ. 217.

प्रस्तुत पुस्तक आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) के एक सत्यनिष्ठ, निष्पक्ष देश के स्वाधीनता संग्राम योद्धा के पुत्र दर्शनानंद की आत्मकथा है। पुस्तक में लेखक ने अपने बचपन से लेकर लगभग 80 वर्षों की जीवन यात्रा का सत्यनिष्ठ विवरण दिया है।

पुस्तक को कुल 64 बिंदुओं में बाँटा गया है– जैसे परिवार परिचय, जन्म, स्कूली शिक्षा, एम. एस–सी (कृषि) के बाद राजकीय कृषि उद्यान विभाग में सेवा आरंभ कानपुर–लखनऊ से शुरू किए फलशोध केंद्र बस्ती, मेंरठ, इलाहाबाद....होते हुए 1988 में सेवा निवृत्ति तक का वर्णन रोचक शैली में किया गया है।

आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का विवरण भी दिया गया है– जैसे 'अंगूर उत्पादन', 'ऑवला और उसकी बागवानी', 'अमरूद की बागवानी' (1988), 'फलों की बागवानी' (2011), 'सब्जी की खेती' (1992), 'आलू की खेती' (1992), 'रंग–बिरंगे फल' (1953)... आदि पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपके अनेक लेख फलों से संबंधित पत्र–पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए हैं आपको अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं जिसका विवरण यथास्थान पुस्तक में दिया गया है। पुस्तक में रंगीन चित्र भी रखे गए हैं। पुस्तक पठनीय है।

7. 'विज्ञान से समाज तक'

संपादक– डॉ. शिवगोपाल मिश्र एवं डॉ. (श्रीमती) मुनीरा एम.हुसैन, प्रकाशक–विज्ञान परिषद् प्रयाग (इंदौर 'मध्य प्रदेश' शाखा)। पृष्ठ–79

प्रस्तुत पुस्तक 'विज्ञान, समाज और स्वास्थ्य' में मुख्य रूप से (जीवन शैली) मानव के जीवन जीने के तरीके का वर्णन है। यह एक संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए निबंधों का संकलन है। लेखिका का कहना है कि "इस शब्द का उपयोग मूलरूप से 1929 में ऑस्ट्रियाई मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड एडलर ने किया था। वर्तमान में जीवन शैली का तात्पर्य व्यापक अर्थ में स्वयं से संबंधित व्यवहार का एक ऐसा सेट है जिसके भीतर व्यवहार और आदतों, चीजों को करने के पारंपरिक तरीकों और तर्कपूर्ण कार्यों का मिश्रण है।"

पुस्तक अनेक बिंदुओ में बाँटकर लिखी गई है यथा– विज्ञान, समाज और स्वास्थ्य, एक अवलोकन, वस्त्र उद्योग में सस्टेनेवल उत्पादों का प्रचलन, मिणिमालेस्ट डिजाइन प्राप्त करने में एगोनॉमिक्स का महत्व, नवीनतम प्रौद्योगिकी और परिधान उद्योग, इकोफ्रेंडली वस्त्रों का पर्यावरण पर प्रभाव, डिजिटल युग में आहार विशेषज्ञ, मृदा प्रदूषण पर पौधों का पादपोचार प्रभाव, आर्गेनिक फर्नीचर : शारीरिक कष्ट–गर्दन, कमर दर्द का स्थायी समाधान, जल की गुणवत्ता का ज्ञान आवश्यक.....आदि मुख्य विषय हैं। पुस्तक के सभी लेख ज्ञानवर्धक हैं, पठनीय हैं।

बाल विज्ञान

बाल विज्ञान लेखन की विषयवस्तु बच्चों की रुचि को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा, छोटे वाक्यों एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत सामग्री ही बच्चों को ग्राह्य होती है। विज्ञान जैसे विषय को यदि बच्चों के लिए लिखना है तो बहुत ही सावधानी के साथ भाषा का प्रयोग वांछनीय होता है। वर्ष 2020 में दो पुस्तकें बच्चों के लिए प्रकाश में आईं।

1. 'विमानन के सौ वर्ष'–

लेखक–शुकदेव प्रसाद, प्रकाशक–निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली। पृष्ठ–60.

इतिहास में कुछ तारीख खास होती हैं। 17 दिसंबर, 1903 भी उड़ान के इतिहास की ऐसी ही खास तारीख है जब राइट बंधुओं ने हवाई जहाज में बैठकर वायु में उड़ान भरी थी। राइट बंधु (विल्वर और ओरबिल) अमरीका के डेटन, ओहियों प्रांत के निवासी थे और साइकिल की मरम्मत का कार्य करते थे। सन् 1896 से ही ये ग्लाइडर बना रहे थे और उड़ा रहे थे। आटो लिलियंथल के प्रयोगों की इन्हें पूरी जानकारी थी। इस कार्य को राइट बंधुओं ने आगे बढ़ाया और 1899 में ग्लाइडर को यांत्रिक विधि से संतुलित करने का तरीका खोज निकाला। राइट बंधुओं ने उत्तरी कैरोलिना में किटीहाल नामक स्थान चुना। 14 दिसंबर, 1903 को उन्होंने किटीहाल के मैदान में अपना ग्लाइडर उड़ाने की योजना बनाई और 17 दिसंबर, 1903 को ग्लाइडर हवा में 10 फीट की ऊचाँई तक जाकर नीचे आया, फिर दुबारा ऊपर उठा और उड़कर 120 फीट जाकर नीचे उतरा। यह उड़ान मात्र 12 सेकेंड की थी, पर थी असली हवाई उड़ान।

प्रस्तुत पुस्तक में सात अध्याय हैं– युगो पुराना सपना, गुब्बारों की सैर, गुब्बारों से जोखिम भरी उड़ाने, हवाई जहाजों के पुरखे, राइट बंधुओं ने साकार किया सपना, अटलांटिक के आर–पार, विमानन आज तक।

पुस्तक की भाषा सरल, सुबोध है। रंगीन रेखाचित्रों से पुस्तक को सजाया गया है।

2. 'रोबोट की शादी'

लेखक–चंद्र प्रकाश पटसारिया, प्रकाशक–प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार। पृ. 53

रोबोट की शादी में 11 विज्ञान कथाएँ संगृहीत हैं। हिंदी कहानियों में तो अतिप्राचीन काल से ही परी कथा, तिलिस्मी कथा, प्रेम कथा, जासूसी कथा पर लेखन होता रहा है, इसके बाद सामाजिक कथाओं व मनोवैज्ञानिक कथाओं व कहानियों का दौर आया। जिन कथाओं व कहानियों का जैसा नाम होता है उन कथाओं में उन्ही प्रसंगों ओर पात्रों का वर्णन होता है। जैसे परी कथा में आकाश से परियाँ आती जाती हैं। तिलिस्मि कथा में चमत्कारी महल, बगीचे आदि में आश्चर्यजनक जादुई कारनामें रहते हैं। इसी प्रकार विज्ञान कथाओं में वैज्ञानिक

सूझ–बूझ से प्रकृति के गूढ़ रहस्यों के उद्घाटन का मनोरंजक लेखन होता है। विज्ञान कथाओं में भविष्य की कल्पना और भावी संसार का कल्पना शक्ति से किया गया चित्रांकन कभी भी साकार स्वरूप में आने की संभावना रहती है।

काँच वाला डॉक्टर, ओम जीनोम सेंटर, फैक्ट्री बंद हो गई, रोबोट की शादी, बीमार शहर, सिलिकोसिस, नया जीवन, कैंसर का रहस्य, मिलावट का धंधा, विज्ञान देवता का अभिशाप, कंप्यूटर घड़ी की करामात इस संग्रह में हैं।

पुस्तक की भाषा, लेखन शैली सरल है, वाक्य विन्यास छोटे–छोटे हैं तथा सामासिक पदों का बहुत कम उपयोग किया गया है।

3. लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाएँ

पत्रिकाओं व समाचारपत्रों के विषय में कहा जाता है कि "विज्ञापन रूपी पौष्टिक तत्व ही पत्रिकाओं को जीवित बनाए रखता है किंतु विज्ञान पत्रिकाओं के साथ ऐसा नहीं हो पाता। विज्ञान पत्रिकाएँ मुख्य रूप से स्वयं के संसाधनों व सरकारी अनुदानों पर ही जीवित रहती हैं। अनुदान बंद हुआ कि धड़ाम से गिरी।" ऐसा अनेक विज्ञान पत्रिकाओं के साथ हुआ, कुछ समय प्रकाशित हुईं, अनुदान बंद हुआ, प्रकाशन भी बंद। वैज्ञानिक पत्रिकाओं को विज्ञापन तो मिलता नहीं।

कुछ ऐसा ही हुआ विगत वर्ष कोविड–19 जैसी वैश्विक महामारी के कारण वैज्ञानिक पत्रिकाओं के प्रकाशन व प्रसारण में रूकावट आई–चाहे वे आर्थिक कारण से हो या सरकारी अनुदान के बंद होने से। किंतु विज्ञान परिषद् प्रयाग द्वारा निकलने वाली मासिक पत्रिका 'विज्ञान' का प्रकाशन होता रहा– भले ही द्वैमासिक व त्रैमासिक के रूप में विज्ञान निकली। इसी तरह आविष्कार पत्रिका का भी प्रकाशन होता रहा।

हिंदी में जो विज्ञान पत्रिकाएँ विगत वर्ष 2018–19 में प्रकाशित होती रहीं, उनमें अधिकांश वर्ष 2020 में या तो आर्थिक संकट के कारण बंद हो गईं या फिर उन्होंने प्रिंट के बजाय सीधे इंटरनेट, वेब पर प्रकाशित करना प्रारंभ कर दिया। इनमें इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए आंचलिक पत्रकार, विज्ञान कथा, ड्रीम–2047 आदि मुख्य हैं।

इधर आयुर्वेद महासम्मेलन, ग्लोबल ग्रीन, शैक्षिक, संदर्भ, चकमक, पर्यावरण डाइजेस्ट, नेहा, ड्रीम–2047, भगीरथ, जलचेतना, विज्ञान परिचर्चा, विज्ञान गंगा जैसी महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ वर्ष 2020 में देखने को नहीं मिली, हाँ आविष्कार व विज्ञान प्रगति के कुछ अंक मिले, इससे ऐसा लगा कि ये विज्ञान की पत्रिकाएँ प्रकाशित तो हो रही हैं किंतु नियमितता का अभाव इनमें भी दृष्टिगोचर हुआ।

वार्षिक वैज्ञानिक पत्रिका–जिज्ञासा, अंक–18, वर्ष, 2020

संपादक–शशि सिंह, प्रकाशक–सी एस आई आर–कोशिकीय एवं आणविक जीवनविज्ञान केंद्र (सी सी एम बी) हैदराबाद– 500007

जिज्ञासा का यह अंक जलवायु परिवर्तन से हमारे ग्रह पर होने वाले प्रभावों की ओर संकेत करता और आने वाली चुनौती का सामना करने में आम जन को सबल बनाना है क्योंकि जलवायु परिवर्तन वैश्विक समाज के समक्ष सबसे प्रबल और सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है। इससे निपटना होगा। जलवायु में हो रहे परिवर्तन से यदि मानव अभी भी सचेत नहीं हुआ तो आगे आने वाले समय में इसके भयंकर परिणाम देखने को मिलेंगे।

इस अंक में, जलवायु परिवर्तन : एक पुनर्विलोकन, ऊर्जा संसाधनों एवं भू दृश्य में बदलाव : जलवायु परिवर्तन : जलवायु परिवर्तन पर नियंत्रण के प्रमुख विकल्प, जीवन शैली पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव, जलवायु परिवर्तन का वन्य जीवन पर प्रभाव, वैश्विक परिवर्तन के तहत जंगलों का भाग्य, सागर में जीवन की गहरी डुबकी, परिस्थितिकी तंत्र सेवाएँ : परागण और जैव विविधता, प्रदूषण एवं जलवायु परिवर्तन, ग्रह पर जीवन का भविष्य, कृष्रिा एवं जलवायु परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन : कोरोना और मानसिक स्वास्थ्य आदि मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है।

4. सेमिनार / गोष्ठियाँ / व्याख्यान

वर्ष 2020 में विज्ञान लेखन से इतर विज्ञान संबंधी कुछ गतिविधियाँ निम्नवत् रही।

1. भारतीय विज्ञान कांग्रेस

भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 107 वर्ष के इतिहास में पहली बार किसान विज्ञान कांग्रेस का

आयोजन किया गया। इस दौरान किसानों के नवाचार और उनकी वैज्ञानिक प्रमाणिकता के महत्व को रेखांकित किया गया। किसान विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन करते हुए कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के महानिदेशक डॉ. विलोचन महापात्रा ने कहा कि "भारतीय विज्ञान कांग्रेस के इतिहास में पहली बार किसान केंद्रित कार्यक्रम के आयोजन से किसान समुदाय को बहुत प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने बताया कि उत्पादन और पोषण सुरक्षा सहित 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने का उद्देश्य निधारित किया गया है, जो प्रधानमंत्री के विजन के अनुरूप है। यह ऐसा मंच है जहाँ किसानों के नवाचारों को बल मिलेगा। उन्होंने स्कूली छात्रों का आवाहन किया कि वे किसान विज्ञान कांग्रेस में शिरकता करें ताकि कृषि के प्रति दिलचस्पी स्कूल स्तर से ही पैदा की जा सके। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने एकीकृत कृषि के लिए 56 मॉडल विकसित किए हैं जिन्हें ग्रामीण विकास कार्यक्रमों से जोड़कर नाबार्ड प्रोत्साहित करेगा।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अंग के रूप में किसान विज्ञान कांग्रेस का आयोजन बेंगलुरू के कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय में किया गया। इस कांग्रेस में देश के लगभग 120 नवाचारी किसान सम्मिलित हुए। इस दौरान किसानों की आय दोगुना करने, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, किसान सशक्तिकरण, कृषि पर दबाव, ग्रामीण जैव उद्योगमिता पर केंद्रित व्याख्यान भी हुए।

2. विज्ञान परिषद् प्रयाग की मध्य प्रदेश–इंदौर में 'विज्ञान से समाज तक' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी, 2020 के अवसर पर विज्ञान परिषद् प्रयाग की मध्य प्रदेश शाखा, इंदौर द्वारा 'विज्ञान से समाज तक' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मध्य प्रदेश के अनेक पॉलीटेक्निक एवं पारंपरिक महाविद्यालयों के 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि परिषद् के जोधपुर शाखा के प्रधानमंत्री एवं पर्यावरणविद डॉ. डी.डी. ओझा ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस वर्ष 2020 की थीम 'विज्ञान के पथ पर महिलाएँ' विषय पर अपने उद्बोधन में अनेक महिला वैज्ञानिकों द्वारा किए गए महत्वपूर्ण अन्वेषणों पर चर्चा की।

3. डॉ. स्नेहलता निगम स्मृति व्याख्यान

विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में 13 मार्च, 2020 को आयोजित डॉ. स्नेहलता निगम स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत सी एम पी डिग्री कॉलेज प्रयागराज में रसायन शास्त्र विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अर्चना पांडेय ने 'तन और मन का रसायन विज्ञान' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। इन्होंने बताया कि मनुष्य द्वारा व्यक्त की जाने वाली विभिन्न भावनाओं के लिए उसके मस्तिष्क से निकलने वाले रसायन जिम्मेदार होते हैं। प्रसन्नता, हर्ष, दुख, विषाद, करुणा, दया, क्रोध आदि भावनाओं के लिए अलग–अलग रसायन जैसे डोपामीन सेरोटोनिन मेलाटोनिन आदि की कमी/अधिकता के कारण ये अवसाद–विषाद उत्पन्न होते हैं। संगीत का आनंद लेने के लिए भी ये रसायन ही प्रेरित करते हैं।

4. प्रो. डी. के. राय स्मृति व्याख्यान

विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में 5 मार्च, 2020 को काशी हिंदू विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग में प्रो. डी.के.राय स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत 'लेजर इंड्यूस्ड ब्रेकडाउन स्पेक्ट्रोस्कोपी अप्लीकेशन टू फूड साइन्सेज' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान में मिसीसिपी स्टेट विश्वविद्यालय अमरीका के प्रो. जे. पी. सिंह ने बताया कि जब लेजर की किरणें संगृहित रूप में किसी पदार्थ (ठोस, द्रव व गैस) के ऊपर पड़ती हैं तो पदार्थ के तल से प्रकाश उत्सर्जित होता है, यदि इस उत्सर्जित प्रकाश को किसी मोनीक्रमेंटर से अलग–अलग करके देखें तो यह उस पदार्थ की संरचना (कैरेक्टरिस्टिक) के बारे में बता सकता है। इस तरह हम जान सकते हैं कि इस पदार्थ में क्या–क्या है। पदार्थ की शुद्धता का भी पता लगा सकते हैं। इस प्रयोग में सिर्फ एक लेजर मोनोक्रोमेंटर

और डिटेक्टर की आवश्यकता होती है। यह सेटअप भारत द्वारा चंद्रमा पर भेजे गए चंद्रयान में विक्रम रोवर में लगाया गया था और 2021 में अमरीकन द्वारा मंगल ग्रह पर भेजे जाने वाले यान में भी लगाया जाएगा।

5. अलीगढ़ शाखा में नवाचार दिवस

देश की तरक्की और विकास के लिए विज्ञान का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। इसलिए विद्यार्थियों को नवाचार के जरिए नए आर्विष्कारों की ओर ध्यान देना चाहिए। मिसाइल मैन के नाम से जाना जाने वाले देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम के जन्मदिन 15 अक्तूबर को नवाचार दिवस के रूप में मनाया गया।

6. डॉ. कलाम स्मृति व्याख्यान संपन्न

विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में 15 अक्तूबर, 2020 को आयोजित डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम स्मृति व्याख्यान के अंतर्गत कंप्यूटर सेंटर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व निदेशक प्रो. के.के.भूटानी द्वारा 'कंप्यूटर प्रौद्योगिकी का बदलता स्वरूप' विषय पर व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विज्ञान परिषद् के सभापति डॉ. दीनानाथ तिवारी ने की है।

प्रो. भूटानी ने अपने व्याख्यान के आरंभ में डॉ. कलाम के जीवन के विभिन्न आयामों की चर्चा करते हुए उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कंप्यूटर तकनीक के बदलते स्वरूप के बारे में विस्तार से बताते हुए एनालॉग कंप्यूटर, डिजिटल कंप्यूटर, हाइब्रिड कंप्यूटर से लेकर क्लाउड कंप्यूटर, क्वांटम कंप्यूटर, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और विजडम मशीन की चर्चा की।

उन्होंने कहा कि "कंप्यूटर तकनीक द्वारा भविष्य में मानव जीवन की गुणवत्ता में अनेक सुधार आएँगे। विजडम मशीन द्वारा मनुष्य की तरह सोचने के प्रयास भविष्य में सफल होने की आशा है।"

7. प्रो. हीरालाल निगम स्मृति व्याख्यान

विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में 5 नवंबर, 2020 को आयोजित प्रो. हीरालाल निगम स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के रसायन विज्ञान विभाग के डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर डॉ. लल्लन मिश्र द्वारा 'रसायन विज्ञान में कुछ नए शोध' विषय पर व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विज्ञान परिषद् प्रयाग के उपसभापति प्रो. कृष्ण बिहारी पांडेय ने की।

प्रो. लल्लन मिश्र ने अपने व्याख्यान के आरंभ में प्रो. हीरालाल निगम को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके द्वारा किए गए शोधकार्यों के बारे में बताया। उन्होंने सुप्रामालिक्यूल्स के निर्माण की नवीन तकनीकों की चर्चा की। चिकित्सा, कृषि, लॉजिक नेट आदि क्षेत्रों में नए–नए प्रयोगों की चर्चा करते हुए डॉ. मिश्र ने अनेक सुप्रामालिक्यूल्स की जानकारी दी।

8. डॉ. रत्नकुमारी स्मृति व्याख्यान

डॉ. रत्नकुमारी स्मृति व्याख्यान के अंतर्गत 10 दिसंबर, 2020 को 'मधुमेहिका' पत्रिका की संपादक डॉ. शांति चौधरी ने 'महिला सशक्तिकरण' विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. अर्चना पांडेय ने अध्यक्षता की।

डॉ. चौधरी ने अपने व्याख्यान में कहा कि नारी सृजन की मूर्ति और सद्गुणों का भंडार है। वह शक्ति स्वरूपा, अनुशासनप्रिय और सहनशील होती है। महिलाओं द्वारा किए जा रहे लिज्जत पापड़ तथा अन्य कुटीर उद्यमों का उदाहरण देते हुए उन्होंने महिलाओं को समाज में उचित स्थान देने पर बल दिया।

9. स्वामी हरिशरणानंद स्मृति व्याख्यान

विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में 21 दिसंबर, 2020 को आयोजित स्वामी हरिशरणानंद स्मृति व्याख्यान के अंतर्गत प्रयागराज के वरिष्ठ आयुर्वेदाचार्य डॉ. शालिग्राम गुप्त ने वैज्ञानिक ऋषि महर्षि भारद्वाज विषय पर व्याख्यान दिया। समारोह की अध्यक्षता श्री रामनरेश तिवारी पिंडीवासा ने की।

अपने व्याख्यान में डॉ. गुप्त ने बोलते हुए कहा कि 'महर्षि भारद्वाज की जन्म और कर्मभूमि प्रयाग थी। उन्होंने इंद्र से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया था और उसका प्रसार किया। वे विमान

शास्त्र के प्रणेता थे, वे मंत्रदृष्टा ऋषि थे। वेदों में 800 से अधिक मंत्र उनके हैं। उन्होंने प्रयाग में द्वादश माधवों की स्थापना की और उनके गुरुकुल में दस हजार विद्यार्थी थे। वाल्मीकि रामायण में उनके लिए 19 विशेषणों का प्रयोग हुआ है। वे सनातन संस्कृति में विस्तार करने वाले ऋषि थे, भगवान राम ने भी उनसे ज्ञान और मार्गदर्शन प्राप्त किया था।

5. वैज्ञानिक सम्मान / पुरस्कार

1. श्री ललित किशोर पांडेय विज्ञान लेखन पुरस्कार–2020

विज्ञान परिषद् प्रयाग द्वारा वर्ष 2020 का श्री ललित किशोर पांडेय विज्ञान लेखन पुरस्कार डॉ. सचींद्र शुक्ला (नोयडा) को उनकी पुस्तक 'गुरुत्वाकर्षण' के लिए प्रदान किया गया।

2. मोहम्मद खलील विज्ञान पुरस्कार

विज्ञान परिषद् प्रयाग द्वारा उर्दू में विज्ञान लेखकों को दिया जाने वाला मोहम्मद खलील विज्ञान पुरस्कार– 2020 प्रो. शमसुल इस्लाम फारूकी, नई दिल्ली व श्री हल्कानी अलकाशमी, नई दिल्ली को प्रदान किया गया।

3. रसायन, भौतिकी और चिकित्सा क्षेत्र का नोबल पुरस्कार–2020

विज्ञान के समाचारों एवं अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियों में रुचि रखने वाले लोगों की नजर नोबल पुरस्कारों की सूची पर रहती है। नोबल पुरस्कार से उन लोगों को उस कार्य के लिए सम्मानित किया जाता है जो मानवीय हित में अपूर्व, अद्वितीय और उत्कृष्ट कार्य करते रहते हैं। यह पुरस्कार अल्फ्रेड नोबेल के नाम पर स्थापित है। विज्ञान के क्षेत्र में यह रसायन, भौतिकी और चिकित्सा संबंधी कार्यों के लिए दिया जाता है। गणित के लिए यह पुरस्कार नहीं दिया जाता।

रसायन का नोबल

रसायन के लिए यह पुरस्कार जीव रसायनज्ञ जेनिफर ए.डाउडना और फ्रांस की सूक्ष्मजीवन विज्ञानी इम्मैन्युअल शार्पेची को समवेत रूप से दिया गया है। इन दोनों महिला वैज्ञानिकों ने 'जीन एडिटिंग की विधि' के लिए महत्पूर्ण उपकरण 'सी आर आई एस पी आर–सी.ए.ए.9' को विकसित किया है जिसे 'जेनेटिक सीजर्स' का नाम दिया गया है। इसके पूर्व अब तक केवल पाँच महिलाएँ ही यह पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं जिनमें मैडम क्यूरी भी शामिल हैं।

यद्यपि जीन एडिटिंग वैश्विक स्तर पर वैज्ञानिकों के बीच नैतिक और मानवीय पहलू को लेकर एक विवाद का विषय है किंतु दोनों महिला विज्ञानियों को 'सी आर आइ एस पी आर' तकनीक को आसानी से प्रयुक्त होने वाले उपकरणों में बदलने के लिए यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके कार्य एवं प्रयोग से शोधकर्ता जानवरों, पौधों और सूक्ष्मजीवों के डी एम ए को अत्यंत उच्च परिशुद्धता के साथ परिवर्तित कर सकते हैं।

भौतिकी का नोबल

वर्ष 2020 के लिए इस पुरस्कार हेतु रहस्यात्मक श्याम विवर (ब्लैक होल) का रहस्य खोलने वाले तीन वैज्ञानिकों– रोजर पेनरोज, रेनहार्ड जेनजेल और एंड्रिया गेज को चुना गया है। रॉयल स्वीडिश एकेडमी ने इसकी घोषणा करते हुए बताया कि पुरस्कार की आधी राशि पेनरोस को शेष आधी राशि को रेनहार्ड और एंड्रिया गेज में समान रूप से वितरित की जाएगी।

वैज्ञानिक रोजर पेनरोज ने ब्लैक होल पर कार्य किया जिसके अनुसार ब्लैक होल का निर्माण सापेक्षता के सामान्य सिद्धांत का पुष्ट अनुमान है। एंडिया गेज ने बताया कि "आकाश गंगा में स्थिति तारों की कक्षाओं का नियंत्रण एक संघनित अति भार वाली वस्तु करती है।"

शरीर क्रिया विज्ञान

वर्ष 2020 का शरीर का क्रिया विज्ञान का नोबल पुरस्कार तीन वैज्ञानिकों–हार्वे जे आल्टर, माइक्रेन हॉटन और चार्ल्स एम. राइस को समवेत रूप से हेपेटाइटिस सी.के.वाइरस की खोज के लिए घोषित किया गया

6. वैज्ञानिक क्षति / निधन

वर्ष 2020 वैश्विक महामारी के कारण विश्व में मानव पर संकट खड़ा है, हमारे वैज्ञानिक इस 'कोविड–19' से निपटने हेतु जी जान से जुटे हुए

हैं। ऐसे में कुछ वैज्ञानिक व विज्ञान संचारक इसकी चपेट में आकर ठीक हुए तो कुछ को जान से भी हाथ धोना पड़ा।

1. 'पद्म भूषण कांजीवरम श्री रंगाचारी शेषाद्रि'

भारत के गणितीय आकाश के ही नहीं अपितु बीजीय ज्यामिति के अंतरराष्ट्रीय क्षितिज के एक देदीप्यमान नक्षत्र और शेषाद्रि अचर के प्रतिष्ठित प्रो. कांजीवरम श्रीरंगाचारी शेषाद्रि ने 17 जुलाई, 2020 को अपने जीवन की अंतिम साँस ली।

स्वातंत्र्योत्तर भारत के गणितीय इतिहास में जिन महान गणितज्ञों का नाम शीर्ष पर लिया जाएगा उनमें प्रोफेसर शेषाद्रि का नाम अग्रणीय है। उनके कार्यों की श्रेष्ठता को देखते हुए भारत सरकार द्वारा वर्ष 2009 में उन्हें 'पद्म भूषण' सम्मान प्रदान किया गया था।

वे बीजीय ज्यामिति के क्षेत्र में विश्वस्तरीय उपलब्धियों के लिए विख्यात हैं। गणित के इस क्षेत्र में उनके द्वारा स्थापित एक अचर का नाम उनके सम्मान में, उन्हीं के नाम पर शेषाद्रि अचर रखा गया। इसके अतिरिक्त उनकी महान उपलब्धियों में नरसिम्हन शेषाद्रि प्रमेय तथा मानक एक पदी सिद्धांत उल्लेखनीय है।

भारत सरकार द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य के लिए प्रदान किया जाने वाला "शांति स्वरूप भटनागर, पुरस्कार से भी आप सम्मानित हैं। प्रो. शेषाद्रि का जन्म चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) के कांचीपुरम् में 29 फरवरी, 1932 को एक एडवोकेट परिवार में हुआ था। शेषाद्रि जी की उच्चशिक्षा का आरंभ सेंट जोसेफ स्कूल चिल्गलपेट से आरंभ कर, मुंबई विश्वविद्यालय से प्रो.के.एस.चंद्रशेखरन के मार्गदर्शन में 1959 में पीएचडी की उपाधि प्राप्ति है।"

शेषाद्रि जी 1963 ई. में टी. आई. एफ. आर. में एक शोधछात्र के रूप में आए और यहाँ उन्नति करते हुए वरिष्ठ प्रोफेसर हो गए। टी.आई.एफ. आर. को गणित का एक विश्वस्तरीय संस्थान बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। वर्ष 1984 में ये वरिष्ठ प्रोफेसर के रूप में इंस्टिट्यूट ऑफ मैथेमैटिकल साइंसेज, चेन्नई चले गए जहाँ वे 1989 तक रहे। इस वर्ष 1989 में उन्हें एक नया दायित्व मिला। इस वर्ष उन्होंने एक नए गणितीय संस्थान सी.एम.आई. (चेन्नई मैथमैटिकल इंस्टिट्यूट) की स्थापना करते हुए उसके डायरेक्टर पद को संभाला।

जीवन के अंतिम दस वर्षों में वे प्रायः अस्वस्थ रहते थे। स्वास्थ्य विकृतियों से प्रभावित उनकी हृदय गति अवरोध के कारण 17 जुलाई, 2020 को मृत्यु हो गई।

2. 'डॉ. श्रवण कुमार तिवारी'

विज्ञान परिषद् प्रयाग की काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी शाखा के संयोजक एवं वरिष्ठ विज्ञान लेखक डॉ. श्रवण कुमार तिवारी का 4 दिसंबर, 2020 को ग्वालियर में निधन हो गया। वे 88 वर्ष के थे।

श्री तिवारी ने प्रो. नंदलाल सिंह के निर्देशन में पीएचडी की थी और काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी सेल में सहायक निदेशक के पद पर कार्यरत रहते हुए अवकाश प्राप्त किया था। आपकी हिंदी में विज्ञान कविताओं की पुस्तक 'विज्ञान कथा सागर' प्रकाशित है।

3. 'पद्म भूषण प्रो. (डॉ.) श्रीकृष्ण जोशी'

सर्वोच्च भारतीय नागरिक सम्मान पदमश्री और पद्मभूषण से विभूषित अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त भोतिकविद् डॉ. श्री कृष्ण जोशी शुक्रवार 15 मई, 2020 को गुरुग्राम, हरियाणा में अपने भौतिक शरीर को त्याग कर गोलोकवासी हो गए।

डॉ. जोशी लगभग 6 दशकों तक विज्ञान परिषद् प्रयाग से जुड़े रहे और वर्ष 1993 से 1996 तक परिषद् के अध्यक्ष रहे।

प्रो. जोशी का जन्म 6 जून, 1935 को वर्तमान उत्तराखंड के देवीपुरा अनरपा गाँव में हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. की उपाधि प्राप्त करके 1957 में इसी विश्वविद्यालय में भौतिकी के लेक्चरर नियुक्त हो गए। वे श्री बनर्जी के निर्देशन में शोध करते हुए 1962 में यही से डी. फिल. की उपाधि प्राप्त की। 1965 ई. में आप यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका स्थित व कैलिफौर्निया रिवरसाइड विश्वविद्यालय में अतिथि प्रवक्ता के

रूप में गए। यहाँ से 1967 में पुनः भारत लौटे और रुड़की विश्वविद्यालय (अब आई.आई.टी. रुड़की) में भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर नियुक्त हो गए। यहाँ पर 1967 से 1986 तक इस पद पर कार्य करते रहे।

सन् 1986 में उनकी नियुक्ति सी एस आई आर, नई दिल्ली की राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला में निदेशक पद पर हो गई और 1991 तक यहीं कार्यरत रहे। 1991 में वे भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुसंधान परिषद् के महानिदेशक नियुक्त किए गए।

उन्होंने 20 छात्रों का शोध कार्य पूर्ण कराया। 190 से अधिक शोधपत्र विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। आपको भारत सरकार द्वारा 1991 में पद्मश्री और 2003 में पद्म भूषण सम्मानों से अलंकृत किया गया। इन सम्मानों के अतिरिक्त जोशी जी को शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार 1972, सी एस आई आर का सिल्वर जुबली पुरस्कार 1973, मेघनाद साहा पुरस्कार 1974, इरसा का सी वी रमन मेडल 1999 सहित 15 से अधिक सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुए थे। डॉ. जोशी विज्ञान परिषद् प्रयाग के अध्यक्ष तो थे ही साथ ही साथ आप अनेक भारतीय वैज्ञानिक संस्थाओं के अध्यक्ष फेलो के साथ ही अंतरराष्ट्रीय अकादमी जैसी 1989–1990 तक इंडियन फिजिक्स एसोसिएशन के अध्यक्ष, मेटीरियल रिसर्च सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष, थर्ड वर्ल्ड एकेडमी ऑफ साइंसेज के फेलो के साथ–साथ 2019 में 'रसियन एकेडमी ऑफ साइंस' के सदस्य रहे।

4. 'कट–कॉपी–पेस्ट कमांड के जनक लैरी टेस्लर'

'कट–कॉपी–पेस्ट' कमांड कंप्यूटर की भाषा के आविष्कारक कंप्यूटर वैज्ञानिक लैरी टैस्लर का निधन 17 फरवरी, 2020 को हो गया। आपका जन्म न्यूयार्क के ब्रांन्क्स में 24 अप्रैल, 1945 को हुआ था।

लैरी टेस्लर ने कैलिफोर्निया की स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी से कंप्यूटर साइंस में डिग्री प्राप्त की थी। ग्रेजूएशन पूरा करने के बाद लैरी ने कंप्यूटर के उपयोग को थोड़ा सरल बनाने वाले सिस्टम इंटरफेर डिजाइन में विशेषज्ञता भी प्राप्त की जिसका उपयोग करते हुए उन्होंने प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य किए। कंप्यूटर में यूजर इंटरफेस के विकास के शुरुआती चरण में जिन लोगों ने अभूतपूर्ण योगदान दिया, टेस्लर उनमें से एक थे।

वर्ष 1960 के दशक में टेस्लर ने सिलिकॉन वैली में काम करना प्रारंभ किया था। यह वह समय था जब कंप्यूटर कुछ लोगों तक ही सीमित था। वे टेस्लर ही थे जिन्होंने कटकापी और पेस्ट जैसे कमांड का आविष्कार किया था और कंप्यूटर के प्रयोग को आसान बना दिया था। इसके अतिरिक्त अपने फाइंड तथा रिप्लेस (Find and Replace) जैस अन्य कई कमांड्स भी बनाए थे, जिससे टेक्स्ट लिखने से लेकर सॉफ्टवेयर बनाने जैसे कई कार्य आसान हो गए। वर्ष 1983 में एप्पल के सॉफ्टवेयर बनाने जैसे कई कार्य आसान हो गए। वर्ष 1983 में एप्पल के सॉफ्टवेयर में लिखा कंप्यूटर पर इस कमांड को शामिल किया गया था।

लैरी टेस्लर ने अपने कैरियर में एक से बढ़कर एक बड़े संस्थान में कार्य किया। 1973 में अमरीकी कंपनी जेरॉक्स पैलो आल्टो रिसर्च सेंटर से कैरियर की शुरुआत करते हुए, एप्पल में वर्ष 1980 से 17 वर्षों तक काम किया और मुख्य वैज्ञानिक के पद तक पहुँचे। वर्ष 1997 में एप्पल छोड़ने के बाद उन्होंने एक एजूकेशन स्टार्टअप की स्थापना की। इसके अतिरिक्त कुछ समय के लिए अमेजन में भी कार्य किया और 2005 में याहू से जुड़े।

5. 'प्रो. (डॉ.) अचलेश्वर बोहरा'

डॉ. अचलेश्वर बोहरा का 13 अक्तूबर, 2020 को निधन हो गया। प्रो. बोहरा विज्ञान परिषद्, जोधपुर शाखा के संस्थापक सदस्य और जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के वनस्पति विज्ञान विभाग के पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष थे।

6. 'डॉ. नरेंद्र कुमार सहगल'

सुविख्यात विज्ञान संचारक एवं विज्ञान लोकप्रियकरण के पुरोधा डॉ. नरेंद्र सहगल का देहावसान 7 सितंबर, 2020 को हो गया। डॉ.

सहगल के निधन से विज्ञान जगत में अपूर्णनीय क्षति हुई है। नवंबर 1940 में जन्मे डॉ. सहगल विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के अंतर्गत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् के प्रमुख रहे। विज्ञान संचार एवं लोकप्रियकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु आपको यूनेस्को का कलिंग एवार्ड प्रदान किया जा चुका है। यूनिवर्सिटी ऑफ हवार्ड से एम एस तथा यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कासिम यू एस ए से 1969 में पी एच डी की उपाधि प्राप्त की थी।

आपने भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र बॉम्बे (1960–63), यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कासिन, मेंडीसन विस्कासिन, यू एस ए (1969–70), मेंट साइंस, मद्रास (1970–81) में सेवाएँ दी। लंदन से प्रकाशित 'नेचर' (अंतरराष्ट्रीय विज्ञान साप्ताहिक) में प्रकाशनार्थ शोध आलेख' भारत में विज्ञान का परिदृश्य हेतु आप आमंत्रित कंट्रीव्यूटर रहे (1974–76)।

जालंधर से प्रकाशित होने वाली अंग्रेजी त्रैमासिक पत्रिका 'साइंटिफिक ओपेनियन' के आप संस्थापक, संपादक (1972–76) रहे। भौतिकी के क्षेत्र में आपके 20 से अधिक शोधपत्र अंतरराष्ट्रीय शोध जर्नलों में प्रकाशित हो चुके हैं।

एन सी एस टी सी न्यूज लेटर (हिंदी व अंग्रेजी) के आप 1989 से संपादक रहे। एन सी एस टी सी के प्रमुख के रूप में आपने विज्ञान लोकप्रियकरण कार्यक्रम की परिकल्पना, सूत्रण, क्रियान्वयन एवं संयोजन में महत्वएर्ण भूमिका निभाई। आपने नेशनल चिल्ड्रेन साइंस कांग्रेस की शुरुआत की थी। आपको हिंदी विज्ञान लोकप्रियकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु 'कलिंग सम्मान' के अतिरिक्त फाइ फाउंडेशन एवार्ड, आत्माराम सम्मान सहित अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए हैं।

– विज्ञान परिषद् प्रयाग, महर्षि दयानंद मार्ग, प्रयागराज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश–211002

❑❑❑

संपर्क–सूत्र

1. डॉ. अनुशब्द, सी 93, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय कैंपस, तेजपुर, नपाम, असम–784028
2. डॉ. जुबैदा एच. मुल्ला, 'बैतुलहाशमी', मकान नं.–152, ताजनगर, हुबली, धारवाड़, कर्नाटक–580031
3. डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी', प्रभुप्रिया, 39, III लेन, III ब्लॉक, III स्टेज, बसेश्वर नगर, बेंगलूरू–560079
4. डॉ. महाराज कृष्ण भरत 'मुसा', शारदा कॉलोनी, विद्याधर निवास, पटोली ब्राह्मणा, मूठ्ठी, जम्मू–181205
5. डॉ. चंद्रलेखा डिसौज़ा, 4, शशिसदन, प्रथम तल, मंडवेल, वास्को–द–गामा, गोवा–403802
6. डॉ. वर्षा सोलंकी, डी.–7, इनकम टैक्स कॉलोनी, न्यू सिविल हॉस्पिटल के सामने मजूरागेट, सूरत, गुजरात–395001
7. श्री ओम गोस्वामी, 181 पहाड़िया स्ट्रीट, जम्मू तवी, जम्मू–180001
8. डॉ. बी. संतोषी कुमारी, एच–410, द रॉयल कैसल पल्लावरम् टू थिरुमुडिवक्कम् रोड, थिरुमुडिवक्कम्, चेन्नई–600044
9. श्री ज्ञानबहादुर छेत्री, चानमारी, तेजपुर, गुवाहाटी, असम–784001
10. प्रो. फूलचंद मानव, साहित्य संगम 239, दशमेश एन्क्लेव, ढकौली (जीरकपुर के समीप), चंडीगढ़–140603,
11. डॉ. सुव्रत लाहिड़ी, 63–ए, साउथ सिंथी रोड, कोलकाता–700030
12. डॉ. बी अशोक, 'साकेत' दर्शन नगर, 225, कुडप्पनक्कुन्नु पी. ओ., त्रिवेंद्रम, केरल–695043
13. डॉ. वैद्यनाथ झा, मकान नं. – 405, बी ब्लाक (हुडा प्लॉट), सेक्टर–56, गुरुग्राम–122011
14. डॉ. रेखा, मकान नं.–2340, हाउसिंग बोर्ड सेक्टर–3, रोहतक, हरियाणा–124001
15. डॉ. अजय कुमार मिश्र, फ्लैट नं. 2/802, ईस्ट एंड अपार्टमेंट, मयूर विहार, फेज–1 एक्सटेंशन, नई दिल्ली–110096
16. डॉ. आलोक रंजन पांडेय, डब्लू ज़ैड–250 बी, निकट इंद्रपुरी एम टी एन एल, नई दिल्ली–110019
17. डॉ. तरसेम गुजराल, 444–ए, राजा गार्डन, पो. ओ. बस्ती बाबा खेल, जालंधर–144020
18. डॉ. अवध किशोर प्रसाद, द्वारा कुमार राकेश, ग्रीन फील्ड स्कूल, ब्लॉक ए–2, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली–110029

19. श्री कृष्ण कुमार 'कनक', 'कनक–निकुँज' गुँदाऊ, मुरली नगर, लाइन पार, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश–283203
20. डॉ. रोहिताश्व कुमार अस्थाना, निकट बावन चुंगी चौराहा, 802, आलू थोक उत्तरी हरदोई, उत्तर प्रदेश–241001
21. डॉ. अनुराग सिंह चौहान, विभागाध्यक्ष (हिंदी), वेदांता स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, रींगस, सीकर, राजस्थान
22. डॉ. विदुषी शर्मा, एल–108, ऋषि नगर, रानी बाग, दिल्ली–110034
23. डॉ. सुनील कुमार तिवारी, डी ए–291, एस एफ एस फ्लैट्स, शीशमहल अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली–110088
24. डॉ. सी. जय शंकर बाबु, सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी–605014
25. प्रो./डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल, 56 अशोक नगर, अधारताल, जबलपुर, मध्य प्रदेश–482004
26. डॉ. गोविंद स्वरूप गुप्त, फ्लैट नं.–212, ब्लॉक–आई सिलवर लाइन अपार्टमेंट, (बी.बी.डी.), फैजाबाद रोड, लखनऊ–226028
27. डॉ. शिवगोपाल मिश्र/बलराम यादव, विज्ञान परिषद् प्रयाग, महर्षि दयानंद मार्ग, प्रयागराज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश–211002

© Govt. of India
Controller of Publication

ISSN 0523-1418

पी. ई. डी. नं. 1024.
450-2020 (DSK-II)

वार्षिकी 2020

मूल्य :

देश में	Inland	₹ 180/-
विदेश में	Foreign	$ 2.44/-
		£ 1.79/-

उच्चतर शिक्षा विभाग
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
पश्चिमी खंड–7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–110066
www.chdpublication.mhrd.gov.in
प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली – 110064 द्वारा मुद्रित